CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8·1 V2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्यक्षीय भाषण

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पहिला अधिवेशन

प्रयाग

८-९ मार्च १९७५

अध्यक्ष

डॉ० उदयनारायण तिवारी

के

* भाषण *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

देवी लोग आ भाई-वन्धु सभे,

आज हम अपने सभन के वहुत रिनी बानी कि हमराके एह सभा के सभापति होखे के मोका आ सम्मान दिहलीं। 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' प्रयाग का ओर से ई 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' अइसना समय में हो रहल वा जब कि देस के बहुत भाग में राजनीति के तूफान आ बवंडर उठि खड़ा भइल बा। आजु चारो ओर खाली राजनीति आ रुपये-पइसा के संकट नइखे खड़ा भइल, वलुक सवसे वड़ संकट त ई वा कि आदमी के चालि-चलन, आचार-वेवहार बहुत नीचे गिर गइल बा। कवनो गाँव-नगर अइसन नइखे जहवाँ महँगाई, मिलावट, कालाबजार आ चोरबजार के बोलवाला ना होखे। जो साँच पूछल जाय त हम कहव कि एह तरह के बात सउँसे संसार में फइल गइल बा। भोजपुरियो इलाका, खास करके पूरुबी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी विहारो एकरा हवा-पानी से छूटल नइखे। इतिहास एह बात के गवाह बा कि देस में जब जब एह तरह के संकट आइल बा, ई समूचा भोजपुर इलाका चिन्ता से वेयाकुल होके बहुत कुछ तियाग कइले बा। ई सबूत देबे के जरूरत नइखे कि इहवाँ के लोगन में देस-प्रेम के केतना लगन आ सरधा बा। सन् अठारह सौ संतावन के महाबली बीरवर कुँवर सिंह आ बहादुर सिरोमनि श्री मंगलपांड़े जी से लेके सन् १९२०-२१, १९३०-३२ आ १९४२ के आन्दोलन में भोजपुरी के जेतना लोग बलिदान भइल, ओह सहीदन के एक-एक गाँव आ एक-एक नगर जुग-जुग तक ले याद करी। आजुओ हमरा पूरा-पूरा भरोसा बा कि देस के सामने कवनो तरह के संकट अइला पर ई टप्पा सबसे आगे बढ़ि के एकरा गौरव आ मरजाद के रक्षा करी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी पच्छिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश आ छोटानागपुर का लोगन के आपन मातृभाषा ह ई भोजपुर, रोहतास, पलामू, सारन चम्पारन पच्छिमी पटना, मुजफ्फरपुर, पूरा गोरखपुर आ बनारस कमिश्नरी के हर जिलन में बोलल जाले। बिहार का राँची जिला में सदानी का रूप में जवन बोली बोलल जाले, ऊहो भोजपुरी से बहुत मीलत-जूलत होले। मध्य प्रदेश के रायगढ़ आ सुरगुजा जिला के पूरुबी भाग भोजपुरिये ह। नेपालो का तराई का सात जिलन में भोजपुरी बोलल जाला। भोजपुरी एगो साहसी आ बीर लोगन के बोली ह, जेकर बोले वाला लोग भारत आ भारत के बाहरी दुनियाँ के हर क्षेत्र में मिलिहन। एही लगले हम ई बता दीं कि 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' नागपुर में जेतना बिदेसी लोग भाग लेवे खातिर पिछला जनवरी में बाहर से आइल रहस ऊ करीब-करीब सभे भोजपुरी बोले आ समुझे वाला लोग रहे। अपना देश के बड़े-बड़े शहरन में जइसे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, कानपुर वगैरह में भोजपुरी लोगन के बहुत बड़ तयदात बा आ ई सभ केहू बड़ा संगठित होके रहेला। ई कुल्हिये नगरन में भोजपुरी समाज, भोजपुरी परिषद, भोजपुरी संसद, साहित्य परिषद अइसन नाँव के संगठन कायम हो चुकल बा। अइसने कुल्हि संगठन के झंडा के छाया तर खास-खास तिहुआर पर बटुरा के लोग ओइजा आपस में गले मीलेला, खुसी मनावेला। ईहे ना अपना, बहुत से समस्या के बारे में लोग बूझो-बिचार करेला।

हम पहिलहीं कहली हाँ कि भारत के बाहरो भोजपुरी बोले वाला बहुत बिदेसी लोग बा। हिन्द महासागर में मोरिशस, अउरी ब्रिटिश गाइना मतिन बहुत छोट-छोट टापुअन में भोजपुरी लोग बसल बा। पूरा मोरिशस में बोलें जाये वाली बोली 'क्रियोल' में भोजपुरी के बहुतायत सबद के बारे में उहाँ के रहवइया लोग खूब जानता। खास करके फ्रेंच आ भोजपुरी से मिलके ई 'क्रियोल' भाषा कहाला। मानुस-तन्तु-बिग्यान, भाषा-बिग्यान का विचार से आजो एह टापुअन में भोजपुरी जाति का लोगन के सोभा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आ भासा के कुछ अइसन चलन मीलेला जवन कि अपना इहाँ खतम हो गइल बा। एह बातन से त ई बहुत साफ़ हो गइल, कि भोजपुरी बहुत दूर-दूर तक फइलल बा।

हम ऊपर जवना बाति-बेवहार आ नेति-नियम गिरला के जिकिर कइले रहली हाँ, ओपर बिचार कइल जाई त मालूम हो जाई कि एकर खास कारन पढ़ाई के ढंग आ विषय बस्तु का साथ-साथ पढ़ाई के भाषा के कठिनाई बा। हमहन के सुराज मिलले आजु सताइस बरिस होता, बाकिर अब तक ले देस में एगो राष्ट्रभाषा के हर जगह नइखे मानल जात। आजु देस के सभे भाषा, अँगरेजी के बोझ से दबा गइल बाड़ी स। अँगरेजी राज के खतम भइला के बाद ई बात जरूरी रहे कि अपना तरक्की आ विकास में लागल बाहरी मुलुकन का तरह अपनो देसमें पढ़ाई लिखाई के तौर-तरीका अउरी सरकारी भाषा में बदलाव आवे आ एह देश के एगो अइसन भाषा होखे जवन पूरा देस के भाषा कहाय आ सभे देस बासी एपर घमंड से आपन माथा ऊँच कर सकें। बाकिर बहुत दुख के साथ कहे के परत बा कि एह ओर हमनीं के कोसिस जेतना होखे के चाहत रहे ओतना ना भइल, आ ना त होता। एसिया में चीन, जापान, इन्डोनेसिया, कोरिया, स्याम, आ लंका में शिक्षा के संगे सासन के भाषा ओही देस के आपन भाषा ह। चाहे दोसर देस, ओकरा भाषा के बोले समझे के गियान राखत होखे भा ना राखत होखे। अपना देस में बिदेसी भाषा के जरिये शिक्षा दिहला से, पढ़ाई-लिखाई महंगा त होइये गइल बा, संगे संग करोड़न विद्यारथियन के तेज दिमाग आ बुद्धि दबि के माटी हो रहल बा। इहे कारन रहे कि महतमा गांधी जी देस के पौरुख जगावे खातिर कई तरह के ठोस काम हिन्दी के जरिये करे में आपन दिमाग लगवले।

आजादी मिलला का बाद कानूनन हिन्दी के राजभाषा के जगह मिल गइल अउरी २६ जनवरी सन् ६५ से त ई पूरे तरह से आपन जगह पा गइलि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अंगरेजी के वेवहार तव तक के वास्ते मीलल वा जब तक कि देस के ह
राज्य हिन्दी के सरकारी काम काज में ना अपना ली। वाकिर ई एगो अइस
ढिलाई के बात वा कि एकरा में सचहूँ अवहीं वहुत समय लागी। भोजपु
टप्पा त सुरुए से हिन्दी के अपना के ओकर पूरा-पूरा गांव आ नगर
सगरो वेवहार कइ रहल वा। ई खुशी के बात बा कि अवहीं हाले में प्रदेश
का सबसे बड़का कोर्ट (जइसे मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश अव राजस्था
वगैरह) में अव फैसलो हिन्दी में लिखाये लागल। गैर हिन्दी प्रदेशन वाल
के ई कहनाम वा कि हिन्दी भाषा भाषी लोग पहिले कुल्हि काम हिन्द
में काहे नहखन करत। एह बात पर सचहूँ हमरो आ रउरो सवके सोचे
जरूरत वा।

उत्तर भारत में हिन्दी से मिलत जुलत बहुते भाषा बाड़ी स जवना
हम पंजाबी, सिन्धी आ कश्मीरी वगैरह के गिन सकीला। वाकिर हिन्दी
सबसे निगिचा उत्तर भारत का अउरी भषन में हम नीचे बतावल सभे भाष
के लेतानीं आ मिलान का विचार से सबके चार वर्ग में बाँटतानीं (१
बांगरू, व्रज आ गढ़वाली (२) मारवाड़ी, मेवाती आ राजस्थानी (३) अवधी
छत्तीसगढ़ी आ जनपद के खड़ी बोली (४) मैथिली, मगही आ भोजपुरी
हम बघेलखंडी के अलग भाषा का रूप में ना लेके अवधिये में राख
आ ओही तरे कनउजी के भेद रहलो पर व्रज में राखव
एहमें वनावट का खियाल से हरियानवी, व्रज आ वुन्देलखंडी एक वर्ग
अउरी राजस्थानी, मारवाड़ी, पहाड़ी आ मालवी दोसर वर्ग के बाड़ी स
अवधी आ छत्तीसगढ़ी तिसरा वर्ग के भाषा ह। मैथिली, भोजपुरी आ मगह
चउथा जगहा पर आई। करीब-करीब बहुत आदमी जवना में कुछ भाषा
विग्यान के लोग वा एह सबके हिन्दिये के बोली मानेला। साच बात त
वा कि भाषा आ बोली के फरक साफ-साफ अलग करे वाली कवनो
रेखा नइखे। धरम आ राजनीति के सहारा आ वल पाके कवनो बोली
भाषा बन जाले। कश्मीरी आ पंजाबी एही तरह के बोली हउए जवन
के आज कानूनन चउदह भषन में जगहा आ मान्यता मिल गइल। भार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

में हम ऊपर के बयान कइला में भाषा के बोली कहीं चाहे भाषा, एमें कवनों फरक परे वाला नइखे। कुछ लोग ई समझेला कि एह सब भाषा के हिन्दी के बोली मान लिहला से हिन्दी एगो मजबूत भाषा कहाये के अधिकार पा जाई। बाकिर ई खाली भरम कहाई। हिन्दी के तागत त एहमें होई कि ओकरा से अलग-अलग कुल्हि बोलिन के तागतवर बनावे खातिर उहां के लोगन के कुछ करे के चाहीं। ओकरा के आपन मातृभाषा के रूप में बढ़ावे के चाहीं। आज संसार के भाषा के रूप में अंग्रेजी आ रूसी भाषा के एही से इज्जत बा कि इन्हन के दूसरो भाषा बोले वाला लोग अपनवले बा। रहि गइल भोजपुरी के बात, त एहिजा के लोग सुरू से हरदमें हिन्दी के पच्छपाती आ प्रेमी ह। जवना घरी में भोजपुरी क्षेत्र में खड़ी बोली हिन्दी के मान मर्यादा ना रहे ओह घरी इहवां काव्य-भाषा का रूप में ब्रज के चलन रहे। बाकिर जइसहीं अठारहवीं सदी के अंत आ ओनइसहवीं सदी का सुरू में सब लोग गद्य खातिर एक भाषा के जरूरत समुझल, भोजपुरी भाषा के लोग एह काम में सबसे आगे आइल।

एह सम्बन्ध में ई बतावल जरूरी बा कि देस में जवन चारिगो बड़का गद्य के लीखे वाला विद्वान लल्लू लाल, इंशा अल्ला खां, मुन्शी सदासुख लाल आ पंडित सदल मिसिर के नांव लीहल जाला। ओमें से पं० सदल मिसिर जी भोजपुरी बोले वाला रहलन। उहां का बिहार में आरा के रहे वाला रहीं। उनकर गद्य एतना जोरदार होत रहे कि आज के खड़ी बोली के ऊ रीढ़ कहाई। साच कहल जाय त हिन्दी गद्य शैली का क्षेत्र में पं० सदल मिसिर के मोल आज ले केहू ना बूझल। हमार त कहनाम ई ह कि आज के हिन्दी कलकत्ता से चलि के बनारस आ प्रयाग आइलि आ उहे धीरे-धीरे पच्छिम का ओर बढ़ि गइलि। एह बात के जनलो पर कि ओह हिन्दी के आधार एकदम पच्छाहीं ह, तवहियों ओके आगे बढ़ावे आ मजबूत बनावे में पूरब के लोगन में भोजपुरी लोग जवन मदद कइले ह, ऊ इतिहास में सोने का अक्षर से लिखाई। भारतेन्दु बाबू से लेके पं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के लिखे वाला मवजूद बाड़न। एह विद्वानन का कितावन के परचार-परसार से निरक्षरता कुछुवे बरिस में हटावल जा सकेले। असल में शिक्षा में ई दूनों जो साथ-साथ चलसु त एक ओर जहवाँ हिन्दी के चउतरफा परचार आ परसार हो जाई, उहवें लोग हिन्दी के थोरहीं समय में सीख लीहें आ देस से जल्दिये निरच्छरता दूर भागि जाइत। एह तरे भाषा पढ़ावे के दू गो ढंग हो जाई। एगो लइकन खातिर आ दूसर वड़ लोगन खातिर। भोजपुरी एगो बीर आ बहादुर जाति के भाषा भर नइखे, बलुक एकरा में गंभीर आ ऊँच गद्य-पद्य साहित्य के रचना हो रहल बा। पिछिला १९७२-७३ में भोजपुरी इलाका से बाहर इहाँ प्रयाग में 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' जवन भोलानाथ गहमरी जी करवले रहतीं ऊ बहुते सफल भइल आ एह नगर में ओकर बड़ी चर्चा रहे। अवधी आ व्रजमाषो में अइसने सफल कवि सम्मेलन सुने में आवत रहेला। आजु एह लोक-भाषा के कवि सम्मेलन के, दिल्ली, कलकत्ता आ बम्बई के लोग बहुत आदर आ प्रेम से सुनि रहल बा।

ए तरे जइसन कि पहिले बतावल गइल ह, भोजपुरी के गद्य-पद्य दूनों में साहित्य बहुत सुन्दर आ धनी हो रहल बा। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय 'अँजोर' (पटना) के सम्पादक भोजपुरी भाषा के परकासित साहित्य के एगो सूचीं तैयार करवले वानीं। ओमें भोजपुरी में लीखल केतना काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, लेख, कहानी आ कई तरह के रचनन क नांव बा। भोजपुरी खातिर ई गौरव के बात बा कि श्री स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी भोजपुरी में 'वउधायन' (बौध-लीला) महाकाव्य के रचना कइनी हाँ, जवन जल्दिये छप वाला बा। सभके ई जानि के खुसी होई कि रामायन मतिन ग्रन्थनो के रचना भोजपुरी में भइल वा। एह तरे भोजपुरी के गद्यो के बढ़ावे आ सम्मान दिआवे में पं० गणेश चौवे, डा० विवेकीराय, चतुरी चाचा, स्व० आचार्य महेन्द्र शास्त्री आ बहुत- कहानी उपन्यास लिखे वाला लोग वा जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दिन रात एहमें लागल रहल। स्व० वावू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, पं० राहुल सांकृत्यायन आ कविवर मनोरंजन जी के लगन अउरी महान रचना खातिर हरमेसा याद कइल जाई। एह सिलसिला में हम जमशेदपुर का भोजपुरी भाषा-सेवकन कें आ आरा कें श्री रघुवंशनारायण सिंह के भोजपुरी सेवा, खातिर साधुवाद दे तानीं। वनारस के 'भोजपुरी संसद' के सेवा आ मदत जेकर थापना में स्व० डाक्टर स्वामीनाथ सिंह जी कें खास हाथ रहे, हमेशा याद कइल जाई। ऊहाँ का साँस रहते दम तक कई कितावन के छपवा-छपवा के भोजपुरी साहित्य के वढ़ावा दिहनीं आ आजु के 'भोजपुरी कहानियाँ के जनम उनही कें देले हईं। ई कुल्हि लोगन कें अलावा जे-जे सेवक लोगन के नाँव हम नइखीं ले पावत, ओहू सबकें तियाग तपसिया खातिर हमनी का रिनी वानी जा।

हम सब लोगन के भोजपुरी के वढ़ंती खातिर वरावर कोसिस करत रहे के चाहीं। करीव सात-आठ करोड़ लोगन के ई भाषा, जवना के संसार के हर कोना में बोलल जात बा, साहित्य-अकादमी से अव तक मान्यता ना मीलल, एकरा के हम अपने कमजोरी समझतानीं। आजु एह सभा के खुसी बा कि 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के थापना पटना में हो चुकल बा, जवना का पहिलका अधिवेशन में रउवा सभे इहां इकट्ठा भइल बानीं। अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाही। एकरा खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई। काहें कि जहां सरकारी पइसा आई, उहाँ सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकार से मदत मिलला से लोगन में गुटवन्दी हो जाई। हमनी का चाही कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रुपया के सदस्य वनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा साहित्य, काव्य, नाटक, एकांकी आ वेयाकरण के सुन्दर किताव-पोथी छापल जाय। धन के कमी से भोजपुरी के वहुत से किताव अच्छा ढंग से छपि नइखी स पावत, ई वड़ा हँसी आ दुख के वात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अपने सभ हमार बात एतना देर ले मन लगा के सुनलीं, एकरा खाति हम बहुत रिनी बानीं। आजु इहवाँ सभा करवला, सबके एक जगह जुटवा के आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एह नगर में मंच दिहला खाति एकर आयोजक लोगिन के, जे बहुत तकलीफ उठावल, दिन-रात दउड़-धूप कइल, ओह सबके हम अपना ओर से आ रउरी सभ का ओर से बहुत-बहुत धनिबाद देत बानीं।

जय हिन्द

जय हिन्दी—जय भोजपुरी

—उदय नारायण तिवारी

प्रयाग, ८-३-१९७५ ई०

देश सेवा प्रेस, प्रयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दोसरका अधिवेशन

के

अध्यक्ष

आचार्य डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

के

अभिभाषण

पटना

१५ मई १९७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्धुगण,

अपने सभ हमरा के बहुत बड़ाई दिहलीं जे एह सम्मेलन के सभापति बनवलीं। एह कृपा खातिर हम बहुत आभारी बानी। हमार मातृभाषा भोजपुरी जरूर वा बाकिर हम भोजपुरी के कवनो खास सेवा नइखीं कइले। हम त इहे समझलीं हां जे अपने सभ में उदारता बहुत वा आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनों के समान भाव से प्रेम करीले। अइसन ना होइत त हमरा नियर आदिमी के, जे सही माने में 'ना देव के ना लोक के' बा, ओकरा के काहें बोलइतीं। माननीय पांडे जी के हुकुम भइल जे आवे के होई, चुपचाप राजी हो गइलीं। मगर जब उहाँ का कहलीं जे सभापति के भाषण लिखि के ले आवे के परी त थोरिका चिन्ता भइल। बड़ बना दिहला से केहू बड़ थोरे हो जाला? कुछ भीतरो होखे के चाहीं। कबीर दास जी साइत भोजपुरी के आदि कवि हवीं। उहां का कहि गइल बानी जे, 'जो रहे करवा त निकसै टोंटी'। बधना में पानी रही तबे त टोंटी से निकसी? इहां एको ठोप पानी नइखे। सोचत रहलीं जे भोजपुरी त आपन मातृभाषा ह, ए में लिखल बड़ा सोझ होई। अब देखतानीं जे सोझे डांड़ि खींचल सभसे टेढ़ काम वा, टेढ़ डांड़ि खींचे में कवन मेहनत.वा। रोजे जवना भाषा में बोलल जाता ओही में लिखल कठिन काम लागत वा। कवनों भाषा आ बोली में लिखे खातिर कुछ साधना चाहीं, कुछ पहिले से आदत डाले के चाहीं, कुछ मेहनत मसक्कत क लेवे के चाहीं। ऊ सभ अपना में ना देख के मन ऊभ-चूभ हो गइल वा। अब त अपनहीं सभ के आसरा वा, सभापति बनवलीं त ओकर भारो अपनहीं सभ के सम्हारे के परी।

भोजपुरी बहुते शक्तिशाली बोली ह। लोक साहित्य के त अइसन भंडार अउर जगह साइत नइखे। महावरा, लोकोक्ति, व्यग्य-बिनोद के त एकरा पासे खजाना बा। कुछ लोकगीतन के संगेरे के थोर-बहुत जतन भइल बा, एकाध कोसिस महावरा वगैरह के बटोरे के भी कइल गइल बा, बाकिर ई सभ काम समहुते बरोबरि वा। जतना काम भइल बा, ओतने से ई पता चले में कवनो कठिनाई नइखे रहि गइल जे शक्तिशाली भाषा होखे खातिर जइसन गुन गरवर चाहीं, एकरा में पूरा बा। एकर बोलेवालन के तदादो बहुत अधिक बा। चार-पांच करोड़ त होइबे करी। अपना देस में, अउर बाहरो बहुत कम भाषा होइहें जेकर बोले बालन के तदाद एतना बड़ होई। बोले वालन के तदाद एतना बड़ बा जे बहुत बड़का कहाए वाली बहुत भाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भा बोलिन से भोजपुरी कहि सकेले जे 'जवन तोहरा घरे भोज तवन हमरा घरे रोज'। भोजपुरी लोगनि में अपना बोली के अभिमानो बहुत बा। देस में रहो तऽ, विदेस में रहो तऽ, भोजपुरी घर में अपने भाषा बोली। ग्रियर्सन साहेब त लिखले बानी जे अइसन भाषा प्रेम उन्हुका अउर कहीं ना मिलल। सभ बा, लेकिन भोजपुरी हमेसा देस के अखण्डता के बात सोचेला। देस के अखण्डता के खतरा होई त ऊ अपना प्रिय से प्रिय चीजो के बाधा ना देवे दी। हमेसा भोजपुरी के नजर देस का एकता पर रहेला। एह खातिर ऊ सभ तियागि सकेला। भोजपुरी के ई गुन जग-जाहिर बा। एमें कतहीं खोट ना मिली। ई बात नइखे कि ओकरा में अपना घर में बोले जाए वाली सब से मीठी बोली के अभिमान नइखे, ईहो नइखे कि ऊ अपना बोली में कविता भा गाना लिखल छोड़ देले बा, मगर ऊ कवहीं अलग हो के रहे के बात ना कइलस। हमनी के जवन सार्वदेसिक स्वीकृत भाषा हिन्दी बा ओकरा के गढ़े-सँवारे में त भोजपुरी लोगनि के सबसे वेसी जोगदान बा। सदल मिश्र आ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ले के आजु तरीक बहुत बड़-बड़ साहित्य-निर्माता भोज-पुरी लोग रहलन हा। सदल मिसिर जी का बारे में त हमरा नइखे मालूम जे उहां का भोजपुरी में कुछ लिखले बानी कि ना, बाकी भारतेन्दु जी त निश्चित रूप से बनारसी बोली में बहुत बढ़िया कविता लिखि गइल बानी। मगर अपना घर का बोली के प्रेम अछइत उहाँ सभे सार्वदेसिक भाषा के गढ़े-संवारे में जीव आ जान लगा दिहलीं। अपना बोली के प्रेम भी बनल रहल—सार्वदेसिक भाषा के भी ओतने, बलुक कुछ अधिके, प्रेम उहां सभ के रहल। बाकी कवहीं उहां सभ ई ना कहलीं जे अपना बोली के अलग कइ दियाउ। ओ सभका मन में सोगहग प्रेम रहल।

'सोगहग' जानते होइबि। लइकइयाँ में हमार बड़की पितियाइनि—हमनीं का उहाँ के 'बाबूजीवो' कहत रहलीं जा, उहाँ का खास भोजपुरी गाँव के बेटी रहलीं आ कथा-कहनी के त उहाँ का पासे भण्डारे रहल—एगो कथा सुनवले रहलीं। कथवा भुला गइल बा, मगर ओकर नायक एगो राजकुमार रहले, कवनो सराप से वेंग हो गइल रहले। उन्हुकर हठ रहे कि हम सोगहगे लेब। बहुत बहुत फितकाल में परले बाकी सोगहग खातिर अरियाइले रहले। कुछ साल पहिले डा. शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरनी' में सोगहग शब्द मिलल त हम सोचे लगलीं कि ई 'सोगहग' कइसे आइल। खोजत-खोजत संस्कृत में एगो शब्द मिलल सयुगभाग—दूनों हिस्सा समेत—पूरा। हमरा ई बुझाइल जे 'सोगहग' एही शब्द के परवर्ती रूप होई। भोजपुरी के सोगहग प्रेम, आपन पुरान अर्थ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सोगहग' होला। घर के बोली के प्रेम आ देस के बोली के प्रेम—प्रेम के दूनों हिस्सा मिलाके सोगहग—सयुगभाग ! भोजपुरी आदिमी पुरानी कथा के राजकुमार हऽ—सोगहग के प्रेमी। भोजपुरी बोले वालनि पर आर्थिक कमजोरी के सरापो साइत लागत बा। एही से ई लोग कुछ वेंगिया गइल बाड़न। एह लोगन में माण्डूक्य वृत्ति जरूर कहीं-ना-कहीं रह गइल बा। मगर लिहें त लिहें सोगहगे।

'सोगहग' प्रेम कवनो वाउर चीज ना हऽ। निमने हऽ। निमन अर्थात् निर्मल, निष्कलुष ! बहुत दिन से स्वच्छ साफ बतावे खातिर ई शब्द चलल आवता। प्राकृत में 'निम्मल' चलत रहे—निम्मल मरअद-माअण परिट्ठिग्ग संखसुत्तिव्व-—निर्मल—परकत भाजन परिस्थिता शंख शुक्तिरिव। बहुत बोलिनि से ई उठि गइल, बाकिर भोजपुरी में बनल बा। का जाने काहें। अइसन बुझाता कि ए बोली के बोले वाला निर्मलता के भुला ना सकले। मगर इहो कइसे कहीं ? गाँव में एगो निमंत्रण-पत्र शुद्ध हिन्दी में मिलल। निमंत्रण देवे वाला लोग कहे के चाहत रहे कि निम्मन निम्मन आदिमी बोलावल गइल बाड़े। शुद्ध हिंदी में लिखल लोग जे 'निम्न निम्न आदमी बुलाए गए हैं'। छोड़ीं ए बात के। एतना त साफे बुझात बा जे शुद्ध हिन्दी ठीक से पचत नइखे। तबो जवन भोजपुरी के सहज गुन ह, ओके छोड़े के ना चाहीं। थोरे नुकसानो होखे तबो ना छोड़े के चाहीं—धरम करत में होखे हानि, तबो न छोड़ीं धरन के बानि'। सोगहग के प्रेम, मगर निर्मल चित्त से, ई सही रास्ता लागत बा।

तनी खुलासा कइके मतलब समुझावतानी। पुराना जमाना से एह देस में दू तरह के भाषा के प्रयोग होत आवत बा। लोकभाषा आउर अभिजात संस्कृत भाषा। कई बार लोकभाषा में बढ़िया साहित्य लिखाइल। थोरहीं बाँचल बा, वेसी त नष्ट हो गइल। बौद्ध लोगनि के, जैन लोगनि के विशाल धार्मिक साहित्य ओह जमाना का लोक प्रचलित बोली में लिखाइल। पालि के बहुते समृद्ध साहित्य मिलल बा। ऊ त हमरा बुझाला जे भोजपुरिये के पुरान रूप हऽ। फेरु प्राकृत में लिखाइल, फेरु अपभ्रंश में लिखाइल। मगर जब तक धार्मिक उपदेश, कुछ प्रेम आ नीति के कविता, कहानी, कुछ ज्ञान वगैरह तक के बात रहे तब तक मजे में काम निकलत गइल। जब दर्शन, तर्कशास्त्र, आदि सूक्ष्म चिन्तन के जरूरत पड़ल तवे फटाफट संस्कृत में लिखाये लागल। कई बार दोहा त लिखाइल अपभ्रंश में मगर टीका लिखाइल संस्कृत में, जइसे कृष्णपाद के 'दोहा कोश' पर 'मेखला टीका'। 'संदेश रासक' अपभ्रंश के बढ़िया काव्य रहे। कवि अब्दुल रहमान त कहले जे जे ना मुरूख होखे ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित होखे, उनहीं लोगनि का सामने ई बार-बार पढ़वि—

जिण मुक्खु न पंडिअ मज्झियार
तिण पुरुउ पढ़िव्वइ सव्व बार।

मगर तीन गो टीका के पता चलल बा—दूगो त छपि भी गइल बाड़ीस—सब संस्कृत में। काहें? दू कारन से। पहिले त जइसहीं आवेगतरल सहज मनोभाव का क्षेत्र से उठि के बिचार का बारीकी का क्षेत्र में पहुँचल गइल तइसहीं अनुभव कइल गइल कि शुद्ध जनभाषा ई कुल करे के राजी ना होई। अब काटलि-छाँटलि, गढ़ल-छीलल, कसावटवाली भाषा चाहीं। याने संस्कारवती भाषा होखे के चाहीं। दूसर कारण ई रहे कि लोक भाषा के क्षेत्र सीमित होला। अगर दूर-दूर तक, विभिन्न भाषा बोले समझे वाला लोगनि तक विचार पहुँचावे के बा त सार्वदेसिक, भले कृत्रिम होइ, भाषा के सहारा लेवे के पड़ी। एही से लोकभाषा के साहित्य ढेर दिन जी ना सकल। जियल ओतने, जेतना के कवनो बड़ा धार्मिक आन्दोलन के सहारा मिलल।

आधुनिक हिन्दी पहिले त लोकभाषा का रूप में चललि। बाकिर जइसे-जइसे ओह में ज्ञान-विज्ञान के उच्चतर सूक्ष्म विचार आवे लागल तइसे-तइसे ओकर लोकभाषा के मूल गुण के ह्रास होखे लागल बा। अब धीरे-धीरे ऊ उहे पद पावे लागल बा जवन पहिले संस्कृत के रहल। अबहियों ओकरा में संस्कृत नाइन कसाव नइखे आइल, मगर आ जाई। विद्वाननि आ विशेष ज्ञानिनि के हाथ में पड़ि जाए से ऊ अभिजात सार्वदेसिक भाषा के रूप ले ले जातिया। जहाँ तक ज्ञान-विज्ञान के सूक्ष्म चिन्तन-मनन-मूलक साहित्य के सवाल बा, हिन्दी निश्चित रूप से सार्वदेसिक भाषा के रूप लिही। बाकिर जहाँ तक रागात्मक अभिव्यंजना के प्रश्न बा, अइसन शिकायति बहुत सुने में आवति बा जे हिन्दी जन-जीवन से दूर होत जाति बा। एक तरह के बौद्धिक कसरत बढ़ोतरी पर बाइ। असल में हिन्दी के रागात्मक अभिव्यंजना उहें सफल होई जहाँ-जहाँ जन-जीवन में घुलल-मिलल भाषा, प्रतीक, विंब, मुहावरा जन-भाषा से लिहल जाई। ईहो प्रवृत्ति हिन्दी में बढ़लि बा। आंचलिक कहे जाए वाली कथा-कहानी में ई प्रवृत्ति कुछ अधिक उजियार लउकति बा। बहुत लोकविधा के प्रवेश भी बढ़ि रहल बा। लेकिन बेसी प्रतिष्ठा पावे वाला साहित्य आ साहित्यकार लोग धरती का ओरि ओतना नइखनि, जेतना आसमान का ओरि बाड़नि। एकर भारी प्रतिक्रिया भी हो रहलि बा। अब हरेक बोली के प्रतिभा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वान साहित्यकार लोग, जन-भाषा का ओरि देखे लागल बा। अब एक तरह के खिचड़ी पकावे के कारवार शुरू भइल बा, नाँव दिहल गइल बा आंचलि-कता। बड़का-बड़का लोग कवे-१वे ईहो कहत बाड़े जे ए से भाषा के नास हो रहल बा। मगर कवनो असर त नइखे देखात। ई जन-भाषा के सच्चा प्रेम का ओजह से हो रहल बा। एही से काफी मजबूत लागत बा। अब त हर बोली के लोग कहे लागल बाड़े जे सही ढंग के रागात्मक अभिव्यक्ति ओही भाषा में हो सकेला जवन जन-साधारण के आपन दुख-सुख के भाषा होखे। भिन्न-भिन्न बोली में कविता-कहानी लिखाए लागलि बाड़ी स। अइसन बुझात बा जे ई प्रवृत्ति बढ़ोतरीए पर जाई।

ई सब बिना कवनो कारण के नइखे होत। इतिहास विधाता का अंगुलि-निर्देश पर होइ रहल बा।

जवना विशाल क्षेत्र के हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र कहल जाला ओमें बहुत बोली बोललि जालीं। ओमें केतना त हिन्दी का भाषाई ढांचा से निकट बाड़ी स, केतना कुछ दूर बाड़ी स आउर कई गो त अति दूर बाड़ी। फिर कई बोली में दीर्घकाल से साहित्य रचना में आपन निजी परंपरा रहलि हा। ब्रजभाषा निकट त बाड़ बाकिर ओकर साहित्य बहुत समृद्ध रहल। अवधी के त साहित्य संसार में प्रसिद्ध बा। राजस्थानी के आपन समृद्ध परंपरा बा। मैथिली त अब स्वतंत्र भाषा माने जाए लागलि। ओकर भाषाई ढांचा दूर के बा। ओकरा दीर्घकाल से साहित्यिक परंपरा रहलि हा। भोजपुरी ना निकट के ह, आ ना बहुत दूर के। साहित्यिक परंपरा एकरो कम पुरान नइखे। हिंदी सबके आपन मानि के चललि। कुछ दिन त कहीं कवनों आवाज ना उठल बाकिर अब बहुत जगह आवाज उठे लागल बा। जमाना अइसन जरे बुताए लायक आइ गइल बा जे कवनो कहीं पत्ता खड़कल ना कि उहाँ राजनीति पहुंचलि ना। भाषावर प्रान्त विभाजन के सिद्धान्त अलगाव के उकसावहीं में मदद कइ रहल बा। जब केहू अपना भाषा के स्वतंत्र कहेला त पहिली शंका ईहे होले कि अलग राज्य बनावे के कवनो दुरभिसंधि त ना ह! रउवां कतनो किरिया खाईं जे हम खाली जन-जीवन के सही अभिव्यक्ति देवे खातिर ई बात कहतानी, बुद्धिमान लोग ना मनिहें। मनवें में चोर बा, केहू के ना जोर बा'!

ई त कवनो समझदार आदमी ना कही कि एक ठे शक्तिशाली केंद्रीय भाषा ना होखे के चाहीं जे एतना बड़ा विशाल देश के एकता बनवले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। ओकरा के राष्ट्रभाषा कहीं, राजभाषा कहीं, संपर्क भाषा कहीं, कवनो फरक नइखे पड़े के। एगो सामान्य सार्वदेशिक भाषा रहल जरूरी बा। संविधान बनावे वाला लोग हिन्दी के चुनले बा। लेकिन बहुत लोग ए बात के माने के तइयार नइखनि। ऊ लोग हिन्दी नइखन चाहत। चाहत बा लोग जे अंग्रेजिए ऊ काम करो। उहे संपर्क भाषा रहो। थोड़ा सरम पहिलवां रहल हा बाकिर धीरे-धीरे अब सरम वाली बात मद्धिम परल जाति बा। अब लोग खुलि के कहे लागल बाड़ जे हिंदी ना, अंगरेजिए सम्पर्क भाषा रही आउर रहे के चाहीं। कठिनाई ई बा जे एह देश के जनता अभी विदेशी के ओतना गुलाम नइखे भइल। घूम फिरि के नजर जाति बा त हिन्दीए पर। बड़का-बड़का लोग जे चाहो कहो, अंगरेजी देश के आत्मसम्मान के उपेक्षा कइ के कबहूं ना चलि सकेले। चली त हिंदीए चली। हम कवनो बनाउटी बात नइखीं कहत। कुछ अंगरेजी प्रेमी लोग सोचे लागल बाड़ जे यदि हिंदी एही परिस्थिति में रही त ओकरा के हटावल कठिन बा, काहे कि कवनो प्रान्तीय भाषा ओकरा आगे सार्वदेशिक भाषा का रूप में ना टिक सकेले। एह कारन से कोशिश ई हो रहल बा कि हिंदी के शक्ति तूरि दिहल जाउ। ए प्रकार के विचार के प्रत्यक्ष रूप अब दिखाई देवे लागल बा। हिंदी का अन्तर्गत आवे वाली बोलिनि में अलगाव के भाव ले आवे के कोसिस हो रहल बा। बाकिर जहाँ तक हम समुझत बानीं हिंदी भाषी कहे जाए वाला लोग ए अस्त्र से घायल ना होइहें। अलग-अलग बोलिनि में सर्जनात्मक साहित्य लिखल भी जाइ आ हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप के सम्मान भी दिहल जाई। भोजपुरी के आदर्श 'सोगहग', बरावर स्वीकृत रही। बाकिर गलत ढंग से सोचे वाला लोगनि से सावधान त रहहीं के परी।

ठीक बात ठीक ढंग से सोचे के चाहीं। भोजपुरी ए कारण से साहित्य भाषा ना हो सकेले कि कुछ थोड़े आदमी का मन में अइसन हुलास बा। हिंदी एह कारण से ना मुरझा जाई कि कुछ लोग चाहताड़े कि ऊ कमजोर हो जाउ। सपूर्ण देश के बहुसंख्यक जनता के जवना से हित होई आ जवना बात के समर्थन मिली, उहे होई। हम का सोचत बानी आ रउवां का सोचतानी एकर महत्व तब होई जब एह सोचला मे देश के बहुसंख्यक जनता के भलाई होई आ ओकर समर्थन मिली। भोजपुरी के साहित्य के वाहन तबे बनावल जा सकेला जब ओहि साहित्य से भोजपुरी बोले वाली जनता के आशा-आकांक्षा का अभिव्यक्ति में सहायता मिले, ऊ कुछ अधिक सुख-सुविधा मान—सम्मान पा सके। राष्ट्रभाषा हिन्दी से एकर कवनो विरोध नइखे। ना कबहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी का सोचे के चाहीं कि ऊ हिंदी के प्रतिस्पर्द्धी हो के रही। ठेठ भोजपुरी शूरता आउर निर्भीकता के भाषा हऽ, बन्धुता आउर सौहार्द के भाषा हऽ। राष्ट्रभाषा हिन्दी भी ओतने आपनि ह जेतना भोजपुरी। दूनों आपन भाषा ह। दूनों के, देश का जनता के सेवा खातिर स्वीकार कइल गइल बा।

कबीर, तुलसीदास, कुंवर सिंह, भारतेन्दु के भाषा छोट उद्देश्य के भाषा कभी हो सकेले? ई सब लोग पूरा देश के, भीतर बाहर से एक आ अखंड करे के साधना कइले बा लोग। भोजपुरी कबहीं छोट बात में ना परल आ ना परे के चाहीं। राष्ट्रभाषा हिंदी हमहन के आपने भाषा हऽ। ओकरा के सजावे-संवारे में भोजपुरी के रक्त आ पसीना कम नइखे लागल। दूनों में लिखीं, दूनों में पढ़ीं, दूनों एके ह। दाहिनी आंखि आ बाईं आंखि में कवनो झगड़ा बा? ब्राह्मधर्म और छात्रधर्म में कवनो बैर बा?— इदं ब्राह्ममिदं क्षात्रम् शापादपि शरादपि।

संविधान में कुछ भारतीय भाषा के मान्यता दिहल बा। बाकिर बहुत अइसन भाषा बाड़ी स जवना के मान्यता त नइखे मिलल बाकिर उनहनि में कुछ-ना-कुछ साहित्य निर्माण हो रहल बा। कुछ दिन तक साहित्य अकादमी संविधान में स्वीकृत भाषनि का साहित्य के पुरस्कार देति रहलि बाकिर एने आ के अइसन भाषा भी पुरस्कार वास्ते स्वीकार कइल गइली हा स जेकर कवनो चर्चा संविधान में नइखे। उद्देश्य रहल साहित्य निर्माण के प्रोत्साहन दिहल। कवनो भाषा राजनीतिक दृष्टि से संविधान के अंग ना होके भी उत्तम साहित्य दे सकेला। राजशेखर कहि गइल बाड़न जे उत्तम व्यक्ति-विशेष काव्य कहल जाला, ओकर भाषा कोई भी हो सकेला। एह बात के आउरो बढ़ाइ के कहल जा सकेला कि रागात्मक संबंध के उजागर करे वाला साहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान मे नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बात बहुत अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाइ जे आगे चलि के ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलिनि के मान्यता देत जाति बा। अब मगर सब बोलिनि में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी, अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिनि के काहे उपेक्षा होई? हम समझतानी जे जब आउर बोलिनि के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के भी अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, कथा-लेखक बाड़नि उनहूं के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख सुख आशा आकांक्षा के अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं। बाकिर ई विशुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव हऽ। एकरा साथे राजनीतिक सौदाबाजी ना होखे के चाहीं। केहू का मन में ओइसन बात होइ त तुरन्ते मन में से ओके हटा देवे के चाहीं।

फेरु हम आप लोगनि के यादि दिलाईं जे हिन्दी आ भोजपुरी के एके समझि के काम करे के चाहीं। दूनों के दुइ मनले झंझटि पैदा होई। विद्यापति जी कहले रहलीं जे 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तं तैसन जंपों अवहट्ठा'। देसिल बयन आपन घर के बोली हऽ। अवहट्ठ सार्वदेशिक भाषा हऽ। आजु का युग में ऊहे हिन्दी बा। विद्यापति जी के कहनाम रहे कि जइसन देसिल बयन हऽ तइस, अवहट्ठ (परवर्ती अपभ्रंश) हऽ। 'तइसन'! कवनो भेदभाव ना राखे के चाहीं। विद्यापति जी दूनों में लिखले रहलीं। हमनो का उहे मानि के चले के चाहीं। मउजि आइल त 'तैसने' हिन्दी। हमन के दूनो भाषा आपने ह। एह क्षेत्र के भोजपुरी लिखे वाला साहित्यकार भी नमस्य बाड़े आ हिन्दी में लिखे वाला भी प्रणम्य बाड़े। भगवान सबकर कल्याण करसु।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

तिसरका अधिवेशन
(सीवान)

के

अध्यक्ष

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

के

अभिभाषण

सीवान

२९ अक्तूबर, १९७७ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, सीवान, के अधिवेशन के संयोजक, कार्य-समिति के सदस्य, प्रतिनिधि अउर इहाँ पधारल सभे जन-गन के हाथ जोरि के परनाम करतानी। रउआँ जवन अध्यक्ष के ई भारी पद हमरा के देके हमार जस इज्जत बढ़वली हँ ओकरा खातिर हम रउरा सब के गुनगाही बुद्धि के त नइखीं सराह सकत बाकी आप सबके उदारता के जरूर सराहत बानी। साँच पूछीं त उदारता से भी बढ़ि के एमें सराहे के बात आपके साहस के बा जो अइसन आदमी के ए पद पर पधरवलीं जे एको अच्छरि भोजपुरी में ना लिखलसि, आ बोले के त ओकर ई पहिले मोका ह। बाकी मंदिर में जब पत्थल के मूरति पधरावल जाले त ओकर ग्यान या देवताइ ना देखल जाला। अरे ऊ त ओके पधरावे वाला ही ओमें देवता के प्रान-प्रतिष्ठा कइ देला अउर पत्थल के ऊ मूरति देवता होके पुजाये लागेले। त हम त अपना के ऊहे पत्थल के मूरति समझतानी। हँ, ई जरूर देखे के बा कि ए मूरति में कहाँ तक आप सब देवबुद्धि के स्थापना कइ सकल बानी। देखीं, हमार गेयान थोरे बा, बाकी हम जानतानी जे आपके धीरता ओ से जबर बा, एह से हम ईहें आप सब से अरज कर तानी कि किरिपा कइ के हमके थोरी देर सहीं—हमके, हमरा गलत-सही अटपट भासा के, हमरा 'अधजल गगरी' गेयान के, अउर सबसे ज्यादा हमरा अगराइल अकचकाइल भाग के। दूर हिमालय से बोलवला पर हमके सहहीं के परी।

हम हिमालय का पच्छिमी छोर से आवतानीं, रिखीकेस-हरिद्वार-कनखल का परे से, देहरा का दून से, देश का पहरुआ का द्वार से। उमर भी थाकि चलल। शेर याद आवता—

मंजिल की सख्तियों ने डराया बहुत मगर
आवारागाने शौक न माने किसी तरह !

और चल पड़लीं। उहाँ देहरादून में हमसे भोजपुरी बोले वाला बस एक ही आदमी बा—पंडित गया प्रसाद शुक्ल। उनसे हमार सदा भोजपुरिये में बतकही होले। घर का भीतर के बोली अंगरेजी ह, कारन कि केरली पत्नी केवल अंगरेजिये बोले-बुझेली, हिन्दी बोलेली त ओकर छेछा-लेदर होखे लागेला। ए से जब सुकुल जी आ जालन त जइसे बरत टूटि के पारन होखे लागेला। जीव छछात रहेला जे केहू भोजपुरी बोले वाला मीलि जाइत। याद आवता एक बेर दखिनी फ्रांस का जावा पर रहलीं, इटली से पेरिस जात रहलीं। आधी रात के, जब घोर निंद्रा में सूतल रहलीं तबे गाड़ी इटली के सरहद पार कइलसि। एगो बर्थ पर हम रहलीं एगो पर एगो नौजवान गोरा रहे। पास्पोर्ट देखे वाला अफसर आइल। अंग्रेजी में बोलि के हम ओके आपन पास्पोर्ट देखावे लगलीं। तबतक दुसरा बर्थवाला नौजवान—जवन पाछे जनलीं कि अमेरिकन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ह—अकचकाइल ऊठल और कूदि के हमरा गरे लागि गइल, कहलसि कि धनि भाग कि अंग्रेजी सुने के मीलल। तीन महीना से फ्रांसीसियन का बीच में रहलीं हँ मगर कम्बख्त जवन अंग्रेजी जानेले स तवनो ना बोलस। आपन भाषा सुनि के मन अघा गइल। ईहे हाल भइल इटली का जेनोआ नगर में। अस्पताल का सामने वाली सड़क पर जइसहीं अइलीं कि एगो नर्स दउरल आइल, कहलसि—कुछ इतालवी कुछ अंग्रेजी में—कि एगो अंग्रेज अपेंडिसाइटिज से मर रहल बा, ओकर साध बा जे हमसे मरे का वक्त केहू दू सब्द हमरा भासा के बोलि दे। हम गइलीं। जइसहीं पहुँचलीं, जैसे ओ नौजवान में नया जान आ गइल। दम ऊ हमरे गोद में तुड़लसि पर मरत-मरत कहलसि कि धनि भाग जे ए बिदेस में हमके हमरा बहिन-महतारी के जबान बोलेवाला मीलि गइल, अब हम खुसी से मुअबि, इचिको कलेस ना होई, धन्यवाद! अमेरिका में कई साल आपन भाषा बे बोलले रहि के जब स्विटजरलैंड पहुँचलीं त बर्न नगर में भारतीय दूतावास में डाक्टर सत्यनारायण सिंह का साथे भोजपुरी में बतिया-बतिया के अघा गइलीं। त भासा के ई सक्ति ह!

हम आप सबसे साहित्य का विसय पर कुछ कहे के चाहतानी। भासा का संबंध में एक से एक पंडित अपने का सम्मेलन में बोलि गइल बाड़े, ओकरा संबंध में ओ लोगन से सुनलहीं होखबि, आगे भी और लोगनि से सुनबे करबि। हमके हमार अटपट 'भणिति' कहे के अनुमति दीं, ओके सुने के आदर देईं, अनुग्रह करीं, हम निहाल हो जाइबि।

सब्दन से भासा बनेले, पर सब्द भासा ना ह। एही तरे भासा से साहित्य बनेला पर भासा साहित्य ना ह। अगर भासे साहित्य होइति त ओह अनेक अफ्रीकी देसन के भासा भी साहित्य कहइती स जहाँ भासा बा पर साहित्य नइखे। तब ऊ कवन चीजु ह भला जवना का पइठि गइला से भासा साहित्य हो जाले? ऊ मनुष्य ह, इन्सान, लोग। सभे भासा के साहित्य मनुष्ये बनावेला, पर सब साहित्य साहित्य काहें ना हो जाला, या कवनो घटिया कवनो उत्तम कइसे हो जाला? काहें कि घोड़ा, बकरी, कुत्ता जाति नियर मनुष्य जाति त ओके बनावेला पर मनुष्य ओ में पइठे ना। जब दरद के साथ, वेदना-संवेदना के साथ मनुष्य ओमें पइठेला तब भासा साहित्य बनेले। ना त केतना हरियल आ हंस सुरझा ताल में रोज मारल जा रहल बाड़े, कहाँ वाल्मीकि जनम तारे? अरे जे क्रौंच-बध से द्रवे, अइसन जन जनमे तब 'आदि कवि' के संज्ञा मिली, चरितार्थ होई। आदमी त सभे जनम लेला पर सभे आदमी इन्सान ना हो जाला। कइसे गालिब कहले—

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मोअस्सर नहीं इन्साँ होना!

और इन्सान बनल भी कवनो आसान बात ना ह—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत सहल हमें जानो, फिरता है फ़लक बरसों
तब खाक के परदे से इन्सान निकलता है !

जे भाव-जातना-संवेदना अइसन संस्कारन से सजल ना ऊ इन्सान कइसन ? हीरा त करिया कोइला से बनेला पर संस्कार से हीरा होला। संस्कारे से सोना अइसन हो जाला जे कसौटी पर कसल जा सके। इन्सान के एही सरूप के महाभारत लिखे वाला महामना व्यास चिन्हले, जब तैंतीस कोटि छछात देवता का रहत, एलान कइले—

गुह्यं तदिदं ब्रह्म ब्रवीमि
न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चित्—

गूढ़ बाति कहतानी, भगवान व्यास कहताड़े, छछात ब्रह्मा-बेदे कहतानी, सुनि के कहतानी, गाँठें बान्ह—मनुष्य से बढ़ि के, ओकरा ले ऊँच, एह धरती पर दूसर केहू नइखे !

एही से न 'हिन्दुस्तान हमारा' वाला इक़बाल भगवान से धिक्कारि के कहले—ऐ खुदा, देख तो तूने हमें क्या दिया और जो तूने हमें दिया उसे हमने क्या बना लिया ? तू ने हमें पहाड़ दिये, हमने उन्हें काट-तराश कर रहने के लिए अपने घर बना लिये; तूने हमें जंगल दिये हमने उन्हें काट-छाँट कर उपवन बना लिये; तूने हमें सूखी-पथरीली ऊसर धरती दी हमने उसमें अन्न की बालें उगाकर लहरा दीं; तूने हमें मिट्टी दी हमने उससे रकाबियाँ-तश्तरियाँ बना लीं; और खदा, तूने जुल्म किया जो हमारे लिये अँधेरी रात बना दी पर इन्सान की औलाद हम कि हमने उसे भी मंजूर किया पर बदले में हमने चिराग बना कर जला दिया, खल्क को रोशन कर दिया !

अइसन इन्सान जब दर्द का साथे अपना भणिति में पइठी तब कहीं ऊ भणिति काव्य कहाये जोग होई, साहित्य कहाई। साहित्य बरना केवल भासा के चमत्कार आ शैली के रंगारंग चूनर ना ह। 'सुगना बसे पहाड़ पर हम जमुना के तीर!' दूर के बासी 'सुगना' आ जमुना तीर के बासी 'सुगनी' के मन जब मीत बनि के, एक होके रमी, तब जाके साहित्य बनी। फेड़ पर रहेवाला सुआ का हिया में, लोककथा में कहल जाला, जब केहू के हियरा बसेला, अइसन, कि एगो के जान छुअला से दूसरको तड़पे लागे, तब साहित्य बनी।

और जियरा के तड़पला के बात आपसे का कहीं ! गाँव के गवाँरिन के बात सुनि के एक दिन हम सन्नाटा में आ गइलीं। सरहजि-ननदोई का बीच हँसी के बात सुनलीं—सरहजि जबाब में कहलसि—बतिया त साँचे कह ताड़ हो, बाकी ई हमके बताव कि लड़ेले त नजरिया आ ब्रथेला करेजवा काहें ? हमरा त लागल कि हजार हाल अवर अमरु, हजार बिहारी आ मतिराम ए पर वारि जइहें !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी, अँगरेजी फ्रेंच, रूसी आदि अनेक भासा के कवितन के असर हमरा ऊपर परल, पर, बचपने में जवन असर हमरा पर भोजपुरी का 'बटोहिया' के परल तवन अपरंपार बा। आजो हमरा पर ओकर असर ओतने ताजा ओतने गहिरा बा जतना बचपन में रहे। हम ओके अपना पढ़ल साहित्य का सबसे प्रभावशाली कवितन में मानी लाँ। इहाँ तक कि प्रौढ़ बयसि में हम अपना एगो किताब के नामे सन् पचास में रखि दिहलीं—तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

शक्ति, प्रभाव आ प्रेरणा तीनों के खानि ह इ कविता। पर जइसे एकदम निकट हो के भी, मर्म होके भी, आँखि अपना के ना देख पावे ओइसहीं निकट के कविता भइला से सायद रउरा सबका ओ पर ओइसन ध्यान ना जात होई जइसन हिन्दी कवितन पर जाला। हम त कहतानी कि जो हम बिदेसी रहितीं और भोजपुरी समुझत रहितीं त अकेले 'बटोहिया' पढ़ला-सुनला का बाद हम भारत देखे खातिर आपन घर-दुआर बेंचि के चलि पड़तीं—पढ़ले तो आप सब ओके होखबे करबि। एकाध लाइनि फेर सुनीं—

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा, से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया !
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा, से
तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

जवना के अंग्रेजी में 'साउंड एकोइंग सेन्स' कहल जाला, ध्वनि मात्र से जेकर अर्थ गूँज उठे ऊ महाप्रान के जगावे वाली लाइन ई ह—

तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

कुछ भासनि के एकाध पंक्ति एही बिधान के अनुसार हमरा यादि रहि गइल, जइसे मैथिली शरण गुप्त के—

जाग रहा है कौन धनुधर जब कि भुवन भर सोता है ? जैसे अकेले एक लाइन में एगो समूचा 'एपिक' खड़ा हो गइल बा। आन्हर कवि, जे बिना लड़ाई देखले, होमर केवल ध्वनि मात्र का प्रेरणा से भोजन-युद्ध के वर्णन अपना वीर काव्य 'ईलियद' में कइलसि—

Tumult on top of tumult
And gods chasing the heels of mortals !

अर्थ कइला के कौनो जरूरत नइखे। हम करबि, केवल ध्वनिये के बा सुनाइबि—दुष्यन्त के, शकुन्तला का चलि गइला का बाद, अपना हिया से—

प्रथमं सारंगाक्ष्या प्रियया प्रतिबोध्यमानमपि सुखम्।
अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दु:ख के वेदना का ध्वनिये से नइखे ब्यापि जात ? एपिक के सरूप देखावे खातिर ई ध्वनिये काफी वा, जैसे गोसाईं जी के भरत का विसय में महाप्राण के उपयोग —

जों न होत जग जनम भरत को
सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?

'सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?' ओही 'एपिक' रूप के सरूप ह। हम पूछनानी जे हमरा देस में 'एपिक'—वीरकाव्य-महाकाव्य एतना तादाद में काहें लिखल गइले —ग्रीक में दू गो-तीन गो, लातीनी में एगो, इतालवी में एगो, अँगरेजी में दू गो, फ्रेंच में एगो, जर्मन में एगो —पर भारत के महाकाव्यन के जो गिनावे लागीं त पार ना लागी। से काहें ? काहें से कि एकरा तीन ओर गहिर-गँभीर सागर घहराता, दुसरी ओर संसार के सबसे ऊँचा सबसे लमहर पर्वतमाला वा हिम के मुकुट पहिनले, गहरा नीला खुला आकाश अइसन दूसर कहाँ वा जेवना के रूप के अनंत बिस्तार से हमनी के पुरुखा विष्णु के सँवरिया रूप सजले ? एक के बाद एक ऋतु और कहाँ एतना नियम से आवेली स ? भला 'सुवहे-बनारस, 'शामे-अवध,' 'शबे-मालवा' और कहाँ वा ? एह सब का पृष्ठभूमि में फेर एक वेर पढ़ीं 'बटोहिया' के। हम त संजम का साथे, अत्यंत मीठ से बचाव करत, केवल कुछ ही पंक्तियन के बोलतानी—

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ
जहवाँ कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया !
पवन सुगन्ध मन्द अगर चननवाँ से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया !
तोता-तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा, से
पपिहा के 'पी-पी' जिया साले रे बटोहिया !

ए कविता में से पंक्ति चुनल कठिन समस्या बनि जाता, कारन कि हर लाइन जानदार बा, पूरा कविते उल्लेख जोग बा। काहें ? काहें कि कवि के जियरा अपना प्रतिपाद्य से एकाकार हो गइल वा, ओमें बसि गइल वा—हिमालय में, हिन्द सागर में, गंगा-जमुना में, देस का पंछिन में, विरहिन में। एही स्थिति से प्रभावित गुप्तकाल के कवि वत्स भट्टी अपना मन्द सौर का कविता में भारत माता के वर्णन करतारे—

चतुस्समुद्रान्त विलोल मेखलां
सुमेरु कैलास वृहत्पयोधराम्।
वनान्त वान्त स्फुट पुष्प हासिनीं
कुमार गुप्ते पृथिवीं प्रशासति॥

माता के पयोधर दुनों सुमेरु आ कैलास, चारों समुन्दर घहरात करधनी, आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समूचा तन बन-परम्परा से बनल, जवना में भाँति-भाँति के फूल निरंतर खिल रह बाड़े स, जवना का ब्याज से भारत माता मुस्का रहल बाड़ी। त याद रखीं कि ज तक कवि अपना भाषा और भाव में, अपना प्रतिपाद्य में जीही ना तब तक ओक कविता जनगर ना हो सकी।

संसार के प्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेन्ड रसेल से एक बार हमार बतकही भइल ऊ संस्कृति और साहित्य का बिसय में अपने लिखल बाति दोहरवले—कि सबके निर्माण तीन चीजु का संमिलन से होला—प्यार का पुकार से, गेया का खोज से, और सकल जीवधारियन के प्रति संवेदना से। मतलब कि 'प्यार के पुकार से' साहित्य बनेला, 'गेयान का खोज से' दर्शन आ विज्ञान, आ संवेदना से दूनो का संगम से संस्कृति। तब हमरा पूछे के परल कि पच्छिमी साहित्य में 'प्यार के पुकार' त बा, 'गेयान के खोज' त खूबे बा, पर भला साहित्य में सब प्राणियन के प्रति संवेदना कहाँ बा?

हमरा इहाँ त साहित्य के पिता बाल्मीकि के आदि काव्य के जनमें संवेदना से भइल। सौ-सौ उदाहरन हमरा इतिहास में बा जेमे समरथ लोग कहले बा जे हमरा राजपाट ना चाहीं, इहलोक-परलोक के सुख-स्वर्ग भी ना चाहीं, मुक्तिओ ना चाहीं चाहीं हमके बस एके चीजु कि संसार के जीव मात्र दुख-दर्द से छूटि जायँ, सुखी ह जायँ। हम बतवलीं कि का बाल्मीकि, का कालिदास, सभी कवियन का नायक-नायि कन का दुख में जीव-जन्तु, तरु-पल्लो तक दुखी होखेला। जवन सुख क अपना खातिर चाहता ऊहे दुसरो खातिर चाहता—ओकर भौंरा फूल तोड़ता ओके प्याला नियर बना के ओमें मधु यानी शराब भरता, फिर अपन भौंरी के पहिले पिया के आधा बाँचल जूठ अपने पियता। हथिनी परा से सुगंधित जल पहिले अपना मुँह में ले ले तीया फेरु ऊ अपना हाथी मुँह में उँड़ेल देत बिआ, हाथी आपन प्यार परगट करे खातिर आपन सूँ हथिनी का पीठ पर रखि देता। चकवा कँवल के डंडी तूरि के पहिले अपने चाखि कि कहीं कड़ुआ ना होखे, चकवी के खाये के देता। कामदेव बसन्त के लेके दुष्य का बाटिका में जाता पर शकुन्तला के निकाल देला से दुखी राजा के देखि के बसन् के सिपाही कौनो वार करे के तैयार नइखें होत—आम बौरा गइल बाड़ें स, भौंर के कोठ पराग से भरि गइल बा, इचिकी कोठ खोल दे त चराचर गमकि जाइ, पर ऊ कोठ नइखे खोलत, काहें से कि मानव-दुष्यन्त दुखी सामने बा। कुरबक जरि से फुलु तक कलिया गइल बा, पर एक्को कली खिल के फूल होखे के तैयार नइखे, काहें दुखी मानव सामने बा। सरद् ऋतु के बितते अनायासे कोयलरि के कंठ फूटि जा और इहाँ सरद् कबके बीति गइल बाकी कोइलरि कंठ में आइल बानी कंठे में जाँ देति बा, फूटे नइखे देति, काहे कि दुखी दुष्यन्त सामने बा। अब कामदेव के हिय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का परो, से ऊ घवड़ा के अपना तरकस से आधा खींचल वान तरकसे में उलटा लौटा देता ! त भाई सभें, इहाँ के साहित्य के परमान त ईहे ह, कि आदमी त दुसरा के हित चहवे करी, पसु पच्छी, पौधा-पल्लो भी आदमी का दुख दर्द से दुखी होखे लागे। अगर मनुष्य प्रकृति से सहचार ना करी त भला ऊ 'अशरफुलमखलूकात'—सृष्टि के सबसे महान् जीव कैसे कहाई

अब ए दृष्टि के, ए परमान के, भोजपुरी साहित्य पर घटा के देखल जाय, तनी। गंगाजी के गीति लेलीं, बिआह, जनेव के, बिरह के लेलीं, सोहर, बारहमासा लेलीं, सब भाव परधान मिलीं जेके सुनि के आँखि छलछला आयी। पच्छिम खड़ी बोली का इलाकन के गीति सुनले बानी—अरे अँगरेजने इंजन चलाया रे, गाड़ी चलायी रे, पानी का बंबा चलाया रे—अरे राम गीतो के दुर्गति ! इहाँ भोजपुरी के गीति सुनि के सोफियाना से सोफियाना आदमी डहरि में रुकि के सुनि के निहाल हो जाय। पर एगो बात बा, तनी कान देके सुनीं—

कालिदास कहले जे पुरान सभे ठीक नाहीं ह, और न कूल्हि नया खराबे ह। पर हम जो भोजपुरी के नई कविता पढ़तानी त लागता कि पुरनके सूघर बा। नवका लागता कि खड़ी बोली के कवितन के निचोड़ ह, छाड़न नियर। कवि लोग समझता कि भासा बदलि गइला से सब बदल गइल। और हाल बा ऊहे खड़ी बोली के निर्दिशा, दिग्भ्रान्त स्थिति। कहीं-कहीं पुरान बारहमासा के चासनी। हम कहतानी कि जेकरा पास कबीर और घाघ के धन बा उहाँ ओ लोगन के सुर काहें नइखे आवत ? 'जो घर जारै आपना, चले कबीरा साथ' के ललकार या 'पंडित चुप-चुप बेसवा मइल' के बोध कहाँ बिला गइल ? विश्वविद्यालयन वाला कवियन से अच्छा त हमरा लागता जे प्रकृत देहाती कवि बाड़न। सुनी ले कि बनारस के एगो कजरीकार कवनों बड़कवा से एक बेर नाराज हो गइल और अइसन कजरी लिखलसि कि उनकर बाहर निकलल कठिन हो गइल। हमरा बस एके-दू डाँड़ी याद बा पर ओतने असाधारन चुटीला व्यंग बा—

खाये के चाहीं सकल पदारथ
बतियावै के गबर गबर।

देखीं कि भोजपुरी में केतना शक्ति बा। बड़कवा के उघारि के धइ दिहलसि। काशी 'के बदमाश-दर्पण' त लामिसाल बा जवन कविता का गहराई में त पइठिये गइल बा, भोजपुरी द्वारा ओह घरी के समाज के उघारि के रखि देता।

भासा पर भी, साहित्य का भासा पर, कुछ कहे के चाहतानी। काहें कि साहित्य सिरजल भासा में जाला, भासे में सोचल भी जाला। रउरौं परतिया के देखि लीं; बिना भासा के सोचि ना सकीं। पहिले जबतक भासा ना रहे तब तक विचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी ना रहे, जब भासा भइल त बिचार गुनाये लागन्न। बिचार भासा का पंख
चढ़ि के ही मानस में परगट होला। जवना भासा में भोजपुरी कविता और कहा
लिखल जा रहल बा ऊ बनावटी लागता, बनावल, प्रकृत ना। भोजपुरी में पइंठ
ओकरे हो के नइखे लिखल जात। साहित्य बनावटी बोली ना ह, ऊ पूरा संस्कृ
पूरा तहजीब ह, लोक-दसा के। सबकाँ ओमें समाये के चाहीं। कई वार त अइ
बुझाला कि खड़ी बोली का सब्दन के भोजपुरी अवतार सामने बा, आ जइसे कवि
हिन्दी सरकारी सब्दावली समझे खातिर मूल अंग्रेजी के याद करे के परेला -- जइ
'अधिशासी अभियन्ता' के माने समझे खातिर कौनो संस्कृत के कोश ना देखे के प
अंग्रेजी मूल 'एग्जिक्यूटिव इंजिनियर' याद करे के परी, आ जैसे रेल में पाखाना
शौचालय का जगह 'प्रसाधन' लिखल देखि के संस्कृत वाला अकचका जाई, ओक
पर बिजुली गिरि परी, काहें से कि संस्कृत साहित्य में एकर खूब-खूब इस्तमाल सिङा
का अर्थ में भइल बा, बाकी ओके बनावे वाला त संस्कृत के भी परम्प
छोड़ि के अंग्रेजी का 'ट्वायलेट' के अनुवाद कई दिहले! भोजपुरी में अइसन प
म्परा ना डाले के चाहीं। नया बाहर से आओ, जरूर आओ, आई ना त भा
समृद्ध कइसे होई? पर छाड़न-छोड़न का रूप में भासा आ भाव मति आओ। स
भोजपुरी सब्दन के भी उपयोग से सब्द सक्ति बढ़वला के काम बा जवन नइखे होत

भासा में हमरा कवनो खोट नइखे। वाक्य एह से केवल तत्सम सब्दन
लेके पूरी इबारत बनाके केवल क्रियापद भोजपुरी जोड़ दिहला से भासा भोजपुरी
हो जाई। बात सही बा जे भासा क्रियापद से ही बनेले, सेस सब्द कवनों होखे।
भासा भासा होखे के चाहीं सब्दन के जोड़ ना। जब इटली के महाकवि दाँते आ
महाकाव्य 'दिवीनो कोमेदिया' लातीनी छोड़ि के इतालवी में रचलसि त उहाँ
तत्समवाला झगड़ा खड़ा हो गइल जवन आज हिन्दी में बा और ओकरे देखा
भोजपुरियो में घर करि रहल बा। इटली में चार सौ साल तक ईहे समस्या 'के
दे ला लिंगुआ' नाम से चलल। आखिर शुद्धतावादी लोगनि के आपन जिद छोड़ि
जन बोली 'लोम्बार्द' स्वीकारे के परल। मगर एकर मतलब ईहो ना ह कि बि
मतलब के सब्द तत्सम ना लिहल जाय। पर ऊ तत्समें रूप में लिहल जाय त भला,
से मूल के अर्थ से सिलसिला कायम रही। जइसे 'समस्या' के 'समसेया' क
बिगाड़ के इस्तमाल कइला के जरूरत नइखे और न भोजपुरी सब्दन के सुद्ध करे
ना त ऊहे बनारस 'वाराणसी' वाली बात हो जाई, गोया 'बनारस' भारत के ज
ना अंग्रेज बनवले ह स। अरे 'रे' और 'ण' के एक साथ उपयोग के इहे हाल हो
वाराणसी स्वभाव से ही 'बनारस' हो गइल।

हमरा पास आजकल किसिम किसिम के भोजपुरी के पत्र-पत्रिका, क
आउर कहानी-संग्रह आ रहल बाड़ स। उन्हनी के पढ़ि के एगो अबरू धारना हँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन में पइठल—अनेक बार स्थानीय सब्दावली के प्रयोग अधिक कइल जा रहल बा। एगो बगसर से कहानी-संग्रह आइल। निकहा-निमन संग्रह। कहानियन के बस्तु-बिसय सब मजगर, बाकी ओमें सब्दन के चुनाव-उपयोग अइसन निचाट बगसरिया-दखिनहा रहे कि समनहीं गंगा पार उजियार के रहे वाला हम आउर जहाँ-तहाँ मतलब ना समुझ पाईं, हुमचि के जब सोचीं तब समुझि आवे। हमरा डर बा जे स्थानीयता-आंचलिकता से भासा का अबूझ हो गइला से सायद ओकरा परचार के आघात पहुँची, सायद ओकर बिस्तार संकीर्ण हो जाई।

ना त भोजपुरी के सीमा रउरा चाहे जेतना खींचीं ओकर बिस्तार साधारन नइखे। अउर ओहू से अधिक बिस्तार ओकरा परभाव के बा। रउरां हजार मैथिली कहीं मगर हमरा कहे में कवनो परहज नइखे जे विद्यापति हमरो हउअनि, हमरा बोली भोजपुरी से परभावित। सोचीं तनी—जनम अवधि हम रूप नेहारल नयन न तिरपित भेला—एमें 'भेला' 'भइले' के न फरक बा? भला—

नव वृन्दावन नव नव तरुगत नव नव विकसित फूल
नवल बसंत नवल मलयानिल मातल नव अलि कूल—

अउर 'झड़प' जी का तत्सम प्रवण 'नटराज' का रूप में का फरक बा? या प्राचीन साधक भुसुकिपाद के ही लेलीं—

आज भुसुकि बंगाली भेली
चंडाली निज घरनी केली

भला भोजपुरी और एमे का अन्तर बा? खैर, ई बात हम परभाव के संबंध में कहतानी। आ परभाव छोड़ भोजपुरी के उपयोग त हो मारिशस, फीजी से पूरबी अमेरिका-सुरिनाम तक फइलल बा। नागपुर का विश्व हिन्दी संमेलन में जहाँ देस-देस के लोग आइल रहे और ओ लोग के हिन्दी का दायरा में लीहल गइल ऊ दायरा वास्तव में भोजपुरी के ह, जदपि हिन्दी से भोजपुरी का कवनो बिरोध नइखे, जवन भोजपुरी के छेत्र ह तवन त हिन्दी के क्षेत्र हइये ह। उहाँ बिदेशी भोजपुरियन से बिचित्र सगम भइल। एगो गोरा अमेरिकन—खाँटी अमेरिकन—कविता भोजपुरी में पढ़लसि कि 'हम त भोजपुरी मे कविता करीले, करबे करबि, करते रहबि!'

जहाँ तक परभाव के बाति बा त ऊ त अइसन बा कि जवन पाली-अर्ध मागधी भोजपुरी के पुरखिन कहल जाले—हालाँ कि हमार बिचार ओह संबंध में दूसर बा, कि ऊ पुरखिन तब के जन बोली ह—आ जवना में बुद्ध महाबीर उपदेस कइलनि ओही के बिरवा आज श्रीलंका में लागि के सिंहली के अश्वत्थ बनि गइल बा, और अगर पटनहिया-भोजपुरिया सिंहली सब्दन पर तनिक बिचार करे त ओके समझे लागी। अरे हम रउरा से का कहीं—रूस का दखिन में जिप्सी-बन्जारन का एगो वूढ़ से पुछलीं—भोजपुरिये में—कि 'रोम?' यानी कि तूं 'रोम' हउअ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाणिनि के सूत्र 'रलयोरभेदाः' के सोचि के। ऊ बूढ़ जिप्सी झट से कहलसि कि 'नेइ, रोम दराज्।' और रोमानिया की ओर हाथ उठा दिहलसि। फिर हम पुछलीं— तब का 'लोम ?' जवाब दिहलसि कि "नेइ, लोम फिलिस्तीन, हम त 'डोम', 'कुरइया वाला डोम' ! ' हम दंग कि 'डोम' त ठीक, बाकी 'कुरइया वाला' का ? तबे अपना आजी के एगो पुरान व्यंग याद परल—जे ही के बबुआ, तेही के दाना, तेही के कुरई ! बस सब उँजियार हो गइल। पुछलीं, दउरी-सूप-कुरूई वाला डोम-वँसफोर ? जवाब मिलल जे 'हैं, हैं, नाट—डोम।' सोचला पर याद परल कि जे के ई 'नाट' कहता ऊ रसरी पर चढ़ि के नाचे वाला 'नट' ह। अकारन नइखे जे मनु अपना स्मृति में नट, नाटक में भूमिका खेले वालन आदि के भी डोम का साथे अछूत मानले बाड़न। मतलब कि हमार भासा बड़ा जनगर बा, ओके आंचलिक मति बनावल जाउ।

और जहाँ तक तत्सम सब्दन के अनुवाद के सवाल बा ओहू में सावधान रहला के जरूरत बा। सब्दे के ना, हम त चाहब जे विश्व के और सबसे पहिले संस्कृत के साहित्य अनूदित होके भोजपुरी में आ जाय, पर सावधानी से, अर्थ के अनर्थ कइके ना। एगो घटना लखनऊ के याद आवत बा—एगो पछिमहा कवि निराला जी से बार बार कहि के अति कइ दिहले कि हम रामचरितमानस के खड़ी बोली में अनुवाद कइ रहल बानी, आदेस पाईं त सुनाईं। निराला जी कहले कि सुनाव। कवि जी सुनवले—

मूल—रघुपति कीरति विमल पताका
दण्ड समान भयऊ जस जाका
अनुवाद—राम सूर्य कुल की हैं झंडी
लक्ष्मण उस झंडी की डंडी

अभी उनका पढ़ला के आवाज गुँजते रहे कि केहू देखल केहू देखबो ना कइल बाकि सूनल सभे निराला जी का थप्पड़ के आवाज तड़ाक से कवि जी का गाल पर !

हमरा जब-जब समय मीलेला तब-तब हम, लिखला के थकान मेटावे खातिर, फिल्म देखे जाईलाँ। संसार के करीब-करीब सभी भासन के फिल्म देखे के हमरा मौका मीलल बा। बाकी हिन्दी के सगरे फिल्मन में हमार मन जवन हरले बा तवन ह भोजपुरी के 'बिदेसिया'। हम एतना लिखलीं पर फिल्मन पर कबो ना लिखलीं। बाकी बिदेसिया देखला पर मन के ना रोकि सकलीं और ओपर लेख लिखलीं। और भी भोजपुरी फिल्म अपना सम्प्रेषण शक्ति में अनमोल बाड़ी स।

एक बात आउर कहबि। मन-कान लगा के सूनि लीं—दार्शनिक से सन्त कहीं महान होला, काहें से कि दर्शन जहाँ ऊपर की ओर तर्क का जोर से बढ़ेला उहाँ सन्त बानी चारू ओर फइलि के ढाई अक्षर वाला प्रेम से छू लेले। कूल्हि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दार्शनिक सहराती रहले, कुल्हि सन्त जनपदी देहाती। दार्शनिक देवभाषा में बोललनि सन्त मानुस बोली में। एही से जहाँ शंकर ना समझल गइलनि उहाँ बुद्ध-महाबीर समझल गइलनि। आ जब ओही लोगन के आचार्य दार्शनिक भासा में लिखे लगलनि, जनपदी भासा छोड़ि दिहलन त दूनो धरम जइसे देहात से बिला गइल। गोसाईं जी, कबीर, रैदास बनल रहिहें।

हमरा देस में कथनी अलग करनी अलग बा। लोगवा कहता कि हम पाँच बरिस में देस से छूआछूत, बाम्हन-डोम के भेद हटा देइबि। आ ऊ कइसे कि नाम का आगा से उपधिया, पाँडे, राय, सिंह, सहाय हटा के। भला हम पूछतानी कि बाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति, तुलसी का नाम का आगे पाँड़े लागल बा कि शर्मा-वर्मा? तब का जाति-पाँति ना रहे? सवाल ई बा कि आपन या अपना बेटा-नाती के बिआह रउराँ दुसरा, बिसेस कर नीच कहाये वाली, जाति में करे के हिम्मत बा? कइले बानी? ना, त जाये दीं, झूठ के पेरी मति।

अब अन्त में, हमार मान्य श्रोता लोग, हम बहुत बोललीं, आप बहुत सुनलीं। सुनेवाला बोले वाला से सदा महान होला, काहें कि ऊ बोलेवाला के बरदास्त कइ लेला, सहि लेला। से रउराँ हमरा के बहुत सहलीं। हम अपना सब के धीरज कभी भुलाइबि ना। हम बोललीं, आप सुनलीं, हम निहाल भइलीं, सरग के तरई छुवलीं! धन्यवाद!

—भगवत शरण उपाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक—दि प्रेस दीप्ति, भिखना पहाड़ी पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय

भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन

के

चउथका अधिवेशन

के

अध्यक्ष

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

के

अभिभाषण

—❀—

आश्रम बरहज, जिला-देवरिया (उ० प्र०)

ता० १४, १५, १६ दिसम्बर १९७८ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषण

—:०:०:—

आदरणीय स्वागत समिति के सभापति महोदय ! माननीय प्रतिनिधिगण, सम्मानित श्रोतावृन्द, बहिन अवर भाई लोगन !

रउरा सभे एह भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर हमरा के प्रतिष्ठित करिके जवन किरिया कइले बानीं एकरा खातिर हम अत्यन्त कृतज्ञ बानीं। जवना पद के डा० उदयनारायण तिवारी, आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी अवरू डा० भगवत् शरण उपाध्याय जइसन अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् लोग सुशोभित कइले बा ओह आसन के अधिकारी हम अपना के बिल्कुल नइखीं समझत। एह महान् सिंहासन पर त भोजपुरी के कवनो गंभीर विद्वान् के बइठावे के चाहत रहल ह। हम त भोजपुरी लोक साहित्य के एगो साधारण शोधी छात्र अवरू अनुसन्धानकर्त्ता हवीं। भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसार खातिर मिशनरी भावना से काम करे वाला साधारण व्यक्ति हवीं। हमरा अइसन सामान्य सेवक के एह बड़ पद पर बइठावल कहवाँ तक समीचीन बाटे एकर औचित्य रउरे सभ समझ सकीं लें।

जब सम्मेलन के प्रधान मन्त्री जी के एह पद के स्वीकार करे खातिर सन्देश पहुँचल तब हम बड़ा असमंजस में पड़ि गइनीं। एक ओर त आपन अयोग्यता के ज्ञान, अवरू दोसरा ओर प्रधान मंत्री के आज्ञा के पालन। अन्त में रउरा सभे के निर्देश के आगे सिर झुका देवे के परल अवरू स्वीकृति भेजि देनीं।

एह पद के स्वीकार कइला से भोजपुरी के सेवा करे खातिर हमरा अधिका अवसर मिली, केवल एगो एही भावना से प्रेरित होके हम रउरा सामने उपस्थित बानीं। हमरा आसा ही नाहीं बल्कि दृढ़ विश्वास बाटे कि रउरा सभे के आशीर्वाद अवरू नेह आ छोह से, अवरू सभ भाइन के सहयोग से, हम एह दुर्वह भार के अपना कमजोर कन्धा पर ढ़ोवे में समर्थ हो सकबि।

भाई लोगन ! एह अवसर पर भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कइल बड़ा कठिन काम बाटे। उपधिया जी अपना "भोजपुरी साहित्य के इतिहास" में एह विषय के साङ्गोपाङ्ग विवेचन कइले बाड़े। एह से हम ओह बात के पिष्ट-पेषण कइल उचित नइखीं समझत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम रउरा सभे के सामने, भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के ऊपर अब तक देस में अथवा विदेस में जवन शोध कार्य हो चुकल बाटे, ओकरे संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करे के चाहत बानीं। इ बात बिना संदेह के कहल जा सकेला, कि भोजपुरी पर अब तक जेतना शोधकार्य हो चुकल बाटे, ओतना हिन्दी के कवनो बोली—अवधी, व्रज, कौरवी, राजस्थानी आदि में नइखे भइल। एह तरह से अनुसन्धान के दृष्टि से, भोजपुरी हिन्दी के उपभासा में प्रथम स्थान के अधिकारी बाटे। भोजपुरी में जतना शोध कार्य भइला बा ओकरा के दुई भाग में बाँटि के बिचार कइल जात बाटे।— (१) भोजपुरी भाषा अवरू (२) भोजपुरी साहित्य। शोध कर्ता विद्वानन में कुछ बिदेशी लोग भी बाटे। उन लोगन के शोध के पता लगाइ के एहिजा प्रस्तुत कइल गइल बा। भोजपुरी भासा खातिर इ कम गौरव के बात नइखे कि एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेन्च, अवरू जर्मन भासा के अतिरिक्त सुदूर स्पेनिश भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला।

दोसर जवना बात के ओर हम रउरा लोगन के ध्यान आकर्षित करे के चाहत बानीं उ संसार के विभिन्न देशन में भोजपुरी भासा के प्रचार अवरू भोजपुरी लोक-संस्कृति के रक्षा बा। मारीशस, सूरीनाम ट्रीनीडाड़ अवरू फीजी में भोजपुरी भासा भासी लोग बहुत बड़ी संख्या में रहेला, उ लोग आपन संस्कृति भी अभी तक सुरक्षित रखले बा। इ कम आश्चर्य के बात नइखे अवरू त का? मारिसस में भोजपुरी के ओहे लोकगीत गावल जाला जवन अपना देस में प्रचलित बाटे।

एह बिवरण से पता चलि सकेला कि भोजपुरी में कितना अनुसन्धान के कार्य हो चुकल बाटे अवरू हो रहल बा। सचमुच इ बात हिन्दी के कवनो बोली अथवा भारत के कवनो भासा खातिर गौरव अवरू अभिमान के विषय बा।

(क) भोजपुरी भाषा:—

(१) भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य करे वाला सर्वप्रथम विद्वान् डा० उदयनारायण तिवारी जी बानीं। इहाँ का आजु से लगभग ४० बरिस पहिले एगो लेख लिखले रहनीं जवना के मथेला रहे "भोजपुरी के एगो बोली" (ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी) ई लेख सन् १६१६ ई० में पटना के "बिहार एण्ड आरिसा रिसर्च सोसाइटी" के शोध पत्रिका में छपल रहे। तिवारी जी प्रयाग विश्वविद्यालय से अपना डि० लिट० खातिर "भोजपुरी भासा के उत्पत्ति अवरू विकास" विषय पर शोधकार्य कइलीं अवरू सन् १६४५ ई० में एहाँ का डि० लिट्० के उपाधि पवलीं। एह तरह से इहाँ का भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध में शोधकार्य के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम्परा के चालू कइलीं। इ ग्रन्थ मौलिक अवरू बड़ा विद्वता पूर्ण बाटे जवना में भोजपुरी भाषा के वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन कइल गइल बा। सन् १९५१ ई० में बिहार राष्ट्रभासा परिषद् तिवारी जी के भोजपुरी भासा के सम्बन्ध में भाषण देवे खातिर निमंत्रित कइलसि। एह अवसर पर इहाँ का जवन भाषण दिहलीं उ "भोजपुरी भाषा और साहित्य" के नाम से राष्ट्रभासा परिषद्, पटना से सन् १९५४ में प्रकाशित हो चुकल बाटे। एह किताब में भोजपुरी व्याकरण के बड़ा साङ्गोंपाङ्ग विवेचन कइल गइल बा।

डा० उदयनारायण तिवारी पहिलका विद्वान् हवीं जे भोजपुरी भासा के अपना डि० लिट् के विषय बना करके शोधकार्य कइलीं। एह से इहाँ का भोजपुरो के विद्वानन् के प्रेरणा के स्रोत बानीं। इहां का अपना निर्देशन में अनेक शोधी छात्रन के 'गाइड' कइके भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के बड़ा सेवा करत बानीं।

(२) डा० विश्वनाथ प्रसाद— इहाँ का कई बरस तक पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष-पद के सुसोभित कइली। एकरा बाद आगरा के "के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भासा विज्ञान शोध संस्थान" के निदेशक रहलीं। विश्वनाथ प्रसाद जी लन्दन विश्वविद्यालयसे भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य कइले बानी। इहाँ के शोध के विषय हवे "छपरा जिले की बोली का ध्वनि शास्त्रीय अध्ययन"। एह शोध प्रबन्ध में भोजपुरी बोली के ध्वनि शास्त्रीय शोध प्रस्तुत कइल गइल बा। जहवां डा० तिवारी के शोध प्रबन्ध में भोजपुरी के व्याकरण के विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत कइल बाटे, उहवां विश्वनाथ प्रसाद जी के थीसिस में भोजपुरी के केवल ध्वनि पर विद्वतापूर्ण अध्ययन बा। इ कहे के कवनों जरूरत नइखे कि एह दूनो महान् विद्वानन् के शोध प्रबन्ध मूलतः अंग्रेजी भाषा में लिखल गइल बा।

(३) हरिहर प्रसाद गुप्त— गुप्तजी बहुत साल तक सरकारी शिक्षा विभाग में काम कइली। इहाँ का "आजमगढ़ जिला के फूलपुर तहसील के कृषक शब्दावली" के अध्ययन कइले बानी। एह ग्रन्थ में किसान के जीवन में खवन जवन शब्दावली के प्रयोग कइल जाला ओकर बड़ा सुन्दर बरनन कइल गइल बा। किसान भाई लोगन के रोजमर्रा के व्यवहार में आवे वाली बोली के भी शोध प्रबन्ध के विसय बनावल जा सकेला एह ओर गुप्तजी लोगन के ध्यान आकर्षित कइले बानीं। अगर एही तरह से भोजपुरी जनपद के सब जिलन के अध्ययन होखे त बड़ा उपकार होई।

(४) डा० नन्दकिशोर राय— इहाँ का कई साल तक "गवर्नमेण्ट जुबिली इण्टर कालेज, गोरखपुर" में प्राध्यापक के पद पर काम कइनीं। राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहब के विषय हवे "गाजीपुर जनपद की कृषक शब्दावली के अध्ययन।" एह शोध प्रबन्ध इहाँ के भोजपुरी किसान भाई लोगन का जीवन से सम्बन्धित जतना भी शब्दावली हो सकेला ओकर संग्रह अवरू विवेचन बड़ा सुन्दर ढंग से कइले बानीं। अवरू त का कहीं, कहाँर लोग पालकी ढोवत, धोबी लोग कपड़ा धोवत जवना शब्दन के प्रयोग करेला ओकरे एह थीसिस में संग्रह बाटे। जवन काम ग्रियर्सन साहब अपना "बिहार पीजेण्ट लाइफ" नामक ग्रन्थ में कइले बाड़न कुछ कुछ ओही ढंग के एह काम के भी समझे के चाहीं।

(५) डा० सत्यदेव तिवारी— तिवारीजी के शोध प्रबन्ध के विषय हवे "बलिया जिले की कृषक शब्दावली का सांस्कृतिक अध्ययन।" इ शोध कार्य डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में भइल बाटे। एह शोध प्रबन्ध के सबसे बड़ विशेसता इ बाटे कि तिवारी जी किसान के हल, फाल, पचरवा आदि जवना विसय के वरनन कइले बाड़न ओकर चित्र अथवा डाइग्राम (नकसा) भी दे देले बाड़े जवना से ओह शब्द के ठीक ठीक अरथ समझे में सहायता मिलल बा।

(६) डा० हरदीप तिवारी— तिवारी के शोध प्रबन्ध के विसय हवे "सारन जिले की घरेलू शब्दावली" जवना में, भोजपुरी जनता अपना घरेलू जीवन में जवन शब्दावली के प्रयोग करेले ओकर अध्ययन कइल गइल बा। इ शोध कार्य डा० शुकदेव सिंह के निर्देशन में भइल बा अउरू बिहार विश्वविद्यालय मे पी० एच० डी० के उपाधि भी मिल चुकल बाटे।

(७) डा० महेन्द्र नाथ दूबे—दूबेजी कई साल तक हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहनीं अवरू आजुकाल्हु "के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भासा विज्ञान शोध संस्थान" आगरा में भासा शास्त्र के रीडर के पद पर बानीं। इहाँ का "आजमगढ़ जनपद की बोली" के भासा शास्त्रीय अध्ययन कइले बानीं।

(८) डा० सरित किशोरी श्रीवास्तव— इहाँ के शोध प्रबन्ध के विसय हवे "वाराणसी के स्थान-नामों का भासा शास्त्रीय अध्ययन,"। इह पुस्तक में इहाँ का काशी नगरी में जवन मुहल्ला, घाट, नदी, नाला, कूप, सरोवर, आदि पावल जाले स, ओकर नाम के निरुक्ति प्रस्तुत कइले बानीं। यूरोप के विभिन्न देसन में "प्लेस-नेम-सोसाइटी" स्थापित बाड़ी स। जवना के एक मात्र उद्देश्य स्थानीय नामन के निरुक्ति अवरू इतिहास के अध्ययन बा। डा० श्री वास्तवजी काशी के स्थान-नामन के भासाशास्त्रीय अध्ययन कइके हमनी के एगो नया दिशा देखवले बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९) डा० शुकदेव सिंह— डा० सिंह आजु काल्हु काशी हिन्दूविश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बानीं। इहां के ग्रन्थ के नाम हवे "भोजपुरी और हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन" जवना में भोजपुरी अवरू हिन्दी के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कइल गइल बा। इ पुस्तक लेखक के कई साल के परिश्रम के फल हवे।

(१०) पं० गणेश चौबे— चौबे जी भोजपुरी के जानल-मानल गंभीर विद्वान् हवीं। इहाँ का अनेक बरिस से भोजपुरी के एगो वृहत् शब्द कोस तैयार करि रहल बानीं। अभी तक कवनो विद्वान् एह गुरुतर काम में हाथ लगावे के हिम्मत भी नइखे कइले। इ त चौबे जी अइसन तलस्पर्शी विद्वान् के ही काम बाटे कि इहाँ का अकेले, बिना कवनो सहायता के, अइसन महान् कार्य के सम्पादित करत बानीं। प्रकाशित भइला पर भोजपुरी भासा के ई पहिलका शब्दकोष अपना ढंग के बेजोड़ होई। आसा बाटे कि इ कोष जल्दी प्रकाश में आइ के भोजपुरी के एगो बड़हन अभाव के पूर्ति करी।

एह तरह से इ बात स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहल बाटे कि भोजपुरी प्रदेश के पांच छः जनपद के भासा शास्त्रीय अवरू लोक शब्दावली के अध्ययन शोधी विद्वानन् के द्वारा प्रस्तुत हो चुकल बाटे। एह जनपदन में वाराणसी, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया अवरू सारन प्रधान बाटे। देवरिया अवरू गोरखपुर जनपद के बोली पर भी अध्ययन हो रहल बा। लेकिन उ अभी देखे में ना आइल बा।

(ख) भोजपुरी लोक साहित्यः—

भोजपुरी भाषा के ऊपर शोध कार्य कइला के साथे ही बहुत से विद्वान् लोग भोजपुरी के लोक साहित्य पर भी अनुसन्धान कइले बाड़े।

(११) डा० कृष्णदेव उपाध्याय— सन् १९२० ई० में लखनऊ विश्व-विद्यालय से लोक साहित्य पर आपन शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कइले जवना के शीर्षक हवे "भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन"। इ ग्रन्थ सन् १९६१ ई० में वाराणसी से छपल बाटे [१]। उपाध्याय जी के बारे में कुछ अधिक लिखल हमरा खातिर अनुचित होई।

(१२) डा० सत्यव्रत सिनहा— डा० सिनहा के शोध ग्रन्थ के नाम हवे "भोजपुरी लोकगाथा"। इ पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग से छप चुकल बाटे [२]। इहाँ का डा० उदयनारायण तिवारी के निर्देशन में प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बानीं। सिनहा जी भोजपुरी प्रदेश में

१-हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, सन् १९६१।
२-हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रचलित लोक गाथन के संग्रह कइके बहुत विद्वत्तापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत कइले बानी जवना में लोरकी, विजयमल, नयकवा वनजारा, सोरठी, विहुला, आल्हा आदि गाथा प्रसिद्ध बाड़ो स। भोजपुरी लोक गाथा के सम्बन्ध में सिनहा जो के इ पहिला शोध प्रबन्ध हवे जवना से बहुत लोगन के प्रेरणा मिलल।

(१३) डा० अर्जुन दास केसरी— ऐहो सिलसिला में डा० केसरी के शोधकार्य के भी चर्चा कय दिहल बहुत आवश्यक बाटे। केसरी जो बड़ा परिश्रम अवरू धीरज के साथ भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गाथा "लोरिकायन" के विभिन्न पाठन (Versions) के संग्रह अनेक लोक-गायकन से गवाइ के लिपि के कारा में बांध लेले बानीं। अभी तक "लोरिकायन" के लिपि बद्ध ना कइल जा सकल रहल हा। एह से डा० केसरी जी एह कठिन काम के सम्पादित कइके भोजपुरी भासी लोगन के वड़ा उपकार कइले बानीं। "लोरिकायन" के एह संग्रह पर उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान छः हजार रुपया के पुरस्कार देई के इहाँ के सन्मानित कइले बाटे। डा० अर्जुन दास जी केसरी "लोरिकायन" के एगो सांस्कृतिक अध्ययन भी अपना शोध प्रवन्ध के रूप में प्रस्तुत कइले बानीं जवना पर काशी विद्यापीठ से इहाँ के पी० एच० डी० के उपाधि भी मिल चुकल बाटे।

(१४) डा० श्याम मनोहर पाण्डेय—अमेरिका के "अमेरिकन इन्स्टीट्यूट आफ इण्डियन स्टडीज" के अन्तर्गत 'लोरिकायन' पर बड़ा महत्त्वपूर्ण शोध कइले बाड़न। ऊ विहार अवरू उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोरिकायन के विभिन्न दस (१०) पाठन (Versions) के टेपरेकार्डिंग कइले बाड़े। लोरिकायन के एक एक पाठ आठ आठ सौ टाइप कइल पृष्ठन में समाप्त भइल बा। जब इ भोजपुरी लोक-गाथा प्रकाशित होइ जाई तब एकर महत्व डा० चाइल्ड के "दि इंगलिश एण्ड स्काटिश पापुलर बेलेड्स" से भी अधिक होई।

(१५) डा० श्रीधर मिश्र— डा० मिश्रजी बम्बई के खालसा कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक बानीं। इहाँ का भोजपुरी के लोक साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत कइले बानीं। इहाँ के शोध प्रवन्ध के शीर्षक हवे "भोजपुरी लोक साहित्य सांस्कृतिक अध्ययन" [१]। एह पुस्तक में भोजपुरी लोक-गीत, लोकगाथा अवरू लोककथा में जन-जीवन के जवन चित्रण पावल जाला ओकर वड़ा गम्भीर विवेचन भइल बाटे। मिश्र जी तलस्पर्शी विद्वान् हईं एह से एह पुस्तक में इहाँ के विद्वत्ता के छाप पावल जात बा।

कई शोधी छात्र भोजपुरी के लोक गीतन के लेई के अनुसन्धान कार्य कइले बाटे लोग जवना में नीचे लिखे लोगन के कार्य प्रशसनीय बाटे।

(१६) डा० हीरालाल तिवारी—डा० तिवारी के शोध प्रवन्ध के नाम हवे "काशिका जनपद के लोक गीत"। डा० श्रीकृष्णलाल के निर्देशन में शोध कार्य

१-हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग सन् १६ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइके तिवारी जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले वानीं। भोजपुरी के पश्चिमी बोली में जवन गीत पावल जाले स ओकरे अध्ययन एह शोध प्रवन्ध में कइल गइल बाटे। काशिका जनपद में भोजपुरी के पश्चिमी रुप पावल जाला। एह से काशी जनपद के लोक गीतन के अनुसन्धान आपन विशेस महत्व रखत बाटे।

(१७) डा० भूदेव पाण्डेय—पाण्डेय जी "भोजपुरी के ऋतु गीतन के अध्ययन" कइले वाड़े। इनकर शोध प्रवन्ध के निर्देशक डा० कृष्णदेव उपाध्याय रहलन। उनुकरे निर्देशन में शोध कार्य कइके आगरा विश्वविद्यालय से पाण्डेय जी पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले वाड़े। यद्यपि इनकरा शोध प्रवन्ध के नाम ऋतुगीतन के अध्ययन वाटे लेकिन एह में प्रधान रूप से मिर्जापुरी 'कजली' के हो अध्ययन पावल जाला।

(१८) डा० हरगोविन्द तिवारी—तिवारी के थोसिस के शीर्षक हवे "भोजपुरी संस्कार-गीतों का अध्ययन"। डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में ही तिवारी जी भी आपन शोध कार्य कइले वाड़न। जहवाँ पाण्डे जो भोजपुरी के ऋतु-गीतन पर अपना शोध कार्य के पूरा कइले ओहिजा तिवारी के काम संस्कार गीतन पर वा। एह तरह एह दूनों लोगन के शोध कार्य एक दूसरा के पूरक कहल जा सकेला।

(१९) श्री रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक'—ओझा जी 'भोजपुरी शब्दानुशासन" ग्रन्थ के रचइता अवरू भोजपुरी जगत् के चिरपरिचित लेखक हवीं। इहाँ का "भोजपुरी लोक-कथा" के ऊपर डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में शोध कार्य कर रहल वानीं। श्री परमेश्वर दूबे 'शाहावादी' भी "पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक कथा के सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य में लगल वानीं। आसा वाटे कि जल्दी ही आप लोग पी०एच०डी० के उपाधि प्राप्त कर लेइवि। कुछ विद्वान् लोग भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन भी प्रस्तुत कइले बाड़े जवना में—

(२०) डा० इन्द्रदेव—के नाम प्रसिद्ध बाटे। डाक्टर साहब के शोध प्रवन्ध के मथेला हवे "भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन"। एह थीसिस पर डा० इन्द्रदेव के लखनऊ विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से पी० एच० डी० के उपाधि मिल चुकल वाटे। इ शोध कार्य सुप्रसिद्ध मानव विज्ञान शास्त्री डा० डी० एन० मजुमदार के निर्देशन में भइल वाटे। इ बड़ा दुःख के बात वा कि अइसन विद्वतापूर्ण ग्रन्थ संभवतः अभी तक प्रकाश में नइखे आइल। इ शोध प्रवन्ध अंग्रेजी में लिखल बाटे अवरू अनेक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण बा।

भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करे वाला-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसरका विद्वान्—

(२१) डा० हरिशंकर उपाध्याय हवे । उपाध्याय जी अमेरिका के इण्डियन विश्वविद्यालय, ब्लू मिंगटन से भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़न जवना पर इनकराके एह विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के डिग्री मिल चुकल बाटे । डा० विश्वनाथ प्रसाद के बाद डा० उपाध्याय दोसरका विद्वान् हवे जेकरा के भोजपुरी पर विदेशी (अमेरिकी) विश्वविद्यालय से शोध डिग्री प्राप्त भइल बाटे ।

(२२) डा० गंगाचरण त्रिपाठी— डा० उदय नारायण तिवारी के निर्देशन में सन् १९५८ में आपन शोध प्रबन्ध लिखले जवना के शीर्षक बाटे "भोजपुरी, ब्रज तथा अवधी का तुलनात्मक अध्ययन"। एह थीसिस पर त्रिपाठीजी के प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० उपाधि मिल चुकल बा। भोजपुरी ब्रज अवरु अवधी भासा में उपलब्ध लोक गीतन के एह शोध में बड़ा ही गम्भीरता पूर्ण विवेचन कइल गइल बा। भोजपुरी लोक गीतन के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी इ पहिलका प्रयास हवे।

(२३) डा० किरन मराली – डा० मराली के शोध प्रबन्ध के मथेला हवे "भोजपुरी तथा अवधी लोकगीतन में रामकथा"। एह थीसिस में मराली जी भोजपुरी अवरु अवधी में रामकथा के जवन स्वरुप मिलेला ओकर तुलनात्मक अध्ययन कइले बाड़ी। डा० पाण्डेय के बाद डा० मराली के इ दूसरका अध्ययन हवे जवना में तुलनात्मक दृष्टि से विचार कइल बाटे। आजु काल्ह मरालीजी मदन मोहन मालवीय महाविद्यालय, भाटपार रानी, जिला देवरिया में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बाड़ी।

(२४) डा० अमर बहादुर सिंह के शोध के विसय हवे "भोजपुरी और अवधी सीमा बोलियों का अध्ययन"। एह शोध प्रबन्ध पर डि० फिल० के उपाधि सन् १९६० ई० में इनकरा मिल चुकल बा।

(२५) डा० वकील सिंह—जो श्री सोमेश्वर महाविद्यालय, अरेराज चम्पारन जिला में प्राध्यापक हवीं। इहाँ का बिहार विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "चम्पारन की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" पर डाक्टर कामेश्वर शर्मा के निर्देशन में शोध कइके पी० एच० डी० पवले बानीं।

(२६) डा० महन्त मिश्र के शोध के विषय हवे "भोजपुरी का क्रिया पद"। इ अनुसन्धान पटना विश्वविद्यालय से भइल बाटे। भोजपुरी क्रिया पदन पर संभवतः इ पहिलका शोध प्रबन्ध हवे।

(२७) डा० चन्द्रसेन कुमार जैन—उत्कल विश्वविद्यालय, सम्बलपुर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हवन। सन् १९७५ ई० में "ओड़िया और भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्ययों का तुलनात्मक अध्ययन" पर उत्कल विश्वविद्यालय से इहाँ के पी० एच० डी० के उपाधि मिल चुकल बाटे ।

(२८) विदेशी विद्वानन में भोजपुरी भाषा पर काम करे वालन में जान अरब किलवड़ा प्रसिद्ध बाड़े । इन विदेसन में जहवाँ जहवाँ भोजपुरी लोग बसल बा ओहिजा जाइ के उ लोग के बोली के नमूना एकत्रित कइले बाड़न । इ शोध के काम केतना व्ययसाध्य, श्रम साध्य अवरू समय साध्य बा एकर अनुमान सहज में ही कहल जा सकेला ।

(२९) श्री रामेश्वर ओरी—मारिसस देस के निवासी रहले हा । इ अपना देस के भोजपुरी के स्वरूप पर संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी विद्यावारिधि (पी० एच० डी०) के उपाधि पवले बाड़न ।

लोकोक्तियाँ:—

भोजपुरी लोकोक्तियन पर तीन चार विद्वान् शोध कार्य कइले बाड़न जवना में- डा० सत्यदेव ओझा अग्रणी बाड़े । डा० ओझा के शोध के विषय "भोजपुरी लोक्तियों का अध्ययन" हवे । ओझा जी हजारन लोकोक्तियन के संग्रह कइके एकर अध्ययन प्रस्तुत कइले बाड़न । एह विषय में इ सर्वप्रथम प्रयास भइला के बावजूद भी एह प्रबन्ध के आपन महत्व बाटे । अभी तक ओझा जी के इ प्रबन्ध प्रकाश में नइखे आ सकल इहे दुःख बाटे ।

(३०) डा० शशिशेखर तिवारी—डा० तिवारी भोजपुरी साहित्य के एगो विद्या भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न जवन "भोजपुरी लोकोक्तियाँ" के नाम से छप भी चुकल बाटे ।(१)एह पुस्तक के वक्तव्य में डा० कुमार विमल लिखले बाडे कि "डा० शशिशेखर तिवारी ने प्रस्तुत ग्रन्थ में लगभग पाँच हजार भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन कर उनका भाषा वैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया है" । एही कथन से एह ग्रन्थ के कुछ महत्त्व समझल जा सकेला । वास्तव में एह ग्रन्थ में भोजपुरी प्रदेश के सांस्कृतिक अध्ययन संक्षेप में प्रस्तुत कइल गइल बाटे । परिशिष्ट में लगभग १५०० लोकोक्तियन के संग्रह भी दिहल गइल बा जवन स्वयं में बड़ा महत्वपूर्ण कहल जा सकेला ।

(३१) डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' —जे चतुरी चाचा के नाम से अधिक प्रसिद्ध बाड़न' भी भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न । इनकरा 'एम० ए० के थीसिस के नाम हवे "भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे" । एह पुस्तक में तिवारी जी लोकोक्तियन के वर्गीकरण कइके सुन्दर विवेचन कइले बाड़न । संभवत: "भोजपुरी मुहावरन" पर तिवारी जी के शोध

१–बिहार राष्ट्र-परिषद, पटना से सन् १९७० ई० में प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयास सबसे पहिला हवे। एम० ए० के थीसिस होत भी इ ग्रन्थ कवनो पी० एच० डी० के शोध प्रबन्ध से कम नइखे। भोजपुरी गद्य के क्षेत्र में तिवारी के बड़ा नाम बाटे जवना के वर्णन दोसरा अवसर पर कइल जाई

(३२) श्री शत्रुघ्न पाण्डेय—पाण्डेय जी बलिया में लक्ष्मीराज देवी इण्टर कालेज में उपाचार्य बाड़े। इ "भोजपुरी के सन्त कवियन" पर आपन शोध प्रस्तुत करे में लागल बाड़न। भोजपुरी प्रदेश में अनेक सन्त, महात्मा अवरू साधु पैदा भइलन जेकर 'बानी' अभी तक प्रकाश में नइखे आइल। पाण्डेय जी अइसन सन्तन के कविता के अध्ययन कइके काशी विद्यापीठ, वाराणसी से आपन थीसिस प्रस्तुत करि रहल बाड़व।

भोजपुरी लोक नाट्यः—एह विषय पर भी शोध कार्य हो चुकल बाटे।

(३३) डा० भरत सिंह—डा० सिंह के शोध के शीर्षक हवे 'भोजपुरी लोक-नाट्य'। इ शोध डा० दशरथ ओझा के निर्देशन में भइल बाटे जवने पर आगरा विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० मिल चुकल बाटे। भरत सिंह जी अपना शोध में भोजपुरी के लोक नाट्यन के अतिरिक्त आधुनिक नाटकन के भी सम्मिलित कइ ले ले बाड़े जवन वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नइखे।

(३४) श्री आद्या प्रसाद द्विवेदी—द्विवेदी जी बलिया के सतीशचन्द्र डिग्री कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक बाड़न। इ भोजपुरी के लोक नाट्यन के अपना अनुसन्धान के विषय बनवले बाड़े। इनकरा शोध के विसेसता इ बाटे कि गोड़ऊ, चमरऊ, कहरवा, धोबिया आदि लोक नाटकन के स्वयं देखि के इ ओकर विवेचन कइले बाड़न। भिखारी ठाकुर के बिदेसिया नाटक के बड़ा सुन्दर अवरू विस्तृत बर्णन बाटे।

(३५) डा० प्रियम्बदा गुप्त—प्रियम्वदा जी डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पी०एच०एच०डी० प्राप्त कइले बाड़ी। इनकर शोध के विषय हवे "लोक जीवन में लोक विश्वासों तथा अन्ध परम्पराओं का अध्ययन"। इ अपना विषय के पहिलका शोध प्रबन्ध हवे। भोजपुरी जन जीवन में प्रचलित विश्वासन के एह में गंभीर अध्ययन कइल बाटे।

(ग) विदेशी लोगन के द्वारा भोजपुरी में अनुसन्धान कार्यः—

भारतीय विद्वानन के अतिरिक्त कुछ विदेशी शोधी छात्र भी भोजपुरी लोक साहित्य पर अनुसन्धान कार्य कइले बाड़न जवना के संक्षिप्त विवरण एहिजा प्रस्तुत कइल जात बाटे।

(३६) डा० जितका हरटोग—डा० जितका एगो चेकी महिला हवीं जे विआह के कारन अव स्विस हो गइल बाड़ी। चेको स्लोवाकिया के प्राग जवना के चेकी लोग प्राहा कहेला विश्वविद्यालय में इ हिन्दी अवरू भोजपुरी के अध्ययन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइके भारत में भोजपुरी लोक गीतन पर शोध कार्य करे खातिर आइल रहलीं। कई महीना तक भोजपुरी प्रदेश में भ्रमण कइके इ लोक गीतन के संकलन कइलीं अवरू ओही आधार पर आपन शोध प्रवन्ध लिखलीं। इनका थीसिस के नाम हवे "फोक साङ्गस आफ बलिया डिस्ट्रीक्ट" अर्थात बलिया जनपद लोक गीत। एह शोध प्रवन्ध पर स्विटजरलेण्ड के बर्न विश्वविद्यालय से इनकरा के पी० एच० डो० डिग्री मिल चुकल बा। एह प्रकाशित ग्रन्थ में डा० जितका भोजपुरी लोक गीतन के रोमन अक्षरन में लिखि के अंग्रेजी में अनुवाद कइले बाड़ी [१]।

मूल रूप में इ शोध प्रवन्ध जर्मन भासा में लिखल गइल रहे लेकिन ओकर समधिक प्रचार के दृष्टि से डा० जितका अंग्रेजी में अनुवाद कइके छपवले बाड़ी। जितका के भोजपुरी भाषा के ज्ञान वहुत अच्छा बाटे जवना के पता पुस्तक में लिखल टिप्पणी से चलत बाटे। कहाँ स्विटजरलेण्ड अवरू कहवाँ भोजपुरी प्रदेश के बलिया जनपद, लेकिन भोजपुरी के माधुरी एह विदेशो महिला के भी अपना ओर खींच लिहलसि।

(३७) मिसेज कैथोराइन—कैथोराइन फ्रान्सीसी महिला हवीं। पहिले इ पूना विश्वविद्यालय में फ्रेन्च भासा के प्राध्यापक रहलीं। डा० कृष्णदेव उपाध्याय के द्वारा सम्पादित भोजपुरी लोक गीत भाग १ से २०० गीतन के लेइ के इ फ्रेन्च भासा में ओकर अनुवाद कइले बाड़ी। भोजपुरी गीतन के अनुवाद अवरू टिप्पणी (नोट्स) लिखि के इ पेरिस विश्वविद्यालय से आपन थीसिस प्रस्तुत कइले बाड़ी। इनकर निर्देशक रहली हा डा० वादविल जे लोक साहित्य के जानल मानल विदुषी हवीं।

(३८) श्री ओ० हेनरी— इ एगो अमेरिकी शोधो छात्र रहले जे भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़े। बलिया अवरु गाजीपुर के कइगो गाँवन में रहिके इ भोजपुरी समाज के बड़ा नजदीक से अध्ययन कइले। अनेक त्योहारन के अवसर फोटो लेके अवरु लोक गीतन के टेप रिकार्ड कइके इ अमेरिका ले गइल बाड़न।

(३९) मिस सेन्द्रा फेगन — कुमारी फेगन आस्ट्रेलिया देश के मेलवोर्न नगर के निवासी हईं। इ अपना देशके मोनाश विश्वविद्यालय से संगीत शास्त्र में डिग्री लेके भारत में भोजपुरी लोक संगीत पर शोध करे खातिर आईल बाड़ी। आजु काल्हु इ भोजपुरी के कुछ लोक गीतन के अंग्रेजी भाषा में पद्यानुवाद करे में लागल बाड़ी। आसा बाटे कि भोजपुरी गीतन के सगीत पक्ष पर इनकर शोध प्रयास सफल होई।

(४०) एह समय वाराणसी में वहुत से विदेशी छात्र विशेषकर

१—स्विटजरलेण्ड के एगो संस्था से प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमेरिका से आइल बाटे लोग जवना में कुमारी लिण्डाहेस के नाम प्रसिद्ध बा। इ रामलीला पर शोध कार्य कर रहल बाड़ी। एह साल कुआर में जवन दसहरा बीतल हा ओह समय इ रोज राति खा रामलीला देखे खातिर रामनगर जात रहली हा। एही घटना से उनुकर रामलीला के प्रति प्रेम के पता चलल बाटे। एगो दोसरा अमेरिकी छात्र भोजपुरी लोक नाट्य पर शोध काम करत रहले हा। उ आपन अनुसन्धान कार्य खतम कइके अमेरिका लवटि गइल।

इ बात जानि के बड़ा खुसी होत बाटे कि भोजपुरी भासा के माधुरी से प्रभावित होके अनेक बिदेशी छात्र लोग एह क्षेत्र में शोध कार्य कारि रहत बाड़न लेकिन इ बड़ा दुःख के बात बाटे कि इ बिदेशी लोग अतना काम हमनी के भासा पर करि रहल बाड़न लेकिन हमनी का हाथ पर हाथ रखिके बइठल बानीं जा।

(घ) बिदेसन में भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसारः—

भोजपुरी भासा के प्रचार एह देस के अलवा संसार के अनेक देसन में भी पावल जाला। आजु से सौ डेढ़ सौ बरिस पहिले, जवन भोजपुरी भाई लोग ब्रिटिश सरकार के जाल में फंसि के बिदेस गइलन उ लोग अपना साथे आपन 'मतारी भासा' भी ले गइल। इ कुछ कम अचरज के बात नइखे कि आजु सैकड़न साल बीति गइला के बाद भी उ लोग आपन भासा के जोगाइ के रखले बाटे अवरू अपना संस्कृति के अभी भी नइखे छोड़ले लोग।

आजु संसार के अनेक देसन में भोजपुरी के भासा भासी लोग पावल जाला। मारिसस, फीजी, ट्रीनीडाड़, सूरीनाम, ब्रिटिश गाइना, केनिया, युगाण्डा, सिंगापुर, बर्मा, नेपाल आदि अनेक देसनमें भोजपुरी भाई लोग लाखनके सख्यामें बसि गइल बा लोग। अतने नाहीं, ओह देस के राजनीति में इ लोगन के प्रमुख हाथ भी बाटे। मारिसस के वर्तमान प्रधान मन्त्री डा० सर शिवसागर राम गुलाम हमनी के हो भाई हवन अवरू ब्रिटिश गाइना के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री डा० छेदी जगन एही भोजपुरी धरती के ही रतन हवे आजु काल्हु भी डा० छेदी जगन के अपना देस के राजनीति में एगो प्रधान स्थान बाटे। हम सब भोजपुरी भाई लोगन खातिर इ कतना गौरव अवरू अभिमान के बात बाटे कि आजु से कुछ साल पहिले मारिसस अवरू ब्रिटिश गाइना इ दुई गो देसन के प्रधान मन्त्री के महान पद के भोजपुरी भाई लोग सुसोभित करत रहे अवरू आजु भी मारिसस के प्रधान मन्त्री के पद के सोभा एगो अपने भाई बढ़ा रहल बाड़े।

मारिसस देस में आधा से अधिक जनसंख्या भारतीय लोगन के बाटे। ओहिजा भारत के बिभिन्न प्रान्तन के लोग जाइ के बसल बा। लेकिन सभी लोग भोजपुरी भासा ही बोलेला। विश्व हिन्दी सम्मेलन के दोसरका अधिवेसन में जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश से प्रतिनिधि होई के गइल रहें, ओह लोगन से पता चलल की ओह देस में भोजपुरी भासा के अखण्ड साम्राज्य बाटे। यद्यपि ओह देस के राजभासा फ्रेन्च हवे, अवरू कुछ लोग स्थानीय भासा क्रियोल भी बोलेला, लेकिन अधिकांस लोग अपना घरेलू अवरू दैनिक व्यवहार में भोजपुरी के ही प्रयोग करेला हम अधिका का कहीं, आजु तक ओहिजा भोजपुरी के लोक गीत प्रचलित बाटे। अवरू लड़िका के जनम आ बिआह अइसन मांगलिक अवसर पर गीत गावल जाला।

गाँव के लोग मारिसस के 'मरिचि' देस कहेला। इ बात त परसिद्धे बा कि एहिजा के लोग 'गिरिमिटिया प्रथा' के अन्तर्गत ओह देस में गइल रहे। धन अवरू सोना के लालच देई के सरकारी एजेन्ट जवना के गिरिमिटिया कहल जात रहे—सीधा सादा लोगन के फंसाई के ओहिजा ले जा स। एह बात के प्रतिध्वनि मारिसस के एगो लोक गीत में पावल जाला।

"सोनवा के लालच से हम गइनीं मरिचि देसवां।
कि माटी हो गइल सोना अइसन देहीं।"

एह गीत के पंक्ति में भोजपुरी भाई लोगन के मरिचि देस के यात्रा के इतिहास छिपल बाटे।

जे भोजपुरी लोग मारिसस गइल, उ लोगन के बड़ा कष्ट उठावे के परल। दिन रात ऊखी के खेत में काम करे के पड़त रहे। खेत के कोड़ऽ, जोतऽ खाद दऽ- अवरू गोंडऽ रात दिन इहे काम रहे। अगर कवनो गलती होइ जाइ, त अंग्रेज जमींदार के कोड़ा सहे के पड़त रहे। अतवार के दिन भी छुट्टी ना रहे। रोज कोड़ा के पिटाई अवरू बेंत के मार। इहे दिन चर्चा रहे। मारिसस देस में प्रचलित एगो लोक गीत में भोजपुर भाइन के दुरदसा के बड़ा सजीव अवरू दर्दनाक चित्रण कइल बाटे। गीत सुनीं।

"अंगाजे [1] रहल भइया, अंगाजे रहल भइया।
एक महीनवा में पाँच गो रुपइया हो ॥१॥
खाये के मोटका चाउर, रहल खूबे लाल।
कोकों [2] के तेल आउर खेसारी के दाल ॥२॥
ओढ़े के गोनो [3] अवरू सूते क चटइया हो।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल हो ॥३॥
सेमेनवा [4] भर रहलीं साहेबवा के गुलाम हो।
दिमास [5] के दिनवा मदमवा [6] के गुलाम हो ॥४॥
पूजा पाठ छोड़ि के तूं कोरवे [7] दे दे भइया हो।

१-इन्गेज अर्थात् शर्तबन्दी कुली। २—नारियल। ३—बोरा (गनी बेग) ४—सप्ताह ५ रविवार ६ मैड़म (श्रीमती अर्थात मालकिन) ७-ड्यूटी (निश्चित काम)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्धा पर कुदारी लेके लापेल[8] तुहुँ जइब हो ।५।
दरिया[9] देविदे[10] करिके फिमिया[11] बिछइब हो ।
कपार पर बाल्टी लेके लांग्रे[12] ढोइब मइया हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।६।
लांग्रे नाहीं ढोइब त, तू मारू[13] कहइब हो ।
साहेबवा के लठिया से मार तुहुँ खइब हो ।७।
एक दिन के बदले दुई दिन मारू होइब हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।८।
मजदूर के दुःखवा के जब सुनलन हाल हो ।
मोरिस[14] में अइसन दोक्तेर[15] मनी लाल हो ।९ ।
अउर गुलामी के जंजीर तुरके[16] गइलन हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।१०।

एह गीत से दुई बातन के स्पष्ट पता चलत बाटे—(१) प्रारम्भ में मारिसस में गइल भाईन के दुरदसा अवरू (२) भोजपुरी भासा के स्वरूप । मारिसस के भोजपुरी में कितना परिवर्तन हो गइल बाटे । एकर भी पता चलत बा । ऊपर के गीत में अंग्रेजी, फ्रेञ्च अवरू क्रियोल भासा के शब्दन के भी प्रयोग पावल जात बा । एह से ए गीत के भासा शास्त्रीय दृष्टि से भी बड़ा महत्व बाटे ।

सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका में स्थित एगो छोट देस हवे । एहिजा भी भोजपुरी बोले वाला लोग अधिक संख्या में पावल जाला । कईगो विद्वान लोग सरनामी अब सूरीनाम के एही नाम से पुकारल जात बाटे । भोजपुरी के अध्ययन करि रहल बाड़न । सूरीनाम के निवासी एगो भोजपुरी भाई जेकर नाम श्री मोती राम माढ़े हवे—हालेण्ड देस के विश्वविद्यालय में "सरनामी भोजपुरी अवरू उच भासा के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन" विसय पर आपन शोध कार्य करि रहल बाड़न । उ दुई बार भारत भी आईल रहलन । अपना देस में प्रचलित लोक गीतन के भी सुनवलन जवना में से एगो गीत रउरा सभे के मनोरंजन खातिर हम सुना रहल बानीं । सूरीनाम के भोजपुरी लोकगीत—

"सुनऽ सुनऽ सरनाम के वासी, चार जुगन के एक कहानी ।
रास्ता में आरकाटी मिलि गइल, बेचि के ले दिहलसि दाम ।
वादा के सरकार कहलसि देस खुसी से जावऽ ।
काटि के गिरमिट पांच बरिस के, तोहरा के मिलि इनाम ।।

८–उपेस्थिति, हाजिरी ९–गन्ने की जड़ १०–मिट्टी हटा करके ११–गोबर की खाद १२–विष्ठा १३–अनुपस्थित १४–मारिशस १५–डाक्टर १६–तोड़करके, बन्धन काट कर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाज के अन्दर कईं महीना, नया मुसीबत कटलीं।
सात समुन्दर, काला पानी, बड़ा कस्ट से गइलीं ॥
मक्खी फँसल सहद में आके, हो गइल पूरा गुलाम।
खेत में मेहनति दिन रात कइनीं, निनिया भइल हराम ॥"

एही तरह से फीजी, ट्रीनीडाड़ अवरू ब्रिटिश गाइना आदि देसन में प्रचलित भोजपुरी भासा के स्वरूप के उदाहरण दिहल जा सकेला। "बिदेसन में भोजपुरी भासाके स्वरूप" एह बिसय पर बड़ा सुन्दर अनुसन्धान हो सकेला। आसा बाटे कि केहू विद्वान एकरा के आपन शोध के आधार बनाईं।

मारिसस अवरू सूरीनाम देसन में व्यवहृत भोजपुरी लोक गीतन के उदाहरन रउरा सभ के सामने प्रस्तुत कइला में हमार केवल एके उद्देश्य बाटे कि सब भोजपुरी भाई लोग एह बात के जाने कि हमार भासा संसार के कतना देसन में बोलल जाले अवरू हमार लोक संस्कृति ओह देसन में कतना अक्षुण्ण रूप से आजु भी सुरक्षित बाटे।

भोजपुरी अकादमी के स्थापना

इ जानि के रउरा सभे के बड़ा प्रसन्नता होई कि बिहार के राज्य सरकार पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना कइलसि ह। एह काम खातिर बिहार सरकार के जतना प्रशंसा कइल जाव सब थोड़ा बा। एह से भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के अभिवृद्धि आ उन्नति में बहुत सहायता मिली। एह सम्मेलन के ओर से हम बिहार के मुख्य मन्त्री जी के बहुत आभार स्वीकार करत बानी। भोजपुरी केवल बिहार के भासा ना हवे बल्कि उत्तर प्रदेश के नव गो जनपद के निवासी लोगन के भी मात भासा हवे, अवरू इ मध्य प्रदेश में भी बोलल जाले। एह से अकादमी के कार्य समिति में अवरू साधारण सदस्य समिति में सभी जनपद के प्रतिनिधित्व होखे के चाहीं इ बहुत जरूरी बाटे। बिहार सरकार अवरू अकादमी के वर्तमान अधिकारी लोग एह बात पर धेयान दिही लोग अइसन आसा बाटे।

कुछ सुझाव—भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के उन्नति खातिर आप सभ विद्वानन के सामने कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहल बानी। आसा बा कि रउरा सभे एह पर जरूर धेयान देबि।

१—अखिल विश्व भोजपुरी भासा भासी सम्मेलनः—

रउरा सामने हम निवेदन करि चुकल बानीं कि संसार के अनेक देसन में भोजपुरी बोले वाला लोग बसल बा। एह सभ भाइ लोगन के एक जगह पर एक मंच पर, एकत्रित कइला के जरूरत बाटे। एह से एगो अखिल विश्व भोजपुरी सम्मेलन कइला के आवश्यकता मालूम पड़त बाटे जहवाँ सभ भाई लोग मिलि सकसु। एह सम्मेलन से इ पता चली कि संसार में भोजपुरी भासा के प्रचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहवाँ कहवाँ बाटे अवरू हमार लोक संस्कृति ओहिजा कवना रूप में सुरक्षित बा। हम जानत बानी कि इ काम बड़ा कठिन बाटे। एकरा खातिर समय, श्रम, शक्ति अवरू धनराशि खर्चा करे के पड़ी। लेकिन संसार में कवनो काम असम्भव नइखे। अइसन सुने में आइल हा कि पटना में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आयोजन निकट भविष्य में होखे वाला बाटे। उ दिन भोजपुरी भासा भासी लोगन खातिर बड़ा मांगलिक अवरू 'सुवर्ण दिवस' होई जवना दिन अनेक देसन के लोग एक मंच पर एकत्रित होकर भोजपुरी में आपन विचार के आदान प्रदान करी लोग। हम ओह मंगलमय दिवस के हृदय से कामना करत बानी।

(२) विश्वविद्यालय में भोजपुरी के मान्यता—भोजपुरी के उन्नति खातिर इ बात बहुत जरूरी बाटे कि भोजपुरी प्रदेश में स्थित विश्वविद्यालयन द्वारा भोजपुरी के मान्यता दिहल जाय। इ बहुत प्रसन्नता के बात बाटे कि बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में भोजपुरी विभाग के स्थापना हो गइल बा अवरू ओहिजा इण्टर आ बी० ए० में भोजपुरी के पढ़ाई भी प्रारम्भ बा। आसा बाटे कि एम० ए० में भी जल्दी ए पढ़ाई शुरु हो जाई। पटना, गया, राँची, प्रयाग, वाराणसी अवरू गोरखपुर विश्वविद्यालय में भी भोजपुरी के विभाग स्थापित होखे के चाहीं जेहसे छात्र लोग विश्वविद्यालय के स्तर तक भोजपुरी के अध्ययन करि सके।

(३) भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना— भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के सर्वाङ्गीण समुन्नति खातिर भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना अत्यन्त आवश्यक बाटे। भोजपुरी प्रदेश में बहुत से धन कुबेर बाड़न जे चाहसु त अकेले ही एह विश्वविद्यालय के स्थापना के साकार कर सकेलन। हमार सुझाव बा कि अइसन विश्वविद्यालय के स्थापना देवरिया अथवा आरा में कइल जा सकेला। देवरिया जनपद में अनेक 'राजा' लोग बाड़न जे अपना उदारता के परिचय देइ के अक्षय कीर्ति कमा सकेला। अइसहीं आरा में इ काम धनी लोगन के किरिया से सम्भावना के परिधि भीतर ले आवल जा सकेला।

(४) भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन— भोजपुरी में सन्त साहित्य के अगाध भण्डार भरल बाटे। भोजपुरी के सन्त कवि लोगन के रचना उनुकरा मठ के वेठन में बाँधल पड़ल बा। आजु तक ओह ग्रन्थन के प्रकासन ना हो सकल। जवना से भोजपुरी के अमूल्य साहित्य अभी तक प्रकास में नइखे आ सकल। एह से इ काम बहुत जरूरी बाटे कि एह अनमोल पुस्तकन के छापि के प्रकाशित कइल जाइ। भोजपुरी अकादमी एह काम के आसानी से करि सकेले।

भोजपुरी में अनेक नवयुवक कवि अवरू लेखक लोग बाटे जे अपना रचना के प्रकासन के अभाव में अधखिली कली नियर बिना विकासे पवले मुरझा जात बा लोग। एह से एह लेखकन के भी रचना के प्रकाशित करें के चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकासन के सम्बन्ध में भोजपुरी अकादमी अवरू सम्मेलन की नीति बहुत उदार होखे के चाहीं। हमरा कहे के मतलब इ बा जे लोग 'भोजपुरी में' अथवा 'भोजपुरी पर' लिखे उ दूनों प्रकार के रचना छापे के चाहीं। अगर केहुँ विद्वान भोजपुरी के व्याकरण, इतिहास अथवा शब्दकोष हिन्दी में लिखत बाटे ओकरो पुस्तक प्रकाशित करे के चाहीं। इतने नाहीं, अगर अंग्रेजी अथवा जर्मन भासा में भी भोजपुरी सम्बन्धी रचना मिले त ओकरो स्वागत करे के चाहीं। भोजपुरी भासा, साहित्य अवरू संस्कृति पर कवनो भासा देसी अथवा विदेसी में लिखल ग्रन्थ स्वागत अवरू प्रकाशन के पात्र बाटे।

(५) रेडियो स्टेशन के स्थापना — भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के सम्यक् प्रचार खातिर भोजपुरी प्रदेश में एगो रेडियो स्टेशन के स्थापना वांछित ही नइखे, बल्कि अनिवार्य भी बाटे कवनो भासा के प्रचार खातिर सिनेमा अवरू रेडियो इ दूनों आधुनिकतम साधन हवे। भोजपुरी में आजु तक एक दर्जन से भी अधिक फिल्म बनि चुकल बाड़ी स, जवना से भोजपुरी के धुंआ धार प्रचार हो रहल बाटे। कलकत्ता अवरु बम्बई अइसन महानगरी में भी भोजपुरी फिल्म धूप मचा देले बा। कइगो फिल्म निर्माण के अवस्था में बाटे जवना के 'शूटिंग' वाराणसी, आरा अवरु पटना में हो चुकल बा। एह तरे भोजपुरी के फिल्म पक्ष बहुत सशक्त बाटे।

लेकिन रेडियो के द्वारा भोजपुरी के जइसन प्रचार होखे के चाहीं ओइसन नइखे होत। हम मानत बानीं कि वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर अवरु पटना रेडियो स्टेशन से भोजपुरी लोक गीत अवरु वार्ता के प्रसारण होखेला, लेकिन अतना ही पर्याप्त नइखे। भोजपुरी अइसन महान भासा के प्रचार खातिर एगो पृथक् रेडियो स्टेशन के आवश्यकता बाटे जवना के स्थापना देवरिया, गाजीपुर, बलिया, छपरा आ आरा आदि कवनो स्थान में कइल जा सकेला। भोजपुरी के एगो फुल फ्लेज्ड रेडियो स्टेशन के बिना काम ना चलि सकेला।

भोजपुरी प्रदेश के महत्व

भारत में प्राचीन काल से ही भोजपुरी प्रदेश के बड़ा महत्व चलि आइल रहल बा। ऋग्वेद में जवन 'भोजाः' शब्द आइल बा उ भोजपुरी लोगन के वाचक ह कि ना एह में विवाद हो सकेला लेकिन षोड़श महाजनपद के काल में कोशल, कौशाम्बी अवरू मगध आदि जनपद एही प्रदेश के सीमा में रहे। एही प्रदेश में भगवान बुद्ध अवरू महावीर जइसन क्रान्तिकारी सुधारक पैदा भइलन जेकर कीर्ति से भारतीय इतिहास भरल पड़ल बाटे। एही देवरिया जनपद के कुशीनगर स्थान में तथागत निर्वाण प्राप्त कइले अवरू गोरखपुर जिला में अवतार लिहलन। भगवान महावीर अवरू जैन धर्म के अनेक तीर्थंकर लोगन के जन्म एही प्रदेश में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल बाटे। सच पूछो त भारतीय इतिहास में जैन अवरू बौद्ध धर्म के रूप में क्रांति के आवाज एहिजे से बुलन्द भइल। गाजीपुर जिला के सैदपुर भितरी नामक स्थान में परम प्रतापी गुप्त वंश के राजा स्कन्दगुप्त विदेशी आततायी हूण लोगन के पराजित कइले। इ पराक्रमी वीर जमीन पर सूत के राति बितवलन अवरू युद्ध में पृथ्वी के भी कम्पायमान करि देलन। शिला लेख में लिखल बाटे कि—

"हूणैर्यस्य समागतस्य समरे, दोर्भ्यां धरा कम्पिता"।

गोरखपुर में गोरखनाथ जी समाधि बाटे जे नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तन करिके पाखण्ड, ढोंग अवरू अनीति के नष्ट कइलन।

वाराणसी में अपना धर्म के मान्यता प्राप्त करे खातिर के ना आइल। शाक्य सिंह अइले, भगवान शंकर अवरू वल्लभाचार्य भी अइले। भोजपुरी के प्रथम कवि महात्मा कबीर के त इ जन्मभूमिए हवे। कवनो जमाना रहे जब भोजपुरिया जवान शेरशाह के नेतृत्व में दिल्ली तक पहुँच के सिंहासन पर आपन प्रभाव जमा लेलन। आधुनिक युग में भी स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति भारत रत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद एही भोजपुरी धरती के रतन रहलन अवरू आजु भी बाबू जगजीवन रामजी भारत के रक्षा मन्त्री के रूप में एह देश के रक्षा के भार सम्हरले बानी। विद्वान, पण्डित, कवि अवरु कलाकारन त इ भूमि जन्मस्थली ह। कहाँ तक गिनती गिनाईं। एह भोजपुरी भूमि के चप्पा चप्पा में क्रान्ति के बीज बिखरल पड़ल बाटे। 'कश्यप जी' अपना एगो कविता में लिखले बाड़न कि—

"फक्कड़ कबीर के बोली में बोले वाला, इ भोजपुर आग के पूतला हऽ।
चौदहों जिला सब गरजि उठे जब एक बार, तब एकरा आगे सउसे पृथिमी कुछ नाह।

ठीक। इ बात बिल्कुल ठीक बाटे। जब हमनी का सब भाई मिलि के खड़ा हो जाइबिजा, तब कवनो काम कठिन नइखे। गोसाईंजी कहले बाड़न "का चुप साधि रहे बलवाना" अब बइठला के मौका नइखे। काम करे के चाहीं अवरू एह उपनिषद के मन्त्र के ध्यान में रखे के चाहीं—

"उत्तिष्ठात, जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत।"
उठीं, जागीं, अवरु अब काम के लगि जाईं॥

जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !!

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक : पंकज प्रिंटिंग प्रेस, बरहज (देवरिया)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पाँचवाँ अधिवेशन

मो ती हा री

अध्यक्ष

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

अध्यक्ष, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी

के

भा ष ण

१४ - १५ - १६ मार्च, १९८० ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरीभाषी बन्धुगण,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष का आसन पर अपने लोगन हमरा के बइठा देहलीं। हमहूँ विना संकोच वइठ गइलीं। हम संकोच करीं कि फायदा देखीं? हमरा मुफ्त में मान मिलल; विना कवनो योग्यता आ भोजपुरी का सेवा के अध्यक्ष के आसन मिलल। मुफ्त के मान आ माल के ना चाहे, खास करके आज का युग में? हम समझ नइखीं पावत कि एह मान खातिर हम अपना भाग के सराहीं कि अपने लोगन का प्रेम के। जे भाग में रहेला ऊ घूमफिर के मिल जाला; आदमी ओकर पात्र होय भा ना होय। अपना देश में अब पात्र के विचार आ खोज भी कमे होता; केहू के कहीं वइठा देहल जाता। समाज में समता के माँग वा, एह से पात्र-अपात्र, योग्य-अयोग्य, भला-बुरा, होशियार-गँवार के भेद-भाव छोड़ के सवका के एके नजर से देखे के परिपाटी वढ़ रहल वा। बुझाता कि हमरा भाग से इहे नजर हमरो पर पड़ गइल ह ना त एह मान-सम्मान लायक हम बानी ना। भोजपुरी के वनावे-सँवारे के काम वहुत निष्ठा से कुछ धुनी-गुनी लोग कइले वा, कर रहल वा। एह आसन पर ओह लोग का बइठला से गुण के आदर होइत, आसन के भी शोभा वढ़ित। हमार योग्यता त अतने वा कि भोजपुरी हमार मातृभाषा ह। ई मातृभाषे के महिमा ह कि एक अदना आदमी विद्वान्, कवि, कलाकार लोग का वीच में आदर के पात्र वन गइल। हम अइसन महिमा-मंडित मातृभाषा के प्रणाम करतानी, साथ ही अपने लोगन के भी, जे "कीटोऽपि सुमनःसंगाद् आरोहति सतां शिरः" के कहावत चरितार्थ कर देलीं हँ।

भोजपुरी के दिनदिन विकास-प्रसार हो रहल वा; उत्तम से उत्तम कविता, कहानी, उपन्यास, निवंध रचा रहल वा, कइगो पत्रिका निकल रहल वा। ई वड़ा खुशी आ संतोष के वात वा। भोजपुरी साहित्य के प्रगति जतना तेजी से आ जतना बढ़िया से हो रहल वा ऊ भोजपुरीभाषी लोग खातिर गर्व आ गौरव के चीज वा। हमरा सामने वहुत रचना आइल जे कवनो भाषा का साहित्य से टक्कर ले सकता। प्रगति का एह गति के कायम रखे के जरूरत वा। लेकिन जब कवनो चीज के दायरा वढ़ेला त ओकर ठीक से देखरेख आ संगिरहो जरूरी होला। भोजपुरी वहुत दूर में फइलल भाषा वा। कहावत ह कि "चार कोस पर पानी वदले, आठ कोस पर वानी"। जब आठ कोस पर वानी अर्थात् भाषा में अन्तर हो जाला त जवना भाषा के विस्तार लगभग पचास हजार वर्गमील में वा, ओह में आठ कोस वाला सिद्धांत का मुताविक काफी अंतर भइल अनिवार्य वा। आरा, छपरा, मोतिहारी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे भोजपुरी बोलल जाला ओह में भी अंतर बा लेकिन बनारस, जौनपु
आजमगढ़ जात-जात ऊ अंतर बड़ा साफ देखाई देबे लागेला। एह अंतर
जतना कम और सीमित राखल जा सके ओतना अच्छा होई। बोले
अंतर त कम ना होई लेकिन लिखे के अंतर कम हो सकता, होखे के चाहीं
भाषा के स्थिरता आ सुबोधता खातिर ओकर एकरूपता बहुत जरूरी ह
एह दृष्टि से भोजपुरी का वर्तनी (स्पेलिंग) में एकरूपता ले आवे के प्रया
होखे के चाहीं। अवहीं त हाल ई बा कि जेकरा जइसे भावता ऊ ओइसहीं लि
रहल बा। ई भाषण लिखे का समय हमरा मन में बहुते शब्दन के रूप
लेके संदेह पैदा होत रहल; कवनो नियम चाहे आदर्श सामने ना रहला
हमरा काफी असुविधा भइल आ जे लिखलीं ओकरा के ले के पूरा इतमीन
अवहियों नइखे। संदेहन के थोड़ा-बहुत समाधान हम अपने कर ले
बाकिर ओकरा से संतोष ना भइल, मन ना मानल। साँच पूछीं त ई का
एक आदमी का बस के हइयो नइखे; एकरा खातिर सामूहिक प्रयास के जरू
बा। भोजपुरी के जतना बोली बा ओकर प्रतिनिधि लेखक, संपादक
भाषाविज्ञान के कुछ विद्वान् मिल के एकरा ऊपर विचार-विमर्श करस;
जे निर्णय होय ओकर ठीक से पालन कइल जाय, तबहीं ई कठिनाई दूर हो
हरेक आदमी अगर मनमानी करी त भाषा मेल से अधिक भेद के कारण
जाई। भाषा के सवाल बड़ा नाजुक ह। ओह पर गंभीरता से वि
करे के चाहीं। अँगरेजी के वर्तनी बड़ा गड़बड़ आ दोषपूर्ण बा, ई सब
जानता, मगर ओकरा में एगो बड़ा भारी गुण बा कि ऊ एकरूप बा।
जहाँ जाईं स्पेलिंग एके मिली। लंडन, एडिनबरा, प्लिमथ आ शेफील्ड
अँगरेजी के उच्चारण में बहुत अंतर बा। इंगलैंड आ अमेरिका का अँग
के उच्चारण में जे अंतर बा ओकरा बारे में त कुछ कहले बेकार बा। बो
अतना अंतर भइला पर भी लिखे में प्रायः कवनो अंतर नइखे आ जे बड़लो
से नाममात्र के। कहे के मतलब ई कि अँगरेजी लिखाता एके वर्तनी
स्थान-भेद से ओकरा उच्चारण में अंतर चाहे जतना हो जाय। लिपि
भाषा में अंतर रहबे करेला; कवनो भाषा जइसे बोलल जाला ओइ
लिखाय ना। बोले के सब बारीकी लिखे में आइए नइखे सकत। द
बात ई कि लिपि स्थायी होला; भाषा कुछ ना कुछ लगातार बदलत रहे
अँगरेजी के हजारन शब्दन के जे उच्चारण आज से कुछ सौ साल पहिले
ऊ आज ना रह गइल बा तबहूँ लिखाता ओही रूप में जवना रूप में
लिखात रहे। एही से तब के साहित्य पढ़े में आज के पाठक का भी कठि
नइखे। अगर हर सौ साल या सौ कोस पर वर्तनी बदल जाय त ति
साहित्य समझल असंभव हो जाई।

लिपि का सवाल पर हम जे अतना जोर दे रहल बानी ओकर एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारण बा। भोजपुरी के शिक्षा के माध्यम बनावे के माँग चल रहल बा। ई माँग पूरा होखहीं के बा। तब जरूरत होई किताब के। किताबन में दस तरह के वर्तनी चलावल ना उचित बा, ना संभव। अगर मनमानी वर्तनी चलत रहल त समूचा भोजपुरी क्षेत्र में मान्यता प्राप्त करे वाली किताब कइसे तैयार होई ? आज कहीं-कहीं भोजपुरी के जे वर्तनी देखे में आवता ओकर मारल लड़िका जिन्दगी में कबहूँ हिंदी शुद्ध ना लिख सकिहें। शब्दन के अतना ममोर-चमोर देहल जाता कि ऊ पहचाने में नइखे आवत। अगर हर आदमी पाणिनि बने लागी त भाषा छिन्न-भिन्न हो जाई। तत्सम से जे तद्भव रूप बनेला ओकर कुछ नियम बा, आ नियम के इतिहास बा जवन सैंकड़न साल से काम कर रहल बा। ओकरा पर ध्यान ना देला से भाषा में अराजकता आई आ अराजकता कवनो क्षेत्र में अच्छा ना ह।

एह प्रसंग में अपने सभन का विचार खातिर हम एगो सुझाव राखे के चाहतानी। हिंदी में तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशी, चार तरह के शब्द प्रचलित बा। तत्सम के रूप उहे चलेला जे संस्कृत में रहल बा। का भोजपुरी खातिर भी एही नीति के अपनावल अच्छा ना होई ? एकरा से लाभ ई होई कि ऊ रूप हिंदी आ संस्कृत दुनू भाषा खातिर एके रही। शब्द के जवना रूप के बचपन में अभ्यास हो जाला ऊ जल्दी बदले ना, बल्कि हमेशा कायम रह जाला। तत्सम रूप अपनवला से शब्द के वर्तनी बार-बार बदले के आ सीखे के जरूरत ना पड़ी। दोसर ई कि लिखित भोजपुरी हिंदी आ संस्कृत का अधिक से अधिक नियरा रही। एह से हिंदी चाहे संस्कृत सीखल भी आसान होई। भोजपुरी में शब्दन के अधिक ऐंठ देला से हिंदी-संस्कृत सीखे में लड़िकन के कठिनाई बढ़ जाई आ आगे चल के उलझन होखे लागी। हमनी का अपना के केन्द्र में ना राख के आगे आवेवाला पीढ़ी के केन्द्र में राख के भाषा-संबंधी नीति पर विचार करीं त मुनासिब होई। एकर बहुत अच्छा रास्ता तुलसीदासजी बना गइल बानीं। उहाँ का संस्कृत छोड़ के लोकभाषा में 'रामचरितमानस' लिखलीं लेकिन तत्सम शब्द के प्रयोग में कोताही ना कइलीं आ ओकरा के समझे में अपढ़ जनता का भी दिक्कत ना भइल। ई रास्ता बड़ा साफ आ सुन्दर बा; साँच पूछीं त राजमार्ग बा। ओह राजमार्ग पर चलला से कबहूँ आ कतहूँ लड़खड़ाए के मौका ना आई। ई सुझाव उच्चारण का दृष्टि से भी महत्त्व के बा। प्रायः बिहार के हिंदी उच्चारण के बिहार का बाहर आलोचना होला। पुस्तकन में तत्सम रूप छपला पर अगर उच्चारण में त्रुटि रह जाता तब ममोराइल-चमोराइल शब्दन के जे संस्कार मन में बइठ जाई ओकर उच्चारण कइसन होई, एकर अनुमान बहुत कठिन नइखे। अगर क्रिया आ कर्म के किरिया आ करम लिखाए लागल त सचमुच ओकर किरिया-करम हो जाई। भाषा के प्रकृति बहुत नाजुक चीज ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा में हरसट्ठे हेरफेर ना होखे के चाहीं।

दोसर समस्या बा शिक्षा के। धीरे-धीरे आवाज उठ रहल बा कि शि के माध्यम भी भोजपुरी होखे के चाहीं। सवाल बा कि कहाँ तक, क रूप में ? हिंदी साहित्य के निर्माण में भोजपुरी क्षेत्र के बहुत बड़ा योगदा बा। जे विद्वान् आ मनीषी लोग हिंदी में लिखल ओह लोग के बुद्धि-वि कम ना रहे, अपना मातृभाषा के प्रेमो अबर-दुबर ना रहे। ऊ लोग राष्ट्र आउर आत्महित दूनू के जोड़ के चलल। हमनी का भी कुछ करे का प अच्छी तरह से सोच-विचार लेवे के चाहीं। अपने लोगन का सोचतानी, हमरा मालूम नइखे लेकिन हम जे सोचतानी ओकरा के अपने सभन का सा राखे के चाहतानी। शिक्षा का माध्यम का रूप में भोजपुरी प्राथमिक क तक चल सकता; ओकरा आगे चलावे का बारे में ठीक से सोच लेहल ब होई। देखल जाय त आज भी प्राथमिक कक्षा के पढ़ाई भोजपुरीए में होत किताब सिर्फ हिंदी में रहेला बाकिर मास्टर लोग बोलेला, पढ़ावेला भोजपु में। हमरा याद बा कि अगर कभी स्कूल में मुँह से हिंदी निकल जात र डाँट का साथे इहो सुने के पड़त रहे कि "आरबी छाँट तार" लड़िकन के हि में बोलल बहुत शिक्षक लोग अशिष्टता मानत रहे। कहे के मतलब ई किताबे भर हिंदी में होत रहे; पढ़ाई के माध्यम भोजपुरीए रहे। ओकरा से बेशी अतने करे के बा कि प्राथमिक कक्षा के किताब भी भोज में हो जाय। प्राथमिक कक्षा का बाद से आजे लेखा हिंदी माध्यम रहे चाहीं। ऊपर का क्लासन में बी० ए०, एम० ए० तक भोजपुरी साहित्य विषय का रूप में राखल जा सकता जइसे आज भी कई भाषन के साहि रहता। ई सिर्फ हमार सुझाव बा, निर्णय त भोजपुरी के विद्वान् लोग करे के बा।

एक तीसर समस्या, जवना पर हम कुछ कहे के चाहतानी, बा साहि निर्माण के। साहित्य-निर्माण के रूप का होखे के चाहीं, दिशा का होखे चाहीं, एह विषय में भी पूर्वज लोग रास्ता देखा गइल बा। आजे अ ओह घरी बहुत क्षेत्रीय भाषा रहे। भारत अइसन विशाल देश में बहुत क्षे भाषा भइल कवनो अचरज के बात नइखे। क्षेत्रीय भाषा एक से विद्वानन के मातृभाषा रहे आ ओह लोग का भी अपना मातृभाषा से प्रेम होई। दार्शनिकन में शंकराचार्य के मातृभाषा मलयालम रहे, रामानुजा के तमिल, मध्वाचार्य के कन्नड़, वल्लभाचार्य के तेलुगु। एही तरह से ग आयुर्वेद, अलंकारशास्त्र आदि के भी विद्वान् भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में लोग जेकर मातृभाषा उहाँ-उहाँ के भाषा रहे। एह लोग का सामने ज्ञान-विज्ञान के पुस्तक लिखे के अवसर आइल त ई लोग अपना-अपना म भाषा में ना लिख के संस्कृत में लिखल जे ओह घरी के राष्ट्रभाषा रहे। ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंकराचार्यजी आपन वेदांतभाष्य मलयालम में लिखले रहितीं त ओह से कतना आदमी का लाभ होइत ? मगर संस्कृत में लिखला से ओह ज्ञान-गंगा में पूरा देश डुबकी लगा के निहाल हो गइल। मतलब कि ज्ञान-विज्ञान के भाषा संस्कृत रहल जेह से पूरा देश खातिर ऊ सुलभ भइल। एकरा साथे कविता, नाटक, कहानी वगैरह में लोग अपना-अपना क्षेत्रीय भाषा के भी प्रयोग कइल। कविशिरोमणि कालिदास तक ले अपना नाटकन में संस्कृत का साथे प्राकृत के प्रयोग कइले जे ओहघरी के लोकभाषा रहे। नाम गिनावे में बहुते नाम गिनावे के पड़ी। कहे के अभिप्राय बा कि जहाँ गंभीर विषय के विवेचन हमेशा संस्कृत में होत रहे, उहाँ ललित साहित्य के रचना संस्कृत का साथे-साथे लोकभाषा में भी होत रहे। ई हिसाब बड़ा साफ, व्यावहारिक आ उपयोगी बा। एकर अनुसरण आज भी उचित होई। डाक्टरी, इंजिनियरी, कानून, विज्ञान वगैरह के उच्च कक्षा में पढ़ावे लायक किताब अबहीं हिंदी में भी तैयार ना हो सकल ह जब कि करोड़न रुपया खर्च हो चुकल आ पिछला पचास-साठ साल से लगातार काम हो रहल बा। तब अइसन हालत में भोजपुरी में एह विषयन के ले आवे में कतना समय लागी ? आ लगला पर भी ओकरा से फायदा का होई ? एह से हमार ख्याल ई बा कि ज्ञान-विज्ञान खातिर हिंदी के राखे के चाहीं आ ललित साहित्य—कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध—खातिर भोजपुरी के प्रयोग करे के चाहीं। जब हम कहतानी कि ज्ञान-विज्ञान हिंदीए में राखल अच्छा होई त हमार मतलब बा उच्च ज्ञान-विज्ञान से। गाँव-देहात का काम में आवे वाला साहित्य—जइसे खेतीपाती, बागबानी, सिंचाई, स्वास्थ्य, सफाई वगैरह के सूचना—भोजपुरीए में रहे के चाहीं जेह से कम पढ़ल लोग भी ओकरा से पूरा फायदा उठा सके।

साहित्य-निर्माण के चर्चा उठला पर एक बात अउरो कहे के चाहतानी। स्वतंत्रता-प्राप्ति का बाद सरकारी सहायता पर निर्भर करेके प्रवृत्ति बहुत बढ़ गइल। सरकार के पल्ला बिना पकड़ले कवनो काम करे के कोई चाहते नइखे। ई लक्षण प्रगति के बाधक ह। सरकारी सहायता से, सरकारी आश्रय में, सरकारी संकेत पर जवना साहित्य के निर्माण होई ऊ कभी स्वस्थ, सबल आ प्रेरक ना हो सकता। शासन-तंत्र का चक्की में पड़ला पर जानदार से जानदार चीज बेजान हो जाला। शासन-तंत्र से बढ़ के प्रतिभा के रस सोखेवाला कवनो दोसर चीज ना ह। गोस्वामी तुलसीदास आ महाकवि केशवदास के उदाहरण एकर बहुत अच्छा प्रमाण बा। स्वतंत्र रहला से तुलसीदासजी के प्रतिभा आकाश चूमे लागल, भारत के एक छोर से दोसरा छोर तक छा गइल, अइसन ओज आ तेज जगवलस कि लड़खड़ात समाज तन के खड़ा हो गइल। दोसरा ओर राजदरबार का छाया में केशवदास के प्रतिभा के विकास रुक गइल; ओकरा से ना केहू के लोक बनल, ना परलोक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथवा त एके बा बाकिर 'रामचरितमानस' में राम भगवान् बन गइले आ 'रामचंद्रिका' में प्रभावहीन नायक भर रह गइले। भाषा आ साहित्य के विकास सरकारी छाया में दब जाला। एह से जरूरत बा कि स्वतन्त्र रूप से उत्साह से, भोजपुरी साहित्य के विकास के संगठित प्रयास होय। भोजपुरी समाज में आउर कुछ के कमी भले होखे, बल या उत्साह के त कमी कभी ना रहल। जरूरत बा थोड़ा संगठन के। सरकारी तंत्र में हिंदी के जे गति बा ओकरा से शिक्षा लेवे के चाहीं। संचिका बड़ा सार्थक शब्द चलल। संचिका के कामे ह सँच के राखल। ओह में से कुछ निकल जाए त संचिका नावें गलत हो जाई। हिंदी का तैंतीस बरिस संचिका में कसमसात हो गइल लेकिन अभी तक निकल ना सकल। बिहार में त कुछ निकलवो कइल मगर दिल्ली के हाल मत पूछीं। उहाँ हिंदी लिखल त दूर, लोग का बोले में भी लाज लागेला।

भाषा आ साहित्य के प्राण-शक्ति लोकजीवन से मिलेला। लोकजीवन से कट गइला पर ऊ निर्जीव हो जाला। भोजपुरी में लोकसाहित्य एही से जादे बा कि ऊ लोकजीवन में हमेशा रमल रहल, ओकरा से कबहुओं अलग ना भइल। भोजपुरी भाषा आ भोजपुरीभाषी के पौरुष के भी कारण इहे रहल बा। हमरा विचार से एकरा के पुष्ट करे खातिर हर जिला में एक सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना अच्छा होई जवना में लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य के आयोजन समय-समय पर होत रहे। एह से संगठन में सहायता मिली, अपना संस्कृति के प्रेम बढ़ी, साथे-साथे ऊ शहर आ गाँव के बढ़त खाई पाटे के भी काम करी। अब त देहात के लड़िका भी भैंस चरावत, घास गढ़त 'रामचरितमानस' के चौपाई का बदला में प्रेम के रुबाई गुनगुनात बाड़े सँ। सिनेमा के गीत वातावरण में गूंज रहल बा। ओकरा बुरा प्रभाव से नयका बिरवन के बचावे खातिर भी सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना जरूरी बा, ना त भोजपुरी के तेज मद्धिम पड़ जाई। तेजस्वी के तेज ना रहल त रहल का ?

एगो बात कई बेर सुने के मिलेला। एह से ओकरा बारे में भी दू शब्द कहे के चाहतानी। कुछ लोग कहेला कि भोजपुरी में साहित्य नइखे। एह पहलू के ठीक से समझे के जरूरत बा काहे कि एकरा के ले के नीमन-नीमन लोग का भी भरम हो जाला। पहिला बात त ई कि भोजपुरी में साहित्य के कमी बा, ई कहल गलत बा। भोजपुरी के लोक-साहित्य कवनो भाषा के लोक-साहित्य से उनइस नइखे; बीस भी कहल जा सकता। लोकसाहित्य छोड़ के अगर शिष्टसाहित्य पर ध्यान दीं त उहो दब नइखे। हिंदी साहित्य में कबीरदास, दरियादास वगैरह निर्गुणिया संत कवि जवना भक्ति के प्रचार कइले ऊ अधिकतर भोजपुरीए में बा। ई साहित्य कुछ त संगृहीत भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वा, छपल वा, आ कुछ अभी विखरले वा। निर्गुणिया संत लोग के रमता स्वभाव आ घुमक्कड़ प्रकृति का वजह से ओह लोग का वानी में कई वोली के फेट-फाट हो गइल वा मगर जइसे कतनो पानी मिलावला पर दूध दूधे कहाला, पानी ना कहाय, ओइसहीं कवीर आदि संत-कवि लोग का रचना में दोसर-दोसर वोली के पुट पड़ गइला से ओकर नाम भोजपुरी छोड़ के दोसर ना हो जाई। कहे के अर्थ कि भोजपुरी साहित्य के इतिहास पाँच-छव सौ वर्ष पुरान वा। ई त प्राचीन युग के बात भइल। वर्तमान युग में त वहुत साहित्य लिखा रहल वा जवन गुण आ मात्रा, दूनू दृष्टि से वड़ा सुंदर आ महत्त्वपूर्ण वा। एह प्रसंग में एगो तीसर वात ध्यान में रखे लायक ई भी वा कि प्राचीन युग से ले के आधुनिक युग तक जव-जव देश के स्वाधीनता आ संस्कृति पर संकट आइल त भोजपुरीभाषी लोग कलम आ तलवार में तलवारे पकड़ल जरूरी समझलस। कलम ओह लोग का हाथ के शोभा बढ़ावे लागल जेकरा तलवार पकड़े के ताकत चाहे इच्छा ना रहे। संकट का समय में कलम घिसल जाव कि तलवार का वार से संकट भगावल जाव ? आज भी पुलिस आ फौज में जेतना भोजपुरी लोग बा ओतना दोसर लोग नइखे। एगो चउथ वात भी याद राखल जरूरी बा। भोजपुरी क्षेत्र के ई सहज विशेषता ह कि ऊ क्षेत्रीयता का संकीर्णता में कभी ना पड़ल; ऊ देश के, राष्ट्र के पहले देखलस, वाकी सव कुछ के वाद में। हिंदी साहित्य के विकास में भोजपुरीभाषी लेखक लोग के अद्‌भुत देन वा। ओह लोग के आधुनिक हिंदी साहित्य के निर्माता भी कहल जाय त गलत ना होई। सवसे पहिले भारतेंदु हरिश्चंद्र के या उनका मंडल के लेखक लोग के लेहल जाय जेह में अधिकतर लोग भोजपुरीभाषीए रहे। 'चंद्रकांता संतति' के यशस्वी लेखक देवकीनंदन खत्री भोजपुरीभाषी रहस। पुरनिया लोग जानता कि वहुत लोग चंद्रकांते पढ़े खातिर देवनागरी लिपि सिखलस। छायावाद के स्तंभ, हिंदी के सवसे वड़ नाटककार जयशंकर प्रसाद, महान् उपन्यासकार प्रेमचंद, आलोचक-शिरोमणि रामचंद्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक श्यामसुंदर दास, संपादक-मूर्धन्य शिवपूजन सहाय, बहुमुखी प्रतिभा के धनी हजारीप्रसाद द्विवेदी, ई सब लोग भोजपुरीए बोले वाला रहे। अगर ई लोग चाहित त भोजपुरी में लिख सकत रहे, हिंदी का तुलना में भोजपुरी एह लोग खातिर आसान भी होइत लेकिन एह लोग का सामने सिर्फ आपन क्षेत्र ना बल्कि देश रहे, राष्ट्र रहे आ ई लोग आपन शक्ति राष्ट्रभाषा आ राष्ट्रीयता का विकास में लगवलस। भोजपुरी साहित्य पर कमी के जे आरोप वा ऊ दू कारण से : एक त ई कि आरोप लगावेवाला लोग का सही जानकारी नइखे; दोसर ई कि भोजपुरीभाषी लोग का आपन ढोल पीटे के ढंग भी नइखे। आजकल त लोग ओकरे वात सुनता जे ढोल पीटता। चुपचाप कइल काम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमे लोग देखे, सुने आ जाने के कोशिश करता।

ललित साहित्य का अलावे भोजपुरी में कोश-निर्माण वगैरह के काम भी हो रहल बा लेकिन छिटपुट रूप से। कोश-निर्माण समय लेवे वाला काम ह, आ खर्चीला भी। ऊ रोज-रोज बनेवाला चीज भी ना ह। कोश बने में समय लागेला त ओकर आयु भी बहुत लंबा होला। एह से ई काम व्यवस्थित आ सुनियोजित ढंग से होखे के चाहीं, ना त बेकार के आवृत्ति होई, काम भी खूब गंभीर ना होई। कोश कई तरह के होला। सामान्य कोश त जरूरी हइले ह बाकि ओकरा साथे कहावत-कोश, मुहावरा-कोश, कथा-कोश वगैरह भी बहुत जरूरी ह। एही तरह भोजपुरी के व्याकरण भी आवश्यक बा। व्याकरण कई स्तर के होखे के चाहीं; प्रारंभिक स्तर खातिर संक्षिप्त आ उच्चतर स्तर खातिर विस्तृत। व्याकरण आ संदर्भ-ग्रंथ भाषा के रीढ़ ह। एकरा से भाषा के सामर्थ्य के पता लागेला। कवनो गंभीर काम हलका-फुलका ढंग से ना होय। भाषा बनेला साधना से, परिश्रम से, लगन से। भोजपुरीभाषी लोग जतना साधना, परिश्रम आ लगन से काम करी, भाषा ओतने निखरी, चमकी। अगर अलग-अलग संस्था काम बाँट ले त जे चीज तैयार होई ऊ नीमन आ स्थायी महत्त्व के होई।

अबतक भोजपुरी के निर्माण का बारे में हम कुछ निवेदन कइलीं हँ। अंत में प्रचार का बारे में भी कुछ कहे के चाहतानी। जमाना प्रचार के बा। काम त लगन से होखहीं के चाहीं मगर ओकर जानकारी करावल भी आजकल ओतने जरूरी बा ना त एक-से-एक सुन्दर चीज कोना में पड़ल रह जाला आ ओकरा ऊपर केंहू के ध्यान ना जाय। भोजपुरी के जे पत्रिका निकलत बाड़ी सँ ओकनिन में जहाँ-जहाँ भोजपुरी के जे काम होता ओकर विवरण रहे के चाहीं जेह से मालूम होत रहे कि कहाँ का हो रहल बा। ओकरा से संगठन आ समन्वय में सहायता मिली। दोसर ई कि भोजपुरी लेखक लोग के प्रोत्साहन खातिर साहित्य अकादमी अइसन संस्था में भोजपुरी के मान्यता प्राप्त करावे के भी प्रयास होखे के चाहीं। कवनो चीज के महत्त्व आ मर्यादा के मूल्यांकन आपेक्षिक दृष्टि से होला। भोजपुरी के ई पक्ष भी उपेक्षित ना रहे के चाहीं। भोजपुरी सही मानी में अंतरराष्ट्रीय भाषा ह। भारत का बाहर फीजी, मोरिशस, ट्रीनीडाड, गायना, सूरिनाम आदि देशन में भोजपुरीभाषी लोग लाखन का संख्या में बा। अइसन भाषा के मान्यता अपने देश में ना होय ई चिंता के बात बा।

अपने सभन हमार अतना सम्मान कइलीं आ अतना प्रेम से बात सुनलीं, एकरा खातिर का कहीं? 'धन्यवाद' त विलायती सभ्यता के छाया ह। ओकरा से भोजपुरी हृदय के भाव ठीक से प्रगट ना होई। साँच कहीं त अपने सभन का छोह से हमार रोआँ-रोआँ पुलकित बा। वेद का एक मंत्र से हम आपन बात समाप्त करे के चाहतानी—संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवो मनांसि जानताम्—सँगे चलीं सँ, सँगे बोलीं सँ, सँगे सोचीं सँ।

जय हिंदी : जय भोजपुरी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

छठवाँ अधिवेशन

(६ आ ७ जून, १९८१)

के

अध्यक्ष

डा० रामविचार पाण्डेय

के

अध्यक्षीय भाषण

शेदपुर
ून, १९८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्षीय भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छठवाँ अधिवेशन के संयोजक, र समिति आ कार्य समिति के सदस्यगण, दूर-दूर से आइल प्रतिनिधिगण, स्वागत ति के अध्यक्ष जी, मंत्री जी, सदस्यगण आ विहार एसोसिएशन जमशेदपुर अध्यक्ष जी, मंत्री जी, आ सदस्यगण आउर इहाँ भोजपुरी मातृभाषा के सेवा में इल बहिना लोगन आ भाई ब,

रउरा सब ई जे आज हमरा के सनमान दिहलीं, आदर दिहलीं, आ ई जे आसन दिहलीं, ओकरा खातिर हम बहुत आभारी बानीं। भोजपुरी भाषा का ई कवना परिवार के भाषा ह, कवना प्राकृत परिवार से निकलल बा, ई कइसन र स्वभाव, कर्मठ देश प्रेमी आ मात्र प्रेमी लोगन के मातृभाषा ह, ई त रउरा सब नते बानीं। ए के केतना लोग बोले लन, भारत का अलावें संसार का आउर उर देशन में कहाँ-कहाँ बोलल जाले, अपना मातृभाषा में संस्कृति खातिर त्याग आ दान के कइसन भावना बा आ एकरा में केतना साहित्य लिखा गइल बा आ वा रहल बा, ई बात रउरा सबके मालूमे बा।

ए आसन पर महान महान विद्वान जइसे डा० उदय नारायण तिवारी, स्व० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० भगवत शरण उपाध्याय, डा० कृष्ण देव उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा निअर आगात आगात विद्वानो के रउआ बइठा चुकल ी। ऊ लोग रउरा सब के भोजपुरी भाषा के बारे में जवन गियान दे चुकल बा करा के दोहरवला के जरूरत हम नइखीं समझत। हम आज रउरा सब का सेवा भोजपुरी भाषा पर एगो दोसरा दृष्टि से नजर राखब। आज ले रउरा सभे ए षा पर विद्वान लोगन के वैज्ञानिक विवेचन सुनले बानीं। आज हम रउरा सबका ना भोजपुरी पर व्यावहारिक नजर से विचार रखि रहल बानी।

वैज्ञानिक दृष्टि से जे विचार भइल बा ऊ रउरा सभे जानते बानी कि संसार दू हजार ले मुख्य भाषा, दू हजार ले उप-भाषा आ दसन हजार ले डाइलेक्ट षा बाड़ी स। ई कुल्हि वैज्ञानिक विवेचन ह। आजु हम भाषा के व्यावहारिक पक्ष कुछ कहे आइल बानी। व्यवहार का दृष्टि से भाषा दू तरह के होले। एगो कुर्सी के षा आ एगो मातृ के भाषा। दोसरा शब्दन में एगो राजा के भाषा आ एगो परजा के षा। आजु का शब्दन में एगो शासक के भाषा आ एगो शासित के भाषा। हमनी के जपुरी भाषा मातृ के भाषा ह, परजा के भाषा ह, शासित के भाषा ह। ई कवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुर्सी के भाषा ना भइल। जवन भी भाषा कुर्सी पर रहेले आ नीचे वाले मा भाषा पर कुछ त रोब से कुछ अपना सहूलियत खातिर आ कुछ आउर कुर्सी बहुत दिन रहे खातिर माटी के भाषा पर आपन परभाव जमा देले। मातृ के भी कुछ डर, कुछ जी-हजूरी में आ कुछ आपन जान बचावे खातिर कुर्सी के के बड़प्पन सँकार लेले। अपना जनम का स्वभाव का कारण अपना के बदल ना देंले बल्कि कुर्सी वाली भाषा का कुछ सबदन के अपना में ले लेले। आ अपना के अइसन बना देले कि कुछ समय के बाद ऊ शब्द मटिये के भाषा के बन जाले स।

भोजपुरी माटी के भाषा पर अपना प्राकृत भाषा के प्रभाव रहे। एकरा कुर्सी पर संस्कृत भाषा आइल। इहाँ के जेतना प्राकृत भाषा रहली स अ का शब्दन के लेके संस्कृत भाषा एगो बहुत-बहुत सुन्दर रूप में संस्कारित कु भाषा हो गइल। ओकरा खिलाफ एही बिहार में जैन धर्म आ बौद्ध धर्म के भइली स। एह दूनो क्रान्तियन के करते पाली भाषा, जे ओह घरी के माटी के रहे, सोझा आइल। इहाँ तक भइल कि बौद्धधर्म का साथे-साथे पाली के भी भइल आ बहुत-सा ग्रंथ पाली में लिखल गइले स। डा० हजारी प्रसाद नियर विद्वान के कहनाम इहाँ तक ह कि पुरान वाली भाषा भोजपुरी के रूप बुझाता। संस्कृत भाषा के लेके झगरा झंझट चलते रहे। एने मध्य एशि लोगन के, अलग-अलग भाषा बोले वाला लोगन के, भारत पर चढ़ाई भइल ओकरा वजह से संस्कृत पर तुर्की, फारसी, अरबी, यूनानी, आ बलूची भा चढ़ाई हो गइल। ओह लोगन में सबसे मशहूर अकबर बादशाह भइले। उन समय में संस्कृत राजभाषा के रूप में चलत रहे। उनकर फौज भी बहुत बड़हन ओतना बड़ा उनकरा लश्कर में अफगान, पठान, बलूची, ईरानी, तुर्की के पंजाबी, सिन्धी काश्मीरी अउर बहुत बड़ संख्या में राजपूत लोग रहे। ए लोगन के एगो भाषा पढ़ावे के भी विचार रहे, जेसे ई लोग आपुस में बतिया सके। एह काम खातिर ऊ अमीर खुसरो नाम के एगो बहुत बड़ विद्वान के र अमीर खुसरो एह बात के कोरसिस कइले कि कुल भाषा मिला के एगो बनावल जाव आ ओह भाषा के नाम ऊ उर्दू रखले। संस्कृत का सँगे उ मिलाके ऊ बहुत-सा छन्द लिखले। नमूना का तौर पर एगो छन्द देखीं—

एकस्मिन् दिवसेऽवसान समये
भैया खड़ा बाग में।
काचित लोल कुरंग साव नयना
गुल तोड़ती थी खड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला लोल कटाक्ष पात निकरै:
घायल किया था मुझे।
शोचामि निशि वासरः सुविकल:
तू यार कैसे मिले।

अमीर खुसरो एगो अइसन कोश तैयार करे के कोरसिस कइले जेसे ओह घरी के प्रचलित भाषा सभन का शब्दन के मिलावल जा सके। जइसे—

खालिक बारी सिरिजन हार
वाहिद एक बिदा कर तार।

अकबर का जमाना तक ले ई सिलसिला चलल। बाकिर उनकरा बाद, जहाँगीर के राज-काल में, फारसी जोर पकड़लस। ओहघरी छापाखाना त रहे ना। कागज के भी अभाव रहे। बाँसी कागज आ भोजपत्र पर कुछ लिखाय। जहाँगीर एगो पर्ची छपवले आ बतवले कि

शुद्धो सहीति, विख्यात ? अशुद्धो गलती स्मिथ : ?

लेकिन संस्कृत उर्दू फारसी भाषा सभन के मिलाके एगो भाषा तैयार करे के काम बढ़ ना सकल। जहाँगीर के झुकाव फारसी के ओर रहे। भोजपुरी इलाका में भगवान बुद्ध का प्रचार का कारन संस्कृत के बहुत-कुछ धक्का लाग चुकल रहे। भोजपुरी लोगन में आ फारसी लोगन के प्रचार खातिर शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर जिला का भोजपुर गाँव में आ आजमगढ़ में मिरदासपुर गाँव से सटल एक-एक गो कालेज खोलल गइले स, जवन आज ले मौजूद बाड़े स। फारसी आ अरबी का दुतरफा हमला से संस्कृत शब्दन के ढेर नोकसान भइल। जहाँगीर के समय में उनका बीमार लइकी के एगो अंग्रेज डाक्टर अंग्रेजी दवा से नीक कर देलस। ओही का इनाम में अंग्रेज लोग जहाँगीर से भारत में रोजगार करे खातिर सनद पा गइल। तब से कइसे अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल आ पलासी के लड़ाई आ वक्सर के लड़ाई भइल, बनारस के राजा चेत सिंह के लूटल गइल, अवध के बेगम के लूटल गइल, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे आ बहादुर शाह के खतम कइल गइल। पंजाब के राजा रणजीत सिंह के हरा के पंजाब पर कब्जा कइल गइल। ऊ कुल्हि रउरा सबका मालूम बा आ ऊ एकर विषय नइखे। फारसी आ अरबी के धकिया के अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल। ओही समय में फ्रान्सीसी, पुर्तगाली, आ जर्मन लोग भी एह देश में आइल। ओह लोग के भाषा के कुछ-कुछ शब्द भारत का अउरी-अउरी भाषा के सँगे-सँगे भोजपुरीयो में आ गइल। ई थोड़की सा इतिहास रउरा सबका सोझा दे तानी, जे रउरा सबको ई बुझा जाय कि भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा के खटिया के बिनावट छवो भाषा सबन का बाध से बिनाइल बा। कुल्हि मिलि के नीचे-ऊपर, अगल-बगल, दाहिने-वायें, अइसन बिना गइल बा कवनो के सुतारी काट के निकलला से खटिया भसि जाई आ चरमरा के टूटि उदाहरण का तौर पर नीचे कुछ शब्द नमूना के तौर पर दिहल जाता भोजपुरियो के शब्द हवे स। काहे कि संसार के नामी भाषा दोसरा-दोसरा शब्द लेके वाड़ी सऽ। शब्द ब्रह्म हऽ, ऊ सर्व व्यापक हऽ। ब्रह्म के केहू वान्हि के राखि सके। अव नीचे कुछ शब्द दिहल जाता।

भाषा	शब्द
(अ) वैदिक संस्कृत	गडूआ

मूल वैदिक शब्द कदूक (सोमपान) कूडअ गडू, गाडू, गडूआ

(व) संस्कृत: जल पूजा आरती वगैरह।

(२) पाली : गोविग से गोइठा।

(३) तुर्की : सन्दूक से सनूख। बन्दूक से बनूक।

(४) अरवी : किताब, मिला।

(५) फारसी : तोसक, तकिया नाजायज, जायज वगैरह।

(६) अंग्रेजी : कोटा, टिकट, स्टाम्प, मीटर, लीटर वगैरह।

ऊपर जवना भाषा समन के नाम दिहल गइल वा ओही सब भाव के शब्द ढेर वाड़े स, जवन रउरा सब का मालूम बा। मागधी के पार पाटी से भोजपुरी के खटिया ऊपर गिनावल हवे। ऊ भाषा सभन का छवधिया से गझिन विनाइल वा कि ऊ अपने में दृढ़ आ बहुत वरिआर वा।

लिपि आ भाषा के आन्दोलन :—

मोटा मोटी सइ वरिस से उपरे होता कि एह देश का राष्ट्रीय भा सवाल पैदा हो गइल। कुछ लोग चाहत रहे कि एह देश का राष्ट्रीय भाषा के हिन्दुस्तानी रखाव आउर देवनागरी आ फारसी दूनो लिपियन में लिखाव। अरवी, फारसी, संस्कृत देशी सव आ विदेशी शब्दन से मिलि के चलत रहे, उहे कचहरी आ सरकारी कागजात में फारसी लिपि चलत रहे। फारसी लिपि का में नागरी लिपि चलावे खातिर काशी से हरिश्चन्द्र जी आ उनकर कुछ लोगन बहुत प्रयास कइल। ओकरा वाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा के स्थापना भइल। ओह लोगन का बहुत परिश्रम आ आन्दोलन से कचहरी में देवनागरी के प्रचलन भइल, जवन आज तक चलत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी आन्दोलन :—

कई सौ बरिस के बाद जब ई देश विदेशी लोगन का गुलामी से छुटकारा पवलस, त देश भक्त लोगन का मन में एगो आन्दोलन उठल कि अपना देश में आ केन्द्र में भी एगो भाषा होखे के चाहीं, जवन सर्वमान्य होखे। एह देश के संकट के समय भी देश के एकता के बनवले राखे खातिर चवरासी सिद्ध लोग आउर अनेकन भक्त लोग जइसे बंगाल से चैतन्य महाप्रभु, मिथिला के कवि कोकिल विद्यापति, भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास, तुलसी दास, मीराबाई, सन्त तुकाराम, समर्थ स्वामी रामदास देश में एकता के एगो अलख जगवले रहले। ओह घरी पश्चिमी बोली, पूर्वी बोली, राजस्थानी, मराठी वगैरह नाम से जानल जात रहली स, आ जवना भाषा के सूफी सन्त कवियन के बानी कहल जात रहे। ओ कुल्हिन के मिला के एगो भाषा बनावल गइल जवना के नाव धइल गइल 'हिन्दी'। भारत का पार्लियामेंट में देवनागरी लिपि में लिखल हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल, आ ऊ अंगरेजी के स्थान लेवे खातिर आगा बढ़ल। देश खातिर ई एगो बहुत बड़ गौरव के बात भइल कि हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल। बहुत लोग ई कहता कि हिन्दी के गति बड़ सुस्त बा। हमरा जाने में ऊ लोग हिन्दी के ठीक आकलन नइखे क सकल। ऊ दिन दूर नइखे जब हिन्दी भारत के एगो बहुत बड़ समृद्धिशालनी राष्ट्रभाषा होई। बल्कि संसार के धनी भाषा सभन में एकर नाँव गिनाई। हमनी का भोजपुरी भाषा भाषी लोग हिन्दी का हर प्रकार का उन्नति के कामना राखीले जा, आ हमनी के बहुत विद्वान लोग बाड़े जे हिन्दी के सेवा कइल लोग आ सेवा करिहें।

भोजपुरी के दुर्भाग्य :—

अउरी-अउरी प्रदेश के भाषा जे अपना-अपना प्रदेश में राजभाषा के रूप में स्वीकार कइ लिहल गइली सऽ। उनहीं का सँगे एगो सहूलियत रहे। बंगाली, उड़िया, आसामी, गुजराती, मराठी, तेलुगु वगैरह भाषा के संगे एगो खास सहूलियत रहे कि ओह भाषा के बोले वाला लोग एक एरिया में रहे आ बाटे। भोजपुरी का सँगे पहिले से ई दुर्भाग्य रहे आ बाटे कि भोजपुरी बोले वाला लोग एक एरिया में नइखन एह से एह देश में भोजपुरी प्रान्त ना बन सकल आ भोजपुरी के मान्यता ना मिल सकल। भोजपुरिया लोग उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, विहार आ नेपाल में बँट गइल बा। एगो बहुत बड़ संख्या में भोजपुरी बोले वाला लोगन का विदेस रहला से एके मान्यता ना मिलि सकल आ संविधान के आठवीं अनुसूची में एकर मान्यता अबहीं ले ना मिलल। तबो संत साहित्य आ सखी सम्प्रदाय में भोजपुरी के बहुत अधिक साहित्य लिखाइल बा। ओकरा बाद, स्वतंत्रता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़ाई के समय में भी भोजपुरी कविता लिखाये लगल रहली स। मनोरंजन बा के 'फिरंगिया' त अइसन जोम बन्हलस कि अइसन कवनो सभा ना होखे जवना 'फिरंगिया' पहिले ना गवाव। ओही स्वतंत्रता के लड़ाई के समय में भोजपुरी चितू पाण्डे के भोजपुरी के व्याख्यान जनता में लहर दउड़ा दे। आ ई मालूम भइ कि भोजपुरी लोगन में अपना मातृभाषा के प्रति केतना श्रद्धा बा। इ देखि के छि पुट कविता लिखाये लगली स। धीरे-धीरे भोजपुरी रेडियो पर भी गइल। एह प्रकार से भोजपुरी के प्रचार बढ़ल। आ आजु केतना बढ़ि गइल बा, ई रउ से कहे के जरूरत नइखे। हिन्दी आ भोजपुरी के प्रकाण्ड विद्वान आ देश विदेशन में लोक-संस्कृति का वास्ते प्रसिद्ध विद्वान डा० कृष्णदेव उपाध्याय जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का चउथका अधिवेशन में अपना अध्य क्षीय भासन में कहले कि 'भोजपुरी भाषा खातिर ई कम गौरव के वात नइखे कि एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी फ्रेन्च आ जर्मन भाषा का अतिरिक्त सुदुर स्वेडि भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला।'

एह से ई पता चल सकेला कि भोजपुरी में केतना अनुसंधान के कार्य हो चुकल वा अवरू हो रहल बा। सचमुच ई बात हिन्दी के कवनो वोली अथवा भारत के कवनो भाषा खातिर गौरव अवरू अभिमान के विषय वा।

मानक भोजपुरी :—

आजु काल्हि एगो इहो सवाल पैदा भइल बा कि भोजपुरी के एगो अइसन रूप लिखाव जवन सवका मान्य होखे। ई वात कवनो भाषा में कमेटी वना के कवहीं भइल नइखे। भोजपुरियो में ई हो ना सकेला। शुरू-शुरू में जव भोजपुरी में गद्य लिखाये लागल आ लेखक लोग शब्द के तूरि तार के लिखे लागल त हमरा ई नीक ना लागल। एकर सिकाइत हम महापंडित राहुल जी से कइलीं, त उहाँ के हमरा से कहलीं कि पाँड़े जी एमे घवड़इला के वात नइखे। कोई वोली भाषा के रूप धारन करे लागेले त पहिले अइसहीं होला जइसे भोजपुरी में हो रहल वा। लिखात-लिखात अपनहीं ओकर एगो सुन्नर नीमन आ सुघर रूप तैयार हो जाला। अवहियें लेखक लोगन पर अंगुरी उठइला के जरूरत नइखे, नाहीं त कोहँड़वा के बतियवा के हाल हो जाई। एह बारे में मनोरंजन बाबू से भी बतियवले रहलीं हाँ। उँहों के कहलीं कि एकरा बारे में छेड़-छाड़ कइला के नाम नइखे। सड़क भी ठीक, सरक भी ठीक। केहू-केहू इहो सिकायत करेला कि अइसन शब्द लिखल पावल जा ताड़े स जवन लेखक लोग अपना-अपना इलाका के शब्दन के ढूके अइसन बना दे तो दोसरा इलाका के लोगन के समझ में आवते नइखे। एह बारे में लेखक लोगन के कवनो दोष नइखे। जब कवनो जग नधाला त जेकरा घरे जवन सामा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहेला ले आके हाजिर करेला। ई ओही यज्ञ नियर वा। एक ही चीज खातिर भोजपुरी का अलग-अलग जिलन में अलग-अलग शब्द वाड़े। ओह के संग्रह कइ के सबका सोझा ले आवे के चाहीं। आ ओनही के ठीक प्रयोग करत-करत भाषा में खुदे एकरूपता आ जाई जवन कि डा० उदय नारायण तिवारी लिखले वानी कि भाषा शब्द से ना बनेले, भाषा के रूप क्रिया से जाहिर होला- जइसे—

बंगला :—आमार घरे नाना कमेर जिनिस आछे।

भोजपुरी :—हमरा घरे नाना रकम के जिनिस वा।

उड़िया :—पश्चिम दिगेर बुडिल रवि। आटा कि सुन्दर लोहित छवि।

भोजपुरी :—पश्चिम दिसे में बुड़ले रवि एकइसन सुन्दर लोहित छवि।

जइसन भोजपुरी एह समय लिखा रहल वा ऊ ठीक हो रहल वा। जे लोग अपना मातृभाषा के सेवा करे खातिर आगा आ रहल वा ओह लोगन में संस्कृत के विद्वान लोग भी वा आ'ई वात स्वाभाविक वा कि ऊ लोग संस्कृत शब्दन के वहुलता वाली भोजपुरी लिखवे करी। ओह में का हरज वा। जइसन कि हम देखला चुकल वानी कि अमीर खुसरो संस्कृत आ उर्दू के मिला के श्लोक लिखले त केहू भोजपुरी कवि :—

ललित लवंगलते परिशीलन, कोमल महल समीरे
धेनु चरावत कान्हा घूमस नित जमुना का तीरे।
अति सौन्दर्य युता वृजवाला तत्रागत्य सुकंठाः
गावस, गीत, मीर नाचस वंसीधुनि वेधत हीरे।

एक दिन हम अपना डिस्पेंसरी में वइठल रहलीं। भगवान हमरा रोटी का जोगाड़ खातिर ३, ४ गो मरीज लोगन के भेजले रहले, आ दू जाना साहित्य प्रेमी जन वइठल रहे लोग। ओही घरी एक जाना भाँट चहुँपले। ऊ कहले—

वड़ी भूखी लागल वा वावा।
भोजन कुछ करवाईं।
रामविचार के नाम के सार्थक
रउरा आज वनाईं॥

हम कहनी कि भाँट जी कुछ नया सुझाव, तुकवंदी से काम ना चली। अच्छा त सुनी। हम रउरा के भोजपुरी में श्लोक सुनाव तानी—

हरफार कुदारंच
लेके परती के कोरन्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करिया अच्छा भइंस बरावर
ई ववुआ के लच्छन्म
बटबसोटि अस सोटा लेले
खमर खमर ख जुआवन्म
नाके पोटा दात चिउइले
ई ववुओ के लच्छन्म।

हम कविजी के पाँच गो रुपया दिहनीं आ कहनीं कि हई लीं तीन रुपया में होटल में खाना खा लेहव आ दू रुपया इनाम। ऊ ठठा के हँसले आ कहले महाराज जी तीन गो रुपया के भोजन होटल में कइला से हमार काम चली? एक रुपया के चटक सोहारी तनी रामरस आ एगो जहर। दिन-राति कटि जाई भूखि के पहरा। जे जे बइठल रहे सभे एक स्वर में कहल डाक्टर साहेव ई त गजवे बा, भोजपुरी में अब श्लोक लिखाये लागल। आ हमार मन पाई गइल मनोरंजन बाबू के कविता के लाइन—

अब दिन बीति गइल हुजुरन के।

मजदूरन के दिनि आइल।

मनोरंजन बाबू के प्रसंग आ गइला पर उनका जीवन में भोजपुरी के जे एगो कला लउकलि ऊ अपना ढंग के एगो अजव चीज भइल। मनोरंजन बाबू राजेन्द्र कालेज, छपरा के प्रिन्सिपल रहले। कालेज में जयशंकर प्रसाद के जयन्ती मनावे के विचार भइल। आ सब केहू सोचल कि ओकरा मुख्य अतिथि के रूप में कवनो वड़ नेता के बोलावल जाय। छपरे के एगो बड़ आदमी विहार एसेम्वली में कांग्रेस में एम० एल० ए० लोगन के हित रहले। उनहीं के प्रधान अतिथि के रूप में बोलावे के निर्णय भइल। ठीक समय पर जलसा शुरू भइल। मुख्य अतिथि के आसन दिआइल। जयशंकर प्रसाद जी का बारे में बहुत वक्ता लोग बहुत बात कहल। अन्त में मुख्य अतिथि से निवेदन भइल कि उहों के जयशंकर प्रसाद जी का बारे में कुछ कहीं। उहाँ के उठलीं आ कहलीं—राजेन्द्र कालेज के प्रिंसिपल महोदय, प्रोफेसर गण तथा छात्रवृन्द! आपलोगों ने मुझको जो यह सन्मान दिया है, उसके लिए मैं आपका बहुत आभार मानता हूँ। जयशंकर प्रसाद जी हिन्दी के एक बहुत बड़े सेवक थे। उनकी लिखी हुई सभी पुस्तकों में 'प्रिय प्रवास' मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं आपको राय दूंगा कि आप उसे पढ़िये। मेरे पास समय बहुत कम है। एक विशेष काम से जाना है। अतः आपलोग मुझे जाने दें।'

मनोरंजन बाबू धन्यवाद देवे उठलें आ कहलें कि विद्वान वक्ता जी हमनी पर बड़ी कृपा कइलीं हँ। हम इहाँ के एगो छोड़के कविता में इहाँ के धन्यवाद देतानी। ऊ कहले—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी० जी० एम० पी०

एल० एल० पी० पी०

ई हम खूवे जानत वानी ।

कि जयशंकर के 'प्रिय प्रवास' के रउरा खूवे पढ़ले वानी ।

सभा विसर्जित हो गइल । मुख्य अतिथि जी विदा हो गइलें त लोग मनोरंजन वावू से पूछल कि जी० जी० एम० पी० आ एल० एम० पी० पी० के माने का मनोरंजन वावू जवाव दिहले जी० जी० एम० पी० के अर्थ ह घींच-घाँच के मिडिल पास आ एल० एल० पी० पी० के अर्थ हवे कि लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर । अगर कवनो भोजपुरिया में अइसन कला होखे त ऊ मनोरंजन वावू नियर कविता कइ सकेला ।

हम वतला चुकल वानी जे भोजपुरी में फारसी आ उर्दू के वहुत-सा शब्द आ गइल वाड़े ल केहू चाहे त ओइसनो भोजपुरी लिखि सकेला ।
जइसे :—

राम—देखिह त सामा, दीनानाथ का घरे हल्ला भइल वा का ?
सामा :—

अरे ऊ मरद मेहरारू के झगड़ा ह । ओसे हामा सूमा का का मतलव ।

एह मे झगरा मरद मेहरारू, हामा (हम) सूमा (तुम) मतलव—ई शब्द फारसी के हउअनि स । वाकिर अव कुल्हि भोजपुरिये के हो गइल वाड़े स ।

केहु लेखक पूरा-के-पूरा अपना मागधी कला से चुनि के सव्दन के सजा के भोजपुरी लिखि सकेला, जइसे—

हीरा :—का हो करीमन तोहरा टेल्हा राम के कते सिटकट वइठल ।

करीमन :—अरे भाई उनकर कहा टेघ लागी ।

एक ठगरी किछि आइल गइले ओमे से उघि आइल अइले । उन्हुका के पास एक छीपा जेवनार चाही एमे ओमे लक इ हल फिर त तोड़ा आ मेवकिया आ मारे के मुड़ुकि अवले फीर ताड़ें ।

जो केहु लेखक चाहे त अंगरेजी भोजपुरी लिख सकेले । जइसे वाजारे जा ताड़ऽ त एगो साइकिल के स्पेशल सीट, दूगो डनलप के टायर, दूगो डनलप के ट्यूव आ दूगो हौवे लेले अइह (मानक भोजपुरी ऊहे होई जे भोजपुरी में आ गइल छवो भाषा का सव्दन के लेके अपना क्रियापद में वान्हि के लिखल जाय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी आन्दोलन

आज से पचास-साठ साल पहिले जे भोजपुरी प्रेमी लोग भोजपुरी में लिखल ऊ एह भाषा का मिठास से प्रभावित होके। तेग अली के 'वदमाश दर्पण', विश्राम के बिरहा, देहाती जी के 'देहाती दुलकी', दूघनाथ उपाध्याय के 'गो विलाप छंदावली' भिखारी ठाकुर के 'विदेसिया' ओगैरह लिखइली स, भोजपुरी का मिठास के आनन्द लेवे खातिर आ दोसरा लोगन के देवे खातिर।

गांधी जी कहल करस—"मैं चाहता हूँ कि अंग्रेज भारत से न भी जावे, मगर अंग्रेजियत तो चली जावे।" आजादी मिलला के वाद ठीक ओकरा उल्टा भइल। अंग्रेज त चलि गइले, बाकी अंग्रेजियत के हवा एह देश में आन्हीं नियर वहे लागल आ आज त ई दशा बा कि जहाँ अंग्रेजियत के गंध नइखे ऊ आदमी असभ्य कहाता।

पं० जवाहर लाल जी एक हाला कहले रहनीं—'फिर विदेशी आक्रमण से हमारी कमर तो झुक गयी, मगर हमारी गर्दन नहीं झुकी।'

आज भोजपुरी वोलेंवाला लोग के इहे हाल हो गइल वा। हमनी के पहिरावा, रहन-सहन, भोजन करे के नियम, ओगैरह वहुत-कुछ वदल गइल वा। बाकिर अवहीं हमनी के गर्दन नइखे झुकल। हमनी भोजपुरी संस्कृति के रइछा हो रहल बा, भोजपुरी भाषा का रइछा का कारन। जहिए भोजपुरी भाषा के पतन हो जाई तहिए भोजपुरी संस्कृति के विनास। ई वात रउरा सव के समुझावे के नइखे। इतिहास एकर गवाह वा कि जवन जवन संस्कृति नष्ट भइली स, ओकनी के पालन करेवाली भाषा का नष्ट भइला के कारन। स्व० महेन्द्र शास्त्री, स्व० मनोरंजन वाबू, स्व० दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ', स्व० रघुवंश नारायण सिंह एवं स्वामी नाथ सिंह नियर लोग भोजपुरी संस्कृति के प्रान बचावे खातिर भोजपुरी के भाषा रूप में स्थापना वदे आन्दोलन शुरू कहल लोग। एह काम में पं० गणेश चौवे का दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के वहुत वड़ योगवा।

एह आन्दोलन के पहिला क्रम खड़ा भइल महर्षि विश्वामित्र का स्थान वक्सर से। स्वर्गीय खाकी वावा के आशिर्वाद लेके डा० कमला प्र० मिश्र 'विप्र' भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना कइलें। देखा-देखी एक नीमना काम के साथे भोजपुरी इलाका में कई जगह भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना भइल। वाहर में पश्चिमी अंग भोजपुरी परिषद्, वम्वई भोजपुरी समाज, लखनऊ भोजपुरी समाज, भोपाल भोजपुरी समाज आदि के स्थापना भइल। सैकड़न कलम उठि गइली स भोजपुरी के साहित्य मण्डल के भरे खातिर। आ आजु भोजपुरी साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ भोजपुरी संगठन के जवन उज्ज्वल रूप खड़ा वा ऊ सवका सामने जाहिर बा। सव भोजपुरी भाइन का उत्साह से मातृभाषा के प्रति श्रद्धा अउर प्रेम का रूप में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन भइल बा। ई केहु का खिलाफ नइखे, बलुक अपना अस्तित्व का रक्षा में कइल गइल वा। ए वात खातिर हम अपने सभन से कहे के चाहत वानीं कि मागधी परिवार के आउर-आउर भाषा सव बाड़ी स जइसे वंगला, असमिया, उड़िया, मैथिली सबसे सम्बन्ध वढ़ा के एगो पारवारिक वढ़ाव के मामिला, प्रेम आ मिलन के वातावरण, तैयार करे के वा। अगल-वगल में जे जनजाति के लोग वा ओह भाई सवके पास हमनी के पड़ोसी बाड़ी स। उन्हनी सव से भी मित्रता वढ़ावे के चाहीं आ एह काम के वास्ते भोजपुरी-उड़िया-शिक्षा, भोजपुरी-वंगला-शिक्षा, भोजपुरी-मैथिली-शिक्षा आ भोजपुरी-असमिया-शिक्षा' नियर पुस्तक लिखाये के चाहीं। अंगिका, वज्जिका, मगही के वढ़ावे के चाहीं। जे लोग सोच ता कि भोजपुरी के आन्दोलन कवनो भाषा का खिलाफ वा, ओह लोगन से हम निहोरा करवि कि हमन के सिद्धान्त ई वा कि—

तोता तोती वोले रामा वोले भेंगराजवा से
पपिहा के पी पी हिया साले रे वटोहिया।

जवन भोजपुरिया लोगन के करेज के किकोर लेले रहे देश के चिरइन तक के बोली, ऊ लोग एह देश का कवनो भाई का बोली चाहे भाषा का खिलाफ त नाहिए सोची। संसार का कवनो भाषा के भी, हमनी का शारदा के रूप में मानीले, आ माता शारदा से द्वेष आ घृणा कइसन।

भोजपुरी के मान्यता

अब सवले जरूरी हो गइल वा भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल। जव तक एकर मान्यता ना मिली, तव तक आगा के उन्नति रुकि जाई। लेखक लोगन के उत्साह कम होखे लागी। भोजपुरी के मान्यता दियवावल हमनी के एह घरी परम कर्त्तव्य वा आ ऊ हमनी के अधिकार हऽ। भोजपुरी अकादमी के दोसरका अधिवेशन के समय भोजपुरी के मान्यता के सवाल मुख्य अतिथि माननीय श्री जगजीवन वाबू का सोझा उठावल गइल त उहाँ के मुख्य अतिथि पद से कहले रहलीं कि अधिकार मँगला से ना मिलेला, ऊ त अपना ताकतवे से लेवे के होला।

एह घरी केन्द्र सरकार के ध्यान लोक भाषा के उन्नति का ओर गइल बा। ई निर्विवाद वात बाटे। गाँव के उन्नति खातिर लोकभाषा सभन के उन्नति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करही के परी आ ओकनी के मान्यता देवे के होई। हमरा बुझाता कि एह घरी के हवा-पानी ठीक बा आ मान्यता आसानी से मिलि जाई। एह काम वास्ते एगो कमेटी बनावे के चाहीं, जे एही अधिवेशन में बना लिहल जाय आ ऊ मान्यता के उपाय करी। जो दुर्भाग्य से अइसने हालत आ जाई कि कुछ त्याग आ बलिदान के जरूरत परे त ओह खातिर हमनी के तैयार रहे के परी। हृदय में प्रबल इच्छा जगवाए के तइयार के बा तू ऐ अन्दर दिल नगर तू चाहे हर चीज मुकाबिल आ जाई। हर चीज मुकाबिल आ ज ाए। दो कदम चले तेरे आगे। दौड़ी हुई मंजिल आ जाए। आता है तूफाँ तो आने दो कश्ती का खुदा खुदाए। आज जो मुकाबिल में उन्हीं लहरों में कोई बहता हुआ साहिल आ जाये। मंजिल के दुअरा पर बोलावे खातिर त पहिले अपने डेग आगा धरे के परी। आ रउरा सभसे हथजोरी आ चिरउरी बा कि अपने सभ एकरा बदे एकजुट होके तैयार हो जाईं।

जय भोजपुरिया !

जय भोजपुरी !!

—रामविचार पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

सातवाँ अधिवेशन
(अमनौर)

के

अध्यक्ष -

श्री ईश्वर चन्द्र सिनहा

के

अभिभाषण

लक्ष्मीसखी नगर
उ. मा. विद्यालय, अमनौर, सारन (बिहार)
२९-३०-३१ अक्तूबर, १९८२ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग !

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का एह सातवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर हमरा के बइठा के रउआं सभ जवन आदर दिहलीं ओकरा बदे हम केतना आभार प्रगट करीं, नइखे बुझात। बहुत कठिन होला अइसना आदर का चकाचौंध से अपना के उबारल। बाकी हम सजग बानी, हम जानत बानी कि रउआं आदर देके हमार बोझ बढ़ावत जात बानीं। हम साहित्यकार त हईं ना, अलबत्ते भोजपुरी साहित्य के विनम्र सेवक आ स्नेही जरूर हईं। अपना पत्रकार-जीवन में जब, जइसे आ जेतना मोका मिलल भोजपुरी खातिर लड़लीं अ नया-नया लोगन के मैदान में ले आवे खातिर कवनो कसर उठा ना रखलीं। ओही लहर में डाक्टर स्वामीनाथ सिंह अइसन लेलकरलन कि एक झोंक में कुछ कथा साहित्यो के कामो हो गइल आ चारू ओरि चर्चा होखे लागलि तब जनलीं कि शायद कुछ काम लायक हो गइल। बाकी एतने पर हम ई कइसे मानि लीं कि हम साहित्यकार हईं ? या हम भोजपुरी के विद्वान हईं ? अब अइसना स्थिति में हमरा सोझा ई सवाल ठाढ़ होत बा कि अइसना महत्वपूर्ण पद पर, जवना पर शुरूए से भाषा-वैज्ञानिक, भाषाशास्त्री, ख्यातिप्राप्त विद्वान, आलोचक, कवि आ रचनाकार के प्रतिष्ठित करे के महान गौरवशाली परम्परा बा, सात बरिस बाद हमरा नियर समर्पित पत्रकार के काहें बइठावल गइल ह ? ई निर्णय अचानक-अनायास त भइल ना होई ? एक से एक सूझ बूझ वाला लोग एह भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन में भरल बाड़न। तब का कउनो खास बाति एह साल उपतीन भइलि बा ? कुछ हमहूं सोचत बानी। आखिर रउएं सभेका बीच के त हईं ! भोजपुरी-साहित्य का बढंती में एह सम्मेलन के जवन भूमिका रहलि बा ओकर हम सोझा साखी बानी ! बहुत कुछ बाहर भीतर के उपलब्धि बा जवना के सर्वेक्षण के जरूरत बा। समय-समय पर सर्वेक्षण आ मूल्यांकन होत रहला से नीक परेला आ भुलाये-भटके के डर ना रहेला। जवना मनसा से ई भोजपुरी आन्दोलन आजादी मिलला का बाद ठाढ़ भइल ओकरा पूरन होखे में अबहीं लमहरि डहरि तय करे के बा। जेतना मंजिल तय हो चुकलि बा ओके संतोषजनक मानि के ना त अगराये के बा आ ना त कवनों वजह से निराश होखे के बा। अइसनो बहुत कुछ हालत जरूर बा कि एह आन्दोलन में जुड़ल लोग निराश हो सकेला या ओकरा भीतर घनघोर उदासीनता आ सकेले। एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थितियन पर ध्यान जाये के चाहीं। अइसन लागत वा कि चुपेचुपे, वेकहले-सुनले भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सर्वेक्षण-मूल्यांकन वर्ष मनावही खातिर एगो भोजपुरी का पायक पत्रकार के एह ऊंच कुर्सी पर रउआं सभ बइठवले बानी। तव तनी एकरो चर्चा हो जाये के चाहीं।

देखीं सभे, सगरे महत्वपूर्ण संस्थन का जिनिगी में अइसन एगो वक्त आवेला कि ओकरा प्रेमिन के उत्साह आ जोश जनाला कि घटि गइल वा। जनाला कि पहिले नियर भारी-भारी समारोह काहे नइखे होत, हुल्लहपाड़ आ शोरगुल काहे नइखे होत आ प्रचार-प्रसार खातिर भारी-भारी भीड़ के काहे नइखे आकर्षित करेवाला जतन होत? भीतर से क्षोभ नियर उठे ला कि अतना संस्था-नेहिन का आछत काहे आन्दोलन ठण्ढा पड़ल जात बा? काहे संगठन छितिराये लागल बा? काहे तेज कदम बढ़ाके मंजिल के छू नइखे लिहल जात? बुझात बा न कि ई अफसोस लायक स्थिति बा? बाकी तनी गहिरे जा के सोचीं। एह प्रकार के क्षोभ आ चिन्ता के लहरि भीतर से उठति वा त का ई एह बात के सबूत नइखे कि ओह संस्था के सोरि व्यापक रूप से व्यक्ति का भीतर गहिराई में पइठि गइलि बा? शुरू-शुरू में समारोह, प्रचार आ भीड़-भाड़ भरल हल्ला गुल्ला एही खातिर त होला कि लोगन का भीतर नया विचार जागो आ संस्था के भाव पनपो? जब ऊ विचार-भाव जागि के सोरिया गइल तब जरूरत हल्ला-गुल्ला के ओतना ना होले जेतना सधल ढंग से दिशा देबे के। भोजपुरी का आन्दोलनो के इहे हालि बा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के शुरूआत त अइसन भइलि कि जवना के एगो भोजपुरी मुहावरा में कहि सकल जाला कि जइसे आकाश मांड़ो पाताल खंभा। बाकी धीरे-धीरे ऊ बाहरी समारोही उछाल-पछाल आ गहमा गहमी भरल प्रचार-चक्र-प्रवर्तन हलुकात गइल। मोटा मोटी ई सोचि लेवे के ई जबरदस्त कारण बा कि भोजपुरी आन्दोलन में गिरावट आ गइलि बा आ ऊ बिखराव का दलदल में फंसि गइल बा। बाकी का साचो अइसने स्थिति बा?

बाहर से लागत अइसने बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के धारि मन्द परि गइलि बा आ भोजपुरी का आन्दोलन में गतिरोध आ गइल बा। बाकी भीतर से जेतना काम हो रहल बा ओके देखत कुछ अउरे नतीजा निकली। साच पूछीं त कुल्हि आन्दोलन आ प्रचार का पीछे भावना त ठोस कामे के होले आ ऊ रचनात्मक काम जब तेजी से होखे लागल त माने के चाहीं कि बाहर के धारि भीतर मुड़ि गइलि बा। प्रचार जब ठोस काम में बदलि जाला तब एकरा के शुभ लक्षण माने के चाहीं। भोजपुरी में ठोस काम के माने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक आ पत्र-पत्रिका के प्रकाशन वा। एही स्थायी सम्पदा के लेके ई भाषा केहू का सोझा खड़ा हो सकेले। जब एकर आन्दोलन शुरू भइल त लगभग ई भाषा खाली हाथ रहे बाकी महत्वाकांक्षा अतना बढ़ल रहे कि मांग विश्वविद्यालय तक का पाठ्यक्रम में चोंहपे के भइलि। फेरु जल्दिये साहित्य अकादमी का मान्यता खातिर आवाज उठे लागलि। आंशिक रूपे में सही विश्वविद्यालय तक का पाठ्यक्रम वाली मंजिल के त भोजपुरी भेंटि लीहलसि। बाकी मान्यता वाला सवाल अबहीं लटकल बा। एह बीच ओकरा खातिर अपना शक्ति सम्वर्धन में लागल-लागल बिहार में एगो भोजपुरी अकादमी वाला लक्ष्य पूरा भइल। उत्तरो प्रदेश में एकर स्थापना नजदीके जनात बा। भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव पर जवन सालाना विवरन छपल बा ओकरा के देखत लागत बा कि भोजपुरी में ठोस आ मानक साहित्य के बढ़ंती तेजी से हो रहलि बा। भोजपुरी में व्याकरण आ कोष पर काम हो रहल बा। मौलिक प्रकाशन का साथे-साथे अनुवाद आ अनुसंधान खातिर लोग प्रयत्नशील बाड़े। विविध विधन के ढेर-ढेर किताबि छपि रहलि बाड़ी स। महाकाव्य, प्रबन्धकाव्य, उपन्यास, कहानी आ समीक्षा वगैरह के भारी भारी योजना चलि रहलि बाड़ी स। साहित्यकारन के पुरस्कार दिया रहल बा। व्यापक स्तर पर विद्वान् आ साहित्यप्रेमिन के आकर्षित कइल जा रहल बा। भोजपुरी अकादमी आ एहतरह का दूसरा-दूसरा भोजपुरी-संस्थान का उपलब्धियन के व्यापक रूप से भोजपुरी का आन्दोलन से काटि के ना आंकल जा सकेला। एक चिराग से बहुत-बहुत चिराग जरि जालन स। सन् १९७५ में पवित्र त्रिवेणी तट पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का रूप में जवन संगठित चिराग जरल ओकर टहक अंजोर आजु नाना प्रकार का आन्ही बतास से लड़िके नाना प्रकार से खूब फइलि गइल बा। एगो शक्तिशाली विचार, एगो शक्तिशाली संस्था के कार्य कलाप आ एगो महापुरुष के प्रभाव कहां-कहां, केतना-केतना ज्ञात-अज्ञात रूप में फइलि के कवनो देश-जाति का कवनो भाषा-साहित्य के भाग्य-निर्माण करे ला, के पूरा-पूरा लेखा-जोखा बता सकेला ? इहे हालि भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के बा। एकरा अन्तर्मुख गति, प्रेरक दिशा आ अलक्षित लक्ष्य-भेदन का प्रक्रिया पर ध्यान जाये के चाहीं। एकर मतलब ई ना हो सकेला कि एकरा गतिविधि पर पूर्ण सन्तुष्ट हो के खुश हो लिहल जाव। मतलब सिर्फ एतने कि पूर्ण असन्तुष्ट होके निराश होखे के आवश्यकता नइखे। नयी-नयी स्थितियन का मोताबिक एह संस्था में नया-नया प्रगतिशील मोड़ आवे के चाहीं।

एह सम्मेलन के पहिला अधिवेशन जवन ८-९ मार्च, सन् १९७५ के प्रयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में भइल ओमें अध्यक्ष डा० उदयनारायण तिवारी भोजपुरी क्षेत्र आ भाषा के महत्ता-बतवला का बाद जोर देके कहलीं कि "अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाहीं।" एह आह्वान का साथे साथ भाषा का चारूवर्ग-क्षेत्रन में नागरी लिखावट के प्रचार आ जनभाषा में पोथी तैयार करे के व्यावहारिक सुझाव देले रहलीं। भोजपुरी का प्रगति खातिर सरकारी पइसा के मदद के उहां का उपेक्षाजोग घोषित कइले रहलीं। ओहघरी का जरूरत का मोताबिक अपना पैर पर ठाढ़ होके व्यावहारिक ढंग से ठोस प्रचार में जुटे के सुझाव बहुत कीमती रहे बाकी भोजपुरी का पुरहर विकास में जवन असली रोड़ा बा ओकरा ओर ध्यान गइल जरूरी रहे। ई रोड़ा बा साहित्य अकादमी का ओर से भोजपुरी के मान्यता ना मिलल। बहुत पीड़ा का साथे 'सोगहग' भाषा भोजपुरी का संदर्भ के उठावत दूसरका अधिवेशन (पटना, १५ मार्च, ७६) में अध्यक्ष डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी कहलीं कि "रागात्मक सम्बन्ध के उजागर करे वाला साहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान में नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बाति अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाइ जे आगे चलिके ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलियन के मान्यता देत जाति बा। अब सब बोलियन में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी' अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिन के काहे उपेक्षा होई? हम समझत बानी जे अब आउर बोलिन के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, लेखक बाड़न उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवां हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख-सुख, आशा-आकांक्षाके अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का शब्दन में बहुत पीड़ा रहे। उम्मेदि रहे कि अइसन विद्वान के अइसन मार्मिक अपील के सरकार अनसुना ना करी, बाकी हम देखत बानी कि १९८१ तक हमनी का इहे रटना रटे के परि गइल। पिछला छठवां अधिवेशन के अध्यक्ष डा० रामविचार पाण्डेय अपना भाषण में इहां तक कहि गइलन कि "अब सबले जरूरी हो गइल बा भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल। जब तक एकर मान्यता ना मिली तब तक भाषा के उन्नति रुकि जाई। लेखक लोगन के उत्साह कम होखे लागी। भोजपुरी के मान्यता दियवावल हमनी के एह घरी परम कर्तव्य बा आ ऊ हमनी के अधिकार ह।" रामविचार पाण्डेय एह प्रसंग में श्री जगजीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू के कहनाम के चर्चा कइलन कि अधिकार मंगला से ना मिले ला, ऊ त अपना ताकत लेवे के होला । अब हम रउआं समे के ध्यान एह ओर आकर्षित कइल चाहत बानी कि कवनो भाषा के असली ताकत का होले ? जाहिर बा कि उच्च कोटि के ठोस, गंभीर, स्तरीय आ जीवन का विविध कोनन के उजागर करत प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत ऊ जनजीवन के प्रेरित अनुरंजित करेवाला मौलिक साहित्ये होला जवन कवनो भाषा के असली ताकत होला। ई साहित्य अकेले बाहर आ भीतर दूनों तरह के शक्ति होला। इहे कवनो भाषा के, जवन बोली का रूप में कोना अंतरा में परलि बा, मानक भाषा बना के उछालि देला। मैथिली, ब्रज आ अवधी भाषा एकर उदाहरण बा। हालत ई बा कि भोजपुरी का मोकाबिला में ब्रज आ अवधी रुद्ध आ अधूरी भाषा बाड़ी स। काहे कि ओह में गद्य साहित्य नइखे। गद्य रचना बिना कवनो भाषा जीवन्त ना हो सकेले । एही कारण से गद्य के कवियन के कसौटी कहल गइल। सौभाग्य बा कि भोजपुरी एह कसौटी पर अबले खरा उतरति जात बा आ पूर्ण शक्तिशाली जीवन्त भाषा के लक्षण ओकरा में धीरे-धीरे उभरत जात बा। अइसना 'कड़ेर' भाषा के मान्यता के रोकि सकेला ? बाकी हमन के कुल्हिये ध्यान एह मान्यता का ओरि ना जा के एकरा साहित्यिक श्रीवृद्धि का ओर जाये के चाहीं। 'बौद्धायन' 'कौशिकायन' आ 'कालजयी कुंअर सिंह' जइसन महाकाव्य के परम्परा आगे बढ़ति गइलि आ साथे-साथ 'फुलसुंघी' 'भोर मुसुकाइल', आ 'रावन उवाच' जइसन उपन्यास रचना के परम्परा तेजी से आगे बढ़ति गइलि त एह रचनाधारा से जवन ताकत पैदा होई ओकरा आगे मान्यता दानीं अपनहीं झुकि के चरन चूमि लीहनि।

स्वातंत्र्योत्तर कालावधि में अर्थात् सन् ५० का बाद जबसे भोजपुरी साहित्य का इतिहास के आधुनिक प्रगतिवाला इतिहास शुरू होत बा, अइसन लागत बा कि एकरा उत्कर्ष का पेट में तीनि गो छटपटाहटि शुरूए से बेमारी नियर लागि जाति बाड़ी स—

१. भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता
२. भोजपुरी भाषा के एकरूप प्रयोग
३. संस्कृतनिष्ठ बनाम ठेठ प्रयोग

एह तीनो में सरकारी मान्यतावाली चर्चा ऊपर हो चुकलि बा आ निष्कर्ष ई निकलल बा कि एकरा विषय में चिन्तित आ जागरूक रहल त ठीके बा बाकी बहुत अधिक चिन्तित आ निराश भइला के जरूरत नइखे। जरूरत बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अपना कुल्हिये शक्ति के संचित कइके एकरा ठोस साहित्य का निर्माण में लगावे के। भोजपुरी का जन्मकुण्डली में कादो इहे लिखल बा कि केहू मानो भा मति मानो, जानो भा मति जानों, ई अपना भागि का बरिआई से, अपना आगि का आंचि से, आ रागि का आकर्षण से जुग-जुग ले जइसे दहचंद वनल चलि आइलि बा ओइसहीं भविष्य में आपन रास्ता बनावत चलि जाई। भाषा का रूप में एकर प्रयोग कबसे शुरू भइल, एकर चर्चा डा० भोलानाथ तिवारी भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह (२ मई, ८२)का अध्यक्षीय भाषण में कइले बाड़न। उनकर खोज बा कि "एकर नांव मुगल-शासन का अंतिमकाल से 'भोजपुरिया' मिलेला। सन् १९८९ में लिखल 'शेर मुताखरीन' में ई शब्द आइल बा। ओह वाक्य के भोजपुरी अनुवाद होई, 'एगो सिपाही भोजपुरिया में कहलसि कि एतना शोर मत मचाव।" डा० तिवारी का कहनाम का मोताबिक सन् १८६८ में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री जान बीम्स पहिले-पहिले एह बोली खातिर 'भोजपुरी' शब्द के प्रयोग कइले। एकर अर्थ ई भइल कि प्राचीनकाल का सरहपा से लेके गुरु गोरखनाथ तक का सिद्ध-साहित्य में, कबीरदास से लेके भीखा गुलाल तक का सन्त साहित्य में आ लोक साहित्य में सोहर, फगुआ आ संस्कारगीतन आदि से लेके सोहनी-रोपनी का गीतन में जवन वेनाम भोजपुरी भाषा चुपचाप आपन झंडा बुलंद कइले चलि आवति रहे ओकर उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिक चरण में विधिवत् नांव धरा गइल आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बीम्स साहेब का पोथी 'रायल एशि-याटिक सोसाइटी' का जर्नल भाग तीन में उद्घाटन हो गइल। सिर्फ बीम्स साहब ना, जार्ज ग्रियर्सन, विलियम क्रुक, ह्यूज फ्रेजर, आ ए० जी० शिरेफ वगैरह विदेश के अंग्रेजी विद्वान लोग एह भाषा के खूब उठवले बाड़न। ग्रियर्सन साहब त एकरा पर एकदम लट्टू हो गइल रहलन। आल्हा, विजय-मल आ गोपीचन्द का गीतन के भोजपुरी का अमर साहित्य का रूप में अपना कपार पर बइठा लेले बाड़न। बाकी अंग्रेजी राज का एह विद्वानन के मान्यता के ई अर्थ ना रहे कि अंग्रेजी सरकार एकरा के कवनों तरह के मान्यता देले रहलि। जइसे अंग्रेजी सरकार ओइसहीं सुराज का बाद कांग्रेसी सरकार एकरा के लम्मे-लम्मा से देखि के भड़कति रहे। मान्यता के त बाति अलगा बा। बाकी भोजपुरी के एगो कहाउति हवे कि अथरा तर चनरमा कबले छिपिहें ? परगट होइये जइहें। अइसहीं भोजपुरी में जब अइसन प्राणशक्ति बा, ऊ सीधे वैदिक भाषा का विकास-रूप में, पूर्ण वैज्ञानिक भाषा का रूप में निखरलि भाषा बा, त ओके मान्यता ना मिलला के सवाल नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब रहल दूसरका सवाल भोजपुरी भाषा का मानक रूप वाला। एह में दू राय ना हो सकेले कि भोजपुरी भाषा के अनेक क्षेत्रीय रूप बा। पटना, बनारस, गाजीपुर, बलिया आ छपरा वगैरह में कहां के भोजपुरी मानक मानल जाव जवना में साहित्य लिखाव? आ कवना क्षेत्र का बोलचाल का व्यवहार में आवे वाली भोजपुरी के लिखे वाली साहित्यिक भाषा बनावल जाव? अबहीं त हालत ई बा कि भोजपुरी का केवनो पत्रिका के उठावल जाव, ओह में छपल लेखन में भाषा के विविध रूप साफ-साफ लउके लागी आ अइसन सवाल मन में उठी कि केतना तरह के भोजपुरी बा? अतना बिलगाव का आछत कइसे कवनों भाषा सहित्यिक माध्यम बनी? कइसे ओकर व्याकरण बनी? कइसे ओकर वैज्ञानिक रूप निखरी? फेरु अइसनों जनाई कि एह सवालन के जवाब बहुत कठिन बा बाकि तनिक गहराई से सोचला पर बहुत सहजे में एकर समाधान मिलि जाई। पहिली बात ई कि तमाम दुनिया का भाषा का इतिहास बतावेला कि ओकरा व्यवहार में आवे वाला क्षेत्रीय भाषारूप अलग ढंग के होला आ साहित्यिक रूप अलग ढंग के होला। ई साहित्यिक रूप तनिक देर से भाषा का घिसत-घिसत जाके निखरेला। मेरठ का आसपास खड़ी बोली जवना रूप में बोलिल जाले का ठीक-ठीक ऊहे रूप बा जवन साहित्य का रूप में प्रयुक्त होखे वाली खड़ी बोली के बा? उच्चारण आ ध्वनि में कतना-कतना अन्तर हो जाई। ब्रजभाषा-अवधी के इहे हालि बा। एह कारण से भोजपुरी के क्षेत्रीय अनेकरूपता कवनो चिन्ता के विषय नइखे। ओकर रूप जइसे-जइसे साहित्य लिखात जाई ओइसे-ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई।

कुछ दिन पहिले ई विवाद होखे कि सम्बन्ध कारक के विभक्ति में 'क' लिखाई कि 'के' वाला रूप? दूनो गोल तगड़ा रहे बाकि धीरे-धीरे प्रयोग में 'क' वाला रूप बढ़ल जात बा। आ इहां तक कि 'क' के पक्षधर लोग अब 'के' पर उतरि आइल बा। इहे हालि लेकिन का अर्थ में प्रयोग होखेवाला शब्द रूप के बा। 'बाकी' आ 'बाकि' में भउरा रहे। फेरु धीरे-धीरे 'बाकि' के प्रयोग बढ़त जात बा। अइसहीं प्रवाह से मानक प्रयोग अपनहीं निखरत जाई। अकेले छपरा क्षेत्र के भोजपुरी बा जवना का क्रिया में लिंगभेद ना होखे ला। बाकि लिखित साहित्य का प्रयोग-प्रवाह में अइसन जानत बा कि उहां का भोजपुरी साहित्यो में धीरे-धीरे लिंगभेद उभरे के प्रक्रिया शुरू बा। असल में समर्थ साहित्यकार आ साहित्य का पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला। भाषा बनावल चाहे गढ़ल ना जा सकेले। अइसन प्रयास होइबो करी त ऊ हास्यास्पद होई। एह से फिलहाल एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरूरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नईखे। अनेकता में एकता जइसे एह भारत देश के विशेषता ह, ओसहीं ओकरा विशाल-विशाल क्षेत्रन में बोले जायेवाली भाषन के ई गुण होला। एह बारे में सबसे सुविधाजनक ई स्थिति बा कि क्षेत्रीय विविधा जवन भोजपुरी का दोष का रूप में समझलि जाति बा काहे ना ओके ओकरा गुण का रूप में ग्रहण कइल जाव? अइसन मानसिकता बना के जब मानक साहित्य सृजन का ओर भोजपुरी सेवक लोग आगे बढ़ी तबे ऊ स्थिति आई कि अनजाने अनायास भोजपुरी के एगो मानक रूप निखरि के ऊपर आ जाई। ओकरा विषय में खींच-तान जवले होत रही तवले सहजता ना आई आ ना ओकर स्तरीय आ वैज्ञानिक साहित्यिक भाषारूप के विकास होई। कवनो भाषा के परिनिष्ठित रूप निखरे में शताब्दी के शताब्दी खपि जाली स। अवही त भोजपुरी भाषा में गद्य साहित्य के रचना होत आधियो शताब्दी ना बीतलि।

अब बचल तिसरका संस्कृत शब्दावली के ग्रहण आ एकदम ठेठ प्रयोगवाला सवाल। हमके एगो भोजपुरी-प्रेमी का मुंह से ई सुनि के बेहद हैरानी भइलि कि संस्कृत का तत्सम शब्दन के प्रयोग चलत रही तब तक ऊ भोजपुरी कइसे होई? का तब ऊ हिन्दी ना हो जाई? अब हमके अइसन जनाइल जइसे ई सज्जन भोजपुरी के एकदम ठेठ गंवारू भाषा बूझि लेले बाड़न। अइसने टिप्पणी एक जगह डा० हजारी प्रसाद द्विवेदियो कइले बाड़न। एहमें कवनो सुबहा नइखे कि भोजपुरी भाषा के आपन एगो मौलिक शब्द भंडार बा जवन ओकर निजी बा आ ओकरा के ऊ ना छोड़ि सकेले। असल में ओकर ऊहे मूल थाती होले। बाकि अइसने मूल थाती त ब्रज, अवधी आ मैथिली वगैरह का प.से बा, आ ओकरा के सहेजि-बटोरि के रखला का बाद का ई भाषा संस्कृत का तत्सम शब्दन के धकिया देले बाड़ी स? अइसन त सोचले उलटा सोच हो जाई कि संस्कृत का शब्दावली आ दूसरा-दूसरा भाषा का शब्दावली मे विरोध बा। कवनो बोली के निजी देशज शब्द अगर ओकर मूल थाती बा त संस्कृत शब्दावली त तमाम-तमाम बोलियन सहित सगरी आर्यभाषा के महाथाती बा जवना का सम्पर्क से सीमित प्रभाव आ माध्यम वाली कवनो बोली धीरे-धीरे भाषा का सिंहासन पर बइठि जाई। संस्कृत का तत्सम शब्दन के बहिष्कार कइके का हम भोजपुरी के बोली के बोलिये रहि जाये दीहल चाहत बानी? एह बारे में हिन्दी साहित्य का इतिहास से कुछ सीख लेवे के चाहीं। अवधी भाषा के प्रयोग दू तरह के उहां भइल बा। एगो तुलसी जइसन आ एगो जायसी जइसन। पद्मावत में ठेठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवधी के प्रयोग बा आ रामचरितमानस में मिलल जुलल प्रयोग बा। प्रसंग आ पात्र का मोताबिक भाषा रंग बदलति बा। कहीं लिखात बा कि 'हंसवि ठठाइ फुलाइवि गालू' जइसन त कतहीं उचरत बा 'सोहमस्मि इति वृत्ति अखंड' जइसन। झोंपड़ी, राजमहल आ विद्वत् सभा सभ कर शब्दचित्र एकेनियर कइसे होई? एही समन्वय के लेके त तुलसी आ उनकरा मानस के अतना प्रचार भइल? जायसी बेचारू त आचार्य शुक्ल का समय में जाके उपरइलन हवन। भारतीय जनता का चित्तवृत्ति का बनावट में संस्कृत शब्दावली आधारभूत तत्व हवे। ओकरा के छोड़ले चीज बहुत हलुका जाई। सूरदास न छोड़लन आ विद्यापतियो ना छोड़लन त भोजपुरिया लोग काहें छोड़ी। किस्सा कहानी आ कविता में काम चलियो जाई त निबन्ध, समीक्षा आ शोध आदि में कइसे निस्तार होई? जइसन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार बा, भोजपुरी के 'सरल' भाषा ना बना के 'सहज' रूप में विकसित होखे दीहल जाव ओकर सहज रूप इहे बा कि प्रसंग, प्रयोग, अवसर आ प्रभाव का दृष्टि से ओकर जवन आपन प्रवाह बा ओके तोड़ल-मरोड़ल ना जाव। सहज प्रवाह में निखरलि भाषा जीवन्त होले। फेरु गंभीर साहित्यिक माध्यम होखे खातिर ओकर मात्र बोच-चाल वाला ठेठ रूप से कहाँ तक काम चली?

अन्त में वस्तु आ स्थिति का साथे का कुछ सवालन के संक्षिप्त सर्वेक्षण बाद ई निवेदन बा कि कवनों देश-जाति का नियति नियर कवनो भाषा के भी नियति होले। ओकरा कुछ करे के होला, कुछ उपराजे के होला। ओह नियति का बारे में कुछऊ पूर्व अनुमान ना हो सकेला। भोजपुरी के विकास जवन अतना तेजी से हो रहल बा, जवना के विवेकीराय विकास ना कहि के उछाल कहत बाड़न ओकर कुछ गम्भीर अर्थ बा। का दो ई क्रांति क्षेत्र के भाषा अपना भीतर कवनो भारी क्रांति के सम्भावना बीज छिपवले आगे बढ़ि रहली बा। अब हमनी के ई पुनीत कर्तव्य बा कि एकरा के विवादहीन स्थिति में बढ़े दीहल जाव। एकरा के आपन रास्ता बनावे दीहल जाव। एह भाषा का हिन्दी-संस्कृत केहू से विरोध भला कइसे हो सकेला? आत्मा के विरोध परमात्मा से कइसे हो सकेला? बस चाहे आदमी के जीवन होखे चाहे भाषा आ साहित्य के, समत्तर समरसता के जरूरत बा। एही समरस स्थिति में उत्कृष्ट रचना होले। आजु नाना प्रकार का राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय कारणन से एह समरस स्थिति में बेहद तनाव आ बाधा आ गइलि बा। संत्रास आ अनिश्चितता छा गइल बा। बाकि भाषा के असली समरस स्थिति उहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हू कि एहू कुल्हि के पचा के समकालीन जीवन के सही-सही अभिव्यक्ति देवे, भोजपुरी तनी गांव घर से, गली-पनघट से आ क्षेत्रीय घेरा से निकलि के सांसि लेउ। ओकर सांसि में राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय युगीन जीवन के सांसि मिलि जाव आ बहुत व्यापक स्तर पर एकर गंभीर रचनात्मक उठान देश विदेश का बुद्धिजीविन के प्रभावित आ आकर्षित करो। बस अधिक का कहीं ?

जय भोजपुरी !

—ईश्वर चन्द्र सिनहा
२९-१०-८२

लक्ष्मीसखी नगर
अमनौर, सारन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

आठवाँ अधिवेशन
(बिलासपुर)

के

अध्यक्ष
डॉ. विवेकी राय

के

अभिभाषण

बिलासपुर (मध्यप्रदेश) : संत कबीरनगर
३०-३१ दिसम्बर १९८३ आ १ जनवरी १९८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधि गण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग

सबसे पहिले आभार। सच हूँ हम बहुत-बहुत आभारी बानी। एह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का आठवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर आप सभ हमके बइठा दीहलीं। भीतर भारी सँकोच बा। सवाल बार-बार मन के कोंचि रहल बा, एह पद का अनुरुप का कवनो सार्थक सेवा हमरा से हो पाई? पद का गरिमा के निरबाह होई? बहुत कठिन बा जबाब। हमरा खातिर आसान ई बा कि निरबाह के भार रउआँ सभ के संउपि दीं। अब उबारि लीं भा बुड़ा दीं। भोजपुरी के नइया सचहूँ मजधार में बा। किनारा निगिचे लउकत बा। बाकी भेंटात नइखे। कइसे कहीं कि जोर कम लागत बा। ई बिलासपुर अधिवेशन एगो ऐतिहासिक जोर-बल हो गइल। भोजपुरी प्रदेश का बाहर इहां ई जवन सात्विक सनेह आ भावभरल लगाव लउकत बा ऊ बहुत उत्साह बढ़ा रहल बा। साँच त ई बा कि ई उत्साहे भोजपुरी भाषा का पास पूँजी बा जवन ओकरा के अतना तेजी से बढ़ा रहल बा। पिछला चारि-पाँचि बरिस का भीतर भोजपुरी में जेतना मूल्यवान रचनात्मक साहित्य तइयार हो गइल बा उ कवनो भाषा के समृद्ध आ प्रतिष्ठित भाषा बनावे खातिर पर्याप्त बा।

आप सभ का सोझा हम पहिले ऐही विषय के चर्चा कइल चाहत बानी। भोजपुरी के महत्ता के गीति आ मान्यता ना मिलला के रोवल त पुरान बाति हो गईल। जवन सर्वमान्य तथ्य होला ओकरा खातिर का सबूत जुटावे के बा? भोजपुरी के साहित्यकार बिना सरकारी मान्यता मिलले–ओकरा बर्तमान के खून–पसेना एक कइ के संवारि रहल बाड़न। भविष्य खुद आपन चिन्ता कइ लेई। कवनो भाषा के सबसे पहिली मान्यता ओकरा साहित्यकारन से मिले ले। भोजपुरी के सेवक, कवि, कथाकार, नाटककार, निबन्ध लेखक, समीक्षक आ पत्रकार तमाम-तमाम तरह का बाधा के अंगेजि के ओकरा भंडार के भरि रहल बाड़न। बोली का घेरा के तूरि के भाषा का, साहित्यिक भाषा का आसन पर आसीन भइल आसान काम ना रहे। अपना आन्तरिक शक्ति का बल पर ई भाषा एह गौरव के पवले बा। कवनो भाषा के केहू बनावेला ना, ऊ अपने से बनिजाली स। भोजपुरीयो अपना भागि के अपनही बनवले बा। कवनो अइसन छोट मोट कमी जवना से अन्न तलक ले तनिक सकोच होत रहल ह, ऊ हो एह साल दूर हो रहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कभी बस इहे रहलि ह कि देखे लायक कवनो गौरव के एगो कवनो बहुत बहुत ऊंचा शिखर ना रहल ह। अइसन शिखर जवन 'रामचरित मानस', 'सूरसागर' भा 'कामायनी' नियर दूरे से धाहे लागे।

आप सभके जानकारी होखे के चाहीं कि विहार सरकार के भोजपुरी अकादमी दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती, जेकरा के भोजपुरी साहित्य के प्रथम कहानी-लेखक होखे के गौरव मिलल बा, के महाकाव्य 'बउधायन' के प्रकाशित कइ दीहलसि। एकर प्रकाशन भोजपुरी साहित्य का इतिहास में एगो घटना बा आ ई एगो मानक मील के निर्णायक पत्थर बा। भोजपुरी त का, सम्पूर्ण भारतीय महान महाकाव्यन का परम्परा में ई रचना एगो ध्यानाकर्षक कड़ी हो गइलि बा। एह विशाल ग्रन्थ में कुल एकतीस सर्ग बा जवना में चालीस हजार से अधिक रसगर-दमगर पंक्ति खपलि बाड़ी स। कविता का लपेट में तथागत के जवन करुणा-मैत्री के विचारोत्तेजक सन्देश मिलि रहल बा ऊ एह उखड़ टूटन आ विध्वंस का युग में केतना मूल्यवान बा? ओह प्रज्ञा पुरुष का चरित्रांकन का संगे-संगे भारत, चीन, जापान, तिब्बत आ बृहत्तर भारत के तत्कालीन इतिहास, दार्शनिक संघर्ष, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ऊ सब अइसन जोरदार शिल्प में प्रस्तुत भइल बा कि एकदम आकर्षित कइ लेत बा। अब एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भोजपुरी का गौरवशिखर के देखि के केहू निर्णय करो कि भोजपुरी बोली ह कि भाषा ह? भारतीय साहित्य में इहो गौरव भोजपुरिये के मिलल कि बुद्ध भगवान का जीवन पर पहिलका महाकाव्य एतना व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखाइल। विचित्रता ई कि ई काम भइल एगो सन्यासी का हाथे। जेकरा कलम के कमाल देखिके डॉ० उदयनारायण तिवारी 'भोजपुरी के इलियड' के उपाधि दे दीहलन।

आप सभे का सोझा हम चाहत बानी कि भोजपुरी का गौरव-शिखरन के ई चर्चा कुछ और क्षण तक चली। एगो किस्सा ह कि कहला बिना हक-पद रोवेला। भोजपुरी के हक मारल जा रहल बा। हो सकेला कि अनजाने में ई अन्याय होत होखे। हमार निवेदन बा कि अब त आंखि खुले। भारत का कुल आबादी का दसवाँ भाग के लोग जवना भाषा के बोलत बाड़न, जवना भाषा के जीअत बाड़न ओकर उपेक्षा काहें? ओकरा में का नइखे जवन कवनो स्थापित भा समृद्ध भाषा में होखे के चाहीं। दस-बारह वरिस भइल एह भाषा के शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से छपल। अब त कई-कई गो शब्दकोश प्रकाशित हो गइले स। सबसे ताजा बा 'भोजपुरी शब्दसागर' शास्त्री सर्वेन्द्र त्रिपाठी का एह छह सौ से ऊपर पृष्ठन वाला कोष में बीस हजार से अधिक भोजपुरी शब्दन के अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से सम्मिलित कइल गइल बा। एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी शब्द सागर' का संगे संगे 'भोजपुरी शब्दानुशासन' के चर्चा कइल जरूरी बा। डॉ० रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' एह मानक व्याकरण के तइयार करे में बहुत श्रम कइले बाड़न। ओइसे एह बारे में एगो बहुत मजिगर जानकारी आप सभ के हम दे रहल बानी। भोजपुरी का शक्ति आ महत्ता के कुछ अनुमान एह बाति से लागि सकेला।

हिन्दी में अबहीं तलक ले कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण ना निकलल रहे कि एगो भोजपुरी के व्याकरण सन् १९१५ ई० में तैयार हो गइल रहे। पं० शिवदास ओझा का एह ऐतिहासिक व्याकरण के भोजपुरी अकादमी अब बहुत भव्य रूप में छापि देले बा। शब्दकोष आ व्याकरण का साहित्य का संगे-संगे अइसन जनात बा कि भोजपुरी संस्कृति आ जीवन का समग्र रुप के पचाके, ओकरा जबदस्त आन्दोलन नियर ई भोजपुरी साहित्य आगे बढ़ि रहल बा। 'भोजपुरी व्रत कथा', 'भोजपुरी संस्कार गीत', 'भोजपुरी नीति कथा', आ 'भोजपुरी होरी गीत' आदि नाँव के ग्रन्थ त एह बात के प्रमाण बटले बाड़न स, भोजपुरी लघु उपन्यास आ भोजपुरी लघु कथा के लहरि साल भर से आइलि बा। साहित्य का संगे-संगे अपना संस्कृति के सहेज-बटोर के चलत भोजपुरी साहित्य का डेग-डेग में बहुत गंभीरता बा। एह गंभीरता के अनुमान एह बाति से हो जाई कि भोजपुरी शौर्य के प्रतिमान बाबू कुंअरसिंह पर पाचि गो महाकाव्य एह भाषा में प्रस्तुत हो गइल बाड़न स। सबसे ताजा बा डॉ० सर्वदेव तिवारी राकेश के ग्रन्थ 'कालजयी कुंअर सिंह'। एह महाकाव्य का साढ़े तीन सौ पृष्ठन में पनरह गो सर्ग बा।

एह महाकाव्य के चर्चा करत एगो भोजपुरी के खण्ड काव्य 'निरधन के धन राम' याद आ जात बा। अपना 'किरनमयी महाकाव्य' का बाद एह खण्ड काव्य में कवि रामवचन शास्त्री अंजोर एगो बहुत ध्यानाकर्षक प्रयोग कइले बाड़न। वस्तु रुप में कृष्ण का आधुनिक लोकवादी रुप के त निखरलहीं बाड़न, ऊ भोजपुरी भाषा में दोहा, चौपाई, सोरठा, चौबोला, सवैया, वीर छन्द, आल्हा छन्द आ मुक्त छन्द वगैरह के प्रयोग कइके एगो सहज शिल्प-चमत्कार उपस्थित कइ दे ले बाड़न। ध्यानाकर्षक आ सहज शक्तिमान शिल्प का दृष्टि से भोजपुरी में कवि अविनाश चन्द्र विद्यार्थी का प्रबन्ध काव्यन के स्मरण कइल जाला। बाकी हमरा पास कहाँ मोका बा पूरी तरह से एह विशाल होत जात भोज-पुरी-साहित्य का संसार में आपके घुमावे के? हम त बस नया-नया उठल कुछ शिखरन का ओर जल्दी-जल्दी इशारा भर करत चलत बानी। फेरु इशारो कतना करीं? जवनी घरी बइठि के ई भाषण तइयार क इ रहस्य बानी हमरा टेबुल पर नन्दकिशोर मतवाला, अरुण भोजपुरी, सीताराम पाण्डेय प्रशान्त, रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र गोस्वामी, मोती बी० ए०, केदार पाण्डेय प्रशान्त, योगेन्द्र प्रसाद सिंह,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिंसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, मैनावती जी, जुगानी भाई, अवध बिहारी कवि रामनारायण उपाध्याय, श्री निवास मिश्र, विश्वरंजन, कैलाश कमरपुरी, विश्वनाथ प्रसाद शैदा, व्रजभूषण मिश्र, विपिन बिहारी चौधरी, राजबल्लभ प्रसाद सेवक आ रामबिहारी रमेश जइसन भोजपुरी के समर्पित रचना कारन से पचास से ऊपर एकदम टटका साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, लघुकथा, नाटक आ निबन्ध आदि का रूप में आदर का साथे समीक्षार्थ रखल बा।

मन हैरान हो जात बा भोजपुरी का रचना कारन के अइसन उत्साह देखिके। बिक्री का साधन आ संभावना का कपार पर लात धइके, व्यवसायिक दृष्टि का चश्मा के आँखि पर से हटा के ई जवन शुद्ध साहित्य सेवा-यात्रा हो रहलि बा ऊ निष्फल होवे वाली नइखे। एह यात्रा-मार्ग पर राहुल सांस्कृत्यायन, आचार्य शिवपूजन सहाय, प्रिंसिपल मनोरंजनसिंह, महेन्द्रशास्त्री, रघुवंशनारायणसिंह, चतुरीचाचा, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, आ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वगैरह वगैरह के अमिट चरणचिह्न अंकित बा। कवि रामविचार पाण्डेय, सुन्दरजी, भोलानाथ गहमरी, स्वर्णकिरण, आंजनेय जी, डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, अनुपजी, अक्षयवर दीक्षित, विप्रजी, सहृदयजी, विजय बलियाटिक, ईश्वरचन्द्र सिन्हा आ डॉ० उदयनारायण तिवारी जइसन सिद्ध लोग कबीरदास से ले के भिखारी ठाकुर तक का बनावल एह साहित्यिक-यात्रा का मार्ग के प्रशस्त करे में जुटल बाड़न, मंजिल के बिना कवनो चिन्ता कइले।

आप लोग कहीं अइसन मति सोचीं कि सरकारी मान्यता जइसन चीजे भोजपुरी साहित्य के मंजिल बा। अइसन सोचल एगो भारी भ्रम होई। साहित्यिक आन्दोलनन के मंजिल अतना सस्ता आ सामयिक ना होले। जातीय, राष्ट्रीय आ मानवीय जीवन के अभ्युत्थानमूलक सपनन का संगे ऊ मंजिल जुड़ल होले। सरकारी मान्यता के ओह ऊंचा लक्ष्य का भीतर एगो उपयोगी पड़ाव कहल जा सकेला। बाकी एकर अर्थ इहो नइखे कि एह पड़ाव के चिन्ता छूटि गइलि बा। चिन्ता बनलि बा। हर साल एह मोका पर सरकार के दरवाजा खटखटावल जात बा। पिछला साल अमनौर वाला सम्मेलन में त तनी ढेर जोर से दस्तक दीहल रहे। डॉ० प्रभुनाथ सिंह आ स्व० श्री केदार पाण्डेय सहित कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गो प्रतिष्ठित सरकार के मंत्री लोग त रहबे कइलन, डॉ० नामवर सिंह आपन बहुत समय दीहलन ।

मान्यता का सवाल पर डॉ० नामवर सिंह अपना उद्घाटन भाषण में बतवलन कि अब तक भोजपुरी के अष्टम सूची में जगह दे के मान्यता प्रदान करे का सवाल पर सरकार राजनीतिक कारनन से आगा पीछा करति बा। दूसर डरई बा कि एकरा से हिन्दी के धक्का चाँहपी। आगे डॉ० नामवर सिंह साफ शब्दन में कहलन कि राजनीतिक कारन महज एगो भ्रम बा। एकरा बढ़ंती में तमाम सरकारी आदमिन के मदद बा। खुद बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी बना देले बा। विश्वविद्यालयन का पाठ्यक्रम में एम० ए० तक भोजपुरी स्वीकृत बा। तमाम रूप त साहित्यिक आ सास्कृतिक बा, कहाँ बा रंच-मात्र कवनो राजनीतिक रंग ? रहल सवाल हिन्दी का क्षति के त ई ओहू से भारी भ्रम बा। हिन्दी से ओकर कवनो विरोध होइये ना सकेला। मैथिली, अवधी आ व्रजभाषा जइसे हिन्दी मानलि जाति बाड़ी स, ओइसहीं भोजपुरियो हिन्दी के अंग बा। जइसे हिन्दी का नीचे ओह भषवन के साहित्य शोभा बढ़ावत बा ओइसहीं एकर साहित्य बढ़ी त ओकरे बढ़ंती कहाई। भोजपुरी में कहीं हिन्दी का विरोध के स्वर हइयो नइखे भोजपुरी के कवि सीताराम पाण्डेय प्रशान्त त हिन्दी का उपेक्षा पर जइसे तड़ाप के रहि जात बाड़न। उनकर तीन पंक्ति देखीं—

'हिन्दी के हुरपेटल छोड़ ऽ !
ऊ चउदहो में दुल रु ई हिन्दी,
मां भारत के ह ई बिन्दी।'

अब के नालायक भोजपुरी भाषा प्रेमी होई जे भारत माता का एह बिन्दी के मद्धिम करे के सोची ? एह लोकतंत्र में केन्द्र आ प्रान्तन का भीतर जइसे सह अस्तित्व बा ओइसहीं ओइसहीं केन्द्रीय भाषा हिन्दी आ ओकरा छाया में विकसित होत बोलियन के स्थिति बा। विघटन के प्रवृत्ति ना, भोजपुरी आ भोजपुरिहा लोगन में संघठन के प्रक्रिया होले। इतिहास एकर गवाह बा। ऊ लोग देश का एकता के इतिहास बनवले ह आ ऊहे लोग हिन्दी के जन्मदाता से लेके ओकरा साहित्य के बढ़ावे आ उत्कर्ष पर पहुँचावे वाला का रुप में खपि के ओकरा राष्ट्रीय रूप के निखारे में मूल्यवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगदान कइले ह। हिन्दी राष्ट्रभाषा का छत्रछाया में महज ऊ लोग अपना मातृभाषा का साहित्यिक रूप के संवारे खातिर छटपटा रहल बा। दूनों के ई रूप एतना साफ बा कि तनिको कवनो आशंका के गुंजायश नइख। दूसर आशंका प्रगट कइल जात बा कि जनगणना में यदि मातृभाषा भोजपुरी अंकित करावल जाई त हिन्दी कमजोर होई। बाकी अइसन काहे होई? भोजपुरी हिन्दी आ खड़ी बोली हिन्दी में आखिर दूनो त हिन्दीये ह। एह तरह से भोजपुरियो वाला लोगन के मातृभाषा हिन्दी ह। आशंका जवन बा तवन महज मनोवैज्ञानिक बा। ढेर लोगन का मन में भोजपुरी का गंवारू बोली वाला हीनता के रूप अबही तलक ले जड़ जमवले बा। अइसना लोगन से निहोरा बा कि अब तनी एकरा लिखित साहित्य के देखो। अब त हिन्दी का तपोनिष्ठ ऋषि गणेश चौबे का हाथे एकरा सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य के एगो विवरणो पुस्तकाकार प्रकाशित हो गइलि बा पुस्तक एकरा रचनात्मक साहित्य का संदर्भ में एकदम चौंका के आँखि खोलि देवे वाली बा।

हम अपना भाषण में घूमि फिरि के भोजपुरी का रचनात्मक साहित्ये पर आ जात बानी। का करीं? मजबूरी बा। हमरा दृष्टि में इहे ओकरा तमाम-तमाम तरह का समस्यन के हल बा। जइसे अंधकार का समस्यन के एकमात्र समाधान प्रकाशे होला ओइसहीं कवनोभाषा आ ओकरा साहित्य से सम्बन्धित समस्यन के हल ओकरा प्रकाशित मूल्यवान सृजन धर्मी साहित्ये का भीतर से निकले ला। भोजपुरी का मान्यता के सवाल, ओकरा एक रूपता के सवाल आ ओकरा मानक प्रयोग के सवाल आ ओकरा प्रचार-प्रसार के सवाल, कुल्हि सवालन के लड़ाई त एही साहित्यिक समृद्धि का केन्द्र में लड़ा जाई। ई केतना अच्छा बा कि हासिया के लड़ाई छोड़ि के भोजपुरी के साहित्यकार लोग असली केन्द्र में जूझि रहल बाड़न। उनके भारी सफलतो मिलति बा। भोजपुरी-काव्य का समृद्धि के एगो संक्षिप्त झाँकी आप के हम देई चूकल बानी।

आप शंका कइ सकीलां कि एह प्रतिस्पर्धा का युग में खाली काव्य-साहित्य ले के कइसे भोजपुरी जीवन्त बनी? व्रज-अवधी नियर कहीं ऊ हो न गति-शून्य हो जाउ। हम आपके विश्वास दिलावत बानी। भोजपुरी के गद्य साहित्य ओकरा काव्य साहित्य से समृद्ध बा। हम गद्य-साहित्य में सिर्फ भोजपुरी का कथा-साहित्य का बारे में दू शब्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहे के आप से इजाजत चाहवि । कवनो जमाना रहे कि काव्य सम्पूर्ण साहित्य क केन्द्रीय विधा रहे । अब ओकर स्थान कथा-साहित्य छोरि ले ले बा । भोजपुरी के कथाकार लोग एह तथ्य के भरपूर मौलिकता आ मानक रचनात्मक प्रतिभा का साथे प्रदर्शित कइले बाड़न । अपना पुस्तक 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में हम हिन्दी आ भोजपुरी का कथा साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण करत एह नतीजा पर चोंहपल बानी कि भोजपुरी के कथा-साहित्य हिन्दी कहानी का विकास के कुल्हिये मंजिल एके संगे पार करे बदे सरपट्ट समानान्तर चालि वढ़ा रहलि बा आ ओकर लक्ष्य बा आधुनिकतम शिल्प-विकास का मेल में आ गइल । एह बाति के एह तरह कहि सकीलां कि भोजपुरी के कहानी-साहित्य के क्रमिक विकास नइखे भइल । ई एक बारगी उछाल ले लेले बा । रामेश्वरसिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरीचाचा), रामवृक्षराय विधुर, व्रजकिशोर,पी० चन्द्रविनोद, रामनाथ पाण्डेय और जितराम पाठक आदि के कहानी कलात्मक उत्कर्ष और युगीन जीवन का संश्लिष्ट अंकन का दृष्टि से एक बेरि पढ़ला का बाद फेरु भोर ना परि सकेलीस ।

उपन्यास-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का रूप में 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल) के निःसंकोच हम आपका सामने राखि सकी लाँ। ऐहिकता, प्रेमादर्श, लोक कथात्मकता वीरत्व. त्याग-भोग, भाग्यवाद, संयोगवाद, संगीताकुलता, आंचलिकता, आदर्श चरित्र सृष्टि, भोजपुरी संस्कृति के निखार के चित्र, मिथकीय प्रभाव आ कुल्हिमिला के रोमैन्टिक सृजन के जइसन कलात्मक शिखर 'फुलसुंघी' में उभरल बा। ओइसन खड़ी बोली हिन्दी में दुर्लभ बा । अइसही चार उपन्यास के और नांव हमसे धरवा ले ईं । राही मासूम रजा का 'आधागांव' जइसन सघन आँचलिक प्रयोग का दृष्टि से 'घर टोला गांव' (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह), रेणु का 'मैला आँचल' जइसन आजु के बदलत जात गाँव के तसवीरवाला भोजपुरी के सब मे विशालकाय उपन्यास 'भोर मुसुकाइल' (विक्रमाप्रसाद) मैथिली का खट्टर काका जइसन प्राध्यापक अंचल के उपन्यास 'सुन्नरकाका' आ चतुरसेन शास्त्री के 'वयं रक्षामः' का स्वर आ स्तर के छुअत 'रावन उवाच' (गणेशदत्त किरण)। बाकी उपन्यासन के चर्चा का करीं ? चर्चा कइल उद्देश्य नइखे । उद्देश्य बा ई बतावल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि अपना लक्ष्य सिद्धि का दिशा में भोजपुरी-साहित्य तेजी से बढ़ि रहल बा । ओकरा में नाटक, ललित निबन्ध, रेखाचित्र आ रिपोर्ताज जइसन साहित्यिक विधन के प्रतिष्ठा बढ़ि रहल बा । 'भोजपुरी माटी', 'झकोर', 'अकादमी पत्रिका' आ 'दिअरी' जइसन ढेर-ढेर पत्रिका ओह के बढ़ावे में मदद कइ रहलि बाड़ीस ओकर सोरि भोजपुरी भाषा-भाषी उत्तरप्रदेश बिहार का जिलन का जमीन में बहुत गहराइ से त गड़ली रहलि ह, ओकर डाढ़ि-पात देखीं, हई फइलि के एह मध्यप्रदेश तक चौहपलि । आप लोगन का एह स्नेह-सद्भाव का प्रति अन्त में केतना आभार प्रकट कइल जाव ? मारीशस, सूरीनाम, ट्रिडीनाड आ गायना वगैरह में एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के प्रसार के सुख त निर्गुण ब्रह्म का स्वाद नियर बा बाकी बिलासपुर के ई प्रकट स्नेह–सुख त एकदम सगुण साकार का रोमांच से भरि देत बा । आप सभ लोग प्रणम्य बानी कि भोजपुरी के अतना नेह भरल हाथन से उठवले बानी ।

जय हिन्दी ! जय भोजपुरी !

संत कबीर नगर
बिलासपुर (म० प्र०) डा० विवेकीराय
३०-१२-८३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रित– श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस, तेलीपारा, बिलासपुर [म० प्र०]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

नउआँ अधिवेशन, राँची

अध्यक्ष
श्री गणेश चौबे
के
अभिभाषण

श्री केदार पाण्डेय नगर, माड़वाड़ी विद्यालय
रांची (बिहार)
२६-२७ अक्टूबर, १९८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगत विद्वान, भोजपुरी के प्रेमी भाई-बहिन !

सबसे पहिले हम अपने सभनि के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह अधिवेशन के हमरा के अध्यक्ष बनवला लागि बहुत-बहुत धन्यवाद देत बानी।

एह पद के भोजपुरी क्षेत्र के अइसन-अइसन विद्वान शोभा बढ़वलेबाड़े, जेकरा योग्यता के चर्चा देश-विदेश में बाटे। ओह आसन पर हमरा अइसन एगो देहाती किसान के कवना गुन पर रीझ के बइठवलीं ह, ई हमरा समझ में नइखे आवत। आज का युग में निचला स्तर का आदमी का तरफ लोग के खयाल बढ़ गइल बाटे। शायद एही से भोजपुरी के झंडा ढोएवाला एगो सिपाही के अपने सभनि अध्यक्ष बनवलीं ह। अब त अपनही सभनि का निबाहे के बाटे।

जवना क्षेत्र के आज भोजपुरी मातृभाषा बाटे, उ प्रचीन काल में मल्ल, काशी, करुष, वज्जि आदि अनेक जनपद में बँटल रहे। समय का फेर से काशी के छोड़ के आउर सब जनपद इतिहास का चर्चा के वस्तु रह गइल बाटे। लेकिन काशी राजनीतिक इकाई का रूप में त ना, सांस्कृतिक इकाई का रूप में अपना गरिमा के कायम रखले बाटे। ई भोजपुरी बोलेवाला जनता का सांस्कृतिक चेतना के जगा रहल बाटे, ओकरा के संजीवनी बूटी पिआ रहल बाटे। अब काशी जनपद के विस्तार उहाँ तक मानल जा सकेला जहाँ तक भोजपुरी बोलल जाला। भारतवर्ष के प्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त एही जनपद के एगो सपूत रहले। काशी में गंगा का किनारा दस बेर अश्वमेध यज्ञ भइल रहे। एही से ओह स्थान के नाम दशाश्वमेध घाट परल। इहाँ के भारशिव अपना पीठ पर शिवलिंग के बान्ह के अपना इष्ट देवशिव के भार ढोअत लड़ाई में जास आ उहाँ से भाग के अपन पीठ ना देखावस। हुमायूँ से राज सिंहासन छीन लेवेवाला शेरशाह आ सन संतावन का स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजन के छक्का छोड़ावेवाला बाबू कुँअर सिंह एही क्षेत्र के निवासी रहस। भारत के प्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त एही जनपद के एगो वीर सपूत रहले। आजो का युग में चंपारन के नमक सत्याग्रह आ बलिया के सन बेयालिस के आन्दोलन बेजोड़ रहल बाटे। ई बाटे एकरा शूरता के, एकरा वीरता के कुछ झांकी।

भोजपुरी भाषा के क्षेत्र लगभग पचास हजार वर्गमील में फइलल बाटे। एह देश में एह भाषा के बोलनिहार के संख्या आठ करोड़ से उपर बाटे। एतना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़हन क्षेत्र भइलो पर इहाँ चीनी उद्योग छोड़ के दोसर कवनो उद्योग नइखे। इहाँ कवनो खनिज ना पावल जाला। गंगा, सरयू, गंडक, गोमती आदि इहाँ का नदियन में भयंकर बाढ़ आ जाला जवन इहाँका खेती के बर्बाद कर देवेला। एह हालत में इहाँ का निवासियन का आपन जनम धरती छोड़ के रोजी-रोटी का तलाश में देश का औद्योगिक क्षेत्रन में, चाय बगान आदि में जाये के परेला। एही सब स्थिति में आज से लगभग डेढ़ सौ बरिस पहिले इहाँ के निवासी बृटिश गायना, ट्रिनिडाड, फीजी, मौरिशस, बर्मा, दक्षिण अफ्रिका आदि अनेक देश में गइले आ अपना मेहनत का बल पर उहाँ का माटी से सोना उपजवले। ऊ लोग कवनो तरह आजतक अपना भाषा आ संस्कृति के बँचावत आइल बाटे। लेकिन ओह देशन में भोजपुरी का पढ़ाई के कवनो व्यवस्था नइखे। एह से नयकी पीढ़ी के लोग अपना भाषा के भुला रहल बाटे। ई एगो खटकेवाला बात बाटे।

आर्य जाति का ओह शाखा के व्रात्य कहल जाय, जे वैदिक रूढ़िवाद के ना माने। ऊ व्रात्य लोग एही क्षेत्र में रहत रहे। ई जनपद सदा से प्रगतिशील विचार के समर्थक रहल बाटे। जैनधर्म के तीर्थंकर पार्श्वनाथ एही क्षेत्र के एगो राजकुमार रहस। महात्मा बुद्ध एही क्षेत्र का सारनाथ से अपना धर्म के प्रचार शुरू कइले। निर्गुण आ सगुण पंथ का अनेक संप्रदाय का इहाँ फूले-फरे के अवसर मिलल। काशी संस्कृत का पढ़ाई के केन्द्र चलल आवत बाटे, एह से इहाँ के पंडित संस्कृत में रचना कइलें। इहाँ के कृष्ण के भक्त कवि व्रजी में आ राम के भक्त कवि अवधी में रचना कइलें। अइसन उदार आ व्यापक दृष्टिकोण के फल ई भइल इहाँ का पढ़ल-लिखल लोग के ध्यान भोजपुरी में रचना करेका ओर गंइवे ना कइल। इहे कारण बाटे भोजपुरी में मध्य युग का संत आ भाट के रचना त ढेर मिलत बाटे आ आउर लोग के कम।

सन १८५७ ई० का स्वतंत्रता संग्राम के सरकार बहुत सख्ती से दबा देलस। अब सरकारी अधिकारी आ ईसाई पादरी इहाँ का भाषा,साहित्य, लोक साहित्य, जाति प्रथा, रस्म-रिवाज आदि के जानकारी इहाँ का जनता पर सफलता का साथ शासन करे लागि जरूरी समझलें अ। जेकरा जवना विषय में रूचि रहे ओह तरह के सामग्री के संग्रह आ विश्लेषात्मक अध्ययन करे में लगन का साथ जुट गइले। ओह विषय पर पत्रिकन में लेख निकलल, ग्रंथ तइयार भइल आ छपल। एह दिशा में ऊ लोग के काम बहुत महत्व के बाटे। हमरा त अइसन बुझाला भारतीय विद्वान अबही तक ओह लोग का काम का चारो ओर चक्करे काट रहल बाड़े, उहाँ तक ना पहुँच सकले हँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के भाषा का अर्थ में पहिला उल्लेख संन १७८९ ई० के मिलेला काशी का राजा चेत सिंह का सिपाहियन के बोली 'भोजपुरिया' लागि आइल बाटे। भोजपुरी के पहिला व्याकरण सरकार सारन के कलक्टर जे० बीम्स लिखलें सन १८६८ ई० में बंगाल एसियाटिक सोसायटी का पत्रिका में छपल। अपना व्याकरण में बीम्स भोजपुरी के प्रयोग ओह समूचा क्षेत्र का भाषा लागि कइले जहाँ-क ई बोलल जाला। तब से शोध विद्वान एही व्यापक अर्थ में भोजपुरी शब्द के प्रयोग करत आवत बाड़ें।

भोजपुरी व्याकरण आ एकरा लोक गाथा पर शोध कार्य करेवाला विद्वानन में डा० ग्रियर्सन के काम सबसे बेशी महत्व राखत बाटे। आज से लगभग असी बरिस पहिले उनकर 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण प्रकाशित भइल। ओह में उ समूचे भोजपुरी क्षेत्र का भाषा के बहुत बारीकी से छानबीन कइलें बाडे। डा० ग्रियर्सन का भोजपुरी जनता आ ओकरा भाषा लागि अपार श्रद्धा रहे। उ अपना भारतीय भाषा सर्वेक्षण का भाग ५ जिल्द २ का पृष्ट ४ आ ५ पर मैथिली आ मगही बोली के चर्चा कइला का बाद लिखत बाड़ें—" भोजपुरी एगो कर्मठ जाति के व्यावहारिक भाषा ह, जे अपना के परिस्थितिका अनुकूल बना लेवेला आ जे अपन प्रभाव समूचा भारत पर जमा चूकल बाटे। हिन्दुस्तान के सभ्य बनावेवाला बड़हन जातियन में बंगाली आ भोजपुरी ई दूनू बाटे। ई काम पहिलका अपना कलम से आ दोसरका अपना लाठी से कइले बाड़े।" भोजपुरी के बखान करत आगे चलके ग्रियर्सन साहब कहत बाड़—"भोजपुरी बोलेवाला लोग अइसने होखेला आ अइसन समुझल जा सकेला कि ओह लोग के भाषा बराबर व्यवहार में आवेवाला हस्तगत वस्तु अइसन बाटे आ ओह में व्याकरण के जटिलता बेशी नइखे।" डा० ग्रियर्सन मैथिली आ मगही के बोली का रूप में आ भोजपुरी के भाषा का रूप में चर्चा कइले बाड़ें। उ मैथिली आ मगही लागि डायलेक्ट' आ भोजपुरी लागि "लैंग्वेज" के व्यवहार कइले बाड़ें।

भोजपुरी साहित्य का आदि रूप के झांकी सरहपा, शबरपा, भुसुकपा, कोकिलपा आदि सिद्ध आ गोरखनाथ आदि नाथपंथी योगियन का रचना मे देखल जा सकेला। चौरंगीपा के 'प्राण संकली' भोजपुरी गद्य में बाटे। सिद्ध आ नाथ-पंथी योगियन के समय आठवीं से चौदहवीं सदी तक मानल जा सकेला। लेकिन ओह समय तक पूर्वांचल के भाषा बंगला, असमिया, मैथिली, मगही, भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि के रूप निखरल ना रहे। राजा गोविन्द देव के दरबारी पंडित दामोदर शर्मा का 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' में बनारसी बोली के रूप मिलेला।

भोजपुरी के पहिलका कवि पन्द्रहवीं सदी के कबीर रहलें। ऊ अपने निपढ़ रहलें। उनका बानी आ सबद के उनकर चेला लोग पुस्तक में समेटलस। देखे में कबीर का भाषा पर खड़ी बोली, ब्रजी, राजस्थानी पंजाबी आ अवधी के स्पष्ट प्रभाव नजर आवेला लेकिन खुद कबीर अपना बोली के पूरबी कहले बाड़े— "बोली हमरी पूरब की हमें लखै ना कोय। हमको तो वाही लखै, धुर पूरब का होय।" एह दोहा से ई मालूम हो रहल बाटे कि पूरबी क्षेत्र का बाहर के उनकर चेला उनका बोली के ठीक-ठीक ना समुझस। एह से जे उनकर पूरबी चेला का कलम से लिखाइल बाटे, ओकरे के प्रमाणिक मानल जा सकेला। उनका पूरबी चेलन के लिखल उनका पोथियन में भोजपुरी के स्पष्ट प्रभाव नजर आवेला। आ ओकरा के भोजपुरी मानलेवे में कवनो दिक्कत नइखे। तब से कबीर पंथी, दरिया-दासी, शिवनारायणी, धरनीश्वरी, बावरी, सर भग आ सखी संप्रदाय के निर्गुण-वादी संतन के ढेर के ढेर पद भोजपुरी में रचाइल। अठारहवीं सदी से भोजपुरी में सगुनपंथी संतन आ कथावाचक पंडितन के पद आ कीर्त्तन आवे लागल। आजो भोजपुरी में संत-साहित्य के रचना अबाध गति से चल रहल बाटे।

जहाँतक भोजपुरी में प्रेमाख्यान आ रीति-काव्य के सवाल बाटे अब तक अइसन बहुत कम सामग्री प्रकाश में आइल बाटे। तवहुँओ 'सुग्गा सनेश, हंसदूत, हरकिसुन चौतीसा आ कुँअर सिंह का दरबारी कवियन के रचना मिलला पर अइसन आशा होत बाटे कि ठीक से खोज होय त आउर-आउर सामग्री मिल सकेला।

भोजपुरी के आधुनिक साहित्य के आरंभ विरोधात्मक रचना से भइल बाटे। ओनइसवीं सदी का अंत में उत्तर प्रदेश का सरकारी कचहरियन में उर्दू भाषा के चलन रहे। ओकरा विरोध में हिन्दी मिलल भोजपुरी में नाटक लिखाइल, मंचन भइल ओह समय अंग्रेजी फौज का मांस के जरूरत पूरा करे लागि अनेक कसाई खाना खोलल गइल जवना में गोहत्या होय। ओकरा विरोध में स्व० दूधनाथ उपाध्याय 'गोविलापछंदावली' के रचना कइलें, जवना के सरकार जप्त कर लेलस। राष्ट्रीय कॉंग्रेस का स्थापना से जनता में राष्ट्रीय चेतना जागे लागल। एकर प्रभाव भोजपुरी क्षेत्र पर परल। फेर भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत के रचना शुरू भइल। ई सब गीत जन सभा में गावल जाय। एह गीतन में स्व० रघुवीर नारायण के बटोहिया बहुत प्रसिद्ध भइल। सन १९१२ ई० में उ पहिल-पहिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिहारी का विहार छात्र सम्मेलन का सार्वजनिक मंच से गावल गइल । उ गीत भोजपुरी क्षेत्र में राष्ट्रगीत का रूप में गावल जाला । भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत का रचना के सिलसिला तव तक चलत रहल जव तक देश स्वतंत्र ना भइल ।

राष्ट्रीय चेतना का जागृति का साथे-साथ देश में क्षेत्रीय चेतना का वल मिलल आ क्षेत्रीयता के भावना जागल । एकर असर भोजपुरी क्षेत्रो पर परल । चउथा दशक का अंत से आ पाँचवा दशक तक जे जनपदीय आन्दोलन चलत रहल ओकर असर भोजपुरी साहित्य का विकास पर परल । आचार्य कनासी दास चतुर्वेदी के सवाल उठल कि काशी, प्रयाग आदि केन्द्रीय संस्थन पर निभर ना रहके हरेक जनपद में साहित्यिक काम में प्रगति लावे लागि जनपदीय साहित्य सम्मेलन के स्थापना होखे के चाहीं । डा० वाशुदेव शरण अग्रवाल के प्रस्ताव रहे कि प्राचीन साहित्य में आइल जनपदन के इकाई मान के ओकरा भूमि, नदी, वन, पर्वत, जन, भाषा, लोक गीत, कथा, कहावत, इतिहास, पुरातत्व, जाति, प्रथा, नाच, पूजा-पर्व तिहार, रहन-सहन खेल आदि के हिन्दी का माध्यम से सांगो पांग अध्ययन होखे के चाहीं । ओही समय महा पंडित राहुल सांकृत्यायन के एगो लेख 'मातृ भाषाओं का प्रश्न' का शीर्षक से हंस का सितम्बर १९४३ ई० का अंक में निकलल । उनकर सुझाव रहे कि प्राचीन जनपद का आधार पर देश का प्रान्तन के फेर से बँटवारा होखे के चाहीं, ओह प्रान्त के शासन के भाषा आ शिक्षा के माध्यम उहाँ का जनपदीय भाषा के वनावे के चाहीं एह लागि जनपदीय भाषा में साहित्य रचना होखे के चाहीं । इनका सुझाव का अनुसार हिन्दी बोलेवाला तीनू प्रान्त ३० प्रान्त में बँट जात रहे । उनकर इहो सुझाव रहे कि भोजपुरी भाषी क्षेत्र के काशी आ मल्ल दू प्रान्त में बाँट देवे के चाहीं । जवना के भाषा काशिका आ मल्लिका रही । गोपालगंज में सन १९४७ ई० का दिसम्बर में दोसरका भोजपुरी प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के ऊ अध्यक्षता कइले, जवना में घुमा फिरा के उपर वाला ओही वात के दोहरवले । उनका नजर में भोजपुरी नाम के कवनो भाषा ना रहे । ऊ भाषा के भाखा, सरस्वती के सुरसती, हिन्दी के हिनुई, हिन्दुस्तान के हिनुतान, मास्टर के महटर लिखस । एही भाषा में ऊ आठ गो एकांकी लिखले रहस । राहुल जी के सुझाव रूस का ढंग पर राजनीतिक प्रस्ताव रहे । हिन्दी जगत से जनपदीय आन्दोलन के कड़ा विरोध भइल । भोजपुरी जनता एह प्रस्ताव के त मान लेलस कि भोजपुरी में साहित्य रचना होखे के चाहीं । लेकिन प्रान्त का फेर से बँटवारा के सवाल आ भोजपुरी का शब्दन के तूर-मरोर के गंवारू भोजपुरी बनावे का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्ताव पर ऊ सहमत ना हो सकल। अग्रवाल जी आ चतुर्वेदी जी के प्रस्ताव तं शुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव रहे। एकरा के मान लेवे में कवनो कठिनाई ना रहे। फेर स्थानीय साहित्यक संस्थन के गठन नया साहित्य के सर्जन आ लोक साहित्य पर शोध कार्य आरंभ भइल।

राष्ट्रीय आन्दोलन क्षेत्रीय चेतना के जागृति आ जनपदीय आन्दोलन के फल ई भइल बाटे कि गत चालीस बरिस का अवधि में भोजपुरी में प्रबंध काव्य गीति काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, व्यक्तिगत निबंध, साहित्यक निबंध, समीक्षा कोश, व्याकरण, छंद शास्त्र, यात्रा साहित्य, पत्र-साहित्य का हरेक विधा पर हजारों सुन्दर ग्रंथ आइल बाटे। भोजपुरी के साहित्यकार हिन्दी का गतिविधि सतर्क दृष्टि से देखत रहत बाड़े आ जवना ढंग के पुस्तक हिन्दी में निकलत बाटे, ओइसन उ भोजपुरी में ले आवे के प्रयास करत बाड़े। भोजपुरी साहित्य के जवना तेजी से विकास हो रहल बाटे आ इ से विश्वास कइल जा सकेला कि भोजपुरी के रागात्मक आ ललित साहित्य जल्दिये आउर-आउर समृद्ध भारतीय भाषा का पांति में बइठे लायक हो जाई।

इहाँ एगो बात इहो कहे के बाटे कि दूधनाथ उपाध्याय अपना भोजपुरी रचना के 'दोआबा का बोली' में रघुवीर नारायण अपना भोजपुरी के प्रान्तिक भाषा के, चंचरीक अपना गीत के 'उत्तर प्रदेश का ग्रामीण बोली' के मन्नन द्विवेदी अपना भोजपुरी सवैया सखरिया हिन्दी के रचना कहले बाड़ें। भोजपुरी नाम ए सदी का पाँचवाँ दशक तक शोधी विद्वान तक सीमित रहल। बेतिया के स्व श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' पहिलका कवि रहस जं सन १९४७ ई० में अपना पुस्तक 'देहाती दुलकी पर लिखलें-'भोजपुरी की कविताएँ।

भोजपुरी का लोक-साहित्य के भंडार अपार बाटे। परमपरागत जन्म, जनेव विआह के संस्कार गीत, पूजा-व्रत-त्यौहार के गीत, लोक गाथा, तीर्थ यात्री, गाड़ीवान, भिखमंगा, मलाह, धोबी, नेटुइन आ देहाती गवैयन के गीत, झूमर, जांतसार आदि स्त्रियन के गीत, रोपनी आ सोहनी के गीत, मिसिया (मर्शिया), लोरी गीतिकथा, नाच आ लोकनाट्य आदि के गीत अनगनित संख्या में प्रचलित बाटे एकरा अलावा लोक कथा कहावत, बुझौवल, बालोक्ति, खेल गीत ढेर के ढं मिलेला। भोजपुरी लोक साहित्य के अनेक संग्रह प्रकाशित बाटे लेकिन साहित्य के विद्यार्थी का नाते हम अपना अनुभव का आधार पर ई कहे में तनिको संकोच नइखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत कि लोक साहित्य के अपार भंडार के देखत अब तक जेतना संग्रह भइल बाटे ऊ ना का बराबर बाटे। बदलल स्थिति में लोक साहित्य तेजी का साथ काल का मुँह में समाइल जात बाटे। एकर तुरत संग्रह हो जाये के चाहीं। एह संबंध में हम एतने कहे के चाहत बानी। अभी ना, त कभी ना।

भोजपुरी का व्याकरण, लोकगीत, लोक गाथा, लोक कथा, कहावत, शब्द कोश पर युरोपियन विद्वानन का काम के बहुत महत्व बा। व्याकरण पर काम का सिलसिला में ऊ लोग जगह-जगह से भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बाटे। लोक गाथा में आइल शब्दन पर भाषा शास्त्रीय टिप्पणी बाटे, कोश में शब्दन के व्युत्पतिदेवे के प्रयास बाटे। डा० ग्रियंसन अपना 'बिहार कृषक जीवन' में खेती आ ग्राम्य उद्योग संबधी शब्दावली देले बाड़ें। भोजपुरी क्षेत्र का शोधी विद्वानन में डा० उदय नारायण तिवारी के भोजपुरी व्याकरण पर, डा० कृष्णदेव उपाध्याय के भोजपुरी लोक गीत पर, डा० श्याम मनोहर पाण्डेय आ डा० अर्जुनदास केसरी के लोरिकायन पर काम बहुत सुन्दर आ महत्व के बाटे। अमेरिका का पेनसिल-वेनिया विश्व विद्यालय के डा० सुरेन्द्र गंभीर विश्व का ओहसब देशन में जहाँ भोजपुरी भाषा बोलल जाला, घूम-घूम के भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बारे। भोजपुरी क्षेत्र का अनेक जिला का कृषि आ भोजपुरी कहावत पर बहुत शब्दावली पर शोध कार्य हो चुकल बाटे। डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के भोजपुरी लोक कथा पर शोध प्रबंध बाटे। भोजपुरी लोक साहित्य, शब्दावली आ कहावत पर शोध प्रबंध देवेवाला विद्वानन के संख्या तीन दर्जन से बेशी बाटे। भोजपुरी का आधुनिक साहित्य पर अब तक बहुत कम शोध कार्य भइल बाटे। डा० अरुण मोहन भारवि भोजपुरी उपन्यास पर शोध प्रबंध दे के उपाधि लिहले बाड़े। श्री व्रज भूषण मिश्र भोजपुरी का प्रबंध काव्य पर अनुसंधान कार्य कर रहल बाड़े। एह समय लगभग एक दर्जन शोधकर्त्ता भोजपुरी का भिन्न-भिन्न अंग पर शोध कार्य शुरू कइले बाड़े। भोजपुरी पर जेतना शोध कार्य भइल बाटे ओतना हिन्दी का कवना लोकभाषा पर अब तक ना भइल बाटे। तबहुओं भोजपुरी के संत साहित्य प्रेमाख्यान, रीति काव्य आ राष्ट्रीय गीत अछूता बाटे। भोजपुरी अपना अइसन सपूत के बाट जोहत बाटे जे मठ, पंडित आ मुंशी घराना का बस्ता के धूरा झारे आ राज दरबारन का पुस्तकालयन का पुस्तकन के पन्ना उलटे में लगन का साथ जुट जाय। साधु-संत भाट आ राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता का कंठ पर जे गीत बाटे, एह सिलसिला में ओकरो संग्रह जरूरी बाटे। एही तरह एहू बात के अध्ययन होखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चाहीं कि मध्य कालीन हिन्दी साहित्य पर आ ओकरा संत साहित्य पर भोजपुरी के केतना प्रभाव बाटे। चाहे कवनो भाषा होय, ओकरा बोली में एक रूपता ना रहे इहे हालत भोजपुरियो के आज बाटे आ आगे रही। ई कवनो चिन्ता के बात नइखे। लेकिन भोजपुरी गद्य का लिखावट में एक रूपता नइखे, ई ओकरा सामने एगो बड़हन समस्या बाटे। जब कहीं भोजपुरी के चर्चा चलेला, लोग चट दे कह देवेला कि भोजपुरी के कवनो मानक रूप नइखे। जवना समय भोजपुरी में साहित्य रचना शुरु भइल लेखक अपना क्षेत्र का बोली में लिखस। ऊ लोग के खयाल ई रहे कि साहित्यकारन का अपना-अपना बोली में लिखला से भोजपुरी के समग्ररूप सामने आ जाई आ धीरे-धीरे भोजपुरी अपन एगो मानक रूप बना ली। लेकिन जब भोजपुरी जनता का ओर से सरकार, साहित्य अकादमी आ विश्वविद्यालयन से एकरा के एगो भाषा का रूप में मान्यता देवे के मांग हो रहल बाटे, एकर एगो मानक रूप जरूरी हो जात बाटे। छंदाग्रह से भोजपुरी कविता का भाषा में थोड़ा बहुत एक रूपता आ गइल बाटे, लेकिन गद्य मे अराजक स्थिति बाटे काम जेतना कठिन मालूम हो रहल बाटे, ओतना कठिन नइखे। भोजपुरी का अइसन लेखकन के संख्या तीन सौ से वेशी ना बाटे, जेंकर पुस्तक प्रकाशित होत बाटे आ पत्र-पत्रिकन में लेख छपत बाटे। अगर भोजपुरी के लेखक वर्ग भाषा का एकरूपता के उपयोगिता मानलेस त ई काम आसान हो जाई। इहाँ एकरूपता से हमर मतलब वेशी से वेशी समानता से बाटे। कवनो भाषा में सोरहो आना एकरूपता ना बाटे, ना रही।

भोजपुरी का लिखावट का एकरूपता में दूगो मुख्य बाधक बाटे एगो त शब्दन का स्थानीय उच्चारण ले के वर्तनी के अलग-अलग रूप आ दोसर स्थानीय प्रयोग का कारण ओकरा व्याकरण में आइल भेद। एह दूनू बात पर विचार करत में मोटा-मोटी कुछ सवाल उठत बाटे, जवना पर सहमति जरूरी बाटे। ऊ सब सवाल बाटे :—

१. कवना क्षेत्र का भाषा के आदर्श मानल जाय ?

२. जवन शब्द हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में पावल जात बाटे, ओकर हिन्दी में आइल तत्सम रूप अपनावल जाय कि भोजपुरी के तद्भव रूप ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. अप्राणी वाचक शब्दन के भोजपुरी का परंपरा का अनुसार नपुंसक आ अलिंग शब्द मानके ओकरा साथ आइल क्रिया पद के पुलिंग रूप दिहल जाय कि हिन्दी शब्दन का लिंग परंपरा का आधार पर क्रिया पद के लिंग लिखाय ?

४. बोली में मुख सुख का आधार पर शब्द के रूप छोट हो जाला। लिखावट में छोटा रूप रहे कि ओह शब्द के पूरा रूप लिखल जाय ?

५. जवन प्रयोग व्यापक क्षेत्र में प्रचलित बाटे, ओकरा के अपनावल जाय कि जवन क्षेत्र आदर्श मानल जात बाटे ओकर उहाँ के स्थानीय प्रयोग ?

६. जवन शब्द अनेक रूप में लिखात बाटे, ऊ ओइसहीं लिखल जाय कि ओकर कवनो वर्तनी निश्चित कइल जाय ?

७. शब्दन के तूर-मरोर के आ ओकरा के गँवारू रूप दे के लिखल जाय कि ओकर शिष्ट रूप लिखल जाय ?

सिद्धान्त रूप में अगर एतना सवाल पर सहमति हो जाय आ ओकरा के था रूप दिआय त लिखावट का भाषा में बहुत कुछ समानता आ जाई। एह गंभीर मस्या के समाधान भोजपुरी लेखकन का उदारता पर निर्भर करत बाटे। एह ास्ते अपना निवास स्थान के कुछ प्रयोग के मोह छोड़े के परी आ कुछ दोसरा- ोसरा क्षेत्र के प्रयोग अपनावे के परी। भोजपुरी का वड़हन आ व्यापक हित में कुछ त्याग जरूरी बाटे। आज हमनी अपना बाल-बच्चा के मेरठ कमिश्नरी का बोली के मातृ भाषा का रूप में पढ़ा रहल बानी त अपना भाषा के कुछ वैकल्पिक प्रयोग अपना लेवे में हमनी का उजुर ना होंई, हमर अइसन विश्वास बाटे।

खुशी के बात बाटे कि भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एह सवाल में दिलचस्पी राखत बाड़ें आ हम आशा करत बानी कि एह दिशा में अब काफी प्रगति होई।

दोसर सवाल जे आगे चलके भोजपुरी का विकास में बाधक हो सकेला, ऊ पाठ्य पुस्तक के अभाव के प्रश्न बाटे। भोजपुरी में अबतक जे पुस्तक आइल बाटे ऊ साहित्य का दृष्टि से। लेकिन कवनो विद्यार्थी के जरूरत एह से अलग होखेला। बिहार विश्वविद्यालय आ भोजपुरी अकादमी कुछ पाठ्य पुस्तक के प्रकाशित कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाटे, लेकिन ऊ काफी नइखे। उपयुक्त पुस्तक का अभाव में पढ़े आ पढ़ावे वाला दूनू का दिक्कत उठावे के परेला। अब जरूरत एह बात के बाटे कि सिलेबस के ध्यान में रख के कुछ पुस्तक आवे, जे कोर्स में रहे आ विद्यार्थियन के पढ़ावल जाय।

भोजपुरी का लेखकन का सामने सबसे बड़हन समस्या उनका पुस्तक का प्रकाशन आ खपत के बाटे। अइसन लेखक संख्या में बहुत बेशी बाटे जिनका अपन पुस्तक अपना खर्च से छपवावे के परत बाटे। एह घड़ी प्रकाशन का सामग्रियन के कीमत बहुत बढ़ गइल बाटे। जब उनकर पुस्तक छप के आवत बाटे त ओकर खरीदनिहार नइखे मिलत। एकरा उलटा भोजपुरी पुस्तकन का दूकान का अभाव में जे कवनो पुस्तक खरीदे के चहिला उनका पुस्तके ना मिले। अगर लेखक कवनो पुस्तक का दूकानदार के अपन पुस्तक बेंचे लागि देत बाड़ें त ऊ दूकानदार ना उनका के ओकर हिसाब देवेला ना उनकर पुस्तक वापस करेला। एह विषम स्थिति में लेखक यश का लोभ से आ सेवा भाव से अपना मेहनत के कमाई खर्च करके अपन पुस्तक छपवावत बाड़े, ऊ बहुत-बहुत धन्यवाद के अधिकारी बाड़े। प्रकाशन का दिशा में पटना के भोजपुरी अकादमी भोजपुरी संस्थान, भोजपुरी साहित्य संस्थान आ सर्वेन्द्र प्रकाशन, वाराणसी के भोजपुरी संसद, आ जमशेदपुर के भोजपुरी साहित्य परिषद पुस्तकन के प्रकाशित करके बहुत बड़हन काम कइले बाटे। भोजपुरी अकादमी जे लेखक के ग्रंथ प्रकाशित करेला, ओह पर आ अपना पत्रिका में प्रकाशित लेख पर पारिश्रमिक देवेला। तबहुँओं ढ़ेर लेखकन का पास उनकर पांडुलिपि परल बाटे, जेकरा के केहू पुछनिहार नइखे। पुस्तक का प्रकाशन के सहकारिता को आधार पर कइल जा सकेला। देश का आउर-आउर राज्य के लेखक अइसन व्यवस्था कइलें बाड़े।

भोजपुरी के पत्र-पत्रिका जवना स्थिति में बाटे, ओहसे बिल्कुल संतोष नइखे होत। भोजपुरी में अबतक लगभग नब्बे दैनिक साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आ त्रैमासिक पत्र-पत्रिका के प्रकाशित हो चुकल बाटे। ओह में पाँच छव के छोड़ के सब बंद हो गइल। एह घड़ी भोजपुरी अकादमी पत्रिका, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका पटना से आ लड़िकन के पत्रिका नव निहाल छपरा से त्रैमासिक रूप में निकल रहल बाटे। पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद के मुखपत्र मासिक 'भोजपुरी माही' नियमित निकल रहल बाटे। एकरा अलावा जमशेदपुर के 'जनता ललकार' आ 'लुकार' समय-समय पर सामने आवत रहेला। कवनो भाषा का साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिका के केतना जादा योगदान बाटे, ई केहू से छीपल नइखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवन पत्र-पत्रिका भोजपुरी में निकलियो रहल बाटे, ओकर हालत महंगी का वजह से अच्छा नइखे। जनता का सहयोगे आ सहायता पर कवनो पत्र-पत्रिका चल सकेला।

शोधी विद्वानन का समीक्षक का आ इतिहास का लेखकन का एगो भोजपुरी के अच्छा आ समृद्ध पुस्तकालय के अभाव बहुत खटक रहल बाटे। एह वास्ते सम्मेलन का एगो अइसन पुस्तकालय के व्यवस्था कइल जरूरी बाटे, जवना में अवतक के प्रकाशित भोजपुरी के सब पुस्तक, पत्र-पत्रिका, देशी आ विदेशी विद्वानन के लिखल भोजपुरी के आ भोजपुरी पर ग्रंथ आ लेख के प्रतिलिपि, प्रकाशित भोजपुरी पुस्तकन के पाण्डुलिपि आ प्राचीन पोथी के संग्रह रहे। ई काम बहुत खर्चीला बाटे। हम आशा करत बानी कि प्रकाशक आ लेखक लोग का सहयोग से ई काम बहुत कुछ आसान हो जाई।

आज का युग में प्रचार के प्रमुख साधन बाटे आकाशवाणी आ दूर दर्शन। लेकिन पटना छोड़ के आकाशवाणी का आउर कवनो केन्द्र से भोजपुरी मे स्वतंत्र प्रकाशन के व्यवस्था नइखे। पटना केन्द्र में भोजपुरी लोग ना कोई कार्यक्रम अधिशासी के स्थायी व्यवस्था बाटे ना कम्पेयरर के। एह से उहाँ का प्रसारण के स्तर घटिया चल रहल बाटे। केन्द्र निदेशक महोदय का एह तरफ ध्यान देवे के चाहीं आ भारत सरकार का भोजपुरी क्षेत्र का हरेक केन्द्र से भोजपुरी में स्वतंत्र प्रकाशन के व्यवस्था करे के चाहीं।

भोजपुरी में काफी साहित्य बाटे। एकरा के बिहार विश्वविद्यालय एगो भाषा का रूप में मान्यता दे चुकल बाटे। इहाँ का आउर-आउर विश्वविद्यालय में एकरा के मान्यता देवे के चर्चा चल रहल बाटे। अब देश के विद्वानन का भोजपुरी के एगो भाषा मान लेवे में कवनो हर्ज नइखे, विश्व का अनेक देश में जहाँ भोजपुरी लोग बसल बाटे, उहाँ ई बोलल जाला आ एकर स्थिति एगो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के बाटे। बिहार सरकार भोजपुरी में विज्ञापनो देवेला। भोजपुरी क्षेत्र का जनता साहित्य अकादमी से एकरा के मान्यता देवे लागि, भारत सरकार से एकरा के संविधान का आठवीं सूत्री में जगह देवे लागि आ बिहार सरकार से बिहार लोक सेवा आयोग में परीक्षा के एगो विषय का रूप में मान्यता देवे लागि बराबर माग करत आवत बाटे, लेकिन एकर आजतक कवनो सुनवाई ना भइल। खैर एकर परवाह करेके जरूरत नइखे। भोजपुरी अपना बल-बूता पर आज तक आगे बढ़त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल बाटे। जरूरी ई बाटे कि भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक संगठन सब के ठोस बनावल जाय, ओह में प्रगति ले आवल जाय, विदेश में बसल भोजपुरी जनता से सम्पर्क बढावल जाय। फेर एगो अइसन समय आई कि सरकार का हमनी के सब मांग पूरा कर देवे के परीं आ ऊ समय दूर नइखे।

कुछ लोग के खयाल बाटे कि भोजपुरी का विकास से हिन्दी के अहित होई। हिन्दी के जेतना प्रसिद्ध लेखक बाड़े, ओह में आधा से बेशी भोजपुरी क्षेत्र के बाड़े। भोजपुरी जनता का दिल में हिन्दी लागि अपार प्रेम बाटे। जे भोजपुरी के लेखक आ कवि बाड़े, ऊ हिन्दियो के बाड़े। भोजपुरी के ढेर पुस्तक के भूमिका हिन्दी में बाटे आ अनेक में भोजपुरी के ठेंठ शब्दन के अर्थ हिन्दी में दिहल गइल बाटे। ई सब बात भोजपुरी का साहित्यकारन के हिन्दी से अटूट संबंध के परिचय दे रहल बाटे। भोजपुरी का शब्द संपदा से हिन्दी के भंडार भरी। भोजपुरी जनता कवनो अइसन काम करे के सपनो में ना सोच सकत बाटे, जवना से राष्ट्र आ राष्ट्र भाषा के हानि होय। एह से अइसन भय के कवनो गुंजाइश ना बाटे।

हम अपने सभनि के फेर एक बेर धन्यवाद देत बानी आ मंगल कामना करत बानी।

जय भोजपुरी, जय हिन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्वालिटी प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, तारकेश्वर पथ, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दसवाँ अधिवेशन

बोकारो स्टील सिटी

अध्यक्ष

आचार्य विश्वनाथ सिंह

प्रधानाचार्य, अनुग्रह मेमोरियल कालेज, गया
अधिष्ठाता, मानविकी संकाय, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

के

अभिभाषण

बोकारो स्टील सिटी

8–9 अक्टूबर, 1988 ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामहिम उपराष्ट्रपति जी, माननीय अतिथिगण, स्वागत समिति
आ संचालन-समिति के अधिकारी लोग, प्रतिनिधिगण,
आ भाई-बहिन सभे,

जब हमराके बतावल गइल कि हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह दसवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष बनावल गइल बानी त पहिले त हमरा बिसवासे ना भइल। बाद में अफसोस भइल कि भोजपुरी के दिन अइसन पतरा गइल बा कि अब इहाँ रेंड़ो परधान होखे लागल। बाकी, सोचत-सोचत बात कुछ समझ में आइल—समुझ परी कछु मति अनुसारा। साहित्यरसिक लोगन के परिहास-बोध (sense of humour) बड़ा बारीक होला। भरल सभा में केहूके बनावे के आ ओहसे आनन्द लेवे के जइसन परम्परा साहित्यकारन में बा ओइसन अउर कहीं नइखे। जब ई बुझाइल त हमरा बड़ा खुसी भइल। सोचलीं कि चलऽ, विद्वानन का मनोविनोद के साधन बनके हमहूँ सार्थक हो जाईं। साहित्यशास्त्री लोग बतावेला कि हास्य के प्रधान तत्त्व ह असंगति (incongruity)—जइसे गरदन में गोड़ावँ आ जूता के टोपी। कुछ ऊटपटाँग ना होय त हास्य के देवता निर्गुणे रह जइहें, सगुण ना हो सकिहें। ऊटपटाँग के मतलबे ह—ऊँट पर टाँग। ई व्यायाम तनी कठिन त बा, बाकी अभ्यास से का ना होखे! अगर कवनो आदमी अइसन कर गुजरी त हास्य-देवता के अवतरण होइबे करी। अब विचार कइल जाव कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० उदयनारायण तिवारी, डा० भगवतशरण उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा लेखा स्वनामधन्य विद्वानन का पाँत में हमरा नियन अल्पज्ञ के बइठा देला से बढ़के ऊटपटाँग आ ऐतिहासिक असंगति अउर का हो सकेला! हमरा अपना प पूरा भरोसा बा आ एकरामें तनिको सन्देह नइखे कि एह इतिहास से अपने सभ के भरपूर मनोरंजन होई। भोजपुरी में अज्ञ लोगन के कमी नइखे। देखीं, एगो रहस्य के बात बतावऽतानी। अज्ञ के असली माने होला अ से ज्ञ तक (अर्थात् a से z तक) जानेवाला। एहसे, अपना के ऊहो कहे में हमरा संकोच बुझाता। बाकी, एह उपयोगी चुनाव प हम अपने सभ के बधाई देतानी आ अपना किस्मत के धन्यवाद देतानी। रउआ लोग जानते बानी कि आजकाल कुरसी आ किस्मत के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्ध तनी जादे घनिष्ठ हो गइल बा। किस्मत के देवी पक्षपात करेली त कुरसी मिलेला आ पक्ष-निपात क देली त छिना जाला। जे भी होय, एह सब का मूल में अपने लोगन के जवन स्नेह-सद्भावना बा ओकराके हम हाथ जोड़के स्वीकार करऽतानी।

भोजपुरी जवना विशाल जनपद के भाषा ह ओकरा महिमा के बहुत पुरान परम्परा बा। वैदिक काल से ई परम्परा अविच्छिन्न चलल आवऽता। बुझात नइखे, कहाँ से आरम्भ कइल जाव। गायत्री महा-मन्त्र के दिव्य द्रष्टा, सृष्टि-रचना में ब्रम्हा का अद्वितीयता के चुनौती देबे-वाला, प्रतापी भोज लोगन के महातेजस्वी पुरोहित, स्वय विद्यानिधि भगवान राम के विद्यागुरु महर्षि विश्वामित्र राजा गाधि के पुत्र रहन, जिनका नाम के गाधिपुर नगर आज गाजीपुर का रूप में बा जहाँ उनका कौशिक गोत्र के लोग आजुओ बहुत संख्या में विद्यमान बा। रामचरित के सूत्र-संचालन ऊ बक्सर से—ठेठ भोजपुर से—कइलन। एकरो पहिले चलीं, बहुत पहिले, त देवासुर-संग्राम-काल में देवत्व-प्राप्त, अष्टांग आयुर्वेद के अमृत-कलश इन्द्र से आयत्त कके ओकराके लोककल्याण खातिर वसुधा पर प्रतिष्ठापित करेवाला भगवान धन्वन्तरि काशी के सम्राट रहन। उनका वंशज राजर्षि दिवोदास के धन्वन्तरि के अवतार का रूप में मान्यता बा।[1] शल्यचिकित्सा के महान् प्रवर्त्तक स्वनामधन्य सुश्रुत आ उनके टक्कर के दर्जनो देशी-विदेशी प्राणाचार्य एह दिवोदास धन्वन्तरि के शिष्य रहे लोग। आचार्य सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के सुपुत्र रहन। एही विश्वामित्र के नाती आ आर्यावर्त का राजा दुष्यन्त के पुत्र भरत चक्रवर्त्ती सम्राट भइलन जिनका नाँव प एह देश के भारतवर्ष कहल जाला। कौषीतकि ब्राह्मण उपनिषद् में इन्द्र से ब्रह्मविद्या-सम्बन्धी वार्ता करेवाला, प्राण अउर आत्मा के सम्पूर्ण वेत्ता, प्रतर्दन, काशी-नरेश दिवोदास के पुत्र रहन। एही परम्परा में काशी में ब्रह्मदत्त अइसन विद्वान अउर धार्मिक राजा भइलन जिनकर उल्लेख भगवान बुद्ध अपना उपदेश में कइले बाड़न। एह सिल-सिला में बृहदारण्यक उपनिषद् के अग्रणी ब्रह्मवेत्ता काशी-नरेश अजात-शत्रु के भी नाम महत्त्वपूर्ण बा जे गर्गगोत्रीय ऋषि बालाकि के ब्रह्म-

1. काशिराजं दिवोदसं धन्वन्तरिम् : सुश्रुत सूत्र, 1/3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या के मर्म बतवलन। बालाकि मत्स्य, कुरु, पांचाल आ विदेह में रह चुकल रहन आ ज्ञानगर्व से चूर रहन, बाकी उनका तत्त्वज्ञान काशिए में मिलल।

भगवान बुद्ध के जनम कपिलवस्तु में भइल आ देहान्त कुशीनगर में। ई दूनों स्थान भोजपुरिए क्षेत्र में वा। उनकर पहिला उपदेशो वाराणसी का निकट सारनाथ में भइल रहे जहाँ से आगे चलके ऊ दुनिया-भर में फइलल आ संसार का एक-चउथाई जनसंख्या के प्रभावित कइलस। विशृंखल भारत के एक समग्र राष्ट्र के रूप देवे खातिर इतिहास जवना मगध-सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का महान कृतित्व के गुन गावऽता आ दुखी विश्व-मानवता के बुद्ध-वचन द्वारा शान्ति-सन्देश पहुँचावे खातिर जवना प्रियदर्शी सम्राट अशोक का प्रति नतमस्तक वा ऊ लोग एही जनपद के सन्तान रहे। इतिहास आ संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० भगवतशरण उपाध्याय का शब्दन में—

चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की भौगोलिक सीमाओं पर हमारे देश के इतिहास में पहली बार राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की और सुदूर के दक्खिन को छोड़ समूचा भारत एक राष्ट्र बन गया। अपने भोजपुरिया वीरों की हरावल लिये वह भारत के बाहर हिन्दूकुश पर्वत के आरपार अफगानिस्तान जा पहुँचा। ...ग्रीकों को अभिभूत कर उसने काबुल और आसपास के चारों ग्रीक प्रांत उस भोजपुर के साम्राज्य में मिला लिये जिसकी राजधानी तत्कालीन मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। चन्द्रगुप्त भोजपुरी-जनपद में ही जनमा था, मल्लों के पड़ोसी पिप्पलिवन के मोरियों की सन्तान था, जिसने मगध पर अधिकार कर लिया था।

अशोक—गोरखपुर और देवरिया के बीच मोरियों में जनमा अशोक—तो संसार के राज्याचरण का कीर्तिमान ही बन गया।...... तपस्वी अशोक भोजपुरी-अंचल से उठा बौद्ध-धर्माकाश का अप्रतिम नक्षत्र था—गोरखपुर और देवरिया के पड़ोस के मोरियों की संतान चंद्रगुप्त का पोता। इसी अशोक ने भारतीय राष्ट्र को उसकी मुहर दी, चतुर्दिक् सिंहों का मुद्रांकन दिया, उसकी ध्वजा को वह चक्र दिया जिसका धर्मनय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवर्तन काशी के मृगदाव में बुद्ध ने किया था, जो गति का, मानव-प्रकृति का, प्रतीक था, जो आज भी शांति के चक्रवर्ती सत्य का स्मारक है।

मध्ययुग में भोजपुर–जनपद का सासाराम नगर में एगो सामान्य घराना में पैदा भइल शेरशाह अपना प्रचंड भुजबल से मुगल-सम्राट हुमायूँ के एही भोजपुर का जमीन प..... बक्सर का पासे चउसा में—— हराके भारत से बाहर खदेर देलस आ अपना महज पाँच बरिस का शासन-काल में आज का ग्रैंड ट्रंक रोड के निर्माण कइलस, देश में डाक-व्यवस्था कायम कइलस, आ जमीन का पैमाइश के जवन सिद्धांत बनवलस ओकर मान्यता अकबर का समय से लेके आज ले बा। मुगल-राज्य के चुनौती देवेवाला भोजपुरी–वीर हेमू अकबर से खाली बदकिस्मती से हारल। अकबरे का समय में भोजपुर के राजा दलपत मुगल-शासन से विद्रोह कइलन जवन शाहजहाँ के समय तक उनकर वंशज लोग चलावल। एह भोजपुरी वीरन के सिरमौर भइलन जगदीशपुर (आरा) के बाबू कुँअर सिंह जे सन् १८५७ का पहिला स्वतन्त्रता-संग्राम में, अस्सी बरिस का पाकल बुढ़ापा में, विना कवनो प्रशिक्षित सेना के, अँगरेजन का पूर्ण सुसज्जित सेना से लोहा लिहलन। ओह अवस्था में, घोड़ा का पीठ प, अविराम, हजारन कोस के यात्रा कके बिहार आ उत्तर प्रदेश में युद्ध-संचालन कइल आ शक्तिशाली अँगरेजी सेना के कई बेर हरावल कुँअर सिंह का अप्रतिम वीरता, अदम्य साहस, अडिग संकल्प, कुशल सेना-संचालन आ अपूर्व देशभक्ति के उदाहरण ह। तलवार आ संकल्प के धनी कुँअर सिंह अपना स्वतन्त्र जगदीशपुर में अन्तिम साँस लिहलन।

साहित्य आ संस्कृति का क्षेत्र में भोजपुर–जनपद का ज्ञात इतिहास से पहिला नाम बाणभट्ट के उभरऽता जे संस्कृत-गद्य के शलाकापुरुष भइल। बाणभट्ट के विलक्षण प्रतिभा भलहीं सरस्वती के प्रसाद होखे, बाकी ओकर अक्खड़ स्वाभिमान एकदम भोजपुर का माटी के देन रहे। हमरा कहला का बाद केहू का कुछ कहे के ना रह जाय, अइसन अन्तिम कहे के ओकरा सारस्वत दर्प के लोक-स्वीकृति भी मिलल——बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। नाथ-सम्प्रदाय के संस्थापक आ हठयोग के महान आचार्य, गोरखनाथ, का जन्मभूमि के त पता नइखे, लेकिन उनकर कर्म-भूमि एही जनपद में रहे जेकर गवाही गोरखपुर से मिलऽता। निर्गुण-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तन के सुमेरु कबीरदास काशी में प्रगट भइलन आ भोजपुरी के प्रथम महाकवि भइलन। एकरा अलावे प्रसिद्ध निर्गुण-भक्तकवियन में धरमदास, धरनीदास, दरिया साहेब (रोहतास के), बुल्ला साहेब, गुलाल साहेब, शिवनारायण, सरभंग-सम्प्रदाय के किनाराम, भिनकराम, टेकमनराम, आ सगुण भक्तकवियन में रसिक-सम्प्रदाय के रूपकला जी, रामा जी, आ सखी-सम्प्रदाय के लछिमी सखी, कामता सखी आदि अनेक महत्त्वपूर्ण नाम एह जनपद के आ भोजपुरी भाषा के गौरव बाड़न स। हिन्दी-साहित्य के अधिकांश धुरन्धर महारथी भोजपुरीभाषी रहन। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह—ई सब लोग जे हिन्दी के बनावल, सँवारल आ आगे बढ़ावल, भोजपुरीभाषी रहे। एकरा अलावे परमार्थ-दर्शन के रचयिता आ दर्शन अउर साहित्य के प्रकांड विद्वान महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा, सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्री काशीप्रसाद जायसवाल, प्रख्यात विधिवेत्ता आ भारतीय-संविधान सभा के अध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द सिनहा, भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, आ लोकनायक जयप्रकाश नारायण भोजपुर-जनपद के निवासिए ना, भोजपुरी भाषा के अनन्य प्रेमी रहे लोग। ओसहीं, कंठ-संगीत में ठुमरी आ पुरुवी शैली के आ वाद्य-संगीत में तबला-सम्राट कंठे महाराज, कामता प्रसाद, किशन महाराज, आ शहनाई के जादूगर बिस्मिल्ला खाँ आदि के भोजपुर के महत्त्वपूर्ण देन कहल जाई।

भोजपुर-जनपद का महिमा के तनी विस्तार से जे चरचा हो गइल ओकर प्रयोजन गौरव-बोध के पागुर कइल ना रहे, बलुक ई देखावल रहे कि प्रागैतिहासिके काल से इहाँ के जीवन-दर्शन में कवनो तरह के क्षेत्रीयता या संकीर्ण भावना नइखे रहल। समग्र भारतीय राष्ट्र आ राष्ट्रीयता का निर्माण में आ ओकरा सुरक्षा आ विकास में अउर, ओहूसे आगे बढ़के, विश्वकल्याण में, एह जनपद के अतुलनीय योगदान बा। भोजपुर के आपन संस्कृति बा—जइसे बंगाल, पंजाब आ महाराष्ट्र के आपन-आपन संस्कृति बा। लेकिन इन्हनीके सार्थकता अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व का साथे-साथे भारतीय संस्कृति के समग्र स्वरूप का निर्माण में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी रहल बा। भोजपुरी के साहित्यकार अपना एह उत्तराधिकार आ दायित्व से अपरिचित नइखन। एहसे भोजपुरी भाषा आ साहित्य का विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी का कठिनाई होखे के जे आशंका कबो-कबो व्यक्त कइल जाला ऊ हमरा निराधार आ अनुचित बुझाला। एह प्रसंग में भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध एगो विचारणीय प्रश्न हो जाता।

भोजपुरी आ हिन्दी का सम्बन्ध पर विचार करे के पहिले प्रश्न उठऽता—जइसन कि बराबर उठावल जाला—कि भोजपुरी भाषा ह कि बोली। देखल जाय त भाषा आ बोली, दूनों शब्दन में व्युत्पत्ति का विचार से कवनो अन्तर नइखे। भाषा संस्कृत का भाष् धातु से बनल तत्सम शब्द ह जे बोले के अर्थ देला। बोली प्राकृत का बोल्लइ से बनल बा जेकरो ऊहे अर्थ ह। एकर संस्कृत-रूप नइखे मिलत। प्राकृत बोल्लइ ठेठ लोक-व्यवहार के शब्द ह जेकर पहिले के संभावित रूप बोल्लति बोलचाल में कबो रहल हो सकेला। संस्कृत का वदति से प्राकृत बोल्लइ के भाषा-वैज्ञानिक यात्रा तनी कठिन बुझाता। बाकी अइसन मानिओ लिहल जाय कि वदति से बोल्लइ आ ओकरासे बोली बनल तबो अतना त जरूर बा कि भाषा तत्सम ह आ बोली तद्भव। अर्थ दूनों के भलहीं एक होय बाकी मूल भिन्न-भिन्न भइला से तद्भव बोली से जहाँ बोले के सामान्य अर्थ निकलऽता उहाँ तत्सम भाषा में संस्कृत का स्वाभाविक आभिजात्य के पुट बा। बोली में वाचिक क्रिया के शारीरिक प्रयत्न के भाव बा; भाषा में मानसिकता के विशेष योग हो जाता। सत्यं वद अइसन वाक्यन में वद का प्रयोग से सामान्य वाचिकता प्रगट होता। न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि में वदेत् आ भाषां, दूनों का एकत्र प्रयोग से बोली आ भाषा के व्यावहारिक अर्थभेद समझल जा सकेला। गीता में आइल बा—अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे आ स्थितप्रज्ञस्य का भाषा। एह दूनों वाक्यन में पंडितन का आ स्थितप्रज्ञ पुरुष का बोलला खातिर भाष् धातु के प्रयोग भइल बा। कहल जाला—प्रेमचन्द के भाषा बहुत सरल ह। इहाँ भाषा के बोली कह दिआय त उपन्यास-कहानी का लिखित भाषा के अर्थ ना निकली। ओसहीं, जा मैं तोसे नाँहि बोलूँ का जगह पर केहू कहे – जा मैं तोसे नाँहि भाषण करूँ, त ठसला-चोन्हइला के मजेदार पैरोडी हो जाई। सभा में विद्वान लोगन के भाषण होला, सभे ओहिजा ना बोले; आ घर-परिवार में सभे बोलेला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषण केहू ना करे। एह विवेचन से ई स्पष्ट बा कि बोली वाचिक अउर सामान्य व्यवहार खातिर आ भाषा प्रायः लिखित अउर औपचारिक व्यवहार खातिर प्रयोग में आवेला। दोसर बात ई कि एह दूनों में परस्पर कवनो विरोध नइखे। कवनो जीवित भाषा का बारे में ई ना कहल जा सके कि ई खाली भाषा ह, बोली ना ह। हिन्दी, बँगला, मराठी, पंजाबी भाषा हईं स, आ बोलिओ, काहे कि इन्हनीके लिखित व्यवहार होला आ बोललो जाला। अँगरेजी अँगरेजन के भाषा (language) भी ह आ बोली (mother tongue) भी। भोजपुरिओ भाषा आ बोली, दूनों ह। एकरा विपरीत संस्कृत आ पाली भाषा हईं स; बोली ना, काहे कि इन्हनीके व्यवहार केवल लिखित रूप में होता, बोलचाल में नइखे रह गइल। भोजपुरी एगो समर्थ आ जीवन्त बोली आ विशाल सम्भावनावाली भाषा ह।

भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध ठीक से समझे खातिर हिन्दी का स्वरूप के समझ लिहल जरूरी बा। हिन्दी शब्द के का तात्पर्य ह? हिन्दी केकराके कहल जाला? भाषाविज्ञान का पुस्तकन में ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली (कौरवी), भोजपुरी, मगही आदि के हिन्दी के विभाषा, अर्थात् बोली, बतावल गइल बा। बाकी हिन्दी भाषा के इतिहास लिखेवाला लोग खाली खड़ी बोली के इतिहास लिखले बा, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी वगैरह के ना। कामताप्रसाद गुरु के हिन्दी-व्याकरण खड़ी बोली के व्याकरण ह; रामचन्द्र वर्मा के प्रामाणिक-हिन्दी-कोश खड़ी बोली के शब्दकोश ह। एहमें भोजपुरी-शब्दन के कहीं स्थान नइखे। ई ओइसने भइल जइसे खाली दिल्ली के भूगोल लिखके ओकराके सउँसे भारतवर्ष के भूगोल कहल जाय। दोसरा ओर, हिन्दी-साहित्य का इतिहासन में डिंगल के चन्दवरदाई, मैथिली के विद्यापति, भोजपुरी के कबीरदास, ब्रजभाषा के सूरदास आ अवधी के तुलसीदास खड़ी बोली के प्रसाद-निराला-पन्त का साथे-साथे हिन्दी के कवि बतावल गइल बाड़न। अगर ई सब भाषा हिन्दी के बोली हईं स त इन्हनीका आधुनिक कवियन के भी हिन्दी-साहित्य का इतिहास में स्थान मिले के चाहत रहे। वीरगाथाकाल का बाद के डिंगल-कवि, भक्तिकाल का बाद के अवधी-कवि आ भारतेन्दु का बाद के ब्रजभाषा-कवि कहाँ चल गइलन! द्विवेदी-युग में खड़ी बोली के हिन्दी के काव्यभाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनावल गइल। ओकरा पहिले, भारतेन्दु-युग तक, गद्य खड़ी बोली में लिखात रहे आ कविता ब्रजभाषा में। गद्य आ पद्य में एके भाषा के अतना भिन्न रूप अउर कहीं ना मिली। अब, अगर कवनो विदेशी-भाषाभाषी, चाहे कवनो पंजाबीभाषी, या बँगलाभाषी, हिन्दी पढ़ल चाही त ऊ हिन्दी-व्याकरण के कुछ दिन अध्ययन करी आ हिन्दी के गद्य पढ़ी; बाकी आगे चलके जब ओकरा तुलसीदास से भेंट होई त विनय-पत्रिका के ब्रजभाषा समझे में कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण ओकर का सहायता करी! ओकरा बुझाई कि हिन्दी में गद्य के व्याकरण अलगा होला आ पद्य के अलगा। ऊ हिन्दी के अध्ययन कुछ एह भाव से बन्द कर दी--अब लौं नसानी अब ना नसैहौं। एह असगति के ठीक करे खातिर कहल जाला कि खड़ी बोली का कविता के हिन्दी-कविता मानल जाय आ पहिले के अवधी-ब्रजभाषा-भोजपुरी-डिंगल आदि का कवितन के पुरानी हिन्दी का रूप में विशेष अध्ययन खातिर छोड़ दिहल जाय, जइसे अँगरेजी में प्राचीन साहित्य का साथे कइल गइल बा। बाकी ई उचित ना होई; काहे कि अँगरेजी भाषा के वर्तमान रूप ओकरा पुरान रूप के विकास ह, जबकि खड़ी बोली हिन्दी अवधी, ब्रजभाषा वगैरह के विकास ना ह। ई उन्हनीके समानान्तर उत्पन्न आ विकसित भइल बा।

असल बात ई ह कि हिन्दी शब्द के प्रयोग दू अर्थ में होत आइल बा--एक त भाषावैज्ञानिक अर्थ में आ दोसर, सामान्य अर्थ में। सामान्य अर्थ में हिन्दी खड़ी बोली के कहल जाला जे भारत के राष्ट्रभाषा ह। एह अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग खड़ी बोली के प्राय: आरम्भिके काल से चलल आवता। भाषावैज्ञानिक अर्थ में हिन्दी नाम एगो भाषा-वर्ग के ह जेकरा विभाषा का रूप में खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखंडी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि के गिनल जाला। अब, जब भोजपुरी में हर विधा में साहित्य-रचना हो रहल बा, ओकराके स्वतन्त्र भाषा ना मानल उचित ना होई। एह में भोजपुरी अउर हिन्दी का सम्बन्ध-विच्छेद के कवनो बात नइखे। ई सर्वमान्य सिद्धान्त ह कि आदमी स्वाभाविक भावप्रकाशन जतना अपना मातृभाषा में कर सकेला ओतना दोसरा कवनो भाषा में ना। आ एहमें सन्देह ना कि भोजपुरी-जनपद के मातृभाषा भोजपुरी ह; हिन्दी हमनीके सीखे के पड़ेला, आ ऊ त आवते-आवत आवेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी से भोजपुरी का कवनो विरोध नइखे। आचार्य हजारी-प्रसाद द्विवेदी जी कहले बानी कि दहिनी आँख आ बाईं आँख में कवन विरोध हो सकेला! बात सही बा। अब खाली अतने समझ लेवे के बा कि दूनो आँख सही रहे तबे देखे के काम पूर्ण रूप से हो सकेला। अगर एगो में कुछ कमजोरी होय त ओकरा लेन्स में पावर देवे के पड़ी। हिन्दी का तुलना में भोजपुरी अबहीं ओही स्थिति में बाटे। एकरा विकास से हिन्दी के लाभे होई, हानि के कवनो सम्भावना नइखे।

जवना भाषा आ बोली का व्यवहार के क्षेत्र जतने व्यापक रहेला, जीवन का विविधता से ओकर ओतने जादे सम्पर्क होला, आ ओही अनुपात में ओकर अभिव्यंजना-शक्ति विकसित होखेला। ई व्यापकता भूगोल आ इतिहास, दूनों क्षेत्रन में होला। भोजपुरीभाषी जनसमुदाय का एह दूनों क्षेत्रन का विविधता के लाभ मिलल बा जेहसे एह भाषा में व्यावहारिक-जीवन-सम्बन्धी शब्दन के बड़ा समृद्ध भंडार हो गइल बा; आ मुहावरा, लोकोक्ति, कहावत, लोकगीत, लोककथा आदि के त अइसन खजाना बा जेकरासे ग्रहण करके हिन्दिओ का अभिव्यंजना-शक्ति के विकास कइल जा सकेला। लाठी भोजपुरिहा लोगन के पुरान ट्रेड मार्क ह आ ओकरा पर लोग पूरा भरोसो राखेला। कहल बा—सय पुराचरन ना एक हूराचरन। अब देखल जाय त लाठी-वर्ग के अतना शब्द भोजपुरी में बा जतना अउर कहीं ना मिली—लाठी, लउर, डंटा, गोजी, छड़ी, छकुनी, सोंटा, पैना, बोंग। ओसहीं, गगरी शब्द लिहल जाय जे संस्कृत का गर्गरिका से बनल बा। भोज-पुरी में गगरा भी होला जे गगरी से भिन्न होला—आकार में ना, प्रकार में। गगरी माटी के होई आ गगरा लोहा, पीतर, ताँबा, सोना भा अउर कवनो धातु के। अब, एह गगरी-जाति के छोट-बड़, ना जाने कतना सदस्य बाड़न—माटी के बनल पात्र, गगरी, घइला, घइली, घड़ा, नाद, नादी, नदिया, मेटा, मटका, मटुकी, पतुका, पतुकी, चरुआ, चरुई, हाँड़ी, हँड़िया, कूँड़ि, छोंड़ि, भाँड़ा, सोराही, ठिलिया, कुल्हड़, भरुका, पुरवा, टुइयाँ, रमलोटा।

भोजपुरी के शब्द-सम्पदा का निर्देश खातिर अनेक शब्दन में से इहाँ दुइएगो शब्द प्रतिनिधि-रूप में चुनल गइल—लाठी आ गगरी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाठी त एहसे कि ई भोजपुरी संस्कृति के पुरान प्रतीक ह; आ गगरी एहसे कि ईहो जीवन के पुरान प्रतीक ह—कबीरदास का शब्दन में जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है। जीवन के गगरी भरत-भरत जब आदमी थाक जाला त दूनों हाथ ऊपर कके मालिक के गोहरावेला—कते दिन राम भरब हम गगरी !

भोजपुरी का उत्कृष्ट अभिव्यंजना-शक्ति के दूगो प्रधान साधन वाड़न स—नामधातु के सहज रचना आ अनुरणनमूलक शब्दन के निर्माण। नामधातु का रचना में भोजपुरी संस्कृतो से आगा बढ़ल बा, हिन्दी के त कवनो बाते नइखे। तनी एकर नख-सिख वर्णन देखल जाव—

लतियावल, लतहरल, ठेहुनियाइल, अँगुरियावल, मुठियावल, हथवसल, हथियावल, केहुनाठल, केहुनियावल, पिठियावल, छतियाइल, गरदनियावल, जिभियावल, नकियाइल, नकियावल, नजरियावल, नकनकाइल, नकनकावल, नजरियाइल, नजरियावल, मुड़ियाइल, मथवसल।

शरीर के अंगन का नाम से बनल अइसन अभिव्यंजक शब्द हिन्दी में कहाँ मिलिहन स ! अँगरेजी भाषा नामधातु बनावे में बड़ा फरहर कहाले बाकी ऊहो एह टक्कर में ना आ सके। अब अंग-प्रत्यंग के नाम से बनल संज्ञा आ विशेषण शब्दन के कुछ उदाहरण देखीं—

कपरवाह, लिलारी, अँखफोर, जिभगर, जीभी, दँतनिपोर, दाँतल, दाँतुल, ओठर, गलचउर, मुँहगर, मुँहमराई, मुखरी, मुखागर, चेहरगर, छतिगर, भुजगर, हथउठाई, हथफेर, पेटपोंछन, पेटभऽरू, पेटा, पेटपोछन, लदगर, लदाह, पिठियाठोक, ढोंढ़ा, गोड़ाइत, गोड़ावँ, हड़गर, गुदगर, मँसगर, रकतावन।

अनुरणनमूलक शब्दन के, आवश्यकतानुसार बना लेवे के जवन शक्ति भोजपुरी में बा ऊ अउर कहाँ मिली।

खट-खट, चक-चक, छर-छर, झक-झक, झन-झन, टन-टन, टप-टप, टर-टर, ठक-ठक, ठन-ठन, ढन-ढन, पट-पट, भक-भक, भन-भन, सन-सन, सर सर, हर-हर अइसन शब्दन के त इहाँ खजाना बा। ईहे ना, अइसना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दन का बीच में स्वरागम करके ओहसे अर्थचमत्कार बढ़ा देवे के भी अपूर्व कला एह भाषा में मिली; जइसे—खटाखट, चकाचक, झकाझक, दनादन। इतने ना, ओकरो से नामधातु बनाके अभिव्यंजक क्रियापदन के रचना कर लेवे के गुण भोजपुरी में बा, जवन हिन्दी में दुर्लभ बा; जइसे—चकचकावल, झकझकावल, दनदनावल। अनुरणमूलक शब्दन का सहयोग से विशेषण के चटकार बना देवे के अद्भुत विशेषता एह भाषा में मिलऽता—जइसन बहुत कम जगह मिल सकेला; जइसे—करिया कुच-कुच, ऊजर धप-धप या झक-झक, लाल टह-टह, पीयर दह-दह, हरियर चह-चह, गोर भक-भक।

शब्द-निर्माण का एह विलक्षण सामर्थ्य का अलावे भोजपुरी भाषा में लोकोक्तियन के अक्षम भंडार बा। हिन्दी में लोकोक्तियन के ओइसन समृद्धि नइखे। बहुत त भोजपुरी से अथवा हिन्दी क्षेत्र का दोसरा कवनो भाषा से उधार लिहल लोकोक्ति मिलिहन स जे फरके से चिन्हा जइसन स। एगो मामूली उदाहरण लिहल जाय—

अधजल गगरी छलकत जाय
नाचे ना जाने अगनवें टेढ़

एह में पहिलका त हिन्दी में ज्यों-के-त्यों चलेला, जबकि छलकत जाय का जगह पर हिन्दी के क्रियापद होइत—छलकती जाती है। ओसहीं, नाचे ना जाने अँगनवें टेढ़ के हिन्दी में बना दिहल बा—नाच न जाने आँगन टेढ़ा। कहे के ना पड़ी कि एह लोकोक्ति का भोजपुरी रूप में हिन्दी से जादे स्वारस्य आ स्वाभाविकता बा जे ओकरा मौलिकता का ओर संकेत करऽता। कुछ अउर लोकोक्तियन के देखल जाय जेकर लोकोक्ति का रूप में हिन्दीकरण कसहूँ सम्भव नइखे :—

अघाइल बकुला पोठिया तीत। अनका धन प विकरम राजा। आउर जनावर के लीद ना हाथी के चिरिकल। आन्हर गवरइया भरसाईं में खोंता। एक नाद दुइ भइँसा, ता घर कसल कइसा। नाच-काछ के अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवान। भर बाँह चूरी ना त पट दे राँड़। मेहरारू के झूला ना, विलाई के गाँती। रोवे के मन रहे, अँखिये खोदाऽ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्ति लोक जीवन में अनुभव का गहराई में भइल सत्य का साक्षात्कार से प्रेरित विदग्ध उक्ति ह। ओकरा में अनुभूति आ अभिव्यक्ति के परस्पर कुछ अइसन सम्बंध रहेला जेकर भाषान्तरण ना होखे। लोकोक्ति के निर्माण महाकवि लोग ना करे। एकर प्रत्यक्ष ऊ लोग करेला जे चिट्ठी में लिखवावेला—थोड़ा लिखना, बहुत समझना। लोकोक्ति 'नावक के तीर' होला। कवनो भाषा के लोकोक्तियन से परिचित भइला बिना ओकरा शक्ति के पूरा ज्ञान सम्भव नइखे।

भोजपुरी के शब्द सम्पदा अउर अभिव्यंजना शक्ति का चरचा में अक्सर पूछल जाला कि भोजपुरी में संस्कृत शब्दन के प्रयोग तत्सम रूप में होखे के चाहीं कि तद्भव रूप में। एकरा प्रसंग में मौलिक प्रश्न ई उठेला कि भोजपुरी के स्वरूप का ह? मानक भोजपुरी केकरा के माने के चाहीं—कवनो निरक्षर ग्रामवासी जवन बोलेला ओकरा के कि तत्सम शब्दनवाली जवना भाषा में हम बोल रहल बानी ओकरा के?

कवनो बोली जब भाषा बनेले, याने जब ओकर लिखित व्यवहार होखेला तब ओकर कार्य क्षेत्र बढ़े लागेला। बोलचाल का तात्कालिक व्यवहार से जादे स्थायी महत्त्व के विषय ओह लिखित भाषा के उद्देश्य हो जालन स। अइसन विषयन के उपयुक्त अभिव्यक्ति देवे में ओह बोली के आरम्भिक भावप्रधान रूप आ ओकर सीमित शब्दावली—चाहे ऊ कतनो व्यंजक होय—पाछा छूटे लागेलन स आ ओकर विचारात्मक, विवेचनात्मक रूप अपना अनुरूप शब्दावली का साथे प्रगट होखे लागेला। एह दूनों रूपन के एक-दोसरा के विरोधी ना समझे के चाहीं। दूनो एक-दोसरा के पूरक हवन स। इंशाअल्ला खाँ का रानी केतकी की कहानी में जवन हिन्दवी छुट, और किसी बोली का न मेल न पुट रहे ऊ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का चिन्तामणि के भाषा ना। हो सकत रहे। भोजपुरी के भी आगे बढ़े खातिर हिन्दी नियन अपना मूल से शक्तिसंचय करे के पड़ी—संस्कृत-शब्दन के अपनावे के पड़ी। संस्कृत में प्रकृति-प्रत्यय का योग से गम्भीर-से-गम्भीर भाव या बारीक-से-बारीक विचार का अभिव्यक्ति खातिर शब्द बना लेवे के जवन अनन्त क्षमता बा ओकरा के छोड़के संस्कृत-मूल के कवनो भाषा कूपमंडूक रह जाई। अइसहूँ—विषयगत प्रासगिता का अलावे भी स्वाभाविक रूप से, पढ़ल-लिखल भोजपुरी भाषी लोगन में ओर झुकाव बढ़ रहल बा। तत्सम शब्द से प्रायः एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिनिष्ठित अर्थं के बोध होला जवन तद्भव से ना हो पावे। उदाहरण लिहल जाय---

एग तत्सम शब्द ह—मन्त्र, जेकर अर्धतत्सम या तद्भव रूप हो गइल—मन्तर। दूनों का प्रयोग में आसमान-जमीन के अन्तर बा। साँप-बिच्छी के मंतर हो सकेला, बाकी गायत्री के मंत्र होई। राम-नाम कवनो मन्तर ना, ह--महामन्त्र सोइ जपत महेसू। ओसहीं यन्त्र शब्द बा। वैज्ञानिक प्रयोगशाला में यन्त्र होई आ गला में पहिने खातिर जन्तर। गाय गाभिन होई आ औरत गर्भिणी, बलुक गर्भवती। तत्सम आ तद्भव में नारी अउर मादा के अन्तर हो जाता।

बाकी, एकर मतलब ई ना भइल कि तद्भव शब्दन के खराब समझ के छोड़ दियाय। मोका पड़ला पर ई तत्समो के कान काटेलन स। कवो अइसनो होला कि तत्सम निम्न रह जाला आ तद्भव नीमन हो जाला त ऊ तत्सम के नाको काट लेवेला। दवाई सही आ बढ़िया होय त रोग छू-मन्तर हो जाई, छू-मन्त्र ना। कम पइसा में जीवन-निर्वाह करेवाला गरीब आदमी बेटी के बियाह ना करे, निबाह करेला। बेटी के निर्वाह त अच्छा-अच्छा लोग ना कर सके। एगो कवि कहऽता---

गुलशन परस्त हूँ मुझे गुल ही नहीं अज़ीज़।
काँटों से भी निवाह किये जा रहा हूँ मैं॥

त, ई ह अपना जगह पर तद्भव के खूबसूरती। अफसोस के बात बा कि भोजपुरी के बहुत-सा ठेठ शब्द गते-गते प्रयोग से बाहर हो रहल बाड़न स; जइसे--खोंढ़ा, गाँती, चुड़ानी, जबून, जाउर, डभकउआ, डसावल, डांड़, डूभा, ढ़ुकल, ढोंढ़ी, तियना, तोरी, निकसारी, नून, पनहो, परेह, पितिया, पिसान, पेंड़ा (रास्ता), पेहम, बरिया, बाँड़ी (झूला या ब्लाउज), भर्इं (भइँस), रहिला, लाद (पेट), सिकहर। भोजपुरी-लेखक का तत्सम, तद्भव, विदेशीय अउर अज्ञात चारो मूल का शब्दन के अपना जरूरत आ रुचि का मोताबिक प्रयोग करे के चाही। तबे भोजपुरी साहित्य के चतुर्मुखी विकास होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में साहित्य-रचना अइसे त आज से पाँच सौ बरिस पहिले शुरू हो गइल रहे बाकी ओकर विकास आधुनिक काल में आके भइल। देश से आजादी मिलला का बाद पद्य आ गद्य, दूनों का विभिन्न विधन में उच्च कोटि के साहित्य आवे लागल। कविता का क्षेत्र में भोजपुरी के प्रगति अउर क्षेत्रन से जादे भइल बा। मौलिक उद्भावना आ मार्मिक भाव-व्यंजना का दृष्टि से कहीं-कहीं भोजपुरी-कवि ओह ऊँचाई के छू लेता जहाँ कवनो भाषा का सर्वश्रेष्ठ महाकवि के आसन हो सकेला। कुछ उदाहरण लिहल ठीक होई।

प्रसंग ह सन् 1857 के भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के। एने पगरी बन्हले, भाला उठवले भोजपुरिहा वीर आ ओने टोप डटवले, बन्दूक सम्हरले अंगरेज। ओह दृश्य के कल्पना करीं जब भोजपुरी जवान अपना भाला का नोंक पर दुसमन के मूड़ी टोप-समेत टाँग लेता आ नीचे से ओकरा धड़ से लोहू के फाँफ ओइ टोप सहित मूड़ी का ओर छूट रहल बा। कवि कहऽता—

जीत के हारइँ हारि के जीतइँ ठोकि के ताल कबउँ ललकारइँ।
छातिन में चुभि जाइ संगीन जवान तबउँ पग पाछ न टारइँ॥
भोजपुरी सरदार लपालप भालन ऊपर टोप उछारइँ।
अइसन लागल दीपक बारिके चंडी खड़ी रन काजर पारइँ॥[1]

नीचे से ऊपर का ओर जात लाल रक्त के फाँफ, जइसे दीया के लौ ऊपर उठ रहल होय, आ ऊपर से टोप-समेत मस्तक जइसे ढक्कन होखे। एह सवइया के अउर सब कुछ अबहीं छोड़ दियाव, खाली एगो उत्प्रेक्षा देखल जाव, तबो अपना मौलिक उद्भावना आ सफल बिम्ब-विधान के बल प ई बहुते उत्कृष्ट कविता कहल जाई। एगो बात बा। उत्प्रेक्षा के विधान भइला के इहो व्यंजना बा कि उपमा से काम ना चलल। उपमा का बिम्बविधान में अप्रस्तुत प्रायः वास्तविक अथवा सम्भाव्य होला। जब ओकरा से आगे बढ़के काल्पनिक जगत से अप्रस्तुत लिहल जाला। तब ओकर सम्भाव्यता माने के पड़ेला। अइसन अप्रस्तुत असम्भव भले होखे, कवि का कल्पना-जगत में ऊ सम्भाव्य होला—चंडी

1. चन्द्रशेखर मिश्र : कुँअर सिंह (महाकाव्य) : चउथा सर्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ी रन काजर पारई। एही से उपमा में नियन, सयान, सदृश, लेखा आदि वाचक शब्द होलन स।· उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द ह—मानो, अइसन लागल। ई स्थिति प्रकृत रूप में उपमा का असमर्थ हो गइला का बाद के ह (अब, ई बात दोसर बा कि कवि एही अप्रस्तुत के विधान उपमा का भाषा में कर देवे)। अइसन अद्भुत दृश्य के उतारे में उपमा के थाकिए गइला से उत्प्रेक्षा द्वारा स्वयं रणचंडी के आगमन युद्ध भूमि में भइल बा जेकरा से ई दृश्य अद्भुत का साथे-साथे दिव्य हो उठल बा।

एगो अउर सवइया देखीं जवना में एगो नववधू के पति भारतमाता का गोहार पर रन में खेले जा रहल बा। ओकरा जूझे के तरास का सामने तरुआरि के पानी थोर पड़ गइल। नव वधू झरोखा से झाँकके देखऽतिआ कि ओकर पति (पति ना कहके जेकराके कहऽतिया मँगिया के निसानी; व्रीड़ा, शील अउर आभिजात्य के मिलल-जुलल कइसन मनोहर व्यंजना बा) सबसे आगे जा रहल बा। एह वर्णन में देखल जाय कि अन्तिम पंक्ति में शृंगार के वीररस में कइसन मनोहर व्यूहन भइल बा—

कइलसि भूईं गोहारि जबइ, रन खेलइ चला तब मोर परानी।
जूझ क लागलि अइसन तास कि थोर परा तरुआरि क पानी॥
झाँकि झरोखनि मइँ देखलिउँ, सबसे अगवाँ मँगिया क निसानी।
फूलि के छाती भई गज ऊपर, साटन की अँगिया मसकानी॥

एहीं कवि के तीन गो सवइया द्रौपदी-चीरहरण का बीच से प्रस्तुत करऽतानी जे भोजपुरी काव्य के उत्कृष्ट उदाहरण बा—

एक से एक खड़े छतिरी, अँखिया सबकी झुकि सोवन लागीं।
द्रौपदी चारिउ ओर निहारिके, हारिके धीरज खोवन लागीं॥
'द्वारिका नाथ, हे द्वारिका नाथ' जुहारि अनाथिनि रोवन लागीं।
नैन बढ़े-बड़े, गाल बड़े-बड़े, मोती बड़े-बड़े बोवन लागीं॥

---

१. ऊहे
२. चन्द्रशेखर मिश्र : द्रौपदी (प्रबन्धकाव्य)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागत कोइ गोहारि न बा, खड़े ठाकुर एक-से-एक सगोती ।
आँखि तरेरत बाटइ दुसासन, बाज लखइ जस सूधी कपोती ।।
तोरे बिना कोइ सूझत ना, तनी टोकिके छाती सँकाऽ चुनोती ।
द्वारिका ओर किहे मुँह द्रौपदी ढारत मोती, निहारत धोती ।।[1]

चारि पती मुड़ियइलन, पचम पारथ भी बनि बइठे बेचारू ।
आनक हाथ से आपत्ति नारि उधारि लखइँ, चटके नहिं तारू ।।
अइसे में ना बिसरइहऽ तुहूँ, पति ढवे पर पांडव भइलें उतारू ।
कीमत का जनिहैं एन्हने मछरी मरलें, मिलि गइ मेहरारू ।।[2]

अब एगो दोसर कवि के रचना—भोरी का, भोरावेवाला रूप के वर्णन, भोर का पृष्ठभूमि में :—

भोरी का भेस के, भोरी के भोरल, भोरे के भाउ, सबेरे-सबेरे ।
रे मन रूप का देवी के रूपक गाउ-सुनाउ सबेरे-सबेरे ।।
मैथिल सारी में चम्पक नारी के रूप बसाउ सबेरे-सबेरे ।
कोंवल कौंल के फूल खिले जस थीर तलाउ सबेरे-सबेरे ।।[3]

अब एगो नमूना उक्ति का विदग्धता के देखल जाव । पुस्तक के नाँव ह—बदमाश-दर्पण ।

हम उनसे पूछलीं, आँखि में सुरमा काहे बदे लगाईल ।
ऊ हँसके कहलन, हम त छूरी पत्थर से चटाइला ।।[4]

ओही कवि के दू गो शेर, जवना में प्रेम के गजलियत सजीव हो उठल बा—

हम खरमेटावं कइलीं ह रहिला चबाय के ।
भेंवल धयल बा दूध में खाजा तोरे बदे ।।

---

१. उहे
२. ऊहे
३. आनंद सन्धिदूत : भोजपुरी अकादमी पत्रिका, जनवरी-मार्च 1982
४. लेखक—तेग अली 'तेग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्तर तूँ मलके रोज नहायल करऽ रजा।
बीसन भरल धयल बा कराबा तोरे बदे।।

भोजपुरी-काव्य में मुक्तक आ गीत के रचना खूब हो रहल बा। प्रबन्ध काव्यन के सङ्ख्या अबहीं कम बा। समर्थ कवियन के कमी नइखे। खाली एने ध्यान देला के जरूरत बा।

कविता का बाद जवना विधन में भोजपुरी के उत्कर्ष देखल जाता ऊ ह कहानी आ उपन्यास। कहानी में त कथ्य आ शिल्प के विविध प्रयोगन का चलते उच्च कोटि के साहित्य प्राप्त हो रहल बा लेकिन उपन्यास में ओकर प्रायः अभाव बा। फुलसुंघी, आ घर टोला गाँव जइसन कुछ श्रेष्ठ अपवादन के छोड़ दियाव त उपन्यास में भोजपुरी अबहीं नया जमीन के तलाश करऽतिआ, अइसन लागऽता। नाटक में कुछ काम भइल बा बाकी अइसन ना कि ओकरा के विकसित भषन के साहित्य के सामने गर्व से प्रस्तुत कइल जा सके। निबन्ध में अबहीं डेगाडेगी हो रहल बा। आलोचना-साहित्य के, खास करके सैद्धान्तिक आलोचना के, अभाव खटकेवाला बा।

भाषा का क्षेत्र में सबसे जरूरी काम बाड़न स – शब्द-संकलन, वर्तनी-निर्धारण सामान्य आ व्युत्पत्तिमूलक कोषग्रन्थन के सम्पादन, प्रामाणिक व्याकरण के निर्माण, आउर भाषाविज्ञान आ काव्य-शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थन के रचना, जिन्हनी के एही क्रम में लेवे के चाहीं। आ जल्दी। जे जतना देरी से जात्रा सुरू करे ओकरा ओतने डेगार चले के पड़ी, दउड़हूँ के पड़ सकेला। अउर लोग बहुत आगे निकल गइल बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अब पढ़ाई हो रहल बा। बिहार में माध्यमिक आ इंटर परीक्षा के विषय त ई रहले रहे. एने कुछ बरिस से बिहार विश्वविद्यालय आ मगध विश्वविद्यालय में बी० ए० तक एकर पढ़ाई होय लागल बा। आनर्स के पाठ्यक्रम बनऽता आ जल्दिए

१. ऊहे
२. लेखक—पांडेय कपिल
३. लेखक—पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एम० ए० के भी पढ़ाई होखे लागी। बाकी अबहीं तक राज्य सरकार से लोक-सेवा-आयोग का परीक्षा खातिर भोजपुरी के मान्यता नइखे मिलल। कई साल पहिले बिहार सरकार विधान परिषद् मे ई आश्वासन देले रहे कि मैथिली का साथे-साथे भोजपुरी खातिर भी केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त करे के प्रयत्न कइल जाई। भारत सरकार से मान्यता मिल गइला पर साहित्य अकादमी का माध्यम से भोजपुरी का साहित्यकारन के बहुत प्रोत्साहन मिली जेकरा से एकरा विकास में गति आई। अइसे त कवनो साहित्य अपना साधकन का शक्ति से महान बनेला, राजकीय पोषण से ना; बाकी राजकीय सहायता से आत्मा के उन्नति भलहीं ना होय, लोकयात्रा में कुछ सुविधा जरूर होला, एकरा से इनकार ना कइल जा सके। आ आधुनिक प्रजातन्त्र में राजकीय के ऊ रूप अउर अर्थ नइखे जे मध्ययुगीन राजतन्त्र में रहे। एहसे राजकीय सहयोग आ सहायता भोजपुरी का याचना के ना, ओकरा अधिकार के विषय ह। बिहार सरकार भोजपुरी खातिर कुछ कइले बा।

ओकरा से आशा बा कि एह सम्मेलन के भवन खातिर पटना में जमीन उपलब्ध कराई आ आवश्यक अनुदान दी। भोजपुरी अकादमी के उचित व्यवस्था आ ओकरा माध्यम से भोजपुरी का विकास में सहायता कइल बिहार सरकार के दायित्व बा। हम आशा करऽतानी कि सरकार एह दिसाईं जागरूक होई। उत्तरप्रदेश सरकार से भी हमनी के कम अपेक्षा नइखे।

बाकी, असल काम बा साहित्य-सृजन। भोजपुरी के कलम जेकरे पास होखे ओकरे से निहोरा बा कि अपना शक्ति के प्रयोग आ उपयोग कइल जाव। भगवान के दिहल विभूति एही खातिर बा कि ओह से लोक मंगल के विधान होखो। तबे भारत आगे बढ़ी, आ अइसन बुझाता कि जब ले भारत आगे ना बढ़ी, तबले मानवता मुक्त ना होई। धन्यवाद!

—विश्वनाथ सिंह

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४ : : फोन : ५६६१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

एगारहवाँ अधिवेशन

रेणुकूट, उत्तर प्रदेश

के

अध्यक्ष

डॉ० विद्यानिवास मिश्र

(कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

के

भाषण

रेणुकूट, उत्तर प्रदेश २६ मई, १९९०ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय स्वागताध्यक्ष जी,
सम्मेलन के माननीय सदस्यगण,
अधिवेशन में जुटल भोजपुरी के नेही-सनेही बहिन आ भाई लोग !

हमरे खातिर ई एगो अजगुते ह। सम्मेलन के लोग कौने गुन पर रीझल अः कौने अवगुन पर रीझल, ई त उहे लोग जानेला। हम अपनी ओर से कहि सकीलां कि भोजपुरी में हम लगभग नाहिंए का बराबर लिखले बानीं। भोजपुरी के पसारा में जनम भइल, लालन-पालन भइल, भोजपुरी के आँचर में बहुत दुलार मिलल, प्यार मिलल, ई सब बात त ह, लेकिन आजु ले हम सिवा अपने निबन्धन में ओह धरती के कहीं-कहीं चोरा के चन्दन जइसे छिड़काव कइले हईं। कुछ अउर कहीं त भोजपुरी साहित्य के छपववले में आ एह भाषा के प्रचार-प्रसार में कवनो उद्यम ना कइलीं। ब्रज में रहलीं, ब्रजभाषा खातिर उतजोग कइलीं। भोजपुरी खातिर त एतने कइले होव कि सज्जी लोकभाषन के संग्रह तइयार करवलीं त भोजपुरी क श्रेय त मिलहीं के रहे, हमहूँ लिहलीं। एतनो पर अइसन ढूँढ़ली उ सम्मेलन के ई कहवे करब कि सम्मेलन के लोग रामजी के नीथर वा कि 'बिनु सेवा जु द्रवै दीन पर'। भोजपुरी सम्मेलन के जब हम पहिलका अध्यक्ष लोगन के अभिभाषण पढ़लीं त मन में बड़ा भयो लागल, डरो लागल, मन में वड़ा संकोच लागल कि ओ पाँति में हम कइसे खड़ा होईं ? स्वर्गीय पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व० पं० उदयनारायण तिवारी, डॉ भगवतशरण उपाध्याय जइसन लोगन के साथे भाई देवेन्द्रनाथ शर्मा, गणेश चौबेजी, विवेकी राय जी, कृष्णदेव उपाध्याय, रामविचार पाण्डेय जइसन लोगन के साथे हमरो नाँव गनती में आवे, एमे हम अप.ा के धन्य जरूर मानव, लेकिन ओ लायक अपना के समझब ना। काहे कि ई सब वड़ा तपस्या कइले बाड़न आ बड़े लगन से भोजपुरी के सेवा कइले बाडन। एह लोगन के हमरे ऊपर बहुत परेम रहल बा, बहुत किरपा रहल बा, आ जे एह समय बा ओकर आजुओ किरपा बा। हम समझत हईं कि ओह किरपे का बदौलत हम इहाँ खड़ा बाटीं त कुछ कहहीं के परी। कहे के लूर चाहे हो, चाहे ना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राहुलजी के साथ हमं काम कइलीं हिन्दी भाषा के कोश के ऊपर। लेकिन जब केहू तीसर आदमी ना रहे त राहुलजी भोजपुरी में बतिआवें। जे केहू जानदार आदमी हमकें मिलल, बड़गर आदमी मिलल ते भोजपुरिये में बात करे, चाहे स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू होखें, चाहे पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी होखें, डॉ० उदयनारायण तिवारी होखें, डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा, जस्टिस हरिश्चन्द्र पति त्रिपाठी होखें, जस्टिस शंकरशरण होखें। ई सब आपसं के बातचीत भोजपुरिये में करें आ करे में गर्व क अनुभव करें। हमरे गुरुजन लोग कवो-कवो अनखाय जायं आ कबो-कबो मजाक करें कि ई दुई भोजपुरिया मिल गइलन त ई भुंला जइहें दूसरो के बाति। अपने बोली खातिर एतना मोह-छोह कवनो दूसरी जगह मिलल नाहीं, एकर कारन का ह? जेतना हिन्दी साहित्य भोजपुरी बोलेवाला लोग लिखले बा हिन्दी भाषा आ हिन्दी भाषा के रूपं जतनां रचले बा ओतना दूसरे भाषा आ बोली के लोग नइखे कइले। तबो भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरी के नां छोड़ेले वा, ना छोड़ी। एह समय सउँसे संसार में गनल जाय त बारह करोड़ कें ऊपर लोग भोजपुरी बोलत होई। एतना में त जाने केतना देस के मनई समा जइहें। भोजपुरी बोलेवाला आदमी देस-परदेस कहीं भी जाव अपने सांस्कृतिक धरोहर के साथ जाला, अपने क्षेत्र के वाचिक साहित्य के, सुभाव के, चाल-ढाल के धरोहर अपने साथे रखेला, आ कवनो कीमत पर कवनो चमक-दमक में हेराला नाहीं। वेश-भूषा कवनो अपनावे, ओकर मन ओइसं बिहरत रहेला जइसे आवां में रखल बरतन। लोग एके समझेला कि ई त बितले क बिसूरल भइल। अइसन आदमी आगे कइसे जाई? ई ना सब समझेला कि जवन चीज आगे ले जाले ऊ ऊर्जा होले, भीतर के तेज होला, आ ऊ तेज एक मनई में नां होला। ऊ तेज सगरो जाति के होला, बल्कि ई कहीं कि सगरो महाजाति के होला। तेज ना रही त आदमी ना दूसरे के चलवले चली, नां अपने चली। भोजपुरी क्षेत्र के आदमी केतना आगे बढ़ि सकेला एकर सबूत चाहीं त इहे देखीं कि मारीशस, फिजी, ट्रिनीडाड, गयाना, बर्मा, थाइलैण्ड, सिंगपुर कें दलदल आ जंगल के नन्दन बनावल भोजपुरिये लोग न? किसानन,-मजदूरन कें आगे बढ़वले में के झंडा उठावल, भोजपुरिये जयप्रकाश बाबू, सहजानन्द सरस्वती, राहुल जी न?

जें ई समझेला कि भोजपुरी त गँवईपन क इजहार ह ओके ई जनावल चाहत बाटीं कि एक त जंके ऊ लोग गँवईपन कहेला उहे एह देस के सच्चा ई ह आ दूसरे जेंके लोग बड़ा सौखियाना कहेला ऊ ओकर पहिचान ह आ ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिचान जेतना भोजपुरी भाषा में मिली ओतना कहीं ना मिली । हम हिन्दी के शब्द-सम्पदा लिखत रहलीं त हर परिवेश के जतना शब्द जीवन्त रूप में भोजपुरी में प्रयुक्त मिललें ओतना दूसरे जगह ना मिलल । दूसरे जगह लोग नवगढ़ल शब्द के इस्तेमाल करेला । आ जवन शब्द बोलचाल में में घिसके सैकड़न वरसन में ढलल बा ओके ना इस्तेमाल करेलन । नवका पढ़वइया लोग त सोझ-टेढ़ अंगरेजिये जानेला । अंगरेजिये बुके ला । ऊ त अंगरेजिये में नाँव राखी, भलहीं बढ़िया सटीक नाम अपने भाषा में होखे। 'सुगा पंखी' के जगहे अंगरेजी क कवन शब्द बा ? जेके चित्रात्मक भाषा कहल जाला ओकर छटा भोजपुरी में केतना बा ई जाने के हो त दुइ घंटा आदमी गणेश चौबे के पास बइठ जाव। कहीं से पुरान फाइल मिले त चतुरी चाचा क चिट्ठी पढ़ो, विवेकी राय क निबन्ध पढ़ो, भोजपुरी लोकगीत पढ़ो, भोजपुरी इलाका क कहनी सुनो आ कुछ ना करे त दुइ मेहरारुन में जब बाजि जाव तब उनुकर एक दूसरे के कोसले-सरपले के भाषा सुने, त अन्दाज मिलि जाई कि भाषा कइसे आगे नाचे लागेले । जब दुलहिन घरे आवे लागेले तब पनवा नीयर बतावल जाला । पाने मतिन सहेज के रखे के सिखावल जाला । सोपारी नीयर ओके ठरहुर कहल जाला । सोपारी लम्मा होले लेकिन तनिको हवा बहेले त लचकत रहेले । गाछि लचकत रहेले, टूटेले ना । ओकरे भीतर अपने आप शक्ति होला लेकिन ओकरा साथ लचेवाला भाव भी होला । पान के पानी चाहीं लेकिन देर तक नाहीं । धूप चाहीं लेकिन सामने से नाहीं । पाने के पत्ता नीयर फेरे के चाहीं । एक के ऊपर दूसर गाँछ के रख द त सट जाई । भोजपुरी भाषा भी कुछ-कुछ ओह बहुअर मतिन ह । जो भीतर से बड़ा ओज होले, बाहर से बड़ा नवल होले । बड़ा सम्हार माँगेले । सब कुछ बिलकुल नपल-तुलल ह । आ सबसे बड़ बात ई ह कि समूह में रहेले जरूर पर एक-एक बेकति के अलग-अलग पहिचान बनाके रहेले । सबके ऊपर एके रंग चढ़ाके नाहीं । एही से भोजपुरी में एके रंग नाहीं बा, कई ठो रंग बा । एमे त गली क 'बदमास दरपन' क अइसन भाषा मिली कि 'हम त खरमेटाव करीले रहिला चबाई के । भेंवल धरल बा दूध में खाजा तोरे बदे ।' दूसरी ओर अइसन अमीसे वाली भाषा मिली कि 'अमवाँ क नाईं बाबू मऊर त महुववा कि महुववा कुच लागे ।' 'पुरइन पात अस पसरल कमल दल बिसरल!'

एक ओर भोजपुरी में गुड़ के कड़ाही नीयर ताव होला, दूसरी ओर लएना नीयर कोमलता । भोजपुरी के ई विचित्र सुभाव एह देस के साधारण मनई के ह। ग्रियर्सन लिखलें कि भोजपुरी मनई कवनो लड़ाई-झगड़ा देखे जायँ त कवनो ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो पच्छ लीहें, खाली तमासबीन ना रहिहें। भरसक उहे पच्छ लीहें जवन कमजोर पड़त होखे। ई एके आजु बहुत समझदारी के बात ना कहल जाई। काहे कि किनाराकसिये के आज के समझदार समझदारी कहेलन। लेकिन भोजपुरी 'मोहि काह परा रे भाई' के कायरता समझले। अइसन भाव, दूसरे के लड़ाई अपने ऊपर लिहले के भाव तबेले अइबो करेला जब मनई दूसरे में अपने के देखेला। दूसरे के अपनिये से जाँचेला। अपने सुख-दुख से जाँचेला।

भोजपुरी इलाका के लोग दूसरे प्रदेश में गइल, दूसरे देश में गइल, अपने धरती से निर्मोही बनिके। एह देश के लाखन मजूर इलाका से बाहर जा ताटन, आ जहाँ जा ताटन खून-पसीना एक कर ताटन। ओह धरती से सोना उपजावताटन, ओह धरती के जेतना सम्भावना बा ओह सम्भावना के उजागिर करत बाटन। पर उनके जवन मिलत बा ओके अपने धरती में लगावे खातिर बराबर सोचत रहत बाटन। कबो आपन धरती, जड़ छोड़ल नइखन चाहत। जेवन रस मिलत बा अपने जरी के फेर से दीहल चाह ताटन, लौटावल चाह ताटन। ई मोह-छोह उनके खाली कजरी-बिरहा से ना जोड़ले बा बल्कि ओह भावना से जोड़ले बा जेवन भाव सभकर भाव हो सकेला। खाली भोजपुरिये के ना। ऊ भाव खाली मनई के ना ह। सउँसे जीवन के ह। सगरो जीवन के ह। जहाँ के गीत में परदेसिया के लौटावे खातिर ई ओरहन दीहल जाव कि 'ओहि देसवा में अमवा ना बउरेला कि ओहि देसवा कोइलिया ना बोलेले।' उहाँ अपनवले के नेवता गाछि, चिरई, चुरुंग सभ देले बा। पेड़-गाछ, चिरई-चुरुंग इहो संभे देला, खाली मनई ना। जवने साहित्य में दुखवा क गठरी गंगा माई सम्हारेली मंगई माई सम्हारेली। चाहे केतनो अपनइत ना होखे, ओह साहित्य से जे अपना के जेतना जोड़ले रही ओतने ऊ भीतर से पोढ़ होई। ओतने मोहमाया भी होई ओकरा। उहे मोह-माया के पसार ह कि छोटानागपुर के आदिवासी भाई नागपुरिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन, सरगुजिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन। नेपाल के थारू आ धांगड़, जेकर मूलभाषा जाने का होई, भोजपुरी भाषा अपनाइ लिहलेन। मारीशस में चीनी, तमिल जरी के लोग रहलन त तेऊ लोग बोलचाल में भोजपुरी भाषा के अपनाइ लिहलन। अपने देश में सिनेमा में, जहाँ अपनवले क नाटक ज्यादा होला, उहाँ भोजपुरी गीतन के टुकड़ा, भोजपुरी बड़ी, भोजपुरी शब्द अपनावल जाता। भोजपुरी कोमल जरूर ह लेकिन पोसुआ नाहीं। केहू ओके पोसुआ ना बना सकल। ना विदेशी, ना अपने देश में। विदेशी संस्कृति के नाम पर फइलल कचराखाऊ अपसंस्कृति। एह खाऊ अपसंस्कृति के मार्ग अइसन बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि सगरो लोकभाषा विदा होत चलि जा ताटे। एक अजीब चटक रंग में ढरल चलि जा ताटे। आँखि के चोभेवाला चटकार रंग में रँगल चलि जा ताटे। कहीं–कहीं ओकर असर जरूर नवकी भोजपुरी कविता पर दिखाई पड़ रहल बा, जहाँ सपने के संसार रचल जाता। लेकिन अवहीं ले भोजपुरी के जरि बाँचल बा। अवहीं ले, एक्के,दुक्का सही,भोजपुर के असली रंग ओइसने बा। साँवर सलोन आ पनिगर।

भोजपुरी के प्रशंसा कवनो एह भाव से नाहीं कर ताटीं कि दूसरे के महत्व कम कर ताटीं। दूसरो भाषावाला लोग अपने जरी-सोरी क मान करे, ओमे पानी दे, अपने मेहनत आ पसीना के पानी दे, आ ओकर पानी पहिचाने, रंग पहिचाने, एकरे खातिर हम उकसाव ताटीं। जब हम देखी ले कि अवधी ब्रजी बोले वाला लोग अवधी-ब्रजी घरे बोलत खाने लजाला त ओह लोगन पर हमरा दया आवेले कि अइसन लोग हवन कि अपने जर-सोर से अलग रहिके आपन पहिचान बनावल चाह ताटन। आ दूसरो कारण एक ठो ह कि हम ई जान ताटीं कि भोजपुरी इलाका उहे ना बा जेवन बीस बरिस पहिले रहे, आ उहे ना रही जेवन बीस बरिस बाद होई। का खाईं का पकाईं का लेके परदेस जाईं' बोलेवाली चिरई भोजपुरियो इलाका में मुँड़ेरी-मुँड़ेरी उचरतिया। इहो जान ताटीं कि गाँव,गाँव ना रहि गइल बाट, सहरो से बदतर, बेगाना आ अनचीन्ह हो गइल बा। अब गाँव परिवार ना रहि गइल बा। आ गाँव के लोग काका-भतीजा नाइ रहि गइल बाड़न। अब सभे जयहिन्द छाप नेताजी हो गइल बा। 'को बड़ छोट कहत अपराधू।'

इहो जान ताटीं कि कवनों कवनों घरे होइहें जहाँ कहनी कहल जात होखी आ पुरान गीत गावल जात होखी। कम्मे गाँव होइहें जहाँ कदमे के गाछी तर झूला पड़त होखी। बिरले लोग होइहें जेके दस-पाँच कोस में बूढ़ी-बूढ़ा मिल जइहें जेके पुरान गीत, कहनी, रीति-रिवाज मालूम होखी। ओहूसे कम लोग होखिहें जे ओके सीखल चाहत होखे। बटोरे वाला लोग बाटे आ बटोरि के डिगरी लेवे वाला बाड़न, बाकिर ओके सीखे वाला आ सीख के ओकरा ओर हे खेवाला लोग अँगुरियो भर गनती पर नाहीं होइहें। ई सब त सही, इहे मानिके चुपचाप बइठल ई कवनो कम पाप नाहीं ह। आ ई पाप हमसे नाहीं सहात ह। ईहे एक ठो कारन ह कि हम अपने के अयोग्य जानिके भी ए काम, एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद स्वीकार कइलीं एह सम्मेलन के जरिए खाली भोजपुरी भाषा के आंदोलन चलो आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य के पहिचान बनो, एतने हम नाहीं चाहत बानीं। ई सब काम होत आइल बा, आगे इहो बढ़ो, लेकिन एकरे साथ-साथ ई सम्मेलन अखिल भारतीय ह त एगो बड़हर पैमाने पर भाव जगवले के काम करो जवने भाव क चस्पा हम कइलीं ह। ऊ भाव हमन से कुछ माँगता काहे से कि हमन के ऊ भाव कब से पूजत आइल बाटीं। आ अब जो नाहियो पूजताटीं त ओकर कहीं-कहीं हूक मन में बा। ऊ हूक खाली मनई के मनई खातिर ना ह, चाहे एक ठाँव-गाँव, गाय-गोरू, पशु-पंछी गाछि खातिर नाइ ह। ऊ सगरो जीवन खातिर ह। अउर दिना कोइली दिन-दुपहरिये बोलेले, आजु अधरतिये काहे बोले ले, एह सवाल क कवनो मतलब दूसर ह ना। एह के जवन साहित्य उठावेला ओकर ध्यान खाली कोयली पर नाहीं बा आ ना ओकर बोली पर बा। जब आदमी कोइली के आ कोइली के बोली के कवनो सुधि ना रखले बा, जब आदमी एक दूसरे से अनचीन्ह हो गइल बा, एक दूसरे के बीच में एक ठो अन्हार हो गइल बा कि केहू आमना-सामना ना होत बा। सब आड़े देके बतियावत बा। कि केहू आपन कहीं लउकते ना बा। कवनो जोन्हीं ना लउक ताटीं ना कवनो जुगनू कहीं एह अन्हार के चुनौती देवे खातिर कहीं जुगजुगाता। आँखी में पानी ना रहि गइल बा कि ओहू जा कवनो चमक आवे। एह अन्हारे में अगर कहीं कोइली बोलल, पुकार उठल कि हम जहाँ बाटीं उहाँ से कहीं अउर चलीं त बड़ा ओइसन लागेला। कइसन त ई अन्हार एकदम से सुता दीहले ह। मनई के सज्जी फिकिर के ऊपर एक ठो नसा के परदा डालि देले रहल ह। आ कहाँ ई बेंध कि कहीं अउर चलीं। बेगानोपन के एक ठो नसा होला आ ओ नसा में आजु के आदमी डूबि गइल बा। ओके इहे बड़ा अनस लागता कि आपन्हें। केतनो अनस लागो, आदमी केतनो एपर झोंझियाय कि काहे हमके सुख-सेजिया से उठवल ! जिन्दगी सेजिया पर त कटे के नाहीं ह। जिन्दगी त जगले के आ खटले के नाँव ह। आ जे जागी आ खटी तेके कहीं केहू अपनइन नाहीं लउकी। कहीं केहू आठ-नौ घटा क पसीना पोंछेवाला ना लउकी त खटल बोझ हो जाई आ केहू होई चाहे एके छन खातिर मिले त खटल-जागल, उमंग आ उछाह बनि जाई। एसे ई सवाल आजु जइसन चेघेराला बा ओइसन शायद मनई के इतिहास में ना रहे। काहे से कि मनई के एतना कबो भाग ना होई अपनवले से ? एह जोखिम से कि अपनवले के मतलब होला अपने के दूसरे के हाथ सौंप देल, आपन बहुत कुछ लुटा दिहल। बिना लुटवले ई मिलेला ना। अब जब सज्जी रिश्ता-नाता, नेह-छोह गीत-नाच, कविता कहानी सब जिनिस हो गइल होखे त आदमी भी जिनिस हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाला आ ऊ फेर तब सोची नाईं सकेला कि जिनिस त कुछ नाहीं ह । सब अपने कवनो-ना-कवनो परछाईं ह आ सभकर परछाईं आदमी ह। पुरान कहनी के जिनिस बनावे वाला मन राच्छस नीयर खाली खाये-खाये करेला आ ओकर भूखि बढ़ते जाला, लेकिन जे बाँटि के खाइल चाहेला, अपने में सभकर हिस्सा समझेला, ते खइले से ज्यादा खियवले में में आकुल रहेला। एक जगह हम गइलीं। जनेव रहे। ओहाँ के कर्त्ता एके गोड़ दू बजे राति ले खड़ा रहे। पंगत पर पंगत चलि गइल, उनुका मुँह में पानी तक ना गइल, लेकिन उनुकर चेहरा अइसन खिलल रहे आ जे खइलस तेकरे खातिर एतना गदगद रहलन कि आजु सगरो लोग हमार घर कृतारथ कइलन, हमार जग पूरा भइल। ई पूरा भइले के भाव छोट-छोट घरौंदा बनाके जे रहता ओकरा ना बुझाई। काहे से कि ऊ त ना कबे आन्हो-पानी सहले होई आ ना कबे टहकार अँजोरिया में ना बाँसुरी के पीछे दउरल होई न चइत के भोर में महुआ बीने महुआरी में भागल होई। ऊ का जानी कि सम्पूरन का होला। लेकिन हम कह तानी कि ओ सम्पूरन क जरूरत आजु आ गइल बा। खाली जब हो जाला तबे सम्पूरन के चाह जागेले। जवनें ओर नजर डालीं, गगरी छूँछे लउकत बिया। केहू ओ छूँछ गगरिया के बहरवा से रँगि दिहले बा। आ ओपर केहू सयान बा त फूलो-पत्ती बना देले बा। लेकिन बा ऊ गगरिया छूँछे। थोड़ देर ले छूँछ का सहल जा सकेला। लेकिन जब केहू भरले के कोशिश ना करी, सभे छूँछे राखी, त छूँछ सहाई ना। आ छूँछे लगल बा। केहू का केहूं के ऊपर विसवास नाहीं ह। ई जाति ऊ जाति पर विसवास नाहीं करत बा। अपने पार्टी के आदमी अपने पर विसवास ना करत बा। अपने घरही में आदमी अपने सगे महतारी-बापे पर ना बिसवास करत बा आ एह अविसवास के खाई के ऊ भरल चाहत बा तरह-तरह के बिजली के कचरा से, गाना से, सिनेमा से, वीडियो से, पंखा से, ठढा करेवाला मसीन से, गरमावे वाला मसीन से। जाने कइसे-कइसे कचरा से खाईं पटात बा। खइयाँ चौड़े होत जाले आ ओही के ई परिणाम देखे में आवता कि एक-से-एक कोमल, सुन्नर, पढ़ल-लिखल, सुशील धियरिया ससुरे जा तानीं त ओकरा पर माटी के तेल छिड़का जाता। काहे नाहीं अपने रूप-गुण के साथे-साथ ऊ दहेज ले अइली। जइसे बिना अपने कमइले अन-धन सोना घरे चलि अवे। अइसन लगता जइसे लइका आ लइकी अलग-अलग किसिम के कवनो सृष्टि होखे। आ जे लइकावाला के लइकी ना होखे आ जेकर भइलो बा उनुके ई नाहीं मन में रहि गइल बा कि दूसरो के लइकी भी लइकी ह। एके बाँस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दू करेली फूटेली—एक बँसुरी बनेले आ दूसर बाँस। जवन बाँस बनेला तवनो मारे खातिर नाहीं घाव रोके खातिर बनेला, लेकिन ऊ बँसवा के पोर-पोर में अन्न खाली एक ठो भूख समा गइल बा। केतना भरीं, केतना खाईं, केतना चबाईं। हम ई बात बढ़ा-चढ़ा के नाहीं कह ताटीं। जेवन सामने होत बा आ सब जेकर चर्चो कर ता आ ओह चरचा के बड़ा चटखारा लोग लेता। अखबार में अगर खबर न छपे कि नई बहुरिया के केहू जरा दिहलस, काट दिहलस, त अखबरवा पढ़ले के कवनो सुखे ना मिली। एक सीता के अग्नि-परीक्षा भइल त सगरो देवता लोग आ गइलें। निर्वासन भइल तब बालमीक जेवन रामायण लिखलें खुदे आ गइलें आ कहलें कि हम अपने तप के बलपर कहताटीं कि सीता पवित्र ह। आ आजु एतना जगह-जगह कांड होता, एतना जगह-जगह बहुरियन के होम होता आ केहू के मन में देवता ना आवत बाटे। एकर कारण बिचारीं त कारन ईहे ह कि जवने साहित्य के एके रूमानी मोह जानि के सम खाली मनोरंजन के वस्तु मानता आ जेवन संस्कार एके तमासा मान ता आ अजायबघर के चीज मान ता। कवनो जमाना में ई गीत मटकोर के धुनि पर गावल जात रहे। गाँव में गीत माटी गोढ़ले कै रहे। कवनो जमाना में हल्दी चढ़ावल जात रहे। वर-कन्या के हल्दी लागत रहल। केवनो जमाना में एगो कार होखे चुमावन। "साठी के चउरा लहालहि दूबि रे चूमे ही चलेली कवने राम धीय रे। जस-जस चूमेली तस-तस देली असीस रे। जीयहु दुलहे राम लाख बरीस रे"। आ कवनो जमाना में जनेव क गीत गावल जात रहे —'ऊसर खेत जोताइब त मोतिया बोवाइब, कंचन थार भराइब त मोतिया लुट इब।" कइसन-कइसन उजबकपना होत रहे, खाली सपना क संपती। हम ओह लोगन से एतना ना घबड़ाई ले जे एकदम सहर में आ जे एकदम नवा हो गइल कि ओके जरी से कवनो मतलवे ना रहि गइल। लेकिन जे सहर में रह ता आ गाँव के बाति कबो-कबो कवनो-कवनो बानगी अपने लगे रख ता। ई देखीं खाँटी देहाती चीज ह, जेइसे देहाती चीज ओकर खातिर एक जिनिस ह। ओकरे से हम घबराई ले। काहे कि ई आदमी हमके बड़ा भयावन लागेला। लोक साहित्य लोक कविता के बाति करेवाला ढेर लोग अइसने बा। कमे लोग अइसन बा जेकरा खातिर ना गाँव तमासा बा ना लोक-साहित्य तमासा बा। ई सज्जी साँस-साँस में, रोवाँ-रोवाँ में भरल बा। ओही से हम आसो कर ताटीं कि ओकरे काने तक हमार बात पहुंची। ऊ भोजपुरिहा हो चाहे बुन्देलखण्डी हो। चाहे मगही हो, मैथिल हो, छत्तीसगढ़ी हो, कहीं के अपने के मानें, अगर ई समझे कि हम जवन पवलीं अपने धरती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से, ऊ सभकर ह। आ ई धरती जइसनहमार महतारी ह ओइसन सभकर महतारी ह। एकरे ऊपर हमार इजारा नाहीं ह। ई जरूर चाही कि हम हीरा पवले बाटीं त गठिया के ना राखीं। जहाँ-जहाँ अन्हार होखे हीरवा कहीं ऊँच ताखे पर रख दीं। सभकर चेहरा पर ओकर अँजोर आ जाव। आ जेकरे चेहरा पर कवनो मुखौटा लागल होखे, मुखौटवा चिन्हा जाव। असली आ नकली फरिया जाव।

ई लक्ष्य अगर आप लोगन के रुचे त एके उजागिर करे खातिर एक ओर त अपने वाचिक परम्परा के अइसन संग्रह तइयार कराईं जवने में सगरो जीवन के ए देखेवाली बात सभके एक दूसरे से मिलावे वाली वात हो आ जिन्दगी के हर एक घड़ी के कवनो-कवनो अर्थ देबेवाली बात हो। ओकर व्याख्या करीं। ओकर तुलना दूसरे लोकसाहित्यन के अइसने सनातन मूल्य वाला पाँतिन से करीं आ अपने के जाँची कि हम एह मूल्यन के जिय ताटीं कि ना। ई काम बहुत बड़ संकल्प के काम बा। काहे से कि एह काम में जे लागी ते अपने के मिटा दी। डॉ० उदयनारायण तिवारी चउदह बरिस ले खटले त भोजपुरी पर आपन बड़का प्रवन्ध लिखलन। पं० गणेश चौबे जी अबहीं ले खटते जा ताड़े। राहुलजी गाँव-गाँव आजमगढ़ में घूमि के नाँव से थाह लगावे के कोसिस कइले कि खाली नाँव के रेख के सहारे कइसे ओकर इतिहास बाँचल जा सकेला। ई सभ काम तपस्या से भइल। गीत लिखेवाला हमरो बीच में बा। आ चटकार गीत लिखेवाला बा। कहानियो लिखेवाला एक-से-एक समर्थ बा। बड़ी जानदार कहानी लिखेवाला बा। लेकिन हम चारू ओर देख ताटीं, अइसन आदमी कम बा जे अपने के खपा के ई कुल्हि काम करे। भोजपुरी सम्मेलन के लोग—ई लोग बिना सुविधा-सहायता के भोजपुरी के ई सभ कइले खातिर धुनियाइल बा। एक तरह से सयान लोग त इहे कहिहें कि ई कइसन बउरहपन ह कि ई भोजपुरी के एगो अलगे झण्डा ई लोग खड़ा कइले बा। लेकिन ई कहे के जरूरत आ गइल बा कि ई भोजपुरी के झंडा ना ह। ई हिन्दुस्तान के खाँटी मिजाज के झण्डा ह। जेके भुलववले के कारन आज अइसन लउकता कि आज केहू केहू के ना ह। भोजपुरिये के कारन, पूर्वी उत्तर-प्रदेश आ बिहार में हिन्दू-मुसलमान, बाम्हन-चमार कहीं मिल सकेले। आ एही से बिरहा, चैती, के नाते, केहू कवनो जाति के होखे, कवनो ईमान के होखे, दुइ घड़ी जुट सकेला। लोरिकायन, चनइनी, कजरी, आल्हा गावेवाला जेतना हिन्दू होइहें ओतने मुसलमान होइहें। आ पूरबी धुन जवने में अधिकार भोजपुरिये के होई, कवनो एक जाति के लगे धरोहर नाहीं बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरे कहले क ई मतलब नाहीं ह कि भोजपुरी के जवन साहित्य लिखल जाता ओकर कम महत्व होखे। लेकिन हम वाचिक परम्परा के फेर से दोहरा-दोहरा के एसे गोहरावल चाह ताटीं कि बिना ओकरा जवन कुछ लिखल जाई, डर ह कि नकली न हो जाव। केहू बुरा ना मानो, केहू एक कवि आ लेखक के ऊपर हमार टीका-टिप्पणी नाहीं ह। कबे-कबे हमें लागेला कि जवन खड़ी बोली में दस-बीस साल पहिले लिखल गइल बा आ ऊ बेरि-बेरि पीटल गइल बा, ओही के अनुवाद कइके भोजपुरी में फिट कइल गइल बा। जबकि ओमे ना भोजपुरी मुहावरा होला ना भोजपुरी माटी के कवनो सुगन्ध। माटियो में गन्ध कब निकलेला जबकि ओके खूब जोतल जाला आ हराई झँवाये खातिर छोड़ि दिहल जाला। आ वैसाख आ जेठ में जब झँवा जाला त पहिला असाढ़ बरिसला पर माटी गमक उठेले। ओही के कालिदास — 'सद्यः सीरोत्म-सृण सुरभिक्षेत्रमारुह्यमालम्' कहले बाटन। कहले क मतलब ई कि जवन मटिया पहले जोतब आ मटिया के साथे-साथ अपने के झँवाइब तबे ओकर सुगन्ध पाइब। भोजपुरी अइसन होखे जवन भोजपुरी लागे आ ओही के भोजपुरी भोजपुरी लागी जे भोजपुरी के भरपूर जीही। खाली ओकर फूल ना सूँघी, पर काँट-कूस से आपन हाथ-पैर, अपने लोहू से चभचभाई। आ ओकरे आगी में अपने के तपाई, ओकरे पानी में अपने के सेरवाई। आ ओकरे एकदम जगजगात खुलल अकास के नीचे छँहाई। भोजपुरी शब्द-ससार के जादू तबे ओके जाहिर होई। आ ई कवनो मामूली संसार नाहीं बा। एमे एतना तरह के रंग बा आ तह-के-तह अर्थ बा कि आजु एकर संग्रह के पहिले चिन्ता करेके चाहीं कि ई संसरवा कहीं आँखि से ओझल ना होइ जाव। एसे भोजपुरी के सम्मेलन के सामने दूसरा काम हम भोजपुरी-प्रयोग-कोश के रख ताटीं जवने में खाली भोजपुरी शब्द आ अर्थ ना होखे, ओकर प्रयोग होखे। जरुरत पड़े त उहाँ तसवीरो दिहल जाव। जइसे एगो चउकठ के कम-से-कम बीसों हिस्सा होइहें आ सभकर अलग-अलग नाम आजु केहू-केहू के मालूम होई। बिना तसवीर से समझवले कइसे समझ में आई। आ ई कोश बनि जाई त हिन्दीओ के बहुत बड़ उपकार होई। काहे कि ऊ सबदवा हिन्दी के भी कामे आई। भारतेन्दु, स्व० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', स्व० पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व० रुद्र काशिकेय, स्व० पं० बलदेव प्रसाद मिश्र और आजु के लेखकन में शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय के साहित्य में अगर लोकतत्व के विलक्षण प्राण-प्रतिष्ठा भइल बा त ओकर मन्त्रवा भोजपुरिये से आइल बा। ओइसन बाँकपन खातिर दूसर लोग ललचात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में, तीसर काम हम जब अपने लोगन के अवढर कृपा से बिकरमाजीत के सिंहासन पर एक अनगइयाँ मनई के बइठाइ देले बाटीं त एह सिंहासन के परताप से—कवनो अवरो अधिकार से नाहीं—ई सौंपब कि चाहे साहित्य अकादमी हो, चाहे सरकार के अऊर संस्था होखे, सभ इहे पूछेला कि भोजपुरी साहित्य के कवनो इतिहासो बा ? एमे में पढ़ावे के होखी त का पढ़ाईं ? त कम-से-कम कबीर से लेके आजु तक एतना लमवार साहित्य बा ओकर कवनो परिचय हमनी के तइयार करेके चाहीं। खाली जस गावे खातिर ना हो। कइसे भोजपुरी अपने के एक सगरो राष्ट्र के भाषा के निर्माण में सहायक बनलि ह। कइसे आपन दावा खाली घर के भीतर रखलसि। आ जइसन हम शुरू में कहलीं एतना समर्थ होइके भी बरावर अपना के नवा के रखलसि। एह पृष्ठभूमि में इतिहास लिखे के चाही ! आ आगे खातिर ई सकेतो देवे के चाही कि जे बहुत सहेला आ जे बहुत चुप रहेला ऊ कमजोर नाहीं होला। ओकरा भीतर एक हो बिसवास होला कि जहिया चाहब तहिया 'कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं' के करतब देखा देइब। उत्तर प्रदेश के दक्षिणांचल में जंगल आ औद्योगिक संस्कृति के दुपचट में ई सम्मेलन होता त उत्तर प्रदेश के, मध्य प्रदेश के आ बिहार के सरकार-इहाँ तीनों राज के सीवान बा—के काने तब ई पहुंचाईं कि एतना बड़ा जनशक्ति आ श्रमशक्ति के निरादर कइल ठीक ना होई। एक ठो ओस चटावे खातिर भोजपुरी अकादमी बिहार सरकार खोलले बा। ओदरें लगे अपना मनइन के दरमाही देवे खातिर मुस्किल से पइसा मिलता। उत्तर-प्रदेश आ मध्य प्रदेश में ऊहो ना बा। साहित्य अकादमी ई कहेले कि हँ, लोक साहित्य एगो सोता ह, ओसें कबो-कबो पानी लिहल जाला। ओकरें ऊपर कबो-कबो गोष्ठी हो जाए के चाही। आजु ले हमरें जानकारी में ऊहो ना भइल। लोक-साहित्य के नाम पर भी कवनो जियतार सस्था अखिल भारतीय स्तर के नाहीं बा। आ ना कवनो एगो शोध-संस्था अइसन बा जवन एतना बड़वर धरोहर आ एतना जियतार समकालीन रचना-संसार के सम्हारे। कुछ वयारिये अइसन बहता कि जे नाचता, गावता आ तान तूरता ओही क दुनिया मान रखता। साठे हजार जेकरे बोलेवाले क संख्या बा इहाँ तक कि चार सो, आठ सो संख्यावाला गनती भी सुरक्षा के अधिकार पाव तारें आ बारह करोड़ के कोई पूछेवाला ना बा। ई कवनो नीमन चीज नाहीं ह। अन्याय त इहे ह। जे करता तेकरे खातिर शुभो नाहीं ह। जे केहू देश के बड़की रक्त के धमनी के चिन्ता नाहीं करी ऊ जानो कि फेरु ऊ सूखी त दूसरन में खून रहवे करे त देह ना चली। भोजपुरी ऊ धमनी ह जवने से ए देश के श्रम के बड़वर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से-बड़वर काम हो ताटे। पंजाब में फसिल सोना उगिलता, इस्पात ढलाता, कोइला निकालल जाता। बड़का-बड़का कारखाना चल ताटे। ।ए मट्टी के आगि जे जराव ता आ जे जरता ओकरा प्राण हुनसावे वाला अगर कुछ ह त भोजपुरी के चइता, कजरी, फगुआ, बिरहा, लोरिकायन। ई खाली शोधे के विषय रखले से काम चली ना। सउँसे जिन्दगी से एकर का रिश्ता बा एके जब तक चीन्ही ना आ चिन्हाई ना तब तक जइसे पहिले कहलीं ह कि अजायबघर के जन्तु होके रहि जाई। भोजपुरी में रचना बड़वार तब होई जब ई चीन्हल-चिन्हावल शुरू होई। काहे कि रचना त भाषा के प्रतिष्ठा से जुड़ल होई। भोजपुरी के प्रतिष्ठा मिली त भोजपुरी रचना के शक्ति जरूर जागी।

एह अधिवेशन में हम एकर माँगि उठाईं। आ अपने लगे बल-बूता होखे त एके गाँव-गाँव जगवले के अभियान करीं, ब त शायद जे देश के, प्रदेश के भार सम्हरले बा ते कुछ चेती।

बाति त ओराए के बा नाहीं, राति चाहे ओरा जाय। लेकिन कहीं-न-कहीं आपन बाति समेटे के चाही। अब हम आपन बात समेटब। आ फेरू एक बेर सबके आगे हाथ जोड़ब। अगर हमरे नीयर अनगो के ई आसन दीहलीं त ओकर मान राखीं आ अगर कवनो भूल-चूक हो त क्षमा करीं।

जय हिन्दी !!

जय भोजपुरी !

रूपं प्रेस, लांदीपुर, पटना-१ (दूरभाष — ३२७८०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

बारहवाँ अधिवेशन, छपरा (सारन)

के

अध्यक्ष

मोती बी० ए०

के

अभिभाषण

२१-२२ मार्च, १९९२

समारोह-स्थल

प्राचार्य मनोरंजन नगर

(मौलाना मजहरुल हक एकता भवन)

छपरा, सारन (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय जय जय भोजपुरिया माई,
तोहरे खातिर भीख मँगाई,
तोहरे खातिर गीति गँवाई,
तोहरे खातिर समर लियाई,
ऊ केइसन भोजपुरिया होई,
जे ना तोहके माथ नेवाई।
जय जय जय भोजपुरिया माई ॥

जनता जनार्दन सवरूप जेभरि भाई-बहिन लोग इहाँ आइल बा, सबके हमार प्रणाम।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बारहवाँ वार्षिक अधिवेशन छपरा में हो रहल बा। एकरे सीवान अधिवेशन में स्वनाम धन्य श्री भगवत शरणजी उपाध्याय अध्यक्ष रहलीं। डा० कृष्णदेव उपाध्यायजी देउरिया जिला के बरहज नगर में एकर अध्यक्ष रहलीं। एकरे छपरा अधिवेशन में अध्यक्षता के पगरी हमरे माथे पर बनहाइल बा। ई हमार सौभाग्य बा कि एही बहाने छपरा एइसन भोजपुरी संस्कृति के लाल मिला के दुआरि पर ठाढ़ होखे के अवसर हम पा गइलीं। दुआरि झारेके, दुआरि पर पहरा देवे के सेवा कार्य हमके मीलल, ई हमरे जीवन के सबसे बड़हन उपलब्धि बा। हम भोजपुरी जनता जनार्दन के चरण में कृतज्ञता से ओत-प्रोत होके आपन माथ नेवावत बानी, रउरे हुकुम तवि बानी।

ई ऊ छपरा ह जेकर एगो मणिदीप जवना के ध्रुव तारा कहल जा सकेला नक्षत्र लोक से संसार भरिके जुग-जुग तक ज्योति के दान देत रही। रउरा सभें बूझि गइल होखबि कि ए मणिदीप के नांव का ह। भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के नांव के के ना जानेला। चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, सेनापति पुष्पमित्र शुङ्ग,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्राट समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एइसन विश्व प्रसिद्ध एतिहासिक महापुरुष के बाद हजार बरिस ले गुलामी के यातना सहत-सहत भारत जब स्वतंत्र भईल त एही धरती के सपूत के माथे पर राज तिलक लगावल गईल। जवन इतिहास में पढ़ले रहलीं जां ऊ आँखी से प्रत्यक्ष देखि लिहलीं जां। भोजपुरी में भारत के राष्ट्रगीत लीखेवाला बाबू रघुवीर नारायण एही माटी के उपज हईं। ई गीत समवेत स्वर में आरम्भ होला त हृदय में राष्ट्रीय भावना राष्ट्र ध्वज नीयर फहराये लागेला। विष्णु पुराण में भारत के जवन सीमा रेखा खींचल वा—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिणम्,
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति।

(दक्षिण में समुद्र जेकरे उत्तर में हिमालय वा, ओही भूमिखण्ड के भारत बा ओइयें निवास करेवाला के भारती कहल जाला,) ओसे अधिक साफ, अपना नीयर झलकत भावपूर्ण सरूप भारतीय राष्ट्रीयता के बाबू रघुबीर नारायण के भोजपुरी राष्ट्रगीत में बा। सुनी सभें—

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देशवा से,
मोर प्रान बसे हियखोहरे बटोहिया,
एक द्वार घेरे एकै हिय कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहराये रे बटोहिया।

ए भोजपुरी राष्ट्र-गीत में चारों दिसा, चारों धाम, पूरा भारतवर्ष व्याप्त बा। भारत के अखण्डता, एकता, संप्रभुता अउर आध्यात्मिकता के पूरा व्याख्या ए राष्ट्र-गीत से हो जात बा। एह दिसा के संकेत करे वाला छपरा धन्य ह, बाबू रघुबीर नारायण धन्य हईं। हमार ई भोजपुरी राष्ट्र-गीत अमर रहे।

एही छपरा में मनोरंजन बाबू राजेन्द्र महाविद्यालय के प्राचार्य रहलें जेकर भोजपुरी कविता फिरंगिया राष्ट्रीय चेतना के उभरला में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा योगदान कइले रहे। बाबू कुँअर सिंह पर लिखल उनके कविता बहुत लोकप्रिय रहे। मनोरंजन बाबू हिन्दी आ भोजपुरी के कवि के रूप में विख्यात रहलें। हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहलें। सन् १९३७-३८ में हम उनके छात्र रहलीं बी० ए० कक्षा में। ऊ शान्त प्रकृति के साधु पुरुष रहले। उनके कविता के एगो बानगी देखीं—

हमरा लाज लागेला
राम नाम हम कइसे लेंई लाज लागेला
हमरा लाज लागेला
मुँह से नाम राम के लेई करीं अधम के काम
हमरे एइसन के होई दुनिया में नमक हराम
हमरा लाज लागेला

एही छपरा के चमत्कार ह कि एगो नाऊ के थइली के छूरा सुरतरुअरी शाखा लेखनी के स्वरुप बनि गईल। कविवर भिखारी ठाकुर भोजपुरी के अवतारी महापुरुष के रुप में मानल गइलें। एही शहर के एगो रतन रहलें महेन्दर मिसिर जेकरे पुरुबी धुन के चमत्कार दिसा-दिसायें व्यापि गईल। पाण्डेय कपिल के उपन्यास फुलसुंघी में उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व उरेहल गईल वा। उनके व्यक्तित्व के जादू एइसन रहल कि फुलसुंघी एगो फूल बनि गईलि। फुलसुंधी के अभिमान बाबू हलिवन्त सहाय नाहीं महेन्दर मिसिर करलें। पटना, आरा, छपरा भोजपुरी लोकगीत के रस के केन्द्र मानल गईल बा। आरे-छपरा असली भोजपुरी भूम ह एकर नावे ह भोजपुर।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना कवनो आकस्मिक घटना ना ह। ई बहुत कठोर आ कड़ा तपस्या के वरदान ह। राहुल सांकृत्यायन, बाबू शिवपूजन सहाय, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, बाबा राघवदास जेइसन महाप्राण व्यक्ति आ मनीषा भोजपुरी के उन्नयन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वदे आन्दोलन आ प्रयास कइल लोग। सामान्य भोजपुरी जनता के बीच रहिके ई लोग व्यक्तिगत सम्पर्क से उनके सुख-दुःख के अनुभव कईल आ साहित्यिक, सास्कृतिक, आर्थिक स्थिति में सुधार ले आवे के वन्दनीय उतजोग कइल लोग। एही आन्दोलन के प्रभाव रहे कि बाबू रघुवंश नारायण सिंह, महेन्द्र शास्त्री, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय उनके अधूरा काम के पूरा कइला में अपने सामर्थ्य भरि कुछू उठा ना राखल लोग। नवयुवकन के टोली जगह-जगह संगठित होखे लागल आ पटना में सन् १९७४ में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल। तबसे लेके आजु ले ई साहित्य सम्मेलन भोजपुरी साहित्य के विकास कार्य में उत्तरोत्तर आगे बढ़त गईल। सीतलपुर बरेजा के पूरा पाण्डेय परिवार भोजपुरी के प्रति समर्पित सुरुवे से बाटे। ए साहित्यिक संस्था में एक से एक बढ़ के विद्वान, चिन्तक, विचारक, साहित्यकार वृन्द सम्मिलित भइलें आ एहमें आपन सक्रिय भूमिका प्रस्तुत कइलें। स्वर्गीय सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, हाजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवत शरण उपाध्याय, उदय नारायण तिवारी, राय विचार पाण्डेय, डा० स्वामीनाथ सिंह, महेश्वराचार्य, पण्डित गणेश चौबे, विवेकी राय, ईश्वर चन्द्र सिन्हा, आचार्य विश्वनाथ सिंह, विद्या निवास मिश्र, कुलदीप राय 'झड़प' साहित्य सम्मेलन के स्तम्भन में कुछु न नांव हँवे जेकर कारण ए संस्था के विराट वितान तनाइल बाटे। सम्मेलन के सभे सदस्य लोगन के मन में ईहे साध वा कि कइसे हमार भोजपुरी पल्लवित पुष्पित आ फलित होखो। सभे एक जुट बा, सभे समर्पित बा। एगो दृढ़, एगो निश्चित योजना आ एगो निश्चित दिशा में चलला के चलत रहला के काम बाटे।

डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय अपने अध्यक्षीय भाषण में बतवले बानी कि भोजपुरी भाषा आ सन्स्कृति के सम्बन्ध में जेतना शीघ कार्य भइल बा आ जेतना दस्तावेजी रेकार्ड बा ओतना अउरी कवनो भाषा में नइखे। ग्रियर्सन के सेवा भोजपुरी के प्रति स्तुल आ महान वा। डाक्टर उदय नारायण तिवारी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, आचार्य विश्वनाथ सिंह डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय, पण्डित गणश चौबे जेइसन उद्‌यट विद्वान के स्थायी आ ठोस शोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परक लेखन कार्य से भोजपुरी के जवन बल मीलल बा ऊ आगे आवे वाली पीढ़ी के वदे अचल सम्पत्ति वा जवना के अध्ययन मनन आ चिन्तन के द्वारा रचनात्मक प्रतिया के विकास हो सकेला। आ भोजपुरी साहित्य के भण्डार भरल जा सकेला। भोजपुरी में एकरा वदे सामग्री आ सम्धन के कमी नइखे। जरुरत वा लगपाती लता के। ई सिकाइति कि भोजपुरी साहित्य शेष भारतीय भाषन के साहित्य के तुलना में पीछे बा क्षोभ के बाति बा। जेकरे पास कवनो पूँजी नइखे ऊ रोजगार से अढ़तिया बनि गइल बा आ जेकरे लगे पूँजी बा ऊ अपने रहनि से बेकारी काटत बा। ए वति के केहू उचित ना मानी। बाकी एइसन बाति वा ना। हमनी के सजग वानी आ प्रगति के पथ पर अग्रसर वानी जां।

साहित्य रचना के सम्बन्ध में सरकार के ओर अंगुरी उठावल उचित नइखे। सरकार रचना ना करी साहित्यकार रचना करी। सरकार नाहीं भिखारी ठाकुर भोजपुरी के झण्डा फहरवलें। बहुत होई त सरकार आर्थिक मदद क देई जवना से अउर कुछ होखे भा ना होखो साहित्यिक प्रतिया कुण्ठित हो जाई। साहित्य सर्जना के काय साहित्य सम्मेलन क सकेला काहे से कि एकरे लगे पइसा के सिवाय अउरी कुल्हि चीजु वा। साहित्य सम्मेलन जो धनी हो जाई त ऊहो व्यवसायिक हो आई। साहित्य के सर्जनात्मक शक्ति ओकर क्षीण हो जाई। पइसा कमाइल अउर चीजु ह, साहित्य रचना ओसे भिन्न चीजु ह। ए सिल सिला में भोजपुरी अकादमी के नाँव लीहल जा सकेला बाकिर जेतना अदिमी एइमें लगिहें— वकिहें ऊ नोकरी पवला से खुश हो जइहें। अपने नोकरिए के अ साहित्य बूझे लगिहें। भोजपुरी अकादमी नौकर साही आ लाल फीता साही के शिकार हो जाई। साहित्य रचना से केहू जी ना सकेला अपर हो सकेला। साहित्य सम्मेलन ना त राजनीति क सकेला ना कवनो व्यवसाय। साहित्य के सम्यक रुप से देख भाल कइल ओकर काम ह।

व्यक्ति आ समाज के सम्बन्ध त समुझ में आवता बाकी व्यक्ति आ संस्था के सम्बन्ध त समुझे के परेला। कवनो स्वप्रदर्शी व्यक्ति संस्था स्थापित करेला। कुछ अदिमी एसे प्रभावित होके संस्था में सम्मिलित हो जालें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकी संबके सब त स्वप्नदर्शी हीला ना। संस्थापक जबले रहेला तबले लड़ि-फगड़ि के अपने सपना के जियवले रहेला। ओकरे ना रहला पर संस्था के गतिविधि में भेद परिजाला। महात्मा गान्धी आ कांग्रेस के उदाहरण एह सम्बन्ध में दीहल जा सकेला। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं में एगो संस्था रहलें। ओहीगां महावीर प्रसाद जी द्विवेदी रहलीं। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान पूरा भारतवर्ष अंग्रेजी आ अंग्रेजियत के विरोधी रहे, हिन्दी, हिन्दुस्तान आ हिन्दू संस्कृति के प्रति समर्पित रहे। बाकी बापू क ना रहला से सब गड़बड़ा गईल। ग्राम स्वराज्य आ राम राज्य के सपना चकना चूर हो गईल। जवना हिन्दी के आगे क के स्वतन्त्रता के युद्ध लड़ल गइल ओ हिन्दी के अस्तित्व आजुले खटाइए पड़ल रहि गइल। व्यक्ति समाज आ व्यक्ति संस्था में ई हे अन्तर ह। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में एह तरह के कवनो वाति नइखें। अबहिन ले सब कुछ पछावत बा। ई संस्था हरदम ठीक रहो आ अपने महान लक्ष्य के प्राप्त करो। एकर प्रखरता आ तेजस्विता हमेसा कायम रहे, हमरें कहला के ई हे अर्थ ह।

एही क्रम में भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता पर आ भोजपुरी के विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कइला के सवाल पर कुछू कहल चाहत बानी। जवन सरकार हिन्दी के राष्ट्र भाषा ना बना पवलसि ओही सरकार के जनमतुआ विश्वविद्यालय भोजपुरी के अपने पाठ्यक्रम कइसे सम्मिलित करी। जे हिन्दी के खटाई में डरले बा ऊ भोजपुरी के भलाई का करी। हिन्दी ए बात के बूझे या ना बाकी भोजपुरी ए के खूब बूझति बा। असों अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन में सांसद शंकर दयाल सिंह के ऐलानिया कहलें कि भोजपुरी के मान्यता मँगले से ना मीली। ए बयान से साफ जाहिर हो जाता कि भोजपुरी जनता सरकार के नीति से बौखला गइल बा आ अपने माँग बदे आन्दोलन के बदे ओकर मिजाज चढ़ल जाता। जनता में जागृति होखो ई बहुत अच्छा बा बाकी जवन कुछ होखे के चाही शान्ति से धैर्य के आ विवेक से, सहनसीलता से होखे के चाही। गरमइला से नाहीं ठण्ढा मिजाज से सोच-समुझ के कुछू कइला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के काम वा। ताकि सरकार के कुम्भकरणी निद्रा भंग होखे आ भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में स्थान के न्यायपूर्ण मांग के ऊ स्वीकार करे। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एकरा बदे बहुत दिन से प्रयत्नशील वा। भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ भोजपुरी परिषद् के चाहीं कि ई दूनू अपने मातृ संस्था के हृदय से समर्थन करे आ मिलि-जुलि के प्रयत्न करे कि सरकार भोजपुरी के मान्यता दे दें। एइसन न होखे कि सरकार ए तीनू संस्थन में फूट के बीया बो दे आ ई तीनू सरकार से लड़ला के बदले अपनिये में लड़े लागे लें।

इतिहास से ई बाति सिद्ध बा कि भोजपुरिया वीर जाति ह। एकरा में अकूत बल होला। डा० ग्रियर्सनो ओकरे ए शक्ति के स्वीकार कइले बाँड़ें। बाकी ए घरी ओकर ई शक्ति बिखरि गइलि बा। एकरा बदे एकता आ संगठन के नितान्त आवश्यकता बा। सांसद आ सुप्रसिद्ध साहित्यकार शंकर दयाल सिंह देवघर के भाषा सम्मेलन में ई उद्घोष कइलनि कि भोजपुरी प्रान्त के मांग से सब मांग पूरा हो जाई। राजनीतिक चेतना के बिना भोजपुरी भाषा के मांग पूरा ना होई। ई समय के गोहार ह बाकी खाली घोषणा कइला से काम ना चली। बिना आत्म-बल आ चरित्र-बल के राजनीतिक चेतना होखवो करी त ओसे लाभ के बदले हानिये होई।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना के पहिले भोजपुरी में ढेर- कुल्हि लिखाइल-पढ़ाइल गइल बाकी सहीदिसा में कवनो कदम ना ऊठल रहे। चाहत सभे रहे कईल केहूना। हम ओ पवित्र सङ्कल्प दिवस के धन्य मानत हँई जहिया अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल। ए नीमन काम में जे जे हार्दिक योगदान कईल ओमें से बहुत लोग अब नइखें तवनो पर जे वर्तमान बा ऊ तन मन धन से ए महान कार्य में लागल वा। कुछवे समय में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भोजपुरी के विकास बदे बहुत कइलसि आ करत जाता। एक तरह से ई भोजपुरी के हितकारी संस्था ह। आजु भोजपुरी क्षेत्र के कोना कोना में भोजपुरी के विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वदे जवन वैचारिक क्रान्ति हो रहल बा ऊ एही महतारी संस्था के पुण्य प्रताप ह। ए संस्था के नाँव के साथ जवन साहित्य शब्द जुटल बा ओकरे श्री वृद्धि वदे ई संस्था अपने सामर्थ्य परि कुछू उठाना रखलसि। अखिल भारतीय नांव सार्थक कइलसि।

भोजपुरी के सामने समस्यन के कमी नइखे बाकी एतनी घरी तीनि गो समस्या प्रमुख वाड़ी सँ जइसे—

(१) संविधान के आठवां अनुसूची मे भोजपुरी के स्थान

(२) विश्व विद्यालयन के पाठ्य क्रम में भोजपुरी के शामिल कइल

(३) भोजपुरी अकादमी आ भोजपुरी प्रान्त वदे सरकार से मांग कइल

एइ में पहिला दू गो साहित्यिक आ तीसरा राजनीतिक महत्व के बा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से भोजपुरी प्रदेस के मांग के वाति अवहिन ले कवों नइखे ऊठल। ई विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न ह। एहयर विचार कइल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रकृति के बाहर के वाति वा। एकरा वदे अलग से संघर्ष कइल जा सकेला। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन चाहो त कार्य समिति के बइठक में एयर विचार क सकेला शेष दूनू खातिर भोजपुरी साहित्य सम्मेलन बरावर प्रयत्नशील बा। भोजपुरी भाषा सम्मेलन के चाहीं कि भाषा सम्बन्धी समस्या के हल करी। भोजपुरी परिषद का चाहीं कि भोजपुरी प्रान्त आ भोजपुरी अकादमी वदे संघर्ष करो। भोजपुरी साहित्य सम्वन्धी समस्यन के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन हल करे। ई वैचारिक क्रान्ति आ विकास के लक्षण ह।

सरकार भोजपुरी के मान्यता ना दे के वहुत अनुचित काम क रहलि बा। ना जाने भोजपुरी में ऊ कौन कमी देखति वा। वीर भोजपुरी भूमि कवो वीरन से खाली ना रहल। सरकार भोजपुरी के विरावति वा त ई ठीक काम नइखे करति। जवन साफे न्यायपूर्ण लउकत वा ऊ हो जो करे सरकार त का उपद्रव, अराजकता, आन्दोलन के ऊ निमन्त्रण नइखे देत? सरकार के इहे नीति देखिके जो अलता भोजपुरी प्रान्त के मांग उठि जाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त कवने वदे सरकार एको नाहीं करी। सरकार भारत के भोजपुरी प्रदेश के उपेक्षा करति बा आ निर्भय होके एकरे सम्पदा के शोषणो करति बा। एइसन सरकार के प्रति निष्ठा में जो कमी होखे लागे त एहमें दोष केकर बा? केन्द्र में ए घरी उदार आ विचार सील सरकार कायम बा। हम आसा करत बानी कि भोजपुरी के मान्यता दे के सरकार यश के भागी होखी। सब लोग आपन आँखि मुनि के आदेश पालन करत जाउ, कर्तव्य पालन में कवनो चूक ना करे आ आपन हक भी छोड़ दे। ई अन्याय ना ह त का ह? मैथिली शरण गुप्त ई ललकारि के लिखले वाँड़ कि—

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने वन्धु को भी दण्ड देना धर्म है

एइसन स्थिति जे उत्पन्न करेला भले ओकर नांव सुयोधन होखे ऊ दुर्योधने कहाला, ओकर भाई दुःशासने होला।

आजु काल्हि भोजपुरी के मानक रूप आ वर्त्तनी के वड़ा चर्चा बा। हमरा बुझात बा कि एकर चिन्तो ढेर कईल जाता। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका आ भोजपुरी लोर में ए विषय पर वरावर लेख छपत वाँड़े सँ भोजपुरी में जवन उपन्यास नाटक आ कहानी छपत वाड़े सँ ओह में भाषा सम्बन्धी कवनो कठिनाई के अनुभव ना होला। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के मूर्धन्य साहियकार आ विद्वान अध्यक्ष लोगन के भाषण पढ़ी आ वताई कि भोजपुरी के मानक रूप आ बर्तनी में कवनो कमी वा। जव हमरे सामने रासि-रासि उदाहरण स्तरीय भोजपुरी भाषा के साहित्यिक कृतियन के बाड़ें सँ तबो हम एकर मानक रूप खोजत वानी। भोजपुरी के मानक रूप के सम्वन्ध में सम्मेलन के आमनौर अधिवेशन के अध्यक्ष, ईश्वर चन्द्र सिनहा के विचार से हम पूर्ण रूप से सहमत वानी कि—

तमाम दुनिया का भाषा के इतिहास वतावेला कि ओकरा व्यवहार में आवे वाला क्षेत्रीय भाषा रूप अलग ढंग से होला आ साहित्यिक रूप अलग ढंग से होला। ई साहित्यक रूप तनिक देर में भाषा का घिसत-घिसत जाके निखेरला। एह कारण से भोजपुरी के क्षेत्रीय अनेकरूपता कवनो चिन्ता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय नइखे। ओकर रुप जइसे जइसे साहित्य लिखात जाई ओइसे ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई। असल में समर्थ साहित्यकार आ साहित्य का पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला। भाषा बनावल चाहे गढ़ल ना जा सकेला। एइसन प्रयास होइबो करी त हास्यास्पद होई। एह से फिलहाल एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरुरत नइखे।

डाक्टर ग्रियर्सन साहब शाहाबाद आ ओकरे आस पास के भाषा के आदर्श रुप मनले बाड़ें। हमरा समुझ में थोड़ बहुत अन्तर के साथ आरा, छपरा, चम्पारण पश्चिमी, बलिया गाजीपुर, बनारस, आजमगढ़ बस्ती, गोरखपुर, देउरिया के भीतर जवन लीखल-पढ़ल, बोलल-बतिआवल जाला ऊ सब भोजपुरी ह। एइमें सार्थक आ समर्थ साहित्य रचना होई त भाषा के मानक रुप आ वर्तनी के कवनो समस्या ना रही। थोर-बहुत आंचलिकता तो होइबो करी त ऊ सोना में सोहागा होई। ओके बरिआई से निकलला के काम नइखे। ऊ भाव-प्रयोग के जरिए धीरे-धीरे मेल में आ जाई।

संस्कृत निष्ठ भोजपुरी बनाम ठेठ भोजपुरी प्रयोग के सवालो उठावल जाला। जवने घरी हिन्दी, सन्स्कृत वाली प्राकृत अपभ्रंश आ क्षेत्रीय बोलिन के शहुर में लुप्त रहलि ओह घरी लश्करी जबान के माध्यम से एके उभरले के क्रिया अल्प हो गइल रहे। हिन्दवी आ फारसी के रमझल्ला में से हिन्दी के सरुप जब धीरे-धीरे उभरे लागल तब अमीर खुशरो आपन करामात देखवलें। चमत्कारी पहेली, सुधरी, सरस गीत, आ मार्मिक दोहा के जरिये ऊ हिन्दी के सरुप उजागर कइलें। अमीर खुशरो लोक जीवन, लोक साहित्य आ संगीत में, घुलमिल गइल रहलें। खुशरो के एगो दोहा सूनी सभें आ तब के हिन्दी के सरुप के कल्पना करीं—

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केसा
चल खुशरो घर आपने, रैन भई चहुँ देसा

संस्कृत निष्ठ भोजपुरी अस्वभाविक आ असहज हो जाई। ऊ लोकधारा से कटि जाई तब न ऊ घर के रही न घाट के। आवश्यकतानुसार जो कवनो तत्सम शब्द भोजपुरी भाषा प्रवाह में पड़ि जाई त ऊ अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप कमल के लेखा खिलि जाई। भाषा में सहज ढंग से ऊ आ जाय त आवे दीं। ओके खोजि-खोजि के मति ले आई। रामचरित मानस में जवने तरें सन्स्कृत के तत्सम शब्द आइल बाँड़े सँ ओही तरे भोजपुरी के बहुत शब्द अपने व्याकरण सहित बइठल बाँड़े सँ जवना से रामचरित मानस के दोहा आ चउपाई जगमगा गइल बाड़ी सँ। रामचरित मानस मे जो भोजपुरी ना रहीत त मानस जायसी के पदमावत हो गइल रहीत। एगो दूगो उदाहरण देखीं सभें—

हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती
नाहीं त मौन रहबि दिन-राती

तत्सम आ भोजपुरी के मेल के एगो उदाहरण देखीं—

ब्राह्मण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रतिवेद कहे
सो मम उरबासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे

भोजपुरी बहुत पुरान ह। एइमें कई-कई सन्स्कृतियन के योगदान बा। भोजपुरी में देखल जाव त उर्दू फारसी शब्दन के भरमार बा। 'सुर्खरु' फारसी ह। भोजपुरी में ई 'सुरुखरु' हो गइल बा। भोजपुरी में कहल जाला 'बड़ा सुरुखरु भइल बाड़। अंग्रेजी के तमाम शब्द भोजपुरी में मिलिखिलि गइल बाँड़ सँ, जइसे टीकट, टीसन, लालटेन, रेल, इन्जन, सिंगल, पोसकार्ट वगैरह-२ जब ई कुल्हि भोजपुरी के साथ गलबहियाँ डारि के चलिहें सँ त का सन्स्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दवे दूबर बाँड़े सँ ? अवधी आ भोजपुरी में खाली क्रिया पद आ विपलिन के प्रयोग में अन्तर बा। अवधी आ भोजपुरी दूनू सगी बहिन बुझाली सँ। सुप्रसिद्ध विद्वान पण्डित विद्यानिवास के विचार से—अइसन है कि हिन्दी के जेतना बोली बाटी अइमें अवधी आ भोजपुरी बड़ा करीब के बोली हई, लगभग पूरा सन्स्कृति एक्के है।' एह उद्धरण में पण्डित जी के भाषा स्वयं प्रमाण। एह में अवधी भोजपुरी के मिश्रण गंगा-जमुना के संगम एइसन पवित्र लागत बा। बाटे बाटी भोजपुरी ह। एहमे खाली क्रिया पद 'हैं' भरि अवधी बाटे। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूर्धन्य विद्वान लोग अध्यक्ष पद से जवन भाषण देले वाँड़े ओइमें तत्सम शब्द खूब आइल वाँड़े सँ आ भाषा-प्रवाह के साथ-साथ विचार-प्रवाह के तरंग अपने पूर्ण वेग से हिलोरा ले रहल बा। साहित्य के समृद्धि एकरे विना हो, ना सकेला।

भोजपुरी के कवने तरे देश निकाला भईल, एकर कहानी बहुत मार्मिक बाटे। बाकी भोजपुरी जहाँ-जहाँ गइल अँजोर होत गइल—एह प्रसंग के कथा वहुत रोचक आ सूने-समुझे लायक वा।

अंग्रेज, फ्रान्सीसी, पुर्तगाली, स्पेनी आ डच लोग भारत में आपन घरम, रोजगार आ हूकूमत कायम करे बदे आइल। एह लोगन के सभ्यता आ सांस्कृति के प्रभाव हमरे देस पर परल। एकरे पहले इसलामी ताकत के प्रवेश हमरे देस में हरवा-हथिआर आ लाव-लस्कर से भइल। तव हमार देश कमजोर रहे फुटमति से। इसलामी हूकूमत भारत में कायम भइल। एहू के प्रभाव हमरे देस पर परल। राज-पाट लुटि गइल वाकी घरम-करम कवनो तरे बचि गइल।

अंग्रेजी हुकूमत के जमाना में भोजपुरी प्रदेश के गरीवी से लाभ उठाके बँधुआ मजूरन के रूप में गरीब भाई लोग पूर्वी-पश्चिमी द्वीप समूहन में भेजि दीहल गइल जहाँ से ई लोग अपने देस में फेरु लवटे ना पवल। एह लोगन पर तरह तरह के अत्याचार क के जगल पहाड़ नदीं से इनके भिड़ा दीहल गईल। ई लोग रोके भा गाके परिस्थितियन से जूझत सब तरह के काम कईल आ सगरे टापुन के इलाका के इलाका हरियर कंचन बना दीहल। ई लोग इँहवें के बासिन्दा हो गईल सगरे द्वीप सम्पन्न हो गइले सँ बाकी ई लोग गुलाम के गुलामे रहि गइल। अपने संगे रामचरित मानस आ गीता ई लोग लेके गइल रहे। ईहे दूगो पोथी भवसागर के नाई हो गइली सँ। परमत्मा के दया भइल। ई लोग अब अपना द्वीपन के स्वतंत्र नागरिक हो गइल बा। कवनो कवनो द्वीप में ए लोगन के राजो कायम हो गइल बा। सूरीनाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवहिन हाले स्वतन्त्र भइल ह। अपने भाषा के सहारे ई लोग जीयत चलि आइल आ अपने भोजपुरिये परिवेश में ई लोग सम्पन्न समृद्ध का जीवन्त बनल बा। सागर में भोजपुरी नाव अब झिझरी खेलति बा।

विदेसी जलवायु आ विदेसी परिवेश से ई लोग वञ्चितो नइखे रहि पावल। हमरे भाई लोगन के अस्तित्व विदेसी गंद-गुवार के भीतर से सोना अइसन दग-दग चमकत बाटे। सिंगापुर हांग-कांग, मारीशस, मलेसिया, सुमात्रा-जावा फीजी, त्रिनीदाद, कनिया, सूदीनाम सोचल जाव त एक तरह से ई सगरे देस भारत के एगो अभिन्न अंग नीयर वाड़ें सँ। भारत के धर्म, भारत के सन्स्कृति, भारतीय लोकगीत आ भारतीय संगीत इहाँ पूर्ववत बा। धन सम्पति में कमी नइखे। भाई लोग सुखी आ सम्पन्न बा। राजनीति आ साहित्य मे ई लोग आगे बा। सबसे वढ़ के नीमन ई बाति बा कि अपने के ई लोग भारत के मूल निवासी बूझेला आ अपने मातृभूमि के इयादि करेला। इसमे लोग भोजपुरिया। चइता, फगुआ, कजरी, अल्हा, पुरुबी, लोरिकायन, बिजयमल, सोरठी वगैरं गीतिन के गावे वाला, होली-दीवाली अष्टमी-नउमी मनावेवाला रामलीला आ रासलीला रचावेवाला, ढोलक-झालि धोती कुरता वाला भोजपुरी भाई लोगन के संख्या अपरिमित बा। ई लोग भोजपुरी में बाति वेहवार करेला, लीखेला-पढ़ेला बाकी जलवायु आ बिदेसी-संगति के कारण इनके स्वभाव पर त नाहीं, भाषा पर प्रभाव कुछ परि गइल बा। ओइसन प्रभाव त हमनियों के भोजपुरी पर लउकेला क्षेत्रीयता के कारण।

हम सूरीनाम के सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार डाक्टर जीतन राइन सरनामी के एगो कविता प्रस्तुत करतानी—

बरिसन अँखिया मिलाइस रहा
पल भरि में कांहे धूरि परि गैल
हमके समझ ना आइल है
एक एक गुलाब से रोज रोज तोहरे
दिल खात माला गुथले रहलि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहरे जीव के माठा करि के
प्यार के बत्ति बरले रहलि, बरले रहलि, बरले रहलि
माठा जमि गैल, बत्ति बुत गैल
प्यार ना जानि कौन खोंकड़ में घुस गैल
हम झुरे रह गैलि, प्यार ना समझ में आइल है
बरिसन अँखिया मिलाइए रहा

इधरो ना उधरो, किधरो ना लागे है दिल हमार
चन्दा, तू चल जा, सूरज तू ढल जा
हम रहवे करब, रहवे करब
रहि जाब अकेल।

चाँदन में अपन पुरखन
के खुसियाली हमके
जय जय देश हमार
जय हक पर लड़ेवाल
तू सुख के चिन्ह है
हम तोहर रखवाल।

सूरीनाम के इहे भाषा ह। उहाँ रोमन लिपि के प्रयोग होला। 'जीत नराइन की सरनामी कविताएँ' नांव से देवनागरी लिपि में ई संग्रह पहिला बेर पं० माता प्रसाद त्रिपाठी के सम्पादन में शीला प्रिंटर्स, लहरतारा वाराणसी से मुद्रित भइल बा। विदेसी आन्ही-पानी से जवन भोजपुरी बचलि बा जीयत बा तवन रउरा सभन के सोझा बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से हमार निवेदन बा कि अपने मूल्यन के रच्छा वदे ऊ आपन दृष्टिकोण व्यापक बनावे आ विदेस में जहाँ ले जेतना ले भोजपुरिया साहित्य बा ओकर सुधि ले, साज-सम्हार करे। मारीशस, केनिया, त्रिनीदाद, फीजी, बंकाक में अनगिनत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यकार बाँड़न। उहाँ के महिला वर्ग भी साहित्य सृजन में आगे बा। एह लोगन से सम्पर्क स्थापित कईल आ इनकर सुख-दुख, हालि-चालि जानल बहुत जरुरी बा। भारत में जवन साहित्य रचना हो रहल बा तवन त थोर-वहुत जानले जाता। एह पर पूरा-पूरा नजर रखे के पुण्य काम साहित्य सम्मेलन के ह। जे काम करे ओही के यश गान होला। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सामने कार्य क्षेत्र के बहुत व्यापक बिस्तार बा। रिगउलि में परि के एकरा न पाछे हटे के चाहीं ना हतोत्साह होखे के चाही—
जेही धाई ऊहे पाई एही कें बाजार बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से हम ई बाति कहि के बहुत प्रसन्नता के अनुभव करत बानी कि बम्बई के फिल्म संसार भोजपुरी भाषा सन्स्कृति के प्रभाव सिर झुका के स्वीकार कइलसि। भोजपुरी पर अधिकार करे खातिर फिल्मी दुनिया में होड़ लाग गइल। एकर तात्कालिक कारण रहे शाहाबादी के पहिला भोजपुरी फिल्म। 'गंगा मइया तोहें पियरी चढइवों।' वाकिर एकर भूमिका तैयार भईल सन् १६४८ में नदिया के पार फिल्म में। पहिले पहिल दुनिया के कान में आवाज गूँजल—'कठवा के नइया बनइहरे मलहवा, नदिया के पार दे उतार। 'मोरे राजा हो लेंचल नदिया के पार' अँखिया मिलाके अँखिया रोवे दिन रतिया न भूले बतिया भूले भूले ना सुरतिया हो तोहर, 'दिल लेके भागा दगा देके भागा' आदि। ए गीतन से दुनिया के भोजपुरी गीतन के आन्तरिक मिठास से, भिखारी ठाकुर के बिपरहिया धुन के रस से परिचय मीलल। एकरे पहले हम सन् १६४६ में फिलमस्तान में एगो भोजपुरी गीतिलिखि के सुनवले रहलीं जवना से हमार नियुक्ति फिलिमस्तान में गीतकार के पद पर हो गईल। अशोक कुमार ए गीत के सुनि के मस्ती में झूमे लागें। ओ गीत के स्थायी पंक्ति सूनली हजरों सभें—

काटे ना कटे मोरा दिनवा गवनवा कब होई
पिया के यवनवा मिलनवा कब होई
भइले सजनवा सपनवा गवनवा कब होई।
काटे ना कटे ... .

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफलता के सब मान्यता देला। फिलम में भोजपुरी के पहिला प्रयोग के ई संक्षिप्त विवरण ह जवना कें बादे दिलीप कुमार अवधी में गंगा-यमुना आ भोजपुरी में शाहाबादीजी "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो" बनाके सफलता के मोहर लगा दिहले। भोजपुरी बोले वाला लोग हिकारत के नजर से देखल जात रहे। अब ओ लोगन के सम्मान बढ़ गइल। भोजपुरी देस-विदेस के कोना-कोना में पहुँच गइल। ई त होखही के रहल। श्रीगणेश नदिया के पार से महान। चाहीं कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एहू के बाति के स्वीकार करे। भिखारी ठाकुर के सभे मानल। ना जाने ए बात के केहू काहे ना मानत बा।

हम देवरिया जिला के हँई। देउरिया भरि के आँखि एनिये लागल होई कि हमरो दुख-सुख ए बड़का जगह में सूनल जाई। एही से आपन अलहन छोड़ावे खातिर दू-एगो बाति के चर्चा कइल चाहतानी। पूर्वी उत्तर प्रदेश पूरा के पूरा खांटी भोजपुरी प्रदेश ह। बस्ती, आजमगढ़, गोरखपुर, नेवम्ल के तराई क्षेत्र, देउरिया, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, इलाहाबाद आ जौनपुर के कुछ याग पूर्वी उत्तर प्रदेश में आवेला। जवन सरगरमी भोजपुरी के विकास बदे पश्चिमी बिहार में बाटे ऊ पूर्वी उत्तर प्रदेश में नइखे बाकी भोजपुरी के सबल सुदृढ़ स्तम्भ इहाँ अनगिणत बाटे। हम नांव का गिनाई। रउरा सभें जानते भरि नइखी इनके खुब मानतो बानी। हम थोर बहुत नाम स्मरण ओ लोगन के कइल चाहतानी जे बहुत पुछ लिख भइल आ अधों लीखता बाकी लोग चर्चित ना भइल एसे कि स्वयं ई लोग साहित्य सम्मेलन से सक्रिय रुप से जुटि ना पावल। आजमगढ़ के विश्वनाथ लाल शैदा राम प्रकाश शुक्ल निर्मोही गोरखपुर के अरुण गोरख-पुर के अरुण गोरखपुरी, चंचरीक. रवीन्द्र श्रीवास्तव जोगानी, मैनावती देवी रामनवल मिश्र, राजनाथ त्रिपाठी (राजू गोरखपुरी) उर्मिला शुक्ल। बलिया जगदीश ओझा 'सुन्दर' नागेन्द्र भट्ट प्रभुनाथ मिश्र, देउरिया के छांगुर त्रिपाठी 'जीवन' धरीक्षण मिश्र, दूधनाथ शर्मा श्याम जनार्दन पाण्डेय अनुरागी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वनाथ पाण्डेय राहगीर, गोरख पाण्डेय आ कुबेरनाथ मिश्र "विचित्र" भोजपुरी के प्रति समर्पित आत्मा ह ई लोग। कविता लिखे वालन के कतार लागल बा बाकी गद्य में कुछू लिखे के उत्साह देखे में ना आवेला। चर्चित ना भइला के कारण सक्रिय सहयोग के अभावे ह। कवि सम्मेलन से दिल-चस्पी अधिक, पत्र-पत्रिकन से लगाव कम ईहो, कारण बा। बाकी बिहार के भोजपुरी क्षेत्र में भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रति बड़ा सक्रियता बाटे। जागरण के काम में छोट-बड़ जे भी बा सभे लागल बा। झड़पजी, आञ्जनेय जी, श्री भोलानाथ गहभरीजी, विवेकी रायजी सम्मेलन के प्रत्येक कार्य में जी जान से लगल रहलें लोग उत्तर प्रदेश में। एकरे बादो बहुत रचनाकार बाड़ें। सबके संगिरहा करे के चाहीं।

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, बाबू रघुवंश सिंह, पण्डित महेन्द्र शास्त्री, पण्डित गणेश चौबे, डा० स्वामीनाथ सिंह, ब्रजकिशोरजी आ पाण्डेय कपिल जवने तरे मिशनरी भावना से भोजपुरी के उन्नयन कार्य कइल ओही के परम्परा आगे हू चले के चाहीं। भाषा साहित्य सम्मेलन के मंच से श्री एस० बिहारी पाण्डेय के भी भोजपुरी उत्थान कार्य कम सराहनीय नइखे।

सबसे आखिर में पथ सम्बल के दृष्टि से हम श्रद्धेय डा० उदय नारायण तिवारी के एह विचार से पूरा सहमत बानी कि मीलि-बइठि के एकरे विकास खातिर सबके जुटि जाय के चाहीं। सरकारीं सहायता के बारे में तिवारीजी कहतानी कि एकर खातिर सरकार से एवको पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई। काहे कि जहाँ सरकारी पइसा आई उहां सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकारी मदत मिलला से लोगन में गुटबन्दी हो जाई। हमनी का चाहीं कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रुपया के सदस्य बनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा सहित्य, काव्य नाटक, एकांकी आ व्याकरण के सुन्दर किताबि-पोथी छापल जाए। धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताबि अच्छा ढंग से छपि नइखी सँ पावत। ई बड़ा हँसी आ दुख के बाति बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० उदय नारायण तिवारी के ई विचार शत-प्रतिशत सही बा। एहीगां विश्वविद्यालयन में भोजपुरी पाठ्यक्रम सम्मिलित कइला के सवाल बा। भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्तर तक पहुँचि जाइल चाहति बा। काँहे नाही एकरा बदे ऊ प्राथमिक शिक्षा के स्तर से उठल चाहति बा? भोजपुरी के प्रारम्भिक शिक्षा के छोड़ के कइसे सीधे उच्च शिक्षा के स्तर तक ऊ जाई साथे-साथ निजी प्रयास के जरिए प्राइमरी आ पूर्व माध्यमिक स्तर के भोजपुरी शिक्षण बाति काँहे ना सोचल जाता। प्रौढ़ शिक्षा में भी भोजपुरी के माध्यम से शिक्षा दीहल जा सकेला। उच्च शिक्षा बदे स्तरीय ज्ञानवर्द्धन पुस्तकन के कमी दूर कइला के आवश्यकता बा। जबले भोजपुरी में पढ़ाई-लिखाई नाहीं होई तबले भोजपुरी सुसंस्कृत भाषा कईसे होई कवने योग्यता आ क्षमता के बल पर ऊ अगिला प्रस्ताव प्रस्तुत करी?

बिना पढ़ल-लिखल मनई करी कविता त का करी
करे के काव्य रचना ज्ञान भाषा के जरुरी ह
जो कवनो बून आँसू के गिरल चाही, कहां गीरी
बिला जाए न कतहीं, हाथ आसा के जरुरी ह
जो जनमलि भोजपुरी दूध के संग-संग, भला मइल
एहू के सन्स्कारन के तरह मांजल जरुरी ह
क कहरा, व्याकरण, साहित्य—दर्शन मति रहे मइल
प्रगति चाहीं त भोजपुरिया पढ़ल—लीखल जरुरी ह
पढ़ावल जांए लइके भोजपुरी—हिन्दी के मीडियम से
चलेला रवानगी जवना तरें देखीं ले सिसु मन्दिर
चलाईं प्रौढ़ शिक्षालय परिश्रम अउर उद्यम से
रही शासन व्यवस्था पुष्ट, जनता तुष्ट मन भीतर
बइठि होटल में ध के चाय टेबुल पर जो बतिआईं
इहे नीमन 'एकेडिमी' घूमि आईं, फिलिम में जाईं

स्वावलम्बन स्वामियान दृढ़ संङ्कल्प लगन कर्मठता आदमी के ईहे पूँजी ह। एही से आतम बल बढ़ेला, काम होला। छोड़ सब के कहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूनल आपन ल सहारा। तनी अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा। भोजपुरिया स्वभाव प्रगति के ह, जीवन्तता के ह। केहुं के वैभव आ एश्वर्य से एकरां इर्षा ना होला वल्कि ऐसे एकर मनोवल वढ़ेला आत्मोत्थान के भावना जागेला। आत्म सन्तोष के वल ई जानेला—

दालि रोटी आ माठा जो मीलल करी
जवले गमछा में भूजा आ भेली रहीं
तेल सरिसों के बुकवा जो लागलकरीं
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रहीं

देखीं सभे गमछा के भूजा आ भेली सरिसों के तेल आ बुकवां चमेली के वैभव के कवने तरे चुनौती देता—

भोजपुरिया के हे भइया का कहेल
खूलि के आव अखाड़ा लड़ा दीहँ सँ
तोहरे चरखा पढ़वला में का धइल वा
तोहके सगरे पहाड़ा पढ़ा दीहें सँ।

देस विदेस के पनरह सोरह करोड़ भोजपुरी भाषा भाषीजन समुदाय के अकूत वल, एकता आ संगठन के स्वर के प्रतीक्षा करत वा। आवश्यकता वा समर्पित नेतृत्व के। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के 'मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के माँग पर खून के समुद्र गरजि उठल तड़पि उठल वरिस गइल। एक-एक रुपया कवन चीजुवा। ताकत होखे त केहु ई रुपया उठा लेउ।

सन् १६५१-५२ में कवनो पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर छपल डा० राम विचार पाण्डे के कविता—का कहीं कुछ ऊ कहाते नइखे। कहले विना रहा तो तइखे, हम पढ़लीं। भोजपुरी में काव्य रचना आ साहित्य सृजन हो सकेला एकर आभास हमके सर्व प्रथम भइल। वावू रघुवंश नारायण सिंह आ जगदीश ओझा 'सुन्दर' हमके भोजपुरी में कविता लीखे के वहत प्रोत्साहित कइलें। चतुरी चाचा के चीठी आ आकाशवानी पटना से प्रसारित 'लोहा सिंह' नाटक से हमके वहुत वल मीलल। सुन्दर जी के एगो भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत– 'का जानी ए अँखिया में केतना ले लोर बा। जबले सनेहिया बा तब ले अँजोर बा' सुनि के हम भोजपुरी के रस के सागर में डूबे-उतराए लगली। इलाहाबाद आकाशवाणी ग्राम जगत के प्रोडूसर केशव चन्द्र वर्मा हमके भोजपुरी में लीखे के बहुत प्रेरित कइलें आ लोक भाषा कवि गोष्ठी में हमके बराबर आमंत्रित कइलें आ संगीत रुपक कई गो प्रसारित कइलें। आकाशवाणी गोरखपुर केन्द्र में हरीराम द्विवेदी, रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव जोगानी भाई आ व्रजभूषण शर्मा मुखिया जी भोजपुरी के विजय केतु आसमान में फहरी दीहल लोग। आकाशवाणी पटना, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर के हम बहुत कृतज्ञ बानी कि ए कुल्हिन के प्रयत्न से भोजपुरी दिशा-दिशा में मँहके लागल।

चन्द्रशेखर मिश्र के कविता कुँअर सिंह हम सन् ५२-५३ में सुनली सन् १९५२-५३ आ भोजपुरी के भाषा शक्ति के प्रभाव से हम मोहि गइलीं। चन्द्रशेखरजी भोजपुरी के नाम यश जेतना बढ़वले बाड़े ओतना कमे लोग करी। एइसने मूल्यदान सेवा गोरखपुर के त्रिलोकीनाथ उपाध्याय अपने अल्पकालीन जीवन में कइले। उनके कविता–"रोइ-रोइ पतिया लिखावे रजमतियाँ" भोजपुरी इलाका मे गूँजि गइल। कैलाश गौतम आ देवेन्द्र बंगाली के भोजपुरी कलम भोजपुरी के नया रंग देले बा। एगो उदाहरण देवेन्द्र बंगाली के देखी सभे—"ना चली तोर ना मोर पिया होखे द भोर।" कैलाश गौतम से बहुत आशा कइल जा सकेला। कृष्ण मुरारी शुक्ल गोरखपुरी, चकाचक बनारसी, विजय बालयाटिक भोजपुरी के पालकी में आपने काहल गावल बा लोग। भोजपुरी बिहार में जेतना व्याप्त बा ओसे कम उत्तर प्रदेश में नइखे। अखिल भारतीय भोजपुरी सहित्य सम्मेलन के ई कुल्हि निधि हँइवे सँ। सम्मेलन के चाहीं कि एकर संतरता करो काहे कि सम्मेलन मातृ संस्थान।

हम अपने उद्गार के समापन एही-नारा से करतानि कि—

जय जय जय भोजपुरिया भाई
तोहरे खातिर भीखि मंगाई
तोहरे खातिर गीति गवाई
तोहरे खातिर समर लिआई
ऊ केइसन भोजपुरिया होई
जे ना तोहके मांथ नेवाई
जय जय जय भोजपुरिया माई।

जय भोजपुरी जय हिन्दी

मोती बी० ए०
बरहज, देवरिया (उत्तर प्रदेश)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संतोष प्रिंटर्स छपरा-१९९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

तेरहवाँ अधिवेशन

आरा (बिहार)

अध्यक्ष

दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती

के

भाषण

आरा (बिहार)

दिनांक ३-४ अप्रैल, १९९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय स्वागत-समिति के अध्यक्ष महाशय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, भोजपुरी-प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल भाई-बहिन लोग!

पहिले त रउरा सभका एह आदर-सम्मान दिहला खातिर हम आपन आभार प्रगट करत बानी। सचहूँ सभका सरधा प्रेम आ विश्वास आदर से हम अपना के दबाइल मानत बानीं। हमरा बुझात नईंखे कि हमार कवन अइसन सेवा बा कि रउरा लोग एह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का तेरहवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर हमके बइठा दिहलीं। ई सवाल बराबर हमरा मन में खटकि रहल बा, हिरदय के कोंचत बा कि हम कवना लायक बानीं, रउरा सभ का एह संस्था कऽ कवन सेवा कइ सकबि? पद का गरिमा आ मरजादा कऽ निरवाह कइसे होई? हमरा खातिर तऽ उचित इहे जनाता कि निरवाह के भार रउरा सभ के सउँपि दी। रउरा सभ भारवाली मरजानइया के पार करीं, किनारे पहुँचाई भा बुड़ाई। किनारा बहुत दूर तऽ नईंखे जनात, बाकी राजनीति कऽ दलदल आगे लउकत बा आ नेता नायक लोग कऽ लूरि-सहूर, साथ-साथ समाज कऽ छितिराहटि देखी के कबे-कबे मन में शंका होता आ हमरा नियर लोग घबड़ाता।

हमरा त जनात रहल ह कि भोजपुरी भासा-भासी भारी प्रदेश में बड़े-बड़े दिमागदार पंडित विचारक कवि, लेखक बाड़न, ओह लोग का मौंथे ई मुकुट बान्हल रहित त शोभित। बड़-बड़ रालि तहाँ दूर कहीं कमरी! जहाँ शाल-दुशाला लोई गैंजाइल बा ओहिजा कमरी क कवन मोल? ई तऽ गहुँवन का रहते डोंड़ का मौंथे टीका लगावल कहाई। जवना पद पर रउरा लोग डा. उदयनारायण तिवारी, आचारज हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, आचारज देवेन्द्र नाथ शर्मा, आचारज विश्वनाथ सिंह, डॉ. राम विचार पाण्डेय, श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा, प. गणेश चौबे, डॉ. विवेकी राय, डॉ. विद्यानिवास मिश्र आ श्री मोती बी. ए. नियर महारथी विदमान के समय-समय से बइठवलीं ओहिजा हम बइठि के रउरा सभ का संस्था कऽ केतना मरजादा बढ़ाइबि आ बढ़न्ती-विकास करबि?

बस एतने सोचि-समुझि के कि हमहूँ एह भोजपुरी धरती क एगो संतान हुई, साहस बटोरत बानी कि हम छूँछ बानी, हमरा में कवनो गुन नईंखे, कुछ पुरूसारथ नईंखे तबो महँतारी कऽ सेवा कइल तऽ हमार धरम ठहरल। हम अपना लूरि-सहूर का मोताबिक सेवा में भागीं काहें? सेवा धरम बड़ा कठिन हऽ। जेकरा कवनो टिशुना ना होई, जे लालच आ गुमान-गरूर से दूर रही, ऊहे अपना माई आ भाई बंधु, हीत-मीत, सुजनसंगी चाहे गावँ, देहाति, जिला-जवार भा देश-समाज कऽ सेवा कइ सकत बा।

भोजपुरी धरती कऽ इतिहास बड़ा गौरव आ महिमा वाला बा। जइसहीं भारत का इतिहास-पोथी के उघारीं तऽ, भोजपुरी भाषा के बोले-समुझे, बेवहार करे वाला लोग का वीरता आ बलपुरुसारथ, साहस, लगन, धीरता कऽ कथा पढ़ि के, छाती फूलि उठति बा, माथा ऊँच हो जाता। भारत का बहुत पुरान इतिहास के गढ़ि के तइयार करे वाला भोजपुरिये वीर पहिली पाँति में आदमान पाके चमकत लउकत बाड़न। राजा गाधि के पुत्र महरसी विश्वामित्र जी एही धरती पर तप कइके ब्रह्मरसी बनलन। एहिजे गंगा-सरजू (घाघरा) संगम से लगभग दूइ जोजन दक्खिन रोहतास का इलाका में सहसरावँ का पास उनकर आसरम रहे, जहाँ राम-लछुमन के उहाँ का बला-अतिबला दूनों विद्या कऽ शिच्छा दिहलीं। बगसर आ सहसरावँ का मध्य में जखिनी भवानी ऊ जगहि ठहरलि जहाँ मुनिवर कऽ आसरम रहे। वालमीकि रामायण एक प्रमाण बा महरसी जगदग्नि आ अवतारी पुरुस परशुराम जी एही धरती कऽ लाल रहलन, जिनकरा लाली से आजो हमन क प्रदेश आ सवँसे भारतीय चमचमाति बा। भगवान बुधदेवजी के धरमविचार के पहिला गुरुदेव आराड़ कलाम एही आरा में केसपुत्तनिगम में निवास करत रहलन। केशपुत्तनिगम ओह जुग में कोशल महाजनपद के अंग रहे। काशी ओह महाजनपद कऽ एगो जनपद रहे। मगध आ कोशल के राजा लोग एह अनमोल धरती पर कबजा जमावे खातिर बहुत बेर लड़ाई ठानि के आपन जोर-बल अजमावे। कबे मगह विजयी होखे तऽ कबे महाकोशल। आखिर में मगधराजा बिंबीसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
कऽ विजय भइलि आ कोसलाधीस प्रसेनजीत अपना बहिन कऽ बियाह बिम्बीसार से कइके एह काशी जनपद के बहिनि का खोंइछा में दहेज दे दिहलन। पुराना इतिहास के मजे में ना जनला-समुझला से बहुतन का आराड़कालाम रिसी का तपोभूमि का संबंध में भरम हो जाला। बाकी असलियत ईहे हऽ।

केशपुत्तनिगम में कलाम जाति के छतिरी लोग बसल रहे आ धनसंपति से जनता के खुशहाल बनवले रहे।

भगवान् बउधदेवजी आरा में आपन सोरहवाँ चतुरमास वितवले रहलन। छानबीन कइला से पता चलल बा कि आलवक जच्छ के सासतरारथ (वाद-विवाद) में हराके ऊ महापुरुष एह नगर में चार महीना ठहरल रहलन। अशोक उनका तपका जगहा पर असतूप बना के भा चइत, चउरा नियर इयादगार बना के ओपर बउधदेव जी के सोना के मूरति थापित कइ देले रहलन। अनुमान से ऊ जगहा जहाँ रहे ओइजे आज राउन-इसकूल भा विद्यालय, जवन कहीं बनल बा। आगे बढ़ीं तऽ पिप्पलीवन का मोरिय महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त का बिलच्छन बीरता का जोति से जगमगात भारतीय इतिहास कऽ खंड सामने आ जाता। चन्द्रगुप्त कऽ जनम भोजपुरिये धरती में भइल रहे। ऊ मल्ललोग का पड़ोसी जनपद पिप्पलीवन का मोरियन कऽ लाल रहे। चन्द्रगुप्ते पहिले पहिल विदेशी यूनानी हमलावरन के, अपना एही भोजपुरी वीरन का बल से पिठिया के देश से बहरी, वक्षु नदी का ओह पार अफगानिस्तान से दूर खदेड़ि दिहलसि। यूनानी सेनापति सेलूकस पोछि दबा के एहिजा ले भगवे ना कइलन, बलुक महाराजा का आगे झुकिके, उनसें अपना बेटी कऽ बियाह कइ दिहलन। एकरा साथे साथ चन्द्रगुप्त ऊ पहिला सुलायक राजा साबित भइल जे, निचाट दक्खिनी भाग के छोड़ि सबँसे भारत के अपना राज्य-सिवाना में शामिल कइके पहिला अखंड भारतीय राज कायम कइलसि। चन्द्रगुप्त भोजपुरी बहादुरन का मदति से मगध का सिंहासन पर दखल जमा ले ले रहें। अब अशोक कऽ कथा का कहीं? अशोक—गोरखपुर आ कसया का बीच मोरियन में बिलच्छन सपूत बनि के अवतार लिहलसि, आ अपना अचरज में डालेवाला तप-त्याग, बुद्धिबल, दयालुता, सरधा-प्रेम-पुरुसारथ से एशिया महादेश का बहुत बड़ा भाग के काया पलटि दिहलसि, एतने नाहीं, अपना चमतकारी कामन से ऊ संसार का राज-काज कऽ कीरति-मान बनि गइल, मानवता कऽ घमकत सुजस पताका हो गइल। बउध-धरमाकाश कऽ उपमारहित चमचमात तारा रहल ऊ जे आकाश-लोक का बिरसपति-शुका का तेज के, अपना धपकत जोति से हेठ बना के जगत का धरग-लोक में आंजो जगमगात बा। ऊहे हमन का भारतदेश के ओकर मोहरि दिहलसि, चारोभर सिंहन कऽ मुद्रा-चिह्न दिहलसि; ओकरा धजा के ऊ चक्का दिहलसि जेके महामानव बउधदेवजी काशी का रिसिपत्तन, मिरिगदाव-मिरिगावन में, आजले अढ़ाई हजार बरिस पहिले नगारा के चालू कइले रहलन, जवनकि गतिशीलता कऽ, मानव-सुभाव कऽ निशान रहे, जे शाति कऽ बारह अंगनवाला अछय अनत चक्का सनासत शाति कऽ इयादगार बा।

आगे चलिके मदगुमान में बउराइल मोरिय राजसत्ता भोगविलास में भुला के जनता का सुख-सुविधा कऽ चिन्ता छोड़ि, ओकरा दुख-दुरदसा से मुँह मोरे लागल आ विदेशी हमलावर कुसान सबँसे देश रउँदत पटना-पाटलिपुत्र निगिचा लिहलन तऽ ओही घरी बाभन सेनापति पुष्यमित्र, विलासी वृहद्रथ कऽ अपना तलवार सं अत कइके देश कऽ मरजादा बचा लिहलन। पुष्यमित्र अपना भोजपुरिया वीरन का मदति से बहरिया के दम लिहलन। एह तरह से हमन कऽ भोजपुरी-छेतर, जे कि ओह समय काशी का आस-पास ले लेके पिप्पलीवन, आ ठेठ लुबिनी तक ले फइलल रहे, जेकरा सिवान का भीतर सारन-चंपारन सभ समाइल रहल, सबँसे भारत का धरम-मरजादा, साहित्य, कला, विद्या-विग्यान सभकर रइछा कइलसि। पुष्यमित्र अपना विजय का खुशी में पाटलिपुत्र में दुइबेर अस्मुमेघ-जग्य कइले रहलन। पतंजलि उनकरे शासन-छाता का छाहँ में बइठि के आपन महाभास्य लिखलन। पुष्यमित्र आ अग्निमित्र का कुल में, सोन का तरियानी में प्रीतिकूर-पियूर-पियरा अथवा आज का कियालगढ़ में सुरसति का अमर सपूत बाणभट्ट कऽ जनम धरती रहल आ ऊ एही भोजपुरी धरती पर अपना साधना का मनमोहक काव्य-ग्रंथ कादंबरी कऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचना कइके अमर सुजस कऽ अधिकारी बनल। कादंबरी का सुरसरि में गोता लगा के ओकरा सुरसजल कऽ आचमन कइके भगत-प्रेमी साहित्यरसिक लोग अघात नईखे। ओही वाणभट्ट का कुल में प्रडित ब्रह्मदत्त भइलन। कुमारिल भट्ट उनके एकलौता पूत रहलन आ भारती देवी कन्या। कुमारिल भट्ट पिता का बारबार कहलो-समुझवलो पर बियाह ना कइलन, आ बरम्हचारी रहि के विद्या-ग्यान अरजे में लागल रहिके धरम कऽ सेवा कइलन। कुमारिल काशी में रहि के मीमांसा दर्शन कऽ खास तरह से गूढ़गंभीर ग्यान पा धरम-परचार कइलन। ब्रह्मदत्त का पास अपार धनसंपत्ति रहल आ कई जोजन में फइलल खेती-लायक जमीन। उनका पास एक हजार घोड़ा, पांच सइ हाथी आ हजारन सेवक रहलन। विद्या-प्रेम आ धरमसेवा का शुभविचार से ऊ अपना अपार धनसंपति के विद्यादान, शिच्छा-परचार का काम में लगा दिहलन आ तीरथराज प्रयाग में एगो भारी विश्वविद्यालय थापित करे में लगा दिहलन। प्रतिष्ठानपुर-झूँसी में ऊ शिच्छा संस्था, बनि के बहुत दिन तक उत्तरी भारत कऽ परधान विद्यामंदिर रहल। कुमारिल भट्ट ओकर कुलपति बनल रहलन। भगवान आद्यशंकराचारज जी से शासतरारथ में हारि गइला का बाद जब मंडनमिसिर सामी सुरेसराचारज बनि गइलन, संन्यास ले लिहलन तऽ भारती ओही विश्वविद्यालय में महिला लोग का महाविद्यालय कऽ परधान आचारजा का पद के सम्हरली। हँ, कुछ बाति तऽ भुलात रहलि हऽ। भोजपुरी भासा कऽ नाम-छेतर रोहतास इलाका कऽ भारी महिमा कऽ बाति छूटति रहलि हऽ। अजोधा का राजवंश में जनमल, सचाई के पच्छधर राजा हरिश्चन्दरो का राज-शासन कऽ ई परधान अंग रहल हऽ। हरिश्चन्दर का बेटा रोहितास का नावें पर एहिजा अकबरपुर में किला बनल। ओही के लोग आज रोहतासगढ़ का नावें से जानत बा। वैदिक सभ्यता ... रामायण-महाभारत का जुग मे निचाट उत्तर गंगाकिनार से रोहतास आ शुरगुजा का पजरा तक फइलल एह भाग के 'करूष' देश कहात रहे। एह भाग पर बहुत दिनले चेरो आ करुखवार लोगन कऽ राज रहे। बाद मे मालवा का ओर ले परमार लोग का आ पहुँचले, लड़ाई-भिड़ाई मे ओह लोग का हारि के जंगल-पहाड़ कऽ शरण लेबे के परल।

दूसर बाति कि भगवान तथागत का ग्यानधाम बोधगया का डहरि में जवन सोहासुत सुघर पड़ाव रहे ऊहे न सहसरावँ हऽ। पालीभासा का बउध-धरम-ग्रंथन में लिखल बा कि एही जगहा पर अशोक सुधरमी एक हजार बउध-भिक्खु लोगन का ठहरे आ सुख-सुबहिता, तप-ध्यान खातिर 'आराम' मठ-विहार बनववले रहलन। सहस+आराम से—सहसरावँ भइल। एहिजा अशोक एगो तालाब का बीच में बउध-असतूप बनववले रहलन। बहुत विदमान लोग कऽ ई अनुमान बा कि आज जवन शेरशाह कऽ रौजा कहाता-कबे काल ऊ बउध-असमारक रहल हऽ। सहसरावँ शहर का पैंजरा-चंदनपीर पहाड़ी पर पावल जायेवाला अशोक कऽ, भारत में पावल जाये वाला सात परधान धरमलेखन में, एगो लेख एकर भारी आ पक्का सबूत बा।

आगे बढ़ला पर इतिहास का दूसरा-तीसरा पड़ावे पहुँचि के हमार छाती खुशी से अउरी फूलि उठति बा कि भोजपुरी लोग केतना सूर-बीर, पुरुसारथी आ जोगी-जती, मुनि तपसी सभ मरजादा-पदन पर पहुँचि के आचार-विचार कऽ झंडा, कहे कऽ मतलब कि—संसकिरती कऽ पताका, बहुत जुगन ले फहरावत आवत, भोजपुरी धरती माता का कोखी जनम लिहला कऽ रीन चुकवले आ लाली रखले बा। एह भोजपुरी समाज में, भोजपुरी जनता पर, भारशिव नागवंशी राजा आपन वीरता आ धरमविचारन कऽ असर जमा के एह इलाका में घुसरल-पइठल शक लोगन के पिठिया के देश ले बहरी कइलन। भोजपुरिया लोगन का एह बल-पुरुसारथ पर मगन हो के भारशिव राजा समाजे का मदति से काशीधाम में दसबेरि असमेध जग्य कइलन। एतने ना गुपुतवंशी राजा चनरगुपुत दूसरा, वीर विकरमादित्त एही भोजपुरी वीरन का बल से चउकस सेना साजि शान से शक लोगन के पिठियवलन आ खेदि के देश से बहरी कइलन। सानी आ धुनी भोजपुरी वीर हिन्दुकूस के लाघि, सहजे में बलख-बुखारा धांगत आमूनदी का धपंकत धारा में आपन तेगा धोवलन आ विजय-खुशी में गाजत, केसर का कियारिन कऽ सुघर मनमोहक सुगंध लेत, अपना घोड़न के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दउरावत दिल्ली आ पहुँचलनि। मेहरौली में जमुनानदी का किनार पर विग्यानी-कला से बनल लोहा-खंभ में चनरगुपुत दूसरा-वीर विकरमादित्त का ओह् विजय कऽ जस-कथा टाँकलि बा।

आगे हुणन क हालि सुनीं। जिनकर देन 'हुणहा' शब्द भोजपुरी भासा, एहिजा का लोगन कऽ गाथा सुना रहल बा। भोजपुरी का मानिता आ पद-मरजादा देबे का अपना अरज-गरज के आठ अक्टूबर एकहत्तर के हम ओह् समय का साहित्य अकादमी का अध्यक्ष, नामी-गरामी भासा-पडित डॉ. सुनीति कुमार चटरजी के जवन खुली चिट्ठी भोजपुरी कविता में लिखिके भेजले रहली, ओकरा दूर-चारि गो डँड़िन के रउरा सुनीं—
ओसे भासा आ भाव दूनों कऽ झलक रउरा सामने आ जाई—

"बिगरल हूण घुमंतू,
वीरबली मनसोख,
बउराइल गुमानवश,
रहलन देत दरेरा सभके।
सवँसे महादेश बड़,
निपुन एशियावाला,
थरथराइ के उनसे
बनल रहे बेचारा।
ओहू घरी वीर भोजपुर कऽ,
ओह् ढीठ जुलमिन कऽ,
कनवाँ कसि के मललन।
अउरी अगुवा आपन-
बना वीर असकंद गुपुत के,
धकियवलन उनका के।
परिकल गोइयाँ ढीढ 'हुणन' का,
मुँह में करिखा लागल-
आ ऊ लोग पोंछि सटकवले,
भागि पराके निकलल,
देसवा से हमनीं का।
गाजीपुर जनपद का,
सैदपुर-भितरी में,
ओह् विजय कऽ,
कथा लाट पर टाँकलि बा।

एहि बलिया का दोआबा छेतर से ले के आरा शहर का पांजर में मसाढ़ जेके हुवेनसांग-मोहोसोलो का नावँ से उजागर कइले बा, ओहिजा तक द्रोणबाभन कऽ एगो छोट सुसंतर राज रहल जेके ओह् समय में वेठदीप कहाते रहे जबकि अढ़ाई हजार बरिस पैहिले छव छतिरी राजा लोग भगवान बउधदेव का कुशीनगर -कुशावती में निरवान पवला पर उनकर धातु भाग पावे खातिर चढ़ाई कइले रहल। द्रोणबाभन अपना सूझ-समझ आ साधुभावन से सुलह समझौता कराके ओह् लड़ाई का घटाटोप बादरन के उधिया दिहलन। रउरा सभ जानते बानी कि धातु कऽ आठ भाग. आठ राजा लोगन के बँटाइल । द्रोण बाभन सहित सात भाग मगध का अजातशत्रु, वैशाली का सानियल लिच्छवी लोग, कपिलवस्तु के शाकिमवीर, अल्लकप्के बहादुर बुली, पावा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मल्ल पवलन। बैठदीप वासी राजा द्रोण धातुभाग धइल सोना कं धइला पवलन आ ओपर भगवान कऽ इयादगार असतूप बनववलन। हुवेनसांग का बतवला मोताबिक ऊ जगहि इहे मसाढ (मोह्योसोलो) सबित होता।

गुप्त राजवंश का राजशासन का बाद एह भोजपुरी भासा-भासी जनपंदन मे सुधरमी गहड़वार राजालोग कड़ हुकूमति कायम भइलि रहे। जनता एह राजन का समय में सुखी आ धरमप्रेमी बनलि रहलि। काशी ले पटना तक कन्नोज के राजा चन्द्रदेव कऽ जे कि गहड़वार राजके कायम करे वाला राजा रहलन शासन रहे। ऊ अजोध्या मे सरग दुवार नावें का जगहा सरजू आ घाघरा का संगम तीरथ पर नहके बामन पंडितन के बहुत सोना, चानी आ अपना भोजपुरी प्रदेश का सिवान में तीसगाँव अगहार रूप में दिहलन । गाजीपुर जिला आ बनारस का बीच चन्द्रावती नावें का गावें में गंगाकिनार का मंदिर का नेवें में ले १८१३ ई. में जवन पैंचगो तामापतन में भारी दानपतर मिलल रहे ,ऊ एकर पक्का संबूत बा। डा. दयाराम साहनी ओके बाँचि समुझि के लखनऊ का संग्रहालय मे जमा कइ दे ले रहन । दानपत्तन मे पाँच सइ बाभन लोग के तीस गावें दिहला कऽ पुरहर चरचा बा। ई गावें आजो बहुत कुछ ओही नावें ठेकान गाजीपुर आ बनारस जिलन में पावल बाड़न। चन्द्रदेव का बाद उनका लड़िका विजयचन्द्र कऽ ओइसन तामावाला दानपत्तर आरा का पियरो इलाका में ओह समय का पटना का कमिसनर श्रीधर वासुदेव सोहोनी के मिलल रहे। तीसरा दानपत्तर मनेर में तीसरा राजा गोविन्दचन्द्रदेव का राज कऽ मिलल बा । मनेर गोविन्दचन्दर देव का राज कऽ एगो परगना रहे आ आरा का साथ भोजपुरी इलाका में गनात रहे। मनेर मे काश्यपगोत्रीय मनेरिया बाभन ठाकुर शिव शरमा आ उनका पूत गुजेसर शरमा के अग्रहार मे दूइ गावें मिलल रहे। एह से भोजपुरी प्रदेश आ ओहिजा का समाज का रीति-वीति कऽ पताचलत बा।

एही भोजपुरी धरती कऽ मंगल पाँड़े अइसन सानीवीर सन् सनातावन में बारिकपुर में, गुलामी का छानपगहा हथकड़ी-बेड़ी के तोरि आजादी का समर कऽ पहिला शंख बजवले रहन। एही भोजपुरी धरती कऽ सानी सिंह बाबू कुवँर सिंह बागी जनता का सुरेमन सरदार बनि देश का सुतंतरता खातिर कठिन लड़ाई लडलन आ फिरंगीलोग का फउदि कऽ छक्का छोड़ा दिहलन।

अब पुरूखन कऽ गाथा गावे में कुछ बेसी समय लागि गइल। बाकी अपना कुल-परिवार भाई-बंधु, हीत-मीत, सुजनसंगी सभका विद्या-बुद्धि बल पवरूख तप त्याग पुरुसारथ का कथा के जानही खातिर हमन का जुटि-बटुरा के बूझि-बिचार करीलां, कइले बानीं आ आजो करे खातिर बटुरल बानीं। इतिहास तीसरी आँखि हऽ। सामने बा तवन लउकते बा, आगे का करेके होई, ई समझेबिचारे खातिर, पुरनियो लोग कऽ कुछ रीति-नीति जानल जरूरी होला। एहसे रउरा लोग हमार ढिठाई माफ करवि। हम त बे नाथ पगहा कऽ घूमंता जीव रमता संत संन्यासी. सभकरा हित आ बढन्ती में अपनो हित देखेवाला ठहरलीं। हमार तऽ ई सबँसे जीवने बहुजनहिताय-बहुजन-सुखाय खातिर बा।

अब भोज, भोजपुर आ भोजपुरी भासा कऽ कुछ बेवरा आ भेद के जानीं सभे। बिहार का तीनि लोकभासा, जिनके बहुत पहिले अपना भासा-सरबें आ लेखा-जोखा करे का सिलसिला में पच्छिमी भासा-पंडितन के सिरताज डा. गिरियरसन 'बिहारी-बोली' कऽ नावें देले बाड़न-मगही, मैथिली आ भोजपुरी, अब उनके भासा के बिदमान भासा मानि चुकल बाड़न, उनकर भारी आ कीमतवाला दमगर साहित्य बा, उनका में बिसतार का विचार से भोजपुरी सभका ले आगे बा। ओकर पसार-परचार आ बेवहार पुरूबी उत्तर प्रदेश आ कुछ-कुछ दक्खिी-पच्छिमी आ भोरे-बहुत उत्तरो के पसरल बिहार कऽ कई जिलन तक बा। ई भारी सिवान लगभग पचास हजार बरगमील में फइलल बा।

भोजपुरी भासा कऽ नावें, पुराना शाहाबाद जिला का भोजपुर परगना का नावें पर भइल बा। एह जिला कऽ शाहाबाद नावें मुगल बादशाह बाबर का समय में धराइल रहे। बाबर अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजय-जातरा में एहिजा ठहरल रहे। अकबर का समय में एह भोजपुरी इलाका के दूइ सरकारन का शासन में बांटल रहे। उत्तरी भाग शाहाबाद सरकार आ दक्खिनी भाग रोहतास-सरकार का नावें से जानल जात रहे।

शेरशाह एही भोजपुरी धरती का सहसरावें में पैदा होके, अपना पुरुसारथ आ चतुराई का बल पर भोजपुरी जवाननं कऽ दमगर सेना साजि मुगल बादशाह के हरा के दिल्ली का राजसिंहान पर जा बइठल। शेरशाह जनता का दुख-दरद के समझे आ जनता कऽ भलाई करेवाला निपुन राजा रहल। ऊहे पहिले-पहिल जमीन कऽ नाप-जोख कराके खेती कऽ बढ़ियाँ इंतिजाम कइलसि। डाक-प्रथा घोड़न का जरिये अपना राज मे चिट्ठी-पाती आये-जाये का सही रीति-नीति के कायम कइके जनता कऽ भारी भलाई कइलसि। ऊहे दिल्ली से पेशावर तक सीधा राजपथ-लंबी सड़कि बहुत मजे से बनवा के सभके सुबहिता पहुँचवलसि। ई लोगनि का सुख-चैन खातिर बड़ा जरूरी काम रहल।

सन् १९१२ ई. में पच्छिमी विदमान डा. बुकानन बिहार का भूमि-सरवे का सिलसिला में भोजपुर आइल रहे। ऊ अपना लेखन में मालवा का भोजवंशी उजैन राजपूत लोग का 'चेरो' जाति के हराके भोजपुर इलाका दखल कइला कऽ चरचा कइले बा। बंगाल का एशियाटिक का १८७१ ई. कऽ पत्रिका—'जनरल' मे, छोटानागपुर, पचेत आ पालामऊ वोगयरह का बारे में मुसलमान लेखकन का बेवरा कऽ चरचा करत ब्लाकमैन भोजपुर कऽ जिकिर कइले बाड़न। ऊ लिखत बाड़न कि बंगाल का पच्छिमी प्रांत आ दक्खिनी बिहार के राजा दिल्ली का बादशाह खातिर कपरवाहि नियर दुखदायी रहलन। अकबर का राजकाल में बगसर का पैंजरा भोजपुर के राजा दलपत, बादशाह से हारि के कैद हो गइलन आ अंत में, जब बहुत धन-दउलति जुरबाना का रूप में डाँड़ दिहला का बाद जेहल से छुटलन तऽ फेरु मजे में हथियारबंद होके गदर मचा दिहलन। जहाँगीरो के राज में उनकर गदर जारिये रहल। जेकर नतीजा भइल कि भोजपुर लुटाइल-फुँकाइल बरबाद भइल आ उनका धन-धरती कऽ दावेदार प्रताप के शाहजहाँ फाँसी दे दिहलसि।

अकबरनामा में दलपति के 'उज्जनिह' लिखल बा। शाहजहाँ का राज समय में दलपत का हैसियत-मिलकियत कऽ दावेदार राजा प्रताप के पहिला बरिस १५०० आ एक हजार घोड़न कऽ मनसब मिलल।

एही किताबि में आगे एहू बाति कऽ जिकिर बा कि रोहतास सरकार का भीतर 'सहसराम' (ससरावँ) परगना का उत्तर आ आरा का पच्छिवँ, भोजपुर में एह उज्जैनी राजन कऽ निवास रहे। शाहजहाँ का राज-[illegible] का दसवाँ बरिस में राजा प्रताप, बादशाह का विरोध में गदर मचवलन। एही स[illegible] अबदुल्ला खाँ फिरोज जंग भोजपुर पर घेरा डललसि आ ओके जी[illegible] लिहलसि। एकरा बाद प्रताप अपना के बादशाह का हाथन में सउँपि दिहलन। बाद में उनके फाँसी दे दियाइल।

ऊपर का बेवरा से ई साफ जनात बा कि कवनो समय में भोजपुर राज बहुत नामी-गरामी, सरगना आ सुरेमन रहे। एकर शासन करवइया राजा उज्जैन राजपूत पुराना समय में मालवा ले, जे कि उनकर पहिले कऽ निवास कऽ जगहा रहे, बिहार चलि आइल रहलन। मध्य-जुग का भारतीय इतिहास—खास तरह से पच्छिमी बिहार का इतिहास में एह राजपूत लोग कऽ जगहा बहुते महाबता आ मोल-मरजाद वाला बा। सन् १८५७ ई. का क्रांति तक इनकर अगुवाई आ चउधुरावँ पर कवनो तरह के आँचि ना आइलि रहे। एही घरी राजकुँवर बाबू कुँवर सिंह अँगरेजन का विरोध में गदर कइलन जेकर नतीजा भइल कि भोजपुर फिरंगी जालिमन से रउँदल जाके तहस-नहस हो गइल। अब ई बाति एकदम साफ हो गइल कि उज्जैन कऽ भोजे लोग का नावेँ पर भोजपुर नावेँ परल; काहें से कि पुराना समय में ईहे लोग एह इलाकन पर कबजा कइके राज करे शुरू कइल। डुमराँव का पास भोजपुर एह लोग कऽ राजधानी रहे। जदपि कि पुराना विभो आ चमक-दमक विनसिं गइल बा बाकी आजो पुराना आ नया भोजपुर का नावें से ओह राजशाही राजधानी कऽ नावँ-निसान कायम बा। 'नवरतन-किला' कऽ खँड़हर अबहियों एहिजा ठाढ़ रहि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन कथा मौनी-भासा में कहि रहल बा। एकरा भवन का रचना-कला आ कारीगरी-कुशलता से ई साफ हो जाता कि ई मध्य जुग कऽ रचना आ किरती हउवे।

भोजपुर का पुराना नगर का नावें पर एह छेतर कऽ नावें भी भोजपुर परि गइल आ आगे चलि के एह नावें कऽ परगना आ जिला का नावें कऽ कारन बनल। एह तरह से १८ वीं शताब्दी में भोजपुर एगो प्रांत भा प्रदेश रहे। धीर-धीरे एकर विशेषण गुन-विशेख भोजपुरी, एह प्रांत का निवासिन आ उनका बोली खातिर भी बेवहार में चालू हो गइल। एह प्रांत कऽ बोलिये एकरा उत्तर, दक्खिन आ पच्छिवें में भी बोलल जात रहे, एह से भूगोल का नजरिं से, भोजपुर प्रांत का चउहद्दी सिवान ले बहरी भइलो पर एने का जनता आ ओकरा भासा खातिर भी भोजपुरी शवदे चालू हो गइल।

भोजपुरी भोजपुरिया वीरन कऽ तेज-ताप, जोति-जगमगाहटि, बल-गौरव कऽ, जान-जीवन वाली बेजोड़ भासा हऽ; जे कि हरदम ठेंगा-गोजी, लाठी-भाला, तीर-धनुष, तलवारन आ गुरिया-गुरदेलि का बीच सगरे ठनकलि-गूँजलि। भारत देश का हर संकट, आफति-विपत्ति का मोका पर काम आइलि, देश के उबरलसि, मरजादा के रखलसि आ समाज के माँजि-चमका के भारत माता का मरजादा कऽ रइछा कइलसि। देश कऽ पुरान इतिहास, सभ जुगन में एकर गवाह बा।

भोजपुरी वीर सोचलन कि कलमि घँसला-रगरला कागकरिया कइला ले देश का मरजादा आ गौरव कऽ रइछा होई आ कि बल-पुरुसारथ से तप-तेयाग, बलिदान से। ऊ जुझारू ठहरलन, एह से मौंथ देइ मरजादा रखलन। 'बउधायन' में कहल बा कि' छतिरी असल उहे जे मौंथ देइ मरजादा राखे; करनी करे समय पर, झूठे नाहीं माखे।' भोजपुरी वीरन का कंठ से परगट भइल ई अमरबानी भोजपुर का चारो ओर दूर आ कमबेश तीन प्रांतन में गूँज उठलि, पसरलि-फइललि आ लोगन के जगा के ठाढ़ कइ दिहलसि। भोजपुरी भासा कऽ हर शबदन आ मुहावरा-कहावतन से ओकरा वीरता आ वीरन कऽ धुनि निकलि रहलि बा। रउरा एगो मशहूर कहावति सुनले होइबि। कहाउति बता रहलि बा कि भोजपुरिया लोग कथनी ना करे, समर-शूर होला। ऊ लोग जुलुम ना सहे न जालिमन के क़बे मांथ नवावे। आगे एकर नमूना देखीं :—

"भागलपुर के भगेलुआ,
कहलगावें के ठग।
पटना के देवालिया,
तीनों नामजद।
सुनि पावे भोजपुरिया,
तऽ तीनों के तूरे रग।।"
"रही ला रन-बन खाई ला मकोय,
सात हुंड़ार के चरबन होय,
बाघ मारि-मारि करीला इयारी
सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी।।"

भोजपुरी जनता आ उनका भासा के दूसरो नावें भी मिलत बाड़न। मुगलन का राज-समय में दिल्ली आ पच्छिवें में भोजपुरियन—खास कइके भोजपुरी-इलाका का तिलंगन के—बगसरिया कहल जात रहे। १७वीं आ अठारहवीं सतावदी में भोजपुर आ ओकरा पँजरे बसल बगसर (पुरान-व्याघ्रसर-बाघसर, बघसर, बगसर), फौजी सिपाहिन का भरती कऽ परधान जगहा-अड्डा रहे। १८वीं सइबरसी में जब अंगरेजन का हाथ में राजकाज कऽ बगडोरि आइलि तऽ ऊहो लोग एह पुरान परंपरा के कायम राखल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबसे अधिका भोजपुरी बंगाल मे अपना कामधंधा, उतजोग-बेवयार खातिर जालन। ओहिजा बंगाली लोग इनके हिन्दुस्तानी, पछिवँहा, आ कबे-कबे देशवालियो कहेलन।

उत्तरीं भारत में भोजपुरियन के 'पुरुबहों' आ उनका बोली-भासा के 'पुरुबी' आ 'पुरबही' कहि के पुकारेलन। उत्तरी भारत में 'पुरुब' कऽ मतलब 'अवध', बनारस आ बिहार प्रान्त होला। एह से 'पुरुबहा' आ 'पुरुबिया' एही प्रान्तन का निवासिन के कहल जाला। भोजपुरी-मंडल का बहरा भोजपुरियन कऽ सबले बड़हन अड्डा कलकत्ता हउवे आ सभदिन रहल हऽ। कलकत्ता के हम असल में भोजपुरी जीवन आ आचार-विचार बेवहारन कऽ नाभ कहि सकी ला। हजारन भोजपुरी, भगवती भागीरथी का किनारे जूट-मिलन में, कलकत्ता नगर में अनेकन संस्थन में, पाठशाला-महाविद्यालय चाहे रोजिगार-धंधन में काम करेलन। ई उनका पुरुसारथ आ विवलच्छन बुद्धि कुशलता कऽ नमूना ठहरल। भोजपुरिया, बउधदेव का एह अमरबानी के कि 'अपना खातिर रउरा अपने दीया बनीं'—अहलदिल से मानि के अपनवले बाड़न, साँच माने में कइके देखवले बाड़न।

भासा मानुस-हिरदय का भीतरी भावन कऽ सहज सुघर मूरति इऽ। ई मानुसहिरदय का सहज सुभाविक मनोरथ, मांग-चाह-इच्छा के परगट करेंले, बतावेले। बुद्धि-ग्यान-विग्यान, बिसय-वासना-ठिशुना सभकर सकमक ओइसने तसवीरि उरेहि के सभके देखावे-बतावे ले। ई मानुस के मानस से नेह-नाता में जोरि-बान्हि के सुघर समाज रचे-बनावे ले। मानुस सिरजना करेवाला परानी ठहरल, ऊ बे समाज कऽ कहवाँ कइसे रही? एही से बस सहज सुभाव बस ऊ अपना रूचि का मोताबिक समाज गढ़ि के सुख-शांति-चैन से धरती पर रहि आनंद पावल चाहे ला।

एशिया के महान् भासा-विशारद, नामी-गरामी विदमान डा. सुनीति कुमार चटरजी आ भोजपुरी धरती के अमर सपूत सुरेमन भासा-विग्यानी डा. उदयनारायण तिवारी का मत का अनुसार, भोजपुरी पच्छिमी मागधी से जनम लेके देश-दशा-समय का छाँह में फूलल-फरलि, बढ़लि-पसरलि बा। भोजपुरी का भीतर जगहि-भेद से बोलिन के नावें भी परि गइल बा। छपरा जिला का भोजपुरी भासा के 'छपरहिया' आ बनारस का भोजपुरी के 'बनारसी' बोली कहाला। एही तरे बलिया का पच्छिमी आ आजमगढ़ का पुरुबी छेतर कऽ बोली 'बँगरही' कहाले। बाकी भोजपुरी के अइसन छोट-छोट टुकड़न में बाँटि के छितिरावल उचित नइँखे। एह से पुरान जवारी नावँ के फेर चलावे का जगहा पुराना ऐतिहासिक नावँ के बेवहर जथारथ होई। एह नावँ का साथ भी कम से क्रम तीनि-सइ बरिसन के परंपरा बा।

भोजपुरी एगो जानदार भासा हऽ। ई पचास हजार बरग-मील का गिरदा में बोललि जाले। भोजपुरी कऽ सिवान गंगा नदी का साथ-साथ पटना का पच्छिवँ कुछ दूर तक जाला। ओहिजा ले सोन नदी कऽ डहरि धइले ई रोहतास तक पहुँचि जाले। एहिजा ले दक्खिन-पुरुब कऽ पकड़ि राँची कऽ ऑजर-पाँजर झांकत ई राँची ले बीस मील पुरुब तक आपन असर अधिकार जमवले बा। ओने ले मुड़ि के फेरु सोन नदी लाँघत हमन कऽ दमगर भोजपुरी, अवधी के सिवान के छूवत, मिरजापुर का पैंजरा तक पहुँचति बा। भोजपुरी बड़ी मउजी आ घुमक्कड़ि भासा हऽ, ऊ अकबरपुर का किला ले ऊपरे-ऊपर कैमूर पहाड़ी का जंगलन क खाक छानत, चेरो-खरवार, यादव भा अउरी जनता दलन से बोलत-बतियावत, वन का देवता-देविन के चरनन के छूवत, माँथ नवावत, अजोध्या का सुरुजवंशी राजा दशरथ आ सरवन का कथा-कहनी के गुफा-खोहन से छिपले-छिपल सुनत, पशुपतिनाथ महादेव आ उनका गणन के गोड़ लागत, तथागत बउधदेव का उपदेशन के पत्थल-चट्टानन का लेखन से पढ़त, गौरगुनावन करत, काशी विश्वनाथ दरबार-बनारस में हाजिरी लगा गंगा नहातिया। बनारस में शिव भगतन के टौंड़ा झरना का आदर सत्कार कइला कऽ बाति बतावत, कबीर आ संत तुलसी दास से भेंट कइके रामकथा सुनत, स्वामी रामानंद जी का चरनपादुका के फूलमाला चढ़ावत, तैलंग स्वामी का समाधि पर माथा टेकत-कोटागिरी-केराकत तहसील का अपना हीतनाता से मिले जाति बा। फेरु ई घाघरा नदी का उत्तरी धार में बुड़की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारिके आपन अँचर फइलवले टेढ़-ढोढ़ डहरि धइले गोरखपुर बस्ती देउरिया का गावँन में घूमत सभलोगन से गोरखनाथ बाबा का जसकथा, भजन आ जोग उपदेशन के सूनत पुरुब में भगवान बउधदेव का जनम धरती, रूम्मन देई (पुरान-लुबिनी) पहुँचि के उनका समाधि पर माला-फूल चढ़ा पलग्गी करति बा।

भोजपुरी का पसार कऽ नकशा देखला से जनात बा कि एह समय ई दुई प्रदेशन-पुरुबी उत्तर प्रदेशराज आ पच्छिमी बिहार कऽ भासा हऽ। पच्छिमी विदमान् डा. ग्रियरसन भोजपुरी के चारि भागन में बंटले बाड़न। ऊ भाग, उत्तरी, दक्खिनी, पच्छिमी आ नागपुरिया नावँ वाला हउँवनि। सोननदी का दक्खिन 'नागपुरिया' भोजपुरी कऽ भाग बा। उत्तरी आ नागपुरिया भोजपुरी का बीच में दक्खिनी-आ पच्छिमी भोजपुरी कऽ छेतर बा। असल में दक्खिनी 'भोजपुरिये' नगद नमूना भोजपुरी हऽ। एकर दखलदहानी के इलाका शाहाबाद—भोजपुर-रोहतास-बगसर-भभुआ, सारन, बलिया, पुरुबी देउरिया आ पुरुबी गाजीपुर हऽ। पच्छिमी गाजीपुर, आजमगढ, वनारस, मिरजापुर आ जौनपुर का कुछ भागन में पच्छिमी भोजपुरी बोललि जाले।

आदर्श-नमूना भोजपुरी सुने में बहुत मीठ आ मोलायम होले। नमूना (आदर्श) भोजपुरी के एकरा अउरी बोलिन से अलगावे वाला-सरवनाम—'रउरा' हऽ। आदर्श भोजपुरी कऽ 'राउर' शवद एतना महत्व वाला आ मशहूर बा कि अवधी के कवि सुरमन गोसाई तुलसीदास आ व्रज-भासा के सूरदास से लेके जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' तक ले सभ एकर बेवहार कइले बा। असल बाति ई बा कि अवधी ब्रजभासा आ दूसर पच्छिमी बोलिन में एह 'सरबनाम' का समान अरथवाला कवनो शवद हइये नईखे। गोसाई तुलसीदास जी अपना रामचरितमानस में लिखत बाड़न :—

'जो राउर अनुशासन पाऊँ।
कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ॥"

सूरदास कऽ एगो पद—'मधुप रावरी पहिचान'।

जगन्नाथदास रत्नाकर के 'ऊधव-शतक' कऽ एगो पद :—

'फैले बरसाने में न रावरी कहानी यह।'

भोजपुरी भासा-संसकिरती—आचार-विचार आ साहित्य—असल में भासा संसकिरती—जेके आज़ हमनीं का आचार-विचार से जानत बानी ओकरें के कहाला। संसकिरती-'कल्चर'—'Culture' कऽ उलथा हऽ। 'कल्चर' शव्द-अपना' लैटिन' मूल से निकलल बा। भासा संसकिरती कऽ सवारी हऽ। ओही पर चढ़ि के आचार-विचारन कऽ गहरी सगरे पहुँचेले। संसकिरती भा आचार-विचार कऽ गहरी ""रे पहुँचेले। संसकिरती भा आचार-विचार कवनो देश, समाज चाहे जातीय दलन कऽ रीढ़ ठहरलि, जवना पर ऊ देश, समाज भा जाति जुगन तक धरती पर जीयत-जागति रहेले। कवनो बेकती कऽ जवन संसकार कहाला, ऊहे सामूहिक समाज कऽ रूप धइके संसकिरती हो जाला।

हम पढ़े-लिखे, विदमानन कऽ दरबार केरे में जे कि सुरसति मंदिर कऽ महंथ-पुजारी ठहरलन, बहुत समय लगवलीं, भगवती सुरसती का मंदिर में झार-पोंछ, दीया-बाती बारे कऽ काम सत्तर बरिस ले करत आवत बानी। एह लंबा समय में बहुत तरह के खट-मीठ अनुभव भइल आ हो रहल बा। बहुत कुछ देखलीं-सुनलीं। हमरा विचार में हरेक संसकिरती कऽ गति आ जीवन शिच्छा से जोराइल बा जवन कि अखंड बा अउरी शिच्छा कऽ अखंड संबंध भासा से रहेला। जब ई तिरवेनी खंडित हो जाले—छितिर-बितिर हो एने-ओने बेजगहा, बे अरथ-माने कऽ होले—मतलब कि भासा दूसर होले, शिच्छा कऽ भाव-उद्देश दोसरे होला अउरी संसकिरती दूसरा दिशा में बहेले तब अइसने अराजक दशा—बे बूझ-विचार, विना माने-मतलब आ विना कायदा-कानून कऽ समय आके आसन जमा ले ला। आज लोग कहत सुनल जाता कि 'अपना देश में आपन राज, कवना बाति कऽ डर आ लाज।' आज रउरा सभे ओह अराजक—बे नाथ-पगहा, का समाज में विना मेंह के दवँरी देखते बानी। आपन-आपन खँजड़ी-आपन-आपन ताल। केहू कऽ केहू सुने वाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नईंखे। जेतना सिपाही ना ओतना हवलदार-सूबेदार आ सेनापति। सुनेवाला जेतना नईंखन ओतना कहे-सिखावे वाला बाड़न। चारो ओर सुनत बानी कि हम तोहार कहुआ हई कि जवने कहबऽ ऊहे करबि। अइसने में तिरबेनी कऽ तीनो धार सूखि के रेत परि जाला।

पुराना जुग-जमाना का जीवन-मोलन के आज सामने का हालति, दशा आ रीतिनीति से जोड़ें अउरी आज का कठिन सवालन आ अझुराहटनि का अँजोरा, अगाही सुख-शांति, जीवन-गति कऽ सुघर-सवतुक रूपरेखा तइयार करे में समय-खंडन का समुन्दर पर पुलि बनावे कऽ काम शिच्छे करेले। एह सेतु के बनावे का ओर से मुँह मोरले उदास भइले न तऽ पुरखा-पुरनियन से पावल पुराना संपदा-ग्यान-गुन-कला-कारीगरी के समाज का सभ अंगन के पहुँचावल जा सकेला न अगाही कऽ कवनो रुपरेखा तइयार कइल जा सकेले जे से कि मधुर सपना साकार होखे। रउरा सभ भोजपुरी संसकिरती कऽ कुछ झलक पवलीं। भोजपुरी लोगन का आचार-विचार, रीति-नीति, करनी-कथनी सभओर से परिचित भइलीं। अब कुछ देखीं कि भोजपुरी जनता, ओकरा परिवार के पंडित-विदमान, कवि-साहित्यकार, कलाकारीगरी के पुजारी आगे अपना आ समाज के साजि-सवँरि के गढ़ि के तइयार करे खातिर आगे का कइलन। उनका उतजोग-पुरुसारथ, तप, धीरज, साहस आ लगन-सरधा से रउरा अपना जीवन के सुंदर बनावे सीखीं।

कवि दूरदरसी होलन। उनकर भीतरी आँखि खुललि होले। एह से ऊ भीतरो देखेलन। एही से समाज कऽ सुघर सुरूप गढ़े में उनकर भारी हाथ होला। पुरान कविन में हम सबले पहिले बिसराम के इयाद करत बानीं जे कि अपना सरस आ भावभरल बिरहन कऽ रचना कइके भोजपुरी भासा आ भोजपुरी भाई लोग कऽ सवतुक सेवा कइलन। बिसराम, आजमगढ़ का सिरामपुर गावँ मे, जवन कि टौंसनदी का किनार पर बा, एगो छतिरी-परिवार में जनम लेइके अपना जनमधरती के पवित्तर कइलन आ अपना काव्य-कला से भोजपुरी जनपद में अँजोर फइलवलन। बनारस का तेगअली कऽ रचना 'बदमाश-दरपन' बनारसी-बोली में भोजपुरी भासा का जीवन-जातरा, में कुछ दूरी तय कइला के एगो मील कऽ पत्थल बा। बलिया के दूधनाथ उपधिया भोजपुरी के एगो प्रतिभाशाली कवि रहलन। लोगन का जीवन से जुटल-जोराइल रहले। उनका कविता कऽ जनता पर भारी असर रहल। पंडितजी बलिया आ आजमगढ़ का गोरच्छिनी-आन्दोलन से जोराइल रहिके अनेकन सभा-सम्मेलनन में पहुँचि के अपना सरस कविता से लोगन का हिरदय के मोहि लेसु। उहांका 'गो-विलाप' संबंधी बहुत पद रचले रहलीं। कहल जाला कि पंडित दूधनाथ जी कऽ रचल बीररस कऽ कविता कायरन का हिरदय में भी बीररस कऽ भाव जगा देत रहलि।

हम जब अपना भोजपुरी जनपद का दरसन का सिलसिला में डेग बढ़ावत सरजू का पार अगिला पड़ाव पर छपरा शहरि मे पहुँचल बानी तऽ कवि सुरेमन रघुबीर नारायण से भेंट होता। रघुबीर नारायण जी छपरा का एगो मरजादा वाला कायथ-परिवार में २० अक्टूबर १८८४ ई. के पिता जयनारायण जी वकील का घरे अवतरित भइल रहलन। रघुबीर नारायण जी कऽ 'बटोहिया' मथेला वाली कविता जनता में बहुत मशहूर भइलि। भोजपुरी जाने-समुझे वाला लोग एह कविता के बहुत सरधा-प्रेम से सुनल आ कवि के आदर दीहल। एह सुरस कविता में अखंड भारत कऽ सुघर मन के मोहेवाली तसवीरि उरेहलि बा। एकरा के भोजपुरी-मंडल के राष्ट्रगीत कहल जा सकेला। भोजपुरिया भाई ऊहे मरजादा एके देतो बाड़न। कविता में भारत का अखंडता के जोगा के राखेवाला चउकस पहरूवा परवतराज हिमालय, गंगा, जमुना, सरजू, सोनभद्र सभका दइबी सोभा कऽ तसबीरि खींचल बा। दूसरा ओर बतावल बा कि नानक, कबीर, शंकराचारजजी आ परमहंस रामकिशुन नियर समाज-सुधारक संत महापुरुष अपना अमरबानी से देश के जगवलन आ पतन का गड्हा में ले बहरी कइके सुमारग पर आगे बढ़वलन। कालिदास, जयदेव विद्यापति, सूर आ तुलसी वोगयरह कऽ रचना देश के कइसे बढ़न्ती कइलसि, सुख-शांति पहुँचवलसि।

अब अपना समय के एगो निपुन आ सजग समाज-सुधारक भिखारी ठाकुर के हम कइसे बिसारीं? भिखारी ठाकुर कऽ नावँ उत्तर प्रदेश का पुरुबी-जिलन आ बिहार का पच्छिमी जिलन में बहुत मशहूर बा। एह इलाकन कऽ लड़िका ले बूढ़ तक सभे इनका 'बिदेशिया नाटक' से परिचित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। भिखारी ठाकुर विलच्छन प्रतिभा वाला कवि आ नाटककार रहलन। खास भोजपुर ले सटले डुमरावँ का धरती पर देहि धइके उतरेवाला सुरसति-सपूत प्रिंसपल मनोरंजन रउरे नगीना लाल रहलन। देश का आजादी का समर में उनकर 'फिरंगिया' कविता गाँव-गावँ में सभे सजगी देश भगतन का जवान पर रहे। उनका हिंदी आ भोजपुरी साहित्य सेवा के हमनीं हरदम इयाद करी ला।

भोजपुरी जनपद का बलिया मंडल मे, साहित्य का सोहासुत कंचन-बाटिका के दूइ गो सुगंध आ मधुरपराग से भरल फूल हमन के बरबस अपना ओर खींचत बाड़न। ऊ मोहक फूल डा. रामविचार पाण्डेय आ प्रसिद्धनारायण सिंह का नावँ से समाज में जानल मानल बाड़न। उनका सुंगध से सवँसे भोजपुरी-प्रदेश गमगमा रहल बा। पाण्डेय जी के 'विनिया-बिछिया' उनका भोजपुरी कवितन के एगो सुघर नमूना हऽ, जेकर सभी कविता एक ले एक बढ़ि के बाड़ी। उनकर 'अंजोरिया' केकर मन ना मोहले होई। ओही तरे तेयागी-तपसी कवि आ बहादुर सुतंतरता सेनानी प्रसिद्ध नारायण सिंह का सन् बयालिस का अगस्त-क्रांति से संबधित कविता दब्बू आ कायर लोगन में भी वीरभाव जगाने वाली बाड़ी सऽ।

एह तरह से हम देखत बानी कि भोजपुरी भासा में धड़ाधड़ बहुत साहित्य कऽ सिरजना हो रहल बा। अनेक विधा कऽ रचना कलाकारन का कलमि से सुघर सरूप धइके सामने आ रहल बाड़ी। अब भोजपुरी में अनेकन महाकाव्य रचा गइल बाड़न जिनसे लोग कले-कले परिचित होत बा। बउध-धरम-दरसन, रसगर काव्य-गुनन से संजल-आ इतिहास-गाथा से पुरहर सोहत 'बउधायन', भोजपुरी अकादमी से प्रकाशित रउरा आगे बा। ओकरा संबंध में हम कुछ कहे कऽ अधिकारी नइँखी। एकरा बाद रउरा आगे भोजपुरी वीरता के बेजोड़ पुरुस बाबू कुँवर सिंह पर पाँच गो महाकाव्य कऽ रचना भइल बा। उनका में भारतीय आजादी का पहिला समर के तसवीरि उरेहल बा। सभे तसवीर एक ले एक चुहिलगर आ सराहे जोग बाड़ी। ओह बीच में नगद नगीना, डा. सर्वदेव तिवारी कऽ कालजयी कुँवर सिंह कहल जा सके ला।

एकरा बाद रउरा सामने कुशल कलाकार आ निपुन कवि रामबचनशास्त्री 'अंजोर' कऽ 'किरनमयी' महाकाव्य आ उनका नया प्रयोग कऽ नमूना—'निरधन के धन राम' आवत बा। शास्त्रीजी भोजपुरी भासा में दोहा, चौपाई, सोरठा, चौबोला, सवैया, बीरछंद, आल्हा-छंद आ मुक्त-छंद वोगयरह कऽ सफल प्रयोग कइके कला-कारीगरी में अपना बिलच्छन चमत्कार से सभके मोहि लेत बाड़न। ध्यान अपना ओर बरबस खींचे वाला आ दमगर कला-कारीगरी का दीठि से कसौटी पर सभ तरह से खरा उतरे वास्ते कवि सुरेमन अविनाशचन्द्र 'विदारथी' बेजोड़ आ बिना पटतर के बाड़न। उनकर दूइ गो रचना—'कौशिकायन' आ 'सेवकायन' इनका विलच्छन प्रतिभा कऽ नगद नमूना मानल जइहैं। उनकर भासा टकसाली भोजपुरी कऽ आदर्श मानल जाई। कविवर अपना सभे रचना में तरह-तरह का छंदन कऽ बेवहगार कइले बाड़न आ उनके पुरहर सफलता मिललि बा। दबहुर-दबल-पिसाइल, दुखी-आ सतावल जनता का जीवन का, हर अंगन कऽ कवि सब तुक तसबीरि उरेहले बाड़न।

एकरा बादो भोजपुरी के सेवा करेवाला कवि-कलाकारन कऽ एगो भारी संख्या बा जिनका भोजपुरी सेवा कऽ महत्त्व कम नइँखे। एक-एक ईंट के जुटा के सीमेंट-मशाला से जोड़ले भोजपुरी माता कऽ सुघर मनभावन मंदिर बनल बा। हमन का ओह सभे कवि कलाकारन, कथा-उपन्यास-नाटक रचवइयन कऽ रिनी बानीं जे मंदिर के बनावे आ साजे-सवँरे में मनचित से लागल बाड़न। इनका में हम मोती बी. ए., केदार पाण्डेय 'प्रशान्त', नंदकिशोर मतवाला, अरूण भोजपुरी, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र गोस्वामी, सीताराम पाण्डेय 'प्रशान्त', रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, योगेन्द्र प्रसाद सिंह, पिसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, रामनारायण उपाध्याय, विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', श्री निवास मिश्र, ब्रजभूषण मिश्र, विपिन-विहारी चौधरी, राजवल्लभ प्रसाद 'सेवक', कैलाश कंमरपुरी वोगयरह कऽ रचना, भोजपुरी साहित्य का बहुत विस्तार में सोहत फुलवारी कऽ रंग-बिरंगा फूल नियर बाड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भासा का शरीर कऽ रीढ़ व्याकरण होला। ओकरा बिना भासा-साहित्य कऽ कवनो घर-मकान, महल-मंदिर खड़ा ना हो सके। भोजपुरी मंदिर का अनेक शिखरन, गुबजन कऽ चरचा भइल, बाकी आगा का परधान गोपुरम् का ओर ले नजरि कइसे फेरल जाय? पद बिना कहले रोवेला। असल कहीं तऽ बिना जोर बल लगा के कहले हमन कऽ हक-पद मारल जाता। जवना भासा का बोले-समुझे, जीवन का बेवहार में लावेवालन कऽ गिनती संख्या सबँसे भारत देश का आबादी कऽ दसवाँ भाग बा आ जेकरा में खण्डकाव्य, महाकाव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, शब्दकोश व्याकरण सभकुछ बा ओकर अनादर काहें? ओके हुरपेटल-धकियावल काहें जाता? ई हमन का विचारल जरूरी बा।

भोजपुरी में कई गो शब्दकोश तइयार हो चुकल बा। बीस बरिस पहिले पहिला शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से प्रकाशित भइल। ओकरा बाद शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी कऽ 'शब्द सागर' आगे आइल, एह में ६०० पन्ना में बीस हजार शबदन कऽ बहुत सजग होके भासा-विग्यान का नियमन का मोताबिक अरथ कइल बा। शब्द सागर का साथे-साथ व्याकरण-शबदानुशासन, भासा के कोड़ा-चाभुकि के चरचा जरूरी बा। एह दिशा में डा. रसिकविहारी ओझा 'निर्भीक' का 'भोजपुरी शब्दानुशासन' नियर मानक रचना तइयार कइ के बहुत खटके वाली कमी के पूरा कइला कऽ हमन का बहुत रिनी बानीं।

हिन्दी में कामता प्रसाद 'गुरु' के व्याकरण जवना घरी तक ना तइयार हो सकल रहे कि भोजपुरी के एगो व्याकरण सन् १९१५ ई. में तइयार हो गइल रहे। पं. शिवदास ओझा का एह महत्व का व्याकरण के भोजपुरी-अकादमी बहुत बढ़ियाँ रूप में छापि के भारी उपकार कइले बा।

भोजपुरी का एह लमहर जातरा में आज अइसना पड़ाव पर पहुँचि के अपना भाई-बंधु, संगी-साथी, सुजन-संबंधी, रउरा सभ से मिले में हमके अपार आनंद कऽ अनुभव होता। हम ओकर बरनन का करीं? हमरा बानी में ऊ बल नईंखे, न हमरा कलम-कूँची में ओइसन कला-गुने बा कि अपना हिरदय में लहरात भावन के तसवीरि उरेहि के देखाईं। भगवती भागीरथी जइसे हिमालय का गोमुख-गंगोतरी से धावत-धूपकत ठोकर खात, ऊँचे-नीचे गिरत, जंगल-झाड़ में लुका के चुपके भागत, आखिर में ग्यानी मुनिवर कपिलदेव जी का आसरम में उनका चरण-कमलन के छूवत, आशीरवाद लेत सागर का गोदी में पहुँचि मगन-मन हो जाली, हमके कुछ ओइसे सुख-शाति कऽ झलक मिलत जनाता। लगभग बावन बरिस पहिले आपन अँचला-लंगोटी लिहले, हाथ में एगो फाटल झोला आ कवंडल का साथ चललीं तऽ डहरि में कहीं केहू ना भेंटाय। ई जातरा फाहियान का भारत-दरसन का जातरा नियर दुरगम आ दुखदायी जनाय। बाकी तऽ हमरा पास झोरा में साहस आ लगन कऽ कलेवा रहे, एकरा करते हम चलते गइलीं। कवन उमेदि रहे फाहियान का कि गोवी का भारी मरूभूमि से उबरि के काशी नालंदा आ बोधगया पहुँचे के कवन आशा रहे? बाकी तऽ अपना संकलप के ऊ साकार कइये दिहलसि आ बउध-तीरथ-धामन कऽ दरसन पाके जीवन सफल बनवलसि। हमहूँ अपना भोजपुरी माता का छोह-दुलार आ सेवा के इयाद करत ओइसहीं, कलेश काटत बढ़त गइलीं, पाछे ना तकलीं।

कबे काल एह तीरथ जतरा में हमके डा. उदयनारायण तिवारी आ महाराज कुमार दुरगाशंकर सिंह नियर लोगन से भेंट भइल आ उनसे बाति विचार होत रहल, बल मिलत रहल। कबे-कबे आरा पहुँचि बाबू रघुवंश नारायण सिंह से मेहनति-पुरुसारथ-साधना-तप कऽ पाहुर पाईं आ आगे बढ़ीं। १९४५-४६ ई. में हम जब आपन भोजपुरी कहानी कऽ पहिली पोथी-गद्य का नमूना का रूप में तइयार कइके परयाग उदयनारायण तिवारी जी किहें जा पहुँचलीं तऽ उहाँ का अपना भोजपुरी भासा का शोध-प्रबंध के तइयार करे में लागल रहलीं। उहाँ का हमरा कारज से बहुत खुश भइलीं। ओही पयान में हम महापंडित राहुल साकिरतायन जी से भी मिलली, जेकि किसान सभा संगठन आ आंदोलन का सिलसिला में हमार पुरान परिचित रहलन। उहां से सलाह लेके आ तिवारी जी से पोथी कऽ भूमिका लिखवा के हम ओके छापे-छंपवावे का कठिन काम में जूटि गइलीं। किताबि पटना का नया विहार प्रेस में छपलि। कुछ पइसा दियाइल, कुछ बाकी परल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसहूँ आरजू-बिनती आ बिसवास का बल पर हम 'जेहल कऽ सनदि' क तीनिचारि सइ प्रति पवली। ओही साथे हमार हिन्दी मुक्त गीतन कऽ एगो संग्रह 'मकरंद' भी छपल रहे। अब किताबि लेके हम आरा से रोहतास, कबे रामगढ़-मोहनिआ-भभुआ आ कबे कलकत्ता तक कऽ दौड़ लगवली। कही-कहीं दूइचारि गो किताबि लोग शीलसंकोच में परिके खरीदे। 'मकरंद' लोग पसंद करे बाकी भोजपुरी कहनी का पोथी के देखि के नौंकि मुँह-बिजुकावे। कही-कहीं तीत-खट सुने के भी परे। कलकत्ता का १९४८ ई. का अपना जातरा मे हमरा बड़ा कडुवा अनुभव भइल। हम सिमरी का सत्यनारायन राय का बाड़ी में ठहरल रहलीं। कलकत्ता भोजपुरी कऽ भारी अड्डा रहे। ओहिजो बहुत कम किताबि खपली सऽ। एक दिन गाजीपुर जिला के एगो रईस चन्द्रिकाराय जे कि ओह समय मे 'राइटर्स-बिल्डिंग' में कुछ काम करसु, उनसे संजोगन भेंट भइल। सत्य नारायन राय उनसे हमार दूनों किताबि देखवलन आ एक-एक प्रति देके कुछ प्रतिन के खपावे कऽ सिपारिस कइलन। चन्द्रिका राय तऽ हमके जानत-चीन्हत रहलन ना। उनका ई का पता रहे कि रचयिता एहिजे मुँह लुकववले दबकल बाड़न। ऊ मकरंद लिहलन आ 'जेहल कऽ सनदि' के उलटि-पलटिके देखला का बाद झनकि के किताबि सत्यानारायन राय का आगा फेंकि के कहलन—"यह कोई पुस्तक है! किस उल्लू ने यह किताब लिखकर भासा भ्रष्ट किया है? मिलता तो यहीं हावड़ा की सड़क पर घसीटवा देते.....।' सत्यनारायन धीरे से कुछ इशारा करते रहे कि लेखक यही हैं पर ऊ काहे समुझते-सुनते। "हमरा ऊ दिन इयाद कइके अचरज होता कि हम आज का देखत बानीं। ई कवनो सपना ह कि साँच कऽ साकार रूप दरसन!

अब तऽ हम एह जातरा मे अइसना बहुत लोग के चलत देखत बानीं, उनसे मिलत-बतियावत बानीं जे कि बिकरी का आसा का माथे लात धइके, रोजिगारी चश्मा के आखि पर ले उतारि के अपना साहित्य सेवा जातरा में साहस का साथे हरदम आगे बढ़ि रहल बाड़न। आज एहं जातरा में डा. उदयनारायण तिवारी, डा. कृष्णदेव उपाध्याय, डा. देवेन्दर शर्मा, महापंडित राहुल सांकृत्यान, डा. भगवत शरण उपाध्याय, डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी वोगयरह का बाद डा. विवेकी राय, डा. विश्वनाथ सिंह, डा. विद्यानिवास मिश्र, पं. गणेश चौबे, कविवर 'अचल,' डा. आजनेय, पाण्डेय कपिल नियर फूलसुँघी के कुशल शिल्पकार, कबीर से लेके डा. उदयनारायण तिवारी का बनावल रास्ता के साफ-सुथर, लमहर-चाकर बनावे में लागल बा। एहले भारी खुशी आ गौरव कऽ बाति का बा?

आज सबसे भारी अड़चन बा कि भोजपुरी साहित्यकार-रचनाकार बस अपना तेयाग-तप, साहस-धीरज का बल पर काम करत बाड़न। बिहार सरकार बहुत पहिले भोजपुरी अकादमी बनवलसि तऽ जरूर बाकि आज ओकर धेयान ओकरा विकास का ओर नइँखे। राजनेता राजनीतिक कारनन से उदासीन बाड़न। एही राजनीतिक दाँवपेंच, शतरंजी पैंतरा आ कुरसी छिनाये का भयशंका, मोहभ्रम मे लोग भोजपुरी के आठवीं सूची में शामिल नइँखे करत। हमन का एह कारज में कुछ कमजोर परतो बानीं। जब तमिल, मलयालम, मराठी, नेपाली, डोंगरी, मैथिली भा अउरी-अउरी जनपदीय भासन के मानिता देति बा तऽ भोजपुरी के ई अपमान काहें? अब बिहार का दूइगो, विश्वविद्यालय में भोजपुरी कऽ विधिवत पढ़ाई होखे लागलि। पढ़े वाला उत्साही विदारथिन का सामने किताबन कऽ भारी आ कठिन सवाल पत्थल का चट्टान नियर डहरि मे अड़क पैदा करत बा। एकरा साथे-साथ रोटी कऽ भी सवाल बा। रचनाकार केतना दिन भूखे रहि के साहित्य का हर अंगन के पोढ़ बनावे वाली रचना तइयार करिहन? रचना तइयार भइलो पर केतना लोग का ई बेंवत बा कि अपना रचना के छपवाके सगरे पहुँचावे, परचार-परसार करें?

हम भोजपुरी भासा में दरजनों पत्रिकन के परकाशन होत देखत बानीं आ कुछ अंकन का निकलला का बाद उनकर बंद होत देखत बानीं। हमरा हिरदय के, एह कमी से भारी धक्का लागत बा। बाकी एह थाकल-थउसल बुढ़ापा में हम करबे का करीं? पत्रिकन कऽ दशा देखि के हमरा भोजपुरी के पुराना महारथी आ तपेसरी साहित्यकार-पत्रकार, कवि, सवाँरक, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायजी कऽ मधुर इयाद ताजा हो जाता। पाण्डेयजी कऽ व्यक्तित्व रहन-सहन आचार विचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
पुरुसारथ आ तेयागदेखि के साफ-साफ जनाता कि उहाँ का इसपात कऽ बनल लोहापुरुस, आ टिशुनारहित सवतुक्र करमजोगी रहलीं। उहाँ का कठिन साधना कइके जवना साहस आ धीरज का साथ दस बरिसन ले 'अँजोर' पत्रिका के चलवलीं आ ओहमें पूरा सफल रहलीं, ऊ हमन का आगा एगो चकित करे वाला नमूना बा। 'अँजोर' केतना हिरदयन के अपना अंजोर से लाभ पहुँचवलसि ओकर बतावल सहज नइँखे। अंजोर का जरिये महाय जी भोजपुरी भासा मे केतने लेखक, कवि आ कथा-नाटक-रितोरताज वोगयरह् के सफल रचयितन के बनवलीं, सजवलीं।

बहुत पहिले, अठारवीं-ओनइसवी शताब्दी का सकट काल मे, अगरेजी राज का जुग में भोजपुरी जनपद का गाजीपुर, आजमगढ़, गोरखपुर, छपरा आ आरा शाहाबाद का गावँन के भोजपुरी किसान मजदूर भाई, ठेठ देहाती गावँ के मेहनति-मजदूरी, खेती-बारी करे वाला समाज का हर अंगन कऽ लोग अपना रोजिगार धंधा का खोज में चाहे शासन करेवाला सरकार का जोर जुलुम का करते जनम धरती से, देशवासिन से बहुत दूर, समुन्दरधार का बीच विदेशन में, मोरिशस, फीजी, सूरीनाम आ अउरी कुछ जगहन मे जा बसलन। ओह जगहन मे उनकर सोना नियर देहि गलि-पचि गइलि, जवानी खाक में समा गइलि, ऊ मोह ममता में अपना देश आ भाई बधुन का ओर ताकत रहलन, उनकरा से नेहनाता लगा वले रहलन। एतने नाहीं, अपना जनम धरती भोजपुरी मंडल का पिरीत आ दुलरुवी भासा भोजपुरी से, भोजपुरी-संसकिरती-आचार विचारन से बराबर आपन गाढ़ नाता बनवले रहलन। अपना गाँव गीत, संस्कारगीत, लोकगीत-लोरकी, कुँवर विजयमल, बिरहा आ कथा-कहनी के इयाद करत जोगावत गइलन। उनका एह काम मे तुलसीदास कऽ रामायन वड़ा काम कइलसि, साहस धीरज दिहलसि, उनका धरम-विचारन के रच्छा कइलसि।

ओइसना आफति-विपति का गाढ़ दिनन में जब हमनी के अपने घर-परिवार के भाई अपना भोजपुरी भासा के संग ना छोड़लन तऽ हमन का काहें घवड़ायीं। हमन का तऽ बहुत कुछ पवलीं, आगे बढ़लीं, अब पुरहर सफलता कऽ किनारा लउकि रहल बा। नाव किनारे पहुँचले बोलति बा। हमन का हरियरी से सोहल धरती पर उतरबे करवि। अपना मेहनति कऽ कमाई पाके निहाल होइबि। सेवा से मेवा मिलबे करी एकरा मे कवनो शंक सुबहा नइँखे। वाग-बगइचन के सुरस सवदगर फल भेटाई। गेहूँ, वासमती, दूध-दहीं मिली। सुख-शाति आनंद भेटाई। भोजपुरी साहित्यकारन का साहस, लगन आ पुरुसारथ से भोजपुरी कऽ उन्नति हो रहलि बा। आगहूँ उनका अपने बलपवरूख कऽ भरोसा राखे के चाही। भोजपुरी साहित्यकार अपना जिम्मेवारी के पूरा समुझि के कवनो काम करत वाड़न। एह से राष्ट्रभासा हिन्दी आ भोजपुरी का आपसी मतभेद कऽ कवनो तरह कऽ शका नइँखे। भोजपुरी का विकास से हिन्दी मजबूत आ धनीं होई। देहि में सभ अँगन कऽ अपना-अपना जगहें ओतने महत्व बा। हाथ गोड़, अगुरी, ठेहुन-पेडुरी-पहुँचा, आखि, कान केकर कम महत्व बा!

भासा विग्यान का पोथिन में ब्रजभासा, अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, मगही, भोजपुरी वोगयरह् के हिन्दी के बोली बतावल बा। एहसे रउरा ओह संबध के समुझीं। बाकी हिन्दी भासा के इतिहास लिखे वाला लोग खाली खड़ी बोली कऽ इतिहास लिखले बा। एही तरे कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण आ नागरी-प्रचारिणी भा रामचन्द्र वरमा कऽ शब्द कोश हिन्दी कऽ कोश हऽ। ओह में भोजपुरी के कवनो जगहि नइँखे। अइसही दिल्ली का भूगोल इतिहास के भारत कऽ सरूप आ ओकर इतिहास ना मानल जाई। ब्रजभाषा के सूरदास अवधी के तुलसीदास आ भोजपुरी के कबीरदास के लोग पंत-निराला साथे खड़ी बोली का इतिहास मे शामिल करत आ गिनत बा।

जवना भासा आ बोली के बेवहार कऽ सिवान जेतने बिसतार वाला होला ओकरा जनता से ओतने लगाव होला। ओही संबंध से भासा कऽ सरूप आ सिंगार बनेला, लोग देखे जानेला। एकर प्रमान भोजपुरी कऽ विशाल-शवदभडार आ मुहावरा कहावतनि के भारी सख्या से मिलत बा। एकर नमूना गाय, लाठी, वरतन बोगयरह् का शवदन में लउकत बा। गाय के—धेनु, बकेन, कलोर, विसुकलि, बाधा-वछरू, लाल, आ एही तरे गगरी, मेघा, घइली, चेरुवा, छोड़ि, कुंडा, चेरुवी, नादी, हांड़ी, कहँतरी, बेहुँड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहावतनि के देखी—रही ला रनबन, खाईला मंकोहि भा मकोय
सात हुँड़ार कऽ चरवन होय,
बाघ मारि-मारि करीला इयारी,
सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी।
मइल लुग्गा, दुबर देहि, कुकुर कटला में कंवन संदेह।
वकसऽ बिलारि मुरगा बौंड़ होके रहिहन,
गाठि में दाम ना पतुरिया देखि रोवाई,
सइ पुराचरन न एक हुराचरन, रहे भूईं में चाटे बादरि,
गदहा सरगे गइलन बाकी छान लागले गइल.
लूट बनउर कऽ मारि बरछी कऽ,
नाती के गौंती ना, बिलारी के झुल्ला
भगई के ठेका ना तम्मू बिना फजीहति
अनका धन पर बिकरम राजा,
हर ना जुवाहि, अंकवारी भरके पैना
'परई में खाये के लुक्का कऽ अँजोर
मूसर नियर परल बानीं, का करिहन चोर?
बेल पाकल तऽ सुग्गा का कौन खुशी बा?
दहीदूध मोरा, मथान बाजे तोरा। दादा मुवलन दोहबे हाथ लागाल।
नावँ लखन कऽ मुँह कुकुरन कऽ।
बाभन, कुक्कुर, नाऊ, जाति देखि गुरनाऊ।
चोरवा कऽ मन बसे कंकरी का खेत में
ए बकुला का लवलऽ दीठि, केतने जालि रगरलीं पीठि।
अन्हरा सियार के महुवा मिठाई। सहकल गवँरइया, भरसाई में खोंता।
भेड़ि मुंवली काहें खउरला बिना। अब्बर देवी जब्बर बोका।
करवा कोंहार के घीव जजमान कें स्वाहा।
चिउरा दही, चउदह कोस, लुचुई अठारह कोस.
लजाइल लइका ढिढुकी टोन्ने।
बस केतना कहल जाय खजाना अथाह बा।

अंत में हम कहबि कि आपन बल पवरुख तऽ जरूरिये बा। बाकी हमार सरकार। हमही ओके चलावे वाला, बनावेवाला। एहस सरकार का भी आपन जिम्मेवारी समंझ के लोकभासा भोजपुरी का विकास खातिर पच्छपातरहित हो के मदति देवे के चाही। भोजपुरी अकादमी कऽ सभ कामकाज सरकार का धेयान ना दिहला से ठप्प बा। ब्रे मदति कऽ गाड़ी कइसे आगा बढ़ी? दूसरा ओर सभ साहित्यकार रचनाकार सनमति-सुमति से संगठित होके जनता कऽ समरथन जुटावे आ सरकार पर दबाव डालिके ओके अपना जिम्मेवारी के समुझे खातिर मजबूर करे। बिना भासा का उन्नति के जनता लोकतंत्र का महत्व के न तऽ समझी न ओके मजबूत बनावे पाई। शिच्छा सुवहित भइले पर गावँ-नगर जनपद आ देश चाहे मानुस समाज कऽ कयलान होई। छूटल फटकल, नीक-जबून, सभसे भूलचूक खातिर माफी चाहत बानी।

जय हिंदी! जय भोजपुरी!!
ॐ शांति शान्तिः शान्तिः!!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant.2
SriJagadguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon